देवी सीरीज

दुर्गा

केविन मिसल

Table of Contents

□□□□□□ □□□
□□□□□□□□□□

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31

32
उपसंहार
□□□□□□□□□□□
कॉपीराइट

[redacted]

[redacted] 1

[redacted]

[redacted]

London · New York · Sydney · Toronto · New Delhi

[redacted]

[redacted] 14 [redacted] 22 [redacted] Kevin.s.missal@gmail.com [redacted]

लेखक का नोट

यहां जो कुछ आप पढ़ रहे हैं, वह दुर्गा मां के प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि है। मैंने इस कथा के जितने भी संस्करण पढ़ सका, पढ़े हैं, चाहे वह मार्कंडेय पुराण हो या देवी महात्म्य आदि।
कृपया ध्यान दें कि यह बिल्कुल सटीक विवरण नहीं है। यह दुर्गा माँ की कथा पर मेरी अपनी राय है। मैं यह झूठा दावा नहीं करना चाहता कि इसमें से कुछ भी सच है। यह पूरी तरह से काल्पनिक है। मैं जानता हूँ कि यह कहानी संभव नहीं है क्योंकि यह एक ही लेखक की कल्पना से उपजी है, लेकिन यह दुर्गा माँ और उनके भक्तों के प्रति मेरा प्रेम और सम्मान व्यक्त करने का एक तरीका है। आगे जो आप पढ़ेंगे वह इतिहास, पौराणिक कथाओं और मेरी कल्पना का मिश्रण है।

अब तक का इतिहास…
जंबूद्वीप जाम्बुओं की भूमि है। ये छोटे-छोटे चेरी जैसे रंग के फल होते हैं जो देश के हर कोने में पाए जाते हैं। बेशक, जंबूद्वीप ही बाद में हिंदुस्तान और फिर भारत बना जिसे हम आज जानते हैं। लेकिन उस समय जंबूद्वीप एक विकासशील देश था।
वहाँ सैकड़ों जनजातियाँ थीं। सभी घुमंतू जीवन शैली अपनाते थे, पशुपालन और चरवाहा करते थे। यह प्रारंभिक वैदिक युग था, लगभग 1500 ईसा पूर्व, और यह रामायण और दस राजाओं के युद्ध से पहले का समय था। वास्तव में, यह वह समय था जब राजाओं का अस्तित्व नहीं था और जीवन जीने का कोई विशेष तरीका नहीं था। केवल जीवित रहना ही एकमात्र लक्ष्य था।
जब देश के सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक ऋग्वेद अस्तित्व में आया, तो लोगों ने इसका अनुसरण करना शुरू कर दिया। उन्होंने इसके सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीना शुरू कर दिया। इन ग्रंथों के पहले समर्थकों में से एक आर्य थे। वे उत्तरी जनजाति के निवासी थे।
ऋग्वेद से प्रभावित होकर उन्होंने इसकी शिक्षाओं को अपनी प्रणाली में समाहित कर लिया और उत्तर में एक एकजुट राज्य की स्थापना की। उनके पुरोहित राजा प्रकृति के तत्वों - अग्नि, जल, वायु और पृथ्वी - की पूजा करते थे। वे एक-दूसरे को इंद्र, वरुण, यम जैसी उपाधियाँ देने लगे और जल्द ही स्वयं को देवता या देव कहने लगे। उन्होंने यज्ञों और सोमा से संबंधित अनुष्ठानों में भी भाग लेना शुरू कर दिया, सोमा प्रकृति से निर्मित पेय पदार्थ होते थे। इन पेय पदार्थों से उन्हें शांति मिलती थी और वे प्रकृति का हिस्सा होने का अनुभव करते थे। सोमा का अत्यधिक सेवन करने वाले लोग सुर कहलाने लगे, सोमा को भी इसी नाम से जाना जाता था।
एक और जनजाति थी जो आसपास ही रहती थी और ऋग्वेद से उतनी जुड़ी हुई नहीं थी। उन्हें दास कहा जाता था। दरअसल, वे ऋग्वेद का पालन करना नहीं चाहते थे या शायद उनके पास ऐसा करने का ज्ञान या इच्छाशक्ति नहीं थी। वे जैसे थे वैसे ही रहे और अपना जीवन व्यतीत करते रहे, जबकि उत्तर समृद्ध हुआ और एक विशाल साम्राज्य बन गया। और फिर उत्तर ने दक्षिण को धमकाना शुरू कर दिया। आर्यों ने दासों के साथ गठबंधन करना चाहा, लेकिन दासों ने सोमा के सेवन और उससे होने वाले नशे से बचने के लिए इसे अस्वीकार कर दिया। उन्हें घुमंतू जीवन जीना और किसी भी प्रकार की अशांति से दूर रहना पसंद था। वे अपने जीवन

के तरीके का पालन करना चाहते थे। इसलिए आर्यों ने उन्हें अपने विपरीत असुर कहा। समय के साथ, असुर शब्द में राक्षसी अर्थ जुड़ गया, जबकि दास मनुष्य थे। बिल्कुल आपकी तरह। बिल्कुल मेरी तरह।
जबकि आर्यों ने दासों पर अपना अत्याचार जारी रखा, वहीं एक दास ने विद्रोह कर दिया।
और दोस्तों, यही थे महिषा। जिन्हें महिषासुर के नाम से भी जाना जाता है।
वह एक कुशल रणनीतिकार थे। एक शक्तिशाली, वीर योद्धा जिन्होंने दासों की सभी जनजातियों को एकजुट किया।
महिषा ने अकेले ही एक ऐसे साम्राज्य की स्थापना की जिसके कारण आर्यों का विनाश हुआ और दास एकमात्र शासक के रूप में स्थापित हुए।
हमारी कहानी तब शुरू होती है जब महिषा अपनी शक्ति के चरम पर था और आर्य तितर-बितर होकर उससे लड़ने की कोशिश कर रहे थे। महिषा अजेय प्रतीत होता था।
जब तक उन्हें उसकी कमजोरी का पता नहीं चल गया।

प्रस्तावना

हिमवत पर्वतमाला के पूर्व में स्थित बद्रीकुट
हरा आदमी आया। और सैकड़ों लोग उसके पीछे-पीछे आए।
लेकिन इससे पहले कि वह उसे देख पाती, अराजकता की भौतिक अभिव्यक्ति की साक्षी बन पाती, वह अपने पिता के साथ एक आदर्श जीवन जीने में व्यस्त हो गई। आज का दिन मज़ेदार था क्योंकि उसे खेत में काम करना सिखाया जाएगा। लेकिन उससे भी ज़्यादा, यह उसके पिता के साथ समय बिताने का मौका था, जो एक दयालु और उदार व्यक्ति थे।
शैला महज आठ साल की थी, लेकिन वह अपने पिता द्वारा दी जाने वाली किसी भी प्रकार की शिक्षा को ग्रहण करने के लिए तत्पर थी। जहाँ उसे गुरुकुल में पढ़ाई करनी चाहिए थी, वहीं वह स्वेच्छा से यहाँ एक खेत में काम कर रही थी। उसने बाड़ की मरम्मत की, जो बाहरी लोगों को अंदर आने से रोकती थी, और यह काम वह पहली बार कर रही थी, इसलिए वह थोड़ी अनाड़ीपन से कर रही थी। उसने भेड़ों की देखभाल की और अपने पिता को गायों का दूध दुहने में मदद की। और उसे यह सब तब करना पड़ा जब बर्फ पर चलना मुश्किल था और चारों ओर सर्द, सफेद और फीकी छाया हुई थी। सूरज कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, और दूर बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ मानो देवताओं की तरह उन पर मंडरा रही थीं।
गाय के थनों को दबाते हुए वह मुस्कुराया, 'यह एक कला है। इसे सही दबाव के साथ करना होता है, ताकि उसे कोई तकलीफ न हो।'
‘हम गाय का दूध क्यों पीते हैं?’ शैला ने पूछा।
क्योंकि गायें पवित्र होती हैं और उनका दूध हमें शक्ति देता है।
उसने अपने शरीर पर मोटे फर और तेलयुक्त चमड़े के वस्त्र पहने हुए थे और सिर पर टोपी ओढ़ रखी थी। शैला ने भी ऐसा ही किया हुआ था, जिसे उसकी माँ ने बड़े ही अच्छे से लपेट रखा था। उसकी माँ ब्रसेल्स स्प्राउट्स और फूलगोभी का सूप बना रही थी।
वे पहाड़ों के किनारे बसे एक छोटे से गाँव के कोने में रहते थे, एक ऐसा छोटा सा गाँव जिसे अगर ध्यान से न देखा जाए तो आसानी से नज़रअंदाज़ किया जा सकता था। यह गाँव एक जमी हुई नदी के ठीक बगल में था जिस पर अब बर्फ की नीली परत जमी हुई थी और शैला को उस पर चलने की मनाही थी। उसे बताया गया था कि बर्फ बहुत अस्थिर है और दबाव पड़ने पर टूट सकती है।

‘त्वस्त्र!’ एक आवाज ने पुकारा।
शैला और उसके पिता दोनों मुड़े, गाय से ध्यान हटाकर उन्होंने देखा कि बाड़ के बाहर से एक ग्रामीण उन्हें हाथ हिला रहा था। शैला ने उसका हाथ पकड़ा और अपने पिता के साथ उस व्यक्ति की ओर चल पड़ी।
‘आप कैसे हैं?’ उस आदमी ने पूछा।
‘अच्छा, अच्छा, आप?’
‘अच्छा, ठीक है।’
वे आपस में शिष्टाचार की बातें कर रहे थे, जबकि शैला उन्हें तिरछी नज़रों से देख रही थी और तेज़ रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। गाँव में सब एक-दूसरे को जानते थे और शैला ने इस आदमी को देखा था; वह एक तरह का भिखारी था। लेकिन उसके पिता भिखारी और व्यापारी में कोई फर्क नहीं करते थे, जो हर पखवाड़े उनका महंगा दूध खरीदने आता था।
‘क्या मुझे एक जग में… मिल सकता है?’ उस आदमी ने घबराकर पूछा।
उसके पिता का चेहरा भावहीन और सख्त था, और उनकी नीली, आकर्षक आंखें थीं जो शैला ने जन्म के समय से ही अपना ली थीं।
शैला को समझ नहीं आ रहा था कि उसके पिता उन जैसे लोगों का स्वागत क्यों करना चाहेंगे, जो लेन-देन के लिए कुछ भी नहीं रखते, बस भीख मांगने आते हैं। लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसके पिता मना नहीं करेंगे। वे कभी मना नहीं करते थे।
‘ज़रूर,’ वह मुस्कुराया। ‘मैं अभी ले आता हूँ।’
चलते हुए वह आदमी शैला की ओर मुड़ा और मुस्कुराया। 'आज आप कैसी हैं, शैला?' उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसके पिता जग लेकर आए और उसे उस आदमी को सौंप दिया। वह खुशी और कृतज्ञता से लाल हो गया, जो इतनी ऊंचाई पर एक दुर्लभ दृश्य था, जहां आमतौर पर लोग पीले पड़ जाते हैं।
‘तो मैं चलता हूँ, ट्वास्त्र। तुम अच्छे आदमी हो…’
खून के छींटे पड़े।
जैसे ही वह व्यक्ति जमीन पर गिरा, भारी मात्रा में खून रिसकर जमीन पर टपकने लगा।
एक पल के लिए शैला और उसके पिता बर्फ की तरह जम गए, असमंजस में। फिर उन्होंने उसे देखा। उस आदमी की मोटी खोपड़ी के अंदर एक काले पत्थर का तीर धंसा हुआ था।

उसके पिता ने शैला को कसकर अपनी छाती से लगा लिया, जिससे उसे अपने खेत के पिछले हिस्से में थोड़ा सा देखने की जगह मिल गई। वह यह पता लगाने लगे कि वह आवाज़ कहाँ से आई थी, तभी शैला ने अपनी तिरछी दृष्टि से उन्हें देख लिया। अराजकता का हरा आदमी। और उसके साथी, जो उसका अनुसरण करते थे।
उसके पीछे खून के निशान थे। गांव से धुआं उठ रहा था। शैला का खेत मुख्य गांव से दूर होने के कारण ज्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन हरे रंग के आदमी और उसके गिरोह द्वारा मचाई गई तबाही स्पष्ट थी।
उन सभी ने भारी कवच पहन रखे थे, उनकी छाती कवच से सजी हुई थी। उनके पास ऐसे झंडे थे जिन पर भैंस का चित्र बना हुआ था।
वह आदमी लंबा खड़ा था, उसके चेहरे पर हरे रंग के गहरे धब्बे फैले हुए थे, जिससे वह बीमार लग रहा था। उसकी गहरी भूरी आँखें अपनी जगह पर पत्थर की तरह धँसी हुई थीं, और उसके लंबे, उलझे हुए बाल एक डोरी से लिपटे हुए थे। उसके हाथ में एक हथियार था। एक कुल्हाड़ी जो उसके आकार जितनी बड़ी थी। और उसका मुकुट...
ताज।
उसके सींग असली भैंस के सींग थे जो दोनों तरफ घुमावदार ढंग से उठे हुए थे और ऐसा लग रहा था मानो वह उनसे किसी पर भी हमला कर सकता हो। वे अंधेरे में चमक रहे थे।
‘मुझे गरीबी और भीख मांगना हमेशा से ही नापसंद रहा है,’ उस आदमी ने सीने के सामने हाथ जोड़कर कहा। वह बाड़ तक पहुँच चुका था और आसानी से उसे पार कर सकता था, लेकिन वह वहीं रुका रहा। उसके सैनिकों ने शैला को घूरकर देखा। ‘क्या तुम्हें नहीं नापसंद, त्वस्त्र?’
त्वस्त्र उसे जानता था। उसने उसके बारे में सुना था। वह आदमी जो धीरे-धीरे आर्यों के नगरों पर कब्ज़ा कर रहा था। लेकिन उसे कभी विश्वास नहीं हुआ कि वह आदमी यहाँ, इतने छोटे से गाँव में आएगा।
कांपते हुए उसने शैला को कुछ ज़्यादा ही कसकर पकड़ लिया। शैला को घुटन महसूस हुई, लेकिन उसने विरोध करने की हिम्मत नहीं की। कड़ाके की ठंड में भी उसे अपने पिता के शरीर से निकलती गर्मी महसूस हो रही थी।
‘मैं महिषा हूँ,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। उसकी मुस्कान बहुत ही कठोर और बनावटी थी। ‘मैं तुम्हारा नया राजा हूँ।’ शैला समझ गई थी कि ये लोग घायल थे और शायद उत्तर में हुए किसी युद्ध से लौट रहे थे।

‘देव…’
‘आपको उनके बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है,’ वह मुस्कुराया। 'तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम?'
‘अच्छा, मेरे दोस्त, तुम उत्तर में सबसे अच्छा दूध सप्लाई करते हो,’ महिषा ने कहा। ‘और मुझे और मेरे आदमियों को प्यास लगती है। तुम सबसे अच्छी गायों की देखभाल करते हो और उन्हें अच्छे से खिलाते हो। उनका ध्यान रखना।’ ट्वास्त्र ने कुछ नहीं कहा। लेकिन वह कांप रहा था। अफसोस, ठंड के कारण नहीं।
तो महिषा ने चुप्पी तोड़ी। उसने कहा, “जब मैं खुद किसान था, मेरी माँ मुझे रोज़ दूध पिलाती थी। मुझे इसकी आदत हो गई थी। और जब मैंने उस गाँव को जला दिया, गायों को मार डाला और अपना अभियान शुरू किया, तो मुझे चिंता होने लगी कि क्या मुझे कभी दोबारा दूध मिलेगा, जब तक कि आखिरकार मैं दुश्मन के शिविर में घुसपैठ करने और उनके एक-एक सदस्य को मारकर उनकी गायों को पकड़ने में कामयाब नहीं हो गया। मैंने देखा कि उनके पास दूध के घड़े थे, जिसे मैंने चखा और मुझे पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। इसलिए, मैंने एक युद्धबंदी से पूछा कि उन्हें दूध कहाँ से मिलता है और उसने तुम्हारा नाम लिया।”
शैला ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। वह जानती थी कि उसके पिता प्रसिद्ध थे। 'हम आपको मजबूर नहीं करना चाहते। इसलिए, हम आपकी बाड़ के बाहर खड़े रहेंगे जबकि आप हमें दूध के जग लाकर देंगे।'
मेरे पास बस कुछ ही गैलन हैं। इससे तुम्हारी सेना का पेट नहीं भरेगा।
‘तो अपनी गायों को तब तक दबाते रहो जब तक वे मर न जाएं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,’ महिषा गरजते हुए बोली।
उसके पिता ने मुड़कर देखा तो उनका गाँव धुएँ से जलकर राख हो चुका था। 'तुमने उन्हें क्यों मारा?'
महिषा ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'वे दखल दे रहे थे। दूध देते ही हम चले जाएंगे और किसी और को चोट नहीं लगेगी।'
उसके पिता वहीं जम से गए। तब तक शैला की माँ बाहर आ चुकी थी और उसने पूछा कि क्या हो रहा है, तभी उसने महिषा को पुकारते हुए देखा:
‘ओह, आपकी पत्नी कितनी खूबसूरत है, और आपकी बेटी की आंखें कितनी प्यारी हैं।’
वह महिला असमंजस में थी। वे सब चुप थे।

शैला उस हरे रंग के आदमी को देख रही थी। उसके चेहरे पर एक कामुक मुस्कान थी।
‘पापा, उसे दूध दे दो,’ उसने कहा।
'अपनी बेटी की बात मानो, त्वास्त्र। हमारा धैर्य बस थोड़ी देर तक ही टिकता है।'
शैला के पिता असमंजस में दिख रहे थे। वे गायों से छुटकारा पाना चाहते थे, लेकिन उन्हें दूध देना बंद नहीं करना चाहते थे। अच्छी तरह से देखभाल और रखरखाव के कारण वे गायें सबसे अच्छा दूध देती थीं।
‘नहीं,’ उसने कहा।
‘पापा?’
महिषा ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। वह अब भी मुस्कुरा रहा था, मानो उसे इसमें मजा आ रहा हो।
शैला अपने पिता के अनेक गुणों से अवगत थी—उनमें से एक था वीरता। लेकिन यही उनका सबसे बड़ा अवगुण भी था।
उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें दूध नहीं दूंगा। मैं किसी के दबाव में नहीं आता। मैंने इस फार्म को खुद खड़ा किया है।'
महिषा ने सिर हिलाया, 'मैं इसका सम्मान करती हूं।'
पहले से ही मुस्कुराते हुए चेहरे पर मुस्कान और चौड़ी हो गई। 'मैं हमेशा एक अच्छे, मजबूत विपक्ष का सम्मान करता हूं।'

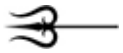

उसके माता-पिता को जमी हुई नदी के बीचोंबीच चलने के लिए मजबूर होना पड़ा, जबकि महिषा ने अपने मोटे हाथों से शैला के कंधों को थामकर, रोती-चिल्लाती शैला को संभाला हुआ था।
उसके माता-पिता नदी पर जमी बर्फ की नाजुक परत पर संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे थे, जबकि महिषा उन्हें देखती और हंसती रही।
इस बीच, उसके आदमी गायों का दुहरण कर रहे थे और जो भी गाय परेशानी पैदा करती, उसे काटकर अलग रख दिया जाता ताकि नीचे की ओर जाते समय उसे भूनकर खाया जा सके। उन्हें गायों की उतनी परवाह नहीं थी जितनी उसके पिता को थी।
उसकी आंखें नम थीं।

‘प्लीज, प्लीज…’ उसने महिषा से विनती की और अपनी छोटी-छोटी बाहों से उसे मारा, लेकिन उसका महिषा पर कोई असर नहीं हुआ। ‘मेरे पिता को छोड़ दो।’ महिषा पहाड़ों की तरह ही भयावह रूप से उसके ऊपर मंडरा रही थी और उसके माता- पिता को देख रही थी।
‘बहादुरी के क्या-क्या परिणाम होते हैं, ये तो अजीब बात है। मुझे हमेशा लगता है कि सही काम करने से गलत काम करने से ज़्यादा मुसीबत आती है, त्वस्त्र,’ उसने इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसके पिता भी सुन सकें, लेकिन त्वस्त्र बर्फ पर ध्यान केंद्रित करने में इतनी मग्न थी। ‘तुम्हें समझदारी दिखानी चाहिए थी और अपने परिवार की जान बचानी चाहिए थी। अब, दुर्भाग्य से, तुमने उन्हें मौत के मुंह में धकेल दिया है।’
लेकिन उसके पिता महिषा की बात नहीं सुन रहे थे। वे शैला को देख रहे थे।
और वह उस पर मुस्कुरा रहा था। एक कमजोर, निर्मम मुस्कान के साथ, जब उसने उससे कहा:
मुझे तुमसे प्यार है।
बर्फ टूट गई। उसके माता-पिता उसमें से नीचे गिर गए।
शैला का दिल जम गया। जमे हुए पानी की गहराई से अपने माता-पिता को रोते- बिलखते देखकर उसे लगा जैसे उसका सीना भारी हो रहा हो।
'अच्छा फिर,' महिषा हँस पड़ा, और उसके आदमी भी हँस पड़े, जिन्होंने तब तक सभी गायों को मार डाला था और जितना हो सके उतना दूध इकट्ठा कर लिया था।
शैला भागना चाहती थी। और वह भागी भी। उसने ज़रा भी इंतज़ार नहीं किया। उसने महिषा की मोटी बांह को धक्का दिया, उसे पूरी ताकत से दांतों से दबाया और अपने माता-पिता की ओर दौड़ पड़ी। वह बर्फ पर तेज़ी से कदम बढ़ा रही थी।
नदी पर जमी बर्फ की पतली परत उसके कदमों के नीचे चटकने लगी, जब वह आखिरकार उस गड्ढे तक पहुंची जिससे उसके माता-पिता गिरे थे। वह आगे झुकी और अंदर देखा। उसे कोई नज़र नहीं आया। उसे पानी के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर उसने दूर से पुरुषों को बोलते हुए सुना।
महिषा के एक आदमी ने पूछा, 'क्या हमें लड़की को मार देना चाहिए?'
Shaila turned to see Mahisha. He was contemplating.
‘वह ठंड से जम कर मर जाएगी, इसलिए किनारे पर वापस नहीं लौट सकती,’ उसने पीछे छूटी टूटी बर्फ की लकीरों की ओर इशारा करते हुए कहा। उसे अब तैरकर वापस लौटना ही था, क्योंकि अगर उसने वापस चलने की कोशिश की तो बर्फ उसके वजन से

टूट जाएगी, और वह जानती थी कि वह ऐसा नहीं कर सकती। वह इस उम्मीद को हल्के से थामे बैठी थी कि जिस जमी हुई बर्फ पर वह लेटी है, वह टूटेगी नहीं। ‘और हमारा काम यहाँ पूरा हो गया है। चलो चलते हैं। हमें अभी बहुत दूर जाना है।’ जल्द ही, हरा आदमी और उसके साथी बिंदु बनकर रह गए।
और वह वहीं रुकी रही।
कितने समय तक, उसे इसका कोई अंदाजा नहीं था।
लेकिन वह जानती थी कि उसे किनारे तक पहुंचना ही होगा, भले ही इसके लिए उसे तैरना पड़े। उसे जोखिम उठाना ही था।
उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी और इस सच्चाई का अहसास उसके गले के पिछले हिस्से में पित्त के रूप में अटक गया था।
उसने उसे पी लिया। और बिना सोचे-समझे पानी में कूद पड़ी, गहरे, ठंडे पानी को अपने अंदर समाने दिया। शैला अपनी शक्ति को धीरे-धीरे कम होते हुए महसूस कर रही थी।
मैं इसे सहन नहीं कर पाऊंगा।

बारह साल बाद …

1

मैसुरु (आधुनिक मैसूर), 1450 ईसा पूर्व
महिषा क्रिस्टल जैसे नीले पानी के एक तालाब में महिलाओं के बीच नग्न अवस्था में लेटी हुई थी।
उसकी मजबूत भुजाएँ तन गईं और कस गईं, नसें उभर आईं, जबकि वह आराम से पीछे की ओर झुक गया, आराम करते हुए पचास फीट ऊंची छत को निहारने लगा, जिस पर उसके वास्तुकार द्वारा बनाए गए अजीबोगरीब, अलंकृत डिजाइन थे।
औरतें उसके चारों ओर जमा हो गईं। उन्होंने उसे चूमा, उसके गालों को सहलाया। उसके होंठों को। उसकी चोट के निशानों से भरी छाती को। वे खिलखिलाकर हंस रही थीं। वे पाँच थीं।
उन्होंने अपने राजमहल में अपने लिए एक तालाब बनवाया था और उन्हें उसका भरपूर आनंद लेना चाहिए था, लेकिन वे आने वाले दिनों के बारे में सोचने में इतने मशगूल थे कि उन्हें कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। ये दिन उनके लिए निर्णायक साबित होने वाले थे, क्योंकि वे जंबूद्वीप के लिए कुछ बहुत महत्वपूर्ण करने वाले थे।
‘क्या हम आपसे कुछ पूछ सकते हैं, महाराज?’ महिलाओं में से एक ने कहा।
इस बार महिषा ने यह देखने की जहमत भी नहीं उठाई कि वह कौन सा था। उसने बस बेपरवाही से सिर हिला दिया।
‘तुम्हारी त्वचा हरी क्यों है?’ लड़की ने पूछा।
महिषा ने उसे घृणा भरी तीखी नज़र से देखा। वह जानता था कि उसका रंग हरा है। या उसका कुछ हिस्सा हरा था। त्वचा के रंग का यह जन्मजात विकार एक अजीब और दुर्लभ दोष था। गाँव के वैद्य, एक भिषक ने उसके माता-पिता को बताया था कि वह कुपोषण का शिकार है। किसी भी समय मर सकता है। लेकिन वह बच गया। किसी कारणवश, वह बच गया। लेकिन त्वचा का रंग वैसा ही रहा, जगह-जगह गहरे हरे रंग के धब्बे, जो असुरक्षा का कारण बनते थे।
‘तुमने अभी मुझसे क्या पूछा?’ उसने शांत और मधुर स्वर में कहा।
लड़की डर गई थी। उसकी पुतलियाँ फैल गईं। 'मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।' महिषा जानती थी कि उसकी त्वचा के रंग के कारण उसे जो असुरक्षा महसूस होती थी, वह सार्वजनिक रूप से ज्ञात नहीं थी। उनके लिए, उसकी त्वचा का रंग...

खैर... युद्ध का रंग था या फिर कुछ ऐसा जो उसने जानबूझकर किया था। 'नहीं, तुम कुछ मायने रखती हो, लड़की।'
मैं…मैं बस उत्सुक था।
यह सुनकर पूल में मौजूद सभी लोग एकदम शांत हो गए। सन्नाटा छा गया। अब कोई उसे छू भी नहीं रहा था। केवल पूल की हल्की लहरों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। ‘जिज्ञासु हो?’ वह मुस्कुराया।
लड़की ने मुस्कुराकर जवाब दिया, 'हाँ।' उसने गौर किया कि वह कमजोर महसूस कर रही थी।
‘नहीं, मैं समझ गया,’ उसने मन ही मन सिर हिलाया। ‘कोई जिज्ञासु कैसे हो सकता है। चिंता मत करो। मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ, लड़की।’
लड़की दुविधा में थी कि उस पर विश्वास करे या न करे। लेकिन वह बस मुस्कुरा रहा था। और त्वचा के रंग से परे, महिषा एक आकर्षक व्यक्ति था। तीस वर्ष की आयु के आसपास, उसके कंधे तक लंबे, काले बाल थे। उसकी आँखें किसी प्राचीन वन के पेड़ की छाल की तरह भूरी थीं। उसका जबड़ा इतना मजबूत था कि लकड़ी को दो टुकड़ों में काट सकता था।
“ठीक है,” उसने कहा और उसके करीब आ गई, जबकि बाकी लड़कियां फिर से खिलखिलाकर हंसने लगीं, जिससे पहले छाई खामोशी टूट गई। “अगर मैंने कुछ गलत कहा हो तो मैं माफी मांगती हूं।”
उसने सिर हिलाया। 'कोई फायदा नहीं।'
'क्या?'
माफी मांगने का कोई फायदा नहीं है।
उसने कोहनी से तेज़ी से वार किया और लड़की के दांतों पर ज़ोर से मारा, जिससे उसका सिर पूल में डूब गया। लड़की छटपटाने लगी। वह उसके दांतों को और अंदर धकेलता रहा। पानी लाल होने लगा। बाकी लड़कियां नग्न अवस्था में ही पूल से बाहर निकल आईं।
महिला ने महिषा की मोटी भुजाओं और मजबूत पकड़ से खुद को छुड़ाने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह ज्यादा देर तक ऐसा नहीं कर सकी।
कुछ ही क्षणों में वह हिलना-डुलना बंद कर दी।
उसने उसे शांत भाव से अपने चेहरे पर उचकाते हुए पूल के कोने में धकेल दिया, जहाँ वह पानी में मुंह के बल तैरती हुई ऊपर आ गई।

'वेश्या,' उसने आह भरी, जब उसने उन दूसरी महिलाओं को देखा जो उससे छिपने के लिए कमरे के कोनों में भाग गई थीं।
उनका मन उन्हें मारने का बिल्कुल नहीं था। बिना वजह मारना व्यर्थ था, भले ही आम तौर पर महिलाएं उन्हें चिढ़ाती हों।
लेकिन वे उसके लिए ध्यान भटकाने वाली चीज़ें भी थीं। उसे परेशानियों को भुलाने और उसे संतुष्ट करने में माहिर। वे उसकी चाहत की वस्तुएँ थीं। दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई और हालांकि वह चाहता था कि उसके सैनिक न हों, दरवाजे ऐसे खुल गए मानो दरवाजे के पीछे खड़े व्यक्ति को अपने बुलावे का इंतजार करने की परवाह ही न हो।
अगर कोई और होता तो महिषा उसका सिर धड़ से अलग कर देता, लेकिन वह उसका गुरु था। वही व्यक्ति जो उसकी सफलता का सूत्रधार था।
शुक्र। एक गुरु, एक उपदेशक और एक पुजारी। अपनी राजधानी के पुरोहित। वे रणनीति के महारथी थे।
शुक्र एक बूढ़ा आदमी था। दुबला-पतला। लंबा-पतला। उसके ऊपर जो चोगा था, वह ऐसा लग रहा था मानो चोगा उसे पहने हुए हो, न कि उसे। उसके बाल सफेद थे, और उसकी कागज़ जैसी सफेद, जमी हुई त्वचा पर भूरे धब्बे थे। वह घुटनों के बल बैठा था।
वह कुछ बोलने ही वाला था कि तभी उसने तालाब में मृत महिला को देखा। ‘क्यों?’ उसने हताशा भरे चेहरे के साथ पूछा।
महिषा ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?'
वह पूल से बाहर निकला और खड़ा हो गया। जब उसने ताली बजाई, तो कोने में छिपी डरी हुई औरतें कपड़े लेकर आईं और उसे पोंछने लगीं। उनमें से हर एक, अंदर तक डरी हुई थी, फिर भी पेशेवर बनी रही क्योंकि वे जानती थीं कि अगर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, तो वह उन्हें भी मार डालेगा। 'इतना ज़रूरी क्या है?' शुक्र ने कहा, 'हमारे सामने एक समस्या है।'
‘क्या यह इंतजार कर सकता है? मैं कल सीमावर्ती इलाके के लिए रवाना हो रहा हूँ। मुझे वापस आने दीजिए।’
शुक्र ने सिर हिलाया। 'हमें पहले आपकी राय चाहिए, उसके बाद आप जा सकते हैं।' महिषा बूढ़े आदमी के भावहीन चेहरे को देखकर समझ गया कि वह कुछ गंभीर बात कहने वाला है। वरना वह यहाँ नहीं होता।
'तो हम चलते हैं।'

2

महिषा ने कमर पर कमरबंद पहना हुआ था। उसमें एक म्यान में रखी तलवार लटकी हुई थी। उसके कानों में चूड़ियाँ थीं और उसने मुकुट पहना हुआ था। आख़िरकार, वह एक राजा था। उसने अपने सीने पर तिरछे ढंग से एक नीली शॉल लपेटी हुई थी, जिससे उसका एक मोटा हिस्सा दिखाई दे रहा था, और पैरों में उसने लकड़ी की चप्पलें पहनी हुई थीं।
शुक्र के पीछे-पीछे चलते हुए, वह अपने महल के मिट्टी के गलियारों से गुज़रा। वह लंबा-चौड़ा आदमी था, अपने ज़्यादातर सैनिकों से भी कहीं ज़्यादा लंबा, लगभग सात फीट लंबा। जब भी वह युद्ध के मैदान में उतरता, लोग डर जाते, क्योंकि वही सबसे लंबा होता था। एक मिथक प्रचलित था कि वह बिना किसी हथियार के हाथी को भी खींच सकता है। हालाँकि, यह मिथक महिषा ने खुद गढ़ा था।
वह एक विशाल कमरे में दाखिल हुआ, जिसमें एक बड़ी बालकनी थी जहाँ से पूरे शहर का नज़ारा दिखता था, जो दीयों से जगमगा रहा था। यह युद्ध कक्ष था। यहीं पर वे रणनीति बनाते थे। फर्श पर लोगों के बैठने के लिए गद्दियाँ और चादरें बिछी थीं। बीच में एक ऊँचा लकड़ी का चबूतरा था जिस पर जंबूद्वीप का नक्शा और लकड़ी की मूर्तियाँ रखी थीं।
जैसे ही वह अंदर दाखिल हुआ, उसने कमरे में दो अन्य लोगों को देखा।
उनमें से एक थे तामरा। अपनी राजधानी के प्रधानमंत्री। शांत स्वभाव के व्यक्ति, जिनका छोटा और पतला शरीर बैंगनी रंग के वस्त्रों से लिपटा रहता था। वे बुद्धिमान थे और रोज़मर्रा के कामकाज को बखूबी संभालते थे। उनके बाल छोटे थे और उन पर सोने की बारीक कारीगरी से बना माणिक जड़ा मुकुट था। और उनसे लैवेंडर की खुशबू आती थी।
‘अरे बेवकूफ, तुमने अपने ऊपर क्या मल लिया है?’ महिषा हंसते हुए तकिये पर लेट गया। उसने अपने लिए फलों की टोकरी ढूंढी और जब उसे पीछे रखी एक टोकरी मिली, तो उसने तुरंत कुछ अंगूरों का स्वाद लेना शुरू कर दिया।
'यह मेरी पत्नी ने मुझे दिया है,' तामार ने राजा के सामने बैठे हुए मुस्कुराते हुए कहा।

‘पत्नी? छी! क्या आप उस पर विश्वास कर सकते हैं?’ महिषा ने कमरे में मौजूद दूसरे व्यक्ति, अपने बचपन के दोस्त, सिकश, जो उसकी सेना का सेनानी था, की ओर रुख किया। ‘मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा कि उसकी पत्नी है।’
‘खैर, वो एक स्वतंत्र व्यक्ति है,’ शिक्ष ने कहा। उसकी असली आँख की जगह संगमरमर की आँख लगी थी, क्योंकि उसने एक बार महिषा को हत्या के प्रयास से बचाया था और इस प्रक्रिया में अपनी आँख खो दी थी। वो युद्ध की वर्दी में था; वो हमेशा से ही ऐसे ही रहता था। वो इसी वर्दी में पैदा हुआ था। ‘गलती करने के लिए आप उसे दोष नहीं दे सकते, है ना?’
‘वह अच्छी महिला है,’ तामार ने विरोध किया। ‘घर की देखभाल करती है…’
‘एक गुलाम लाओ!’ महिषा गुस्से से बोली।
वह मुझे खुश करती है।
‘तो फिर कोई नौकरानी ले आओ, शायद?’ सिक ने सुझाव दिया।
तामरा ने आह भरी। 'तुम दोनों को प्यार का मतलब समझ नहीं आएगा।' उसकी आवाज़ में थोड़ी रक्षात्मकता थी, लेकिन साथ ही भावुक और रोमांटिक अंदाज़ भी था, जिसे महिषा कभी नहीं समझ पाएगी।
महिषा पलटवार करना चाहता था या कुछ और कहना चाहता था, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। महिषा और सिक की तुलना में तामार एक अच्छा इंसान था, क्योंकि ये दोनों ही अपमानित होते ही गुस्से को हथियार बना लेते थे। तामार शांत और संयमित रहता था, जबकि महिषा और सिक उसे चिढ़ाते और उकसाते रहते थे। देश में महत्वपूर्ण पदों पर होने के बावजूद, वे दोस्त थे, क्योंकि सभी ने जमीनी स्तर से शुरुआत करके आज इस मुकाम तक पहुंचे थे।
'अगर तुम्हारा मनोरंजन और खेल खत्म हो गया है, तो क्या हम बात कर सकते हैं?' शुक्र ने बीच में टोकते हुए कहा, वह बैठा नहीं, बल्कि एक शिक्षक की तरह उनके चारों ओर चक्कर लगा रहा था।
‘Go on, guruji,’ Mahisha allowed.
‘बहुत खूब।’ अपनी मोटी आस्तीन के नीचे से उसने एक स्क्रॉल निकाला। ‘जैसा कि आप जानते हैं, मैंने पूरे उपमहाद्वीप में जासूस रखे हैं, आम लोगों के वेश में, लेकिन उन फुसफुसाहटों को सुनते हुए जो हमारे द्वारा बनाए गए महान साम्राज्य के लिए हानिकारक हो सकती हैं।’
स्पसस? महिषा जानती थी कि ये जासूसी नेटवर्क थे जिन्हें शुक्र बड़ी कुशलता से संचालित करता था। उसे विद्रोहियों, आर्यों के बारे में जानकारी

मिलती रहती थी, जो लगातार खतरा बने हुए थे। यह अजीब बात थी कि एक समय वे इस भूमि के शासक थे। लेकिन अब वह शासन कर रहा था जबकि वे छिपकर उसे मारने का रास्ता खोज रहे थे।
शुक्र ने आगे कहा, 'उसे कुछ महत्वपूर्ण सूचना देनी थी।'
‘और वो क्या है?’ तामार की भौंहें तन गईं।
शुक्र ने कहा, ‘आर्यों ने हम पर शीघ्र आक्रमण की योजना बनाई है।’
‘हमला?’ महिषा ने चिढ़कर कहा। ‘वे तो मर रहे हैं। वे छिपे हुए हैं। वे किस तरह का हमला कर सकते हैं? शायद हमारी दीवारों पर हमला करके भाग जाएं?’ उसने भी चिढ़कर कहा। सिकश ने भी चिढ़कर कहा।
शुक्र ने दांत पीसते हुए कहा, 'महाराज, आप बहुत होशियार हैं। महिषा, अपने अहंकार के कारण अति आत्मविश्वास न रखें। याद रखें कि आप कहां से आए हैं।' महिषा ने अपनी नाक फुला ली। कोई भी उससे इस तरह बात करने की हिम्मत नहीं करता, लेकिन शुक्र अलग था, हालांकि उस पल उसका मन कर रहा था कि अपने गुरु का गला घोंट दे, क्योंकि उसने उससे इस तरह बात की थी। लेकिन उसने बस अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं और वहीं जम गया।
‘खैर, आर्य काफी समय से इस हमले की योजना बना रहे थे,’ वह पांडुलिपि से पढ़ रहा था और उसका सारांश बता रहा था, ‘जबकि हम यूनानियों, मिस्रियों और अफगानियों के साथ अपने राज्य के विदेशी नेटवर्क का विस्तार करने में व्यस्त थे। वे एक उत्तम हथियार तैयार कर रहे थे।’
‘और वो कौन सा हथियार हो सकता है?’ सिक ने पूछा। ‘क्या ये आग का गोला है जो आदेश मिलते ही फट जाएगा? या शायद कुछ और? ज़्यादा उन्नत? ये कैसे मुमकिन है कि उनके पास ये हथियार हो जबकि उनके पास संसाधन नहीं हैं, जबकि हमने उन्हें चारों तरफ से पूरी तरह से निचोड़ दिया है?’
शुक्र ने अपना सिर हिलाया। 'यह हथियार एक हत्यारा है।'
महिषा ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'एक हत्यारा? गुरुजी, मुझ पर कई बार जानलेवा हमले हो चुके हैं। यह हत्यारा उनसे कैसे अलग है?'
शुक्र ने समझाया, ‘इस हत्यारे को अगले नौ दिनों में तुम्हें मारने का आदेश दिया गया है। कल पहला दिन है। और सबसे बुरी बात यह है कि यह हत्यारा पहले से ही हमारे राज्य में छिपा हुआ है और भेस बदले हुए है। हमें हत्यारे की पहचान नहीं पता।’
एक पल के लिए वे सब चुप हो गए।

Then Mahisha said, ‘He’s a spy?’
‘एक घातक। अंडा…’ वह स्क्रॉल से पढ़ना जारी रखते हुए बोला, ‘वह एक महिला है।’
महिषा ने सिकश की तरफ देखा और दोनों जोर से हंस पड़े, उनके शरीर आगे की ओर झुक गए, जबकि तामार चुप रही, वह स्थिति की गंभीरता को समझ रही थी।
महिषा ने अंगूर खत्म करते ही जैसे ही खड़े होने का फैसला किया, उसे अपनी नब्ज़ में ऊर्जा का संचार महसूस होने लगा। 'मुझे जाना चाहिए। मुझे कल के लिए खुद को तैयार करना है।'
‘क्या? हम उससे कैसे निपटेंगे?’ शुक्र ने पूछा।
‘हम नहीं मार सकते। गुरुजी,’ उसने शांत भाव से कहा, ‘यह एक औरत है। मुझे यकीन है कि एक औरत मुझे नहीं मार सकती।’ उसने चप्पल पहनी और सिकश भी उठ खड़ा हुआ। वह भी इस बैठक को गंभीरता से नहीं ले रहा था। ‘जब वह अगले नौ दिनों के भीतर हमला करेगी, तो हम कमान संभाल लेंगे और… उसे मार डालेंगे।’
शुक्र ने चेतावनी देते हुए कहा, 'तुम उसे कम आंक रहे हो। आर्य एक दशक से भी अधिक समय से उस पर काम कर रहे हैं। उसमें कुछ तो खास बात होगी, इसीलिए उसे भेजा जा रहा है। वरना वे अपने नौ-दिवसीय सिद्धांत को लेकर इतने आश्वस्त क्यों होते?'
महिषा ने अपने जबड़े भींच लिए। “क्योंकि वे मूर्ख हैं, गुरुजी। उनके पास सब कुछ था और मैंने उनसे छीन लिया। उसे छीन लिया। क्या आपको सच में लगता है,” वह बूढ़े आदमी के करीब आकर, उससे भी लंबा होकर बोला, “कि मैं एक औरत की वजह से सब कुछ खो दूंगा? वह मुझे रोक नहीं पाएगी।”
शुक्र को महिषा के भारी-भरकम शरीर से डर नहीं था, और वह कहता था, 'मुझे अब भी लगता है कि तुम्हें कुछ निवारक उपाय सोचने चाहिए।'
महिषा ने उसे गुस्से से देखा। वह उस बूढ़े आदमी से छुटकारा पाना चाहता था। हालाँकि शुक्र ने उसकी मदद की थी, लेकिन वह शक करने लगा था और जंबूद्वीप के लिए उसकी भविष्य की योजनाओं में बाधा बन रहा था।
‘मैं कांचीपुरा जा रहा हूँ, पनास जनजाति से गठबंधन करने के लिए।’ वह सिथियन जनजाति की बात कर रहा था। ‘यह गठबंधन करना मुश्किल होगा। यह एक लंबी प्रक्रिया होगी। पनास सबसे क्रूर और युद्धप्रिय जनजाति हैं। अगर वे हमारा साथ देते हैं, तो हमारी सेना मजबूत होगी। और आप चाहते हैं कि मैं यह सब छोड़कर… किस पर ध्यान दूं? एक लड़की पर।’

महिषा और शुक्र, जो एक-दूसरे को तिरस्कार भरी निगाहों से देख रहे थे, उनके बीच तामार आकर बोली: 'महामहिम, मुझे लगता है आप दोनों सही हैं। क्यों न हम कोई समझौता कर लें?'
‘और वो क्या होगा?’ महिषा ने अपने दोस्त से पूछा।
'सिक्श और मैं पता लगा लेंगे कि यह हत्यारा कौन है, तब तक तुम बाहर जाकर पाना परिवार से अच्छे संबंध बना लो,' तामार ने प्रस्ताव रखा, जबकि सिक्श ने इस योजना पर अपनी आँखें घुमाईं, क्योंकि वह खुद इसे गंभीरता से नहीं ले रहा था।
महिषा ने भावहीन होकर शुक्र को देखा और फिर उसके होठों पर मुस्कान आ गई। 'मुझे लगता है कि यह कारगर है, है ना गुरुजी?'
शुक्र ने कमज़ोरी से सिर हिलाया। बूढ़ा अपने शिष्य के अत्यधिक अहंकार से तंग आ चुका था। वह चाहता था कि वे वैसे ही बन जाएँ जैसे गुरुकुल में थे, जहाँ वह इन तीनों को सत्ता हथियाने का तरीका सिखाता था। उसने उनमें हिंसा का जुनून और भूख देखी थी और उन्हें चुना था। लेकिन अब...वे अलग थे। तामार को छोड़कर, जो कम से कम कुछ हद तक सही रास्ते पर पली-बढ़ी थी।
'ऐसा होता है।'
‘बहुत खूब। सिक, कृपया सुनिश्चित करो कि इस महिला को पकड़ा जाए और मेरे लौटने तक उसे जेल में रखा जाए ताकि मैं खुद उसे मार सकूँ। और अपना काम पूरी लगन से करो, ताकि हमारे प्यारे गुरुजी को तसल्ली हो जाए कि हमने उनकी आशंका को गंभीरता से लिया।’ उसने ये सब दांत पीसते हुए कहा, और सिक ने सिर हिलाया।
‘जैसा आप कहें, महाराज,’ उसने जवाब में कहा।
महिषा पीछे मुड़े बिना कमरे से निकल गई। वे सब एकदम चुप रहे, तभी कोने से सिक ने बोलना शुरू किया और अपने गुरु के जाने से पैदा हुई उस अजीब सी चुप्पी को तोड़ा: 'गुरुजी, क्या इस हत्यारे का कोई नाम है?'
शुक्र ने आह भरते हुए फिर सिर हिलाया। उम्मीद की एक छोटी सी किरण जगी; उसके स्पासा को भी एक नाम मिल गया था। 'हाँ, है।'
'बहुत बढ़िया। मुझे बताओ, ताकि मैं अपने कप्तानों को इसके बारे में बता सकूँ। वे उस पर नज़र रखेंगे और शायद पूछताछ भी करेंगे।'
शुक्र ने संकुचित निगाहों से उस ग्रंथ को पढ़ा।

नाम बताते हुए उन्होंने कहा, 'यह एक अजीब नाम है। उसे दुर्गा के नाम से जाना जाता है।'

3

कावेरी नदी से बावन मील दूर…
वह जानती थी कि उसे आज रात तक उनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी को मारना होगा।
पैनी निगाहों से वह राजधानी के दक्षिण में स्थित ललिताब्रिजु कस्बे के पास मैसूरु की चौकी पर नजर रखे हुए थी। यह चौकी मिट्टी और पके हुए लाल बलुआ पत्थर तथा पीली ईंटों से बनी थी और एक बहुमंजिला किला थी। इसके द्वार लोहे की जाली से बने थे और दोनों ओर भाले और ढाल से लैस दो-दो रक्षक युद्ध की वर्दी में तैनात थे।
किले के हर कोने में दीये जल रहे थे, जो रात के इस समय धरती पर छाए अंधेरे में बेहद जरूरी रोशनी प्रदान कर रहे थे।
उसने सोचा, योजना यहीं से शुरू होती है।
इन चौकियों का इस्तेमाल किलेबंदी के तौर पर किया जाता था, जो दुश्मन को शहर के मध्य तक ले जाने वाले रास्तों की रक्षा करती थीं। इनका उद्देश्य दुश्मन के शहर की ओर आने की आशंका होने पर चेतावनी भेजना भी था। लकड़ी के बड़े- बड़े लट्ठों में आग लगाई जाती थी और उससे निकलने वाले धुएं का इस्तेमाल राजधानी के सुरक्षा टावरों तक अन्य चौकियों को संकेत भेजने के लिए किया जाता था। ये किले ऊंचाई पर बने थे, जिससे दूर-दूर तक आसानी से नज़र रखी जा सकती थी।
अपने चारों ओर घनी पत्तियों के बीच छिपी हुई, बिल्ली जैसी आंखों से वह दीवारों को देख रही थी।
क्या वह उनके ऊपर से कूद सकती थी?
वह कलाबाज थी, यह बात वह जानती थी, लेकिन उसकी भी कुछ सीमाएं थीं।
उसने मात्र पाँच सेकंड के अंतराल में दो आवाज़ें सुनीं। एक उल्लू की आवाज़ थी, और दूसरी किसी बड़े शिकारी जानवर की दहाड़।
उसे महसूस हो रहा था कि शिकारी उसके कपड़ों को सूंघ रहा है। उसने एक तंग धोती और एक लंबा दुपट्टा पहना हुआ था, जो उसके सीने को ढके हुए था और उसकी कमर का थोड़ा सा हिस्सा दिख रहा था। उसका हथियार—एक लोहे का खंजर—धोती के कोने में छिपा हुआ था। उसने जूते नहीं पहने थे। उसे जूतों की ज़रूरत भी नहीं थी।

‘शांत हो जाओ, लड़के,’ उसने बाघ से कहा, जो उसे सूंघने के बाद उसके पास आ गया। ‘मुझे पता है कि तुम उन सबको खाना चाहते हो। लेकिन हमें समझदारी से काम लेना होगा। हम उन्हें आग नहीं लगाने दे सकते, वरना राजधानी...’ उसने यह कहते हुए देर से महसूस किया कि वह एक जानवर से बात कर रही है और मन ही मन मुस्कुराई।
वह बचपन से ही उसका पालतू जानवर था, लेकिन वह एक जंगली जानवर भी था जो किसी शिकार की ओर निर्देशित होने पर उसे नोंच-नोंच कर मार डालता था।
‘ठीक है, ये रही योजना, डावोन…’ और उसने उंगलियां चटकाकर उसे समझाया।
डावोन सिर्फ उंगलियां चटकाने की क्रिया ही नहीं समझता था, बल्कि हर चटक की लय और विशिष्ट ध्वनियाँ भी समझता था, जिनसे वह निर्देश समझता था। अगर ध्वनि गलत होती, तो बाघ वह काम करता जो उसे सिखाया नहीं गया था।
उसने एक बार क्लिक किया। गेट की ओर जाओ।
उसने तीन बार क्लिक किया। हमला।
उसने कान पर थपथपाया। चोट लगने पर पीछे हट जाओ।
बाघ ने अनुमति का इंतज़ार नहीं किया। वह सीधे मुख्य द्वार की ओर झपटा।
उसने आवाज़ और स्पर्श के ज़रिए जानवरों को वश में करना सीख लिया था। उसने जानवर को एक आवाज़ को एक विशेष क्रिया से जोड़ना सिखाया था और जब वह सीख जाता था, तो वह बाघ को इनाम के तौर पर पिसा हुआ गोमांस खिलाती थी। बाघ बुद्धिमान शिकारी होते हैं और समय के साथ वे इस तरह की चीज़ों को समझ जाते हैं।
जैसे ही उसका बाघ एक गार्ड पर झपटा, जबकि दूसरा गार्ड सदमे और आतंक से जम गया, वह भी गेट की ओर बढ़ गई।
पहरेदार भाले से जानवर को उकसाने ही वाला था कि तभी बाघिन ने खंजर उसके करीब लाकर उसे चौंका दिया और पीछे से उसका गला काट दिया। खून की बौछार हुई और वह गिर पड़ा, जबकि बाघिन ने दूसरे सैनिक को बुरी तरह घायल कर दिया था और उसकी आंतें खा रही थी।
'आगे बढ़ो, मेरे दोस्त। अगर हम इसे जल्दी करें, तो अंत तक तुम्हारे पास आसानी से अनंत काल के लिए भोजन हो जाएगा।'
डावोन कराहते हुए दहाड़ते हुए चौकी के अंदर और गहराई में चली गई। इससे भले ही पहरेदार सतर्क होकर अतिरिक्त सेना को न बुलाएं और राजधानी को सूचना न दें, लेकिन वे ज़रूर डर जाएंगे। पांच पहरेदार बाघिन की ओर बढ़ने लगे। जब वे

व्यस्त थे, तब वह सीढ़ियों से ऊपर चढ़कर मीनार की ओर बढ़ गई और ज़रूरत पड़ने पर छाया में छिप गई।
वह फुर्तीली थी, लेकिन उसे डावोन के चोटिल होने की भी चिंता थी। आखिर वह उसका दोस्त था। अगर वह सोचती तो, वही उसका इकलौता दोस्त था।
वह मीनार के प्रवेश द्वार तक पहुँची, जहाँ उसने एक पहरेदार को सीटी बजाते हुए देखा। उसने अपनी कटार को उसकी रीढ़ की हड्डी में तेज़ी से घोंपते हुए और साथ ही उसका मुँह बंद करते हुए उसे मार डाला। उसके शरीर से जीवन निकल गया। फिर उसने उसे शांति से ज़मीन पर लिटा दिया, उसके चारों ओर खून का एक बड़ा धब्बा बन गया।
उसने उन लकड़ियों को देखा जिनका इस्तेमाल संकेत भेजने के लिए किया जाता। जल्दी से, उसने टावर के बाहर जितनी दूर हो सके, लकड़ियाँ फेंकनी शुरू कर दीं। वहाँ सौ से ज़्यादा लकड़ियाँ थीं और वह तब तक फेंकती रही जब तक उसके हाथ थक नहीं गए। जैसे-जैसे वह लकड़ियाँ फेंकती जा रही थी, उसकी नज़र अचानक नीचे दावोन पर पड़ी।
उसे तीन बार धारदार हथियारों से छेदा गया था। कूल्हे पर, बांह पर और पैर पर। चिंता की एक लहर उसके गले में अटक गई।
नहीं।
डावोन पीछे नहीं हट रहा था और वह चाहती थी कि चुटकी बजाते ही वह पीछे हट जाए। उसे याद आया कि उसने थोड़ी देर पहले उसे प्यार से थपथपाकर समझाया था कि अगर उसे चोट लगे तो उसे पीछे हट जाना चाहिए, लेकिन बाघ अक्सर लड़ाई के दौरान बात नहीं सुनते।
साथ ही, वह जानती थी कि वह भाग नहीं सकता। पहरेदारों ने अब तक उसे घेर लिया था।
उसने लकड़ियों को देखा और फिर अपनी सहेली की ओर देखा। उसे फैसला लेना ही था। फिर उसने लकड़ियों को सीढ़ियों से नीचे धकेल दिया। जैसे ही उसने मीनार के चबूतरे पर कदम रखा, लकड़ी के बचे हुए ठूंठ लड़खड़ाकर गिरने लगे।
और वह उछल पड़ी।
जब वह लड़खड़ाकर गिरी, तब उसका खंजर उसके दांतों में क्षैतिज रूप से जकड़ा हुआ था।
अगर उसे कूदना नहीं आता, तो वह कूदती ही नहीं। लेकिन ऊँचाई से कूदना अक्सर सटीक गणना के साथ ही किया जाता है। साथ ही, यह तीसरी मंज़िल थी।

उसे बस...
उसने तुरंत अपने पैरों को कस लिया और उन पर दबाव डाला, अपनी बाहों को ऊपर उठाया और अपने शरीर को मजबूत बनाया।
और जब वह उतरी, तो उसे महसूस हुआ कि जमीन से वह ऊर्जा कम हो रही है और उसकी दृढ़ता क्षीण हो रही है, लेकिन वह गिरी नहीं, क्योंकि उसकी छलांग एकदम सही थी।
ऐसा करते ही उसके चारों ओर धूल उड़ने लगी और दावोन पर ध्यान केंद्रित कर रहे पहरेदार उसकी ओर मुड़ गए।
'कौन है…'
वे आगे कुछ बोल नहीं सके, क्योंकि डावोन को बस इसी एक चीज़ की ज़रूरत थी।
उसने तुरंत उनमें से दो पर हमला किया और एक को काट लिया।
दो गार्ड उसकी ओर बढ़े।
उसने खंजर अपने मुँह से निकाला और खुद को तैयार किया। जैसे ही वे करीब आए, वह झुक गई और लुढ़क गई, उसकी पीठ कंकड़ों से दब गई। उसने तेज़ी से एक सैनिक की पिंडली की नसें काट दीं। और अपने पैरों से दूसरे को नीचे गिरा दिया। दर्द से चीख उठी और उसका दिल तनाव से ज़ोर से धड़कने लगा। उसने मुड़कर देखा तो एक विशाल भाला उसके बाघ की छाती में जा लगा था और वह ज़मीन पर गिर पड़ा था। पहरेदार बेरहमी दिखा रहा था।
और जैसे ही वह उसे बचाने के लिए आगे बढ़ी, जिस गार्ड को उसने लात मारी थी, वह उसकी पीठ पर कूद गया और वह भी जमीन पर गिर गई।
उसने तलवार को उसके गले के पास ला दिया।
एक पल के लिए उसकी और डावोन की नज़रें मिलीं। वे अलग-अलग प्रजातियों के थे, लेकिन उनके बीच गहरा जुड़ाव था। वह देख सकती थी कि डावोन असहनीय दर्द में था।
फिर उसने अपनी जीभ के अंदरूनी हिस्से को चटकाया, जिससे एक ऐसी ध्वनि निकली जिसका अर्थ था:
एक आखिरी हमला। तुम कर सकते हो।
डावोन गुर्राया और अपने पंजों से तेज़ी से वार करते हुए भाला पकड़े हुए रक्षक की छाती में घुस गया। रक्षक खून बहते हुए वहीं गिर पड़ा। अफसोस, डावोन ज़मीन पर बेसुध पड़ा रहा क्योंकि भाला अभी भी उसके शरीर में धंसा हुआ था।

मुझे उम्मीद है कि वह ठीक हो जाएगा।
उसके गले के पास रखी हुई धारदार तलवार करीब आती गई और वह जान गई कि वह उसे मार डालेगा, उसका गला काट देगा, तभी...
उसने गार्ड की बांह को तब तक काटा, जब तक उसे उसके नमकीन खून और उसके घिनौने मांस का स्वाद नहीं आ गया।
वह चीख उठा, और उसकी गर्दन पर लिपटी तलवार ढीली पड़ गई। उसने उसी क्षण का फायदा उठाते हुए ज़ोर से करवट बदली, जिससे उसकी पीठ पर बैठा रक्षक एक तरफ गिर गया।
वह खड़ी हुई और सबसे पहले उसने दावोन की ओर दौड़ लगाई और उसके बगल में घुटने टेक दिए।
‘क्या मुझे इसे बाहर निकाल देना चाहिए?’ उसने पूछा।
वह गुर्राया।
उसने सिर हिलाया और भाले के मोटे लकड़ी के डंडे को हाथों से पकड़ लिया। एक झटके में उसने उसे बाहर खींच लिया। दावोन दर्द से कराह उठी और फिर बिल्ली की म्याऊं जैसी आवाज निकाली। उसने भाले को क्षत-विक्षत शवों के पास फेंक दिया ताकि नुकसान का जायजा ले सके। घाव गहरा और भयानक था।
लेकिन यह ठीक न होने वाली स्थिति नहीं थी। डावोन को अभ्यास के दौरान और भी ज्यादा तकलीफ होती थी और वह अक्सर उठकर ऐसे व्यवहार करता था जैसे कुछ हुआ ही न हो।
‘तुम ठीक हो जाओगी। बस एक-दो दिन आराम की ज़रूरत है। मैं तुम्हारे लिए आयुर्वेदिक दवाइयाँ ले आती हूँ।’ उसे पता था कि इन चौकियों पर दर्द निवारक दवाइयों वाले अस्पताल हैं। ‘लेकिन अभी के लिए…’ उसने अपनी धोती के निचले हिस्से से एक बड़ी पट्टी फाड़ी और खून बहना रोकने के लिए उसे घाव पर बाँध दिया। ‘बस इसे हिलाना मत।’
डावोन ने धीरे से गुर्राया और उसने उसके सिर पर थपथपाया।
मैंने तुमसे कहा था कि अगर तुम्हें चोट लगे तो पीछे हट जाना।
लेकिन उसने देखा कि उसका दोस्त अपना सिर वापस जमीन पर रखने से पहले अनिच्छुक और जिद्दी था। उसकी त्वचा के चमकीले नारंगी और सफेद रंग गहरे लाल रक्त के साथ मिल गए थे।

4

वह हांफते हुए जाग उठी।
लेकिन उसका शरीर नहीं हिल रहा था। वह बिस्तर पर लकवाग्रस्त हो गया था, और उसे महसूस हो रहा था कि उसके हाथ-पैर गद्दे से चिपक गए हैं। उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह सिर्फ अपना चेहरा ही हिला पा रही थी। वह बोल नहीं पा रही थी।
और फिर उसने उन्हें देखा।
वे आ गए थे। सारे बच्चे। वे हंस रहे थे। वे उंगलियां दिखा रहे थे। उनके चेहरे जाने-पहचाने थे।
नहीं…नहीं…ये असली नहीं हैं, उसने मन ही मन रोते हुए कहा।
'प्रेता! प्रीता!' उन्होंने उसे बुलाया।
उन्होंने कहा कि वह एक भूत थी। वह भूत की तरह सफेद थी।
लेकिन यह उसकी समस्या नहीं थी। समस्या तो उसके जन्म की थी। वह बेहद गोरी थी और उसकी आँखें चौड़ी और चमकदार लाल थीं। बच्चे उसे जन्मजात राक्षस कहते थे।
और भले ही वह बीस साल की थी, फिर भी वे उस पर उंगली उठा रहे थे। बच्चे। वे हंस रहे थे। वे उसकी नाक खींच रहे थे। वे उसे थप्पड़ मार रहे थे।
और फिर उसने खुद को घुलते हुए पाया। एकदम गहरे, काले कीचड़ में। ये बच्चे उसे कीचड़ में धकेल रहे थे, जो कभी उसका गद्दा हुआ करता था। अंधेरा उसे घेर रहा था।
वह गंदी थी। उससे बदबू आ रही थी।
उसने गलती से मिट्टी निगल ली और उसका दम घुटने लगा, तभी उसे एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी:
‘गौरी!’
‘गौरी!’
उसे महसूस हो रहा था कि कोई और उसे हिला रहा है।
और वह जाग गई।
एक पल के लिए, वह बस अपनी साँसों को गिनती रही। वह खाली छत को देखती रही।
उसका चेहरा पसीने से भीगा हुआ था। उसने अपने हाथ-पैर हिलाने की कोशिश की,

और जब वह ऐसा कर पाई तो उसे राहत मिली। उसकी साँसें स्थिर हुईं, और उसने एक गहरी साँस ली। उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।
मैं जिंदा हूँ। यह सब बस एक बुरा सपना है।
‘गौरी, क्या तुम ठीक हो?’ उस आवाज ने उसे वर्तमान में वापस खींच लिया।
वह उसकी सहेली थी, जिसके साथ वह एक छोटे से कमरे में रहती थी। उसका नाम ऐरावती था और वह गौरी की छाती पर हाथ रखे, बड़ी-बड़ी चिंतित आँखों से उसे देख रही थी।
‘हाँ। हाँ, मैं हूँ, उह…’
मैंने देखा कि तुम फिर से संघर्ष कर रहे थे। कांप रहे थे और हिलने की कोशिश कर रहे थे।
‘मुझे जगाने के लिए धन्यवाद।’
'बुरा अनुभव?'
गौरी ने खुद को सीधा किया और दीवार के सहारे पीछे झुक गई। 'हां,' उसने धीमी आवाज में जवाब दिया।
ऐरावती यह नहीं पूछेगी कि वह क्या है; वह जानती थी कि गौरी उसे कभी नहीं बताएगी।
लेकिन यह उसके बचपन का भयानक सपना था। जब वह आठ साल की थी, तब उसके साथ दुर्व्यवहार करने वालों ने उसे दलदल में धकेल दिया था। यह बेहद दर्दनाक अनुभव था।
'हिलो मत।'
'क्या?'
गौरी ने कहा, 'हिलो मत।'
‘क्या हुआ?’ ऐरावती ने चिंता भरी निगाहों से उसे घूरकर देखा।
गौरी का हाथ धीरे-धीरे ऐरावती के सिर की ओर बढ़ा और उसने उसे उस जीव के पास रख दिया जो उसकी उंगलियों पर चल रहा था। उसने उस जीव को चोट नहीं पहुँचाई, बल्कि उसे अपनी हथेली में थामे रखा।
‘यह क्या था?’ ऐरावती असमंजस में थी।
गौरी ने आठ पैरों वाली, हथेली के आकार की मकड़ी दिखाते हुए जवाब दिया, 'यह एक मकड़ी है।'
‘क्या…’ उसका चेहरा पीला पड़ गया, ‘क्या यह मेरे सिर पर था?’
'हाँ।'

'[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[['
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[, [[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

लेकिन गौरी के लिए यह बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं था। वह इसके बारे में काफी समय से जानती थी। उसने लोहे की खोपड़ी के मुखौटे पहनने वाले और अपने विशाल घोड़ों पर सवार विनाशकारी पनाओं के बारे में सुना था। कुछ लोग उन्हें पौराणिक किंपुरुष कहते थे, जो घोड़े और इंसान का संकर जीव थे। लेकिन ऐसा नहीं था। गौरी जानती थी कि यह सब झूठ था। मनगढ़ंत कहानियां थीं। शुक्र गौरी के सामने रुक गए। ‘आपको दूत के साथ हमारी बैठक में उपस्थित रहना होगा।’ उनकी आवाज़ भारी थी, मानो गले में कोई कफ फंसा हो जिसे वे लगातार निकालना चाहते हों लेकिन निकाल न पा रहे हों। उन्होंने ऐरावती को भी वहाँ उपस्थित रहने का निर्देश दिया।
किसी पुरोहित का दासों को निर्देश देना अजीब बात थी, लेकिन शुक्र राजधानी की रीढ़ थे। वे हर काम के संचालन को लेकर बेहद सख्त और सतर्क थे, और राज्य के मामलों से लेकर धार्मिक व्यवस्था तक, किसी और को अपनी ओर से बोलने की इजाजत नहीं देते थे। फिलहाल, दूत के साथ यह मुलाकात राज्य से संबंधित एक औपचारिक बैठक थी।
गौरी को उस मंदिर की याद आई जहाँ शुक्र अक्सर रहता था और जहाँ महिला दासियों को जाने की अनुमति नहीं थी। वास्तव में, किसी भी महिला को वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी। केवल पुरुष ही अंदर जा सकते थे।
अगर गौरी कभी किसी मंदिर में जाना चाहती, तो वो यही मंदिर होता। सिर्फ व्यवस्था के प्रशासकों को चिढ़ाने के लिए। सिर्फ शुक्र को चिढ़ाने के लिए।

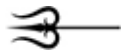

बैठक अच्छी चल रही थी—हंसी-मजाक चल रहा था, शराब पी जा रही थी और संतरे छीले जा रहे थे। शुक्र जब भी अपनी उंगलियां चटकाते, गौरी को आकर बनावटी मुस्कान के साथ फलों की टोकरी परोसनी पड़ती, जबकि ऐरावती अस्थायी मेज की तरह काम करती जिस पर शराब के गिलास रखे जाते थे। कुछ लेखक लकड़ी की मेजों पर पन्ने और स्याही से सजी कलम लेकर बैठे थे।
गौरी देख सकती थी कि उसकी सहेली की आँखों में आंसू आ रहे थे क्योंकि उसके हाथ-पैर दुख रहे थे। वह हिल भी नहीं सकती थी—अगर वह हिलती तो प्याले गिर जाते और उसे कोड़े पड़ते।

गौरी को अपनी सहेली के लिए गुस्से और अपमान के अलावा कुछ और महसूस नहीं हो रहा था। वह ऐरावती की मदद करना चाहती थी, लेकिन भारी कवच और हेलमेट पहने चार पहरेदारों ने उसके हाथ बांध रखे थे, और वे कमरे के चारों कोनों में खड़े होकर बस बैठक को होते हुए देख रहे थे।
गौरी ने एक सांवले रंग के दूत को देखा जिसने एक अजीब सी टोपी और बहुरंगी वस्त्र पहन रखे थे। उसके लहजे से वह समझ गई कि वह मिस्र का है। उसने अपने काम के दौरान कई मिस्रवासियों को देखा था।
लेकिन उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि यह आदमी उसे शिकारी की निगाहों से क्यों देख रहा है। वह उसे चबा जाना चाहता था, और उसकी आँखें भूखी थीं।
दूत ने पूछा, 'प्रधानमंत्री तामार कहाँ हैं? मुझे उम्मीद थी कि वे यहाँ होंगे।'
शुक्र ने मजाक में कहा, 'आप मुझे नाराज कर रहे हैं, महोदय, क्योंकि आपके साथ इतनी अच्छी संगत है और आप उसके बारे में चिंता करते हैं।'
'बिल्कुल नहीं। मैं बस यह जानना चाहता हूं कि इस समृद्ध राज्य के प्रधानमंत्री के लिए फिरौन के साथ आपका संबंध कितना महत्वपूर्ण है।'
एक पल के लिए शुक्र उस व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी से चौंक गए। ‘बेशक, ऐसा ही है, लेकिन मैं विदेश संबंध संभालता हूँ जबकि वह घरेलू मामलों को देखता है,’ उन्होंने हँसते हुए कहा, जिससे दूत भी शिष्टाचारवश हँस पड़ा। ‘देखो, जात लापिस,’ उन्होंने दूत के मंत्री के पदनाम का जिक्र करते हुए कहा, ‘हम फिरौन के साथ काम करना चाहते हैं। और मुझे यकीन है कि इस समय आपको किसी भी अन्य देश की तुलना में कहीं अधिक गर्मजोशी से स्वागत मिला होगा। हम यहाँ उत्तम सोना निकालते हैं जिसका मिस्र में अच्छा व्यापार हो सकता है और हम इसे आपके साथ अपने संबंधों में शामिल करने के लिए तैयार हैं।’
और बदले में, आप मसाले चाहते हैं? यह तो एक अजीब सौदा है।
गौरी के लिए यह बात मायने नहीं रखती थी। उन्हें राजनीतिक इतिहास का अच्छा ज्ञान था और मसाले भोजन को सुगंधित करते थे, और जंबूद्वीपवासियों को भोजन से बेहद लगाव था। सेनाओं को नियमित रूप से भोजन कराना पड़ता था, और जनता को भी। धनिया और अजवायन जैसे मसालों में औषधीय गुण होते थे और इन्हें आयुर्वेदिक औषधियों में मुख्य सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता था।

‘हमारे अपने कारण हैं। देखिए, एक तरह से देखा जाए तो यह महज़ एक औपचारिकता है। हमारा यह सौदा। जात लापिस, हमारी सबसे महत्वपूर्ण इच्छाओं में से एक यह है कि हम फ़राओ के साथ वर्तमान से भी अधिक मजबूत संबंध स्थापित करें। ताकि यदि कोई शत्रु हमारे किसी भी देश पर हमला करे, तो हम एक-दूसरे का साथ दें।’
लेकिन मैंने सुना है कि आप सिथियनों का साथ देते हैं। उन्होंने अतीत में हमारे साथ छोटी-मोटी लड़ाइयाँ लड़ी हैं।
“हम उन बहिष्कृत स्किथियनों के साथ हैं। उत्तर-पश्चिमी सीमांतों के लोगों के साथ नहीं। दोनों में अंतर है। हम कभी भी अपने किसी मित्र को उसके शत्रु से मित्रता करके नाराज नहीं करना चाहेंगे।”
दूत ने इस पर विचार किया। वह प्राप्त हो रही हर चीज़ से प्रभावित प्रतीत हुआ। मिस्र के लिए सोना लाभदायक था क्योंकि उनकी मुद्रा प्रणाली पूरी तरह से गड़बड़ हो गई थी।
'मैं यह संदेश फिरौन को पहुंचा देता हूं और देखते हैं कि वह क्या सोचता है।' शुक्र ने अपने घिनौने लहजे में कहना शुरू किया, 'सवाल यह है कि क्या आप उसके लिए सिफारिश करेंगे?'
वह सोचने लगा। ‘ज़रूर, गुरुजी।’ जब उसने देशी शब्द बोला तो उसके लहजे में विदेशीपन झलक रहा था। ‘मुझे आपकी मेहमाननवाज़ी और आपके…’ वह गौरी की ओर देखते हुए, होंठ चाटते हुए बोला, ‘लोग’ बहुत पसंद हैं। गौरी कांप उठी, उसकी टोकरी में रखे सेब हिलने लगे। उसकी निगाहें भेदक और… डरावनी थीं।
शुक्र ने देखा लेकिन बनावटी मुस्कान दी। 'ज़रूर।'
‘मुझे लगता है कि हमारा काम हो गया है। बाकी मामलों पर आगे चर्चा करने के बाद मैं अगले हफ्ते तक चली जाऊंगी,’ लापिस ने गौरी की ओर बढ़ते हुए और उसके करीब आते हुए कहा।
शुक्र उन लेखकों को सूचित कर रहा था जो बैठे हुए उन दोनों के बीच की बातचीत लिख रहे थे, तभी लापिस ने गौरी के करीब आने का मौका पाकर कहा: 'तुम कितनी खूबसूरत हो। तुम्हारी त्वचा... यह तो ब्लीच की हुई लग रही है,' उसने विस्मय और घृणा के मिले-जुले भाव से कहा।
गौरी ने एक शब्द भी नहीं बोला। यह नियम का हिस्सा था। मेहमानों से बात न करना, बल्कि स्थिर रहना। लेकिन उसका मन चीखने का कर रहा था।

‘क्या तुम्हें कोई बीमारी है, लड़की?’ उसके जवाब का इंतजार किए बिना, उसने अपने हाथों को उसके गले के चारों ओर इस तरह लपेट लिया मानो वह उसकी बनावट को महसूस करने की कोशिश कर रहा हो।
गौरी कुछ नहीं बोली।
'मैं तुम्हारे साथ सोना चाहूंगा, लड़की। आज रात एक बीमार महिला मेरे लिए अलग होगी। मैं हमेशा स्वस्थ महिलाओं के साथ रहा हूं।'
गौरी हिली नहीं। लेकिन वह रोना चाहती थी। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी आँखों में पानी भर आया है।
और फिर वह और करीब आया, उसे सूंघते हुए, और अपने मोटे, घिनौने होंठ उसकी उंगलियों पर रख दिए, और अपनी सर्प जैसी जीभ से उन्हें चाटने लगा।
मैं इस टोकरी को उसके सिर पर पटक दूंगा।
वह ठीक ऐसा ही करने वाली थी कि शुक्र ने बीच में आकर उसे बाधित कर दिया: ‘जात लापिस, दो महिलाएं आपके कमरे में आपकी उपस्थिति की प्रतीक्षा कर रही हैं।’
‘क्या सच में?’ उनकी भौंहें उत्साह से ऊपर उठ गईं। ‘आप और आपका आतिथ्य सत्कार, गुरुजी,’ वे हँसे। ‘अन्य देशों को आपसे सीखना चाहिए।’
शुक्र मुस्कुराया। गौरी को राहत की एक गहरी सांस महसूस हुई।
'लेकिन मैं उसे चाहता हूँ। वह जोशीली लगती है,' उसने गौरी की ओर इशारा करते हुए कहा, जिससे गौरी एकदम सीधी खड़ी हो गई।
शुक्र के पास अब कोई बहाना नहीं था। 'दुर्भाग्यवश, जात लापिस, वह वेश्या नहीं है। वह एक नौकरानी है। हमारी भूमिकाएँ हमें अच्छी तरह से सौंपी गई हैं।'
लैपिस बहस करना चाहता था और शुक्र उसे भावहीनता से देख रहा था, इस इंतज़ार में कि वह कुछ ऐसा कहे जिसे वह अपने दयालु लेकिन व्यंग्यपूर्ण शब्दों से दबा सके। लेकिन लैपिस मान गया।
‘जैसा आप कहें, गुरुजी। मैं आपके घर आया हूँ।’ जाते समय उनके शब्द भले ही सीधे-सादे लग रहे थे, लेकिन उनकी आवाज़ में ज़हर भरा था।
शुक्र भी चला गया।
तभी गौरी ने राहत की सांस ली। उसे महसूस हो रहा था कि उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा है, मानो उसकी पसलियों से बाहर निकल आएगा। उसके घुटने कांपने लगे और वह ज़मीन पर बैठ गई। टोकरी उसके हाथ से गिर पड़ी और वह उस उंगली को

कालीन पर ज़ोर से पोंछने लगी जिसे उसने चाटा था, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे।
उसने गौरी को देखा जो अब ज़मीन पर सीधी लेटी हुई थी, गहरी साँस ले रही थी क्योंकि लंबे समय तक मेज़ की तरह रहने के कारण उसकी पीठ में दर्द हो रहा था। गौरी ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और दोनों ने एक-दूसरे को थाम लिया। जितने कम समय के लिए वे ऐसा कर सकते थे।

डजात लापिस का दिन काफी थका देने वाला रहा।
वह पसीने से तरबतर, थका हुआ और नग्न था, जबकि दो गोरी चमड़ी वाली महिलाएं उसके बिस्तर के दोनों ओर उसके बगल में झपकी ले रही थीं। वह दुबला-पतला लेकिन मजबूत आदमी था, और गद्दे की चादरें सिकुड़ी हुई थीं। बिस्तर के चारों ओर लगे पर्दे उसके लिए अस्थायी सुरक्षा कवच का काम कर रहे थे।
उसने पानी का जग उठाया, जिससे उसके गले को आराम मिला। उसे अपना काम पसंद था। विदेशी जगहों पर जाना। विदेशी महिलाओं के साथ समय बिताना।
यह काम से ज़्यादा आराम था। लेकिन शुक्र ने आज जिस तरह से हालात संभाले थे, उससे वह खुश नहीं था। वह उस अजीब लड़की को पाना चाहता था। वह उसे ज़बरदस्ती पकड़ना चाहता था, उसके चेहरे पर थप्पड़ मारना चाहता था और उसे बिस्तर पर अपनी लाड़ली बनाना चाहता था। लेकिन शुक्र ने खुद को रोका, और वह एक औरत के चक्कर में जंबूद्वीप से अपने रिश्ते खराब नहीं करना चाहता था।
उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और सो गया, लेकिन थोड़ी देर बाद जब उसने अपने शरीर पर, चादर के ठीक नीचे कुछ महसूस किया तो उसकी नींद खुल गई।
कुछ हिल रहा था।
उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं और अपना लिंग देखने के लिए चादर हटाई।
और जब उसने अपने सबसे निजी अंग के ठीक बगल में अपने हाथ के बराबर बड़ी मकड़ी को देखा तो उसकी आंखें भय से चौड़ी हो गईं।
मकड़ी ने इंतजार नहीं किया। उसने अपने नुकीले दांत लिंग की पतली त्वचा में गड़ा दिए।
और लैपिस इतनी जोर से चीखी जितनी सालों में किसी ने नहीं चीखी थी।

और यही वजह थी कि गौरी उससे नफरत करती थी।
वह राक्षसीपन का साक्षात उदाहरण था। और वह इस बात से खुश थी कि अगले आठ दिनों में उसे मार डाला जाएगा। इस ऑपरेशन को नौ रातों का अभियान कहा जाता था।
वह उस पर चाकू से वार करेगी।
दुर्गा के साथ।
आखिरकार, गौरी उसी के लिए काम करती थी।

5

जब वह बच्ची थी, तब उसने एक आदमी की हत्या कर दी थी।
वह उस लड़की के साथ ज़बरदस्ती कर रहा था। वह उसे ज़मीन पर पटक रहा था, उसे बेरहमी से पकड़ रहा था। वह उसे चूम रहा था। वह लड़की सिर्फ़ आठ साल की थी, लेकिन उस आदमी को इसकी कोई परवाह नहीं थी। उसे छोटी लड़कियाँ पसंद थीं। उसे उन्हें छूना और उन पर ज़बरदस्ती करना अच्छा लगता था। और इसलिए, जब उसने उसके पैरों के बीच लात मारी और वह दर्द से कराह उठा, तो उसने पास पड़ा पत्थर उठाया और सीधे उसके सिर पर दे मारा।
वह मृत पड़ा था। उसकी खोपड़ी चकनाचूर होकर दो टुकड़ों में टूट गई थी।
एक पल के लिए वह पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गई। न आंसू, न रोना। उसे महसूस हो रहा था कि वह धीरे-धीरे अपने परिवेश से अलग हो रही है और जब तक उसका भाई उसे ढूंढ पाया—
वह अब पहले जैसी इंसान नहीं रही थी।
बारह साल बाद, चारिणी अपनी प्रेमिका सुलोचना के साथ एक बाजार में थी। वह एक दासी के रूप में काम करती थी और वह अपनी जलपा माला हर जगह अपने साथ रखती थी — मोतियों की एक माला जो भगवान शिव में उसकी आस्था का प्रतीक और भौतिक रूप थी।
और जब भी भीड़ भरी सड़क पर वह गलती से किसी पुरुष से टकरा जाती, तो उसे अपने बचपन के उस दरिंदे का स्पर्श महसूस होता। चारिणी अपने शरीर को इतने कपड़ों से ढक लेती कि उसकी त्वचा किसी दूसरे व्यक्ति के स्पर्श से कभी भी न टकराए। किसी भी तरह से नहीं। और उस पुरुष पर किए गए उस एक कृत्य के बाद उसने हिंसा से परहेज किया था। वह कभी पकड़ी नहीं गई, क्योंकि अदालतों से वह बच गई थी।
लेकिन वह जानती थी कि वह इसे फिर कभी नहीं दोहराएगी। हत्या। हिंसा।
और इसलिए, जब वह दुर्गा के अधीन काम करने के लिए सहमत हुई, तो उसकी केवल एक ही शर्त थी: उसे किसी को मारने के लिए मत कहना। बस इतना ही।
वह ब्रह्मचारिणी बन गईं और उन्होंने स्वयं को महादेव को समर्पित कर दिया।
लेकिन इसका यह अर्थ नहीं था कि वह दुर्गा के धर्मयुद्ध में स्वयं को समर्पित नहीं करेंगी।
‘क्या तुम्हें यह पसंद है?’ उसकी मालकिन ने पूछा, जिस पर चारिणी ने सरलता से सिर हिलाकर सहमति जताई।

वे सैकड़ों लोगों के बीच व्यस्त बाज़ार के मध्य में थे। सुलोचना को यहाँ सड़क किनारे बिकने वाले मोती और हार देखना अच्छा लगता था। वह दुकानदारों को घर बुलाने के बजाय यहीं से खरीदना पसंद करती थी।
चारिणी जानती थी कि सुलोचना ने ऐसा क्यों किया। उसे दिन भर महल में बंद रहना पसंद नहीं था। लेकिन चारिणी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा।
वह दुबली-पतली महिला थी, मुश्किल से पाँच फीट लंबी, गोल चेहरे पर गहरे काले घेरे और फीके, सफेद होंठ। वह अक्सर सफेद कपड़े पहनती थी क्योंकि वह अपने चेहरे की तरह अपने रंग को भी फीका रखना चाहती थी। उसे याद था कि बहुत समय पहले वह कैसी थी—हमेशा खुशमिजाज, जब तक कि उस घटना ने उसे झकझोर कर रख दिया और उसे… भावनात्मक रूप से सबसे दूर कर दिया।
गांव के मुखिया ने उससे कहा था कि उसने सदमे को स्वीकार कर लिया है और उसे खुद पर हावी होने दिया है; इस वजह से वह भावनाहीन हो गई है, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी। जब तक वह जीवित थी, किसी नेक काम के लिए काम कर रही थी, उसे कोई आपत्ति नहीं थी, भले ही वह जानती थी कि सदमे को हावी होने देने के बजाय उसे स्वीकार करना चाहिए। वह जानती थी कि उसमें एक कमी है, लेकिन उसने इसे नजरअंदाज कर दिया।
‘मैं तुमसे पूछ ही क्यों रही हूँ? तुम्हें तो परवाह ही नहीं। तुम्हें…’ सुलोचना ने मोती चारिणी के कानों के पास रख दिए। ‘तुम्हें इसे पहनना चाहिए। मैं तुम्हारे लिए खरीद दूँगी।’
सुरक्षा व्यवस्था कड़ी थी। सुलोचना और चारिणी के आसपास पांच गार्ड गश्त कर रहे थे।
'नहीं, धन्यवाद, महोदया,' चारिनी ने बिना मुस्कुराए कहा।
सुलोचना कराह उठी और कप्तान की ओर मुड़ी, जिसकी जिम्मेदारी सुलोचना की सुरक्षा की थी। 'बाश्कला, तुम मोती क्यों नहीं ले आती?'
वह एक बलवान व्यक्ति था, जिसकी लचीली त्वचा पर रेज़र से कटी हुई दाढ़ी थी और घने, लहराते बाल उसकी गर्दन तक लटकते थे। बाश्कला ने गहरे रंग का कवच पहन रखा था और दूर से देखने पर वह डरावना लगता था। लेकिन पास से देखने पर, उसके चेहरे पर चारिणी द्वारा देखी गई सबसे प्यारी मुस्कान थी।
‘महामहिम, मुझे लगता है कि ये मुझ पर जंचेंगे नहीं,’ वह हंसते हुए बोला। सुलोचना ने धीमी आवाज़ में कहा, 'ठीक है। चलो अब आगे बढ़ते हैं।'

उन्होंने बाज़ार की उन दूसरी झोपड़ियों की जाँच शुरू की जो सड़क के बीचोंबीच थीं। वहाँ कुछ लोग ताज़ा ख़बरें सुना रहे थे, साथ ही फल, मसाले और सब्ज़ियाँ बेची जा रही थीं। मलमल का कपड़ा और कुछ घरेलू सजावट का सामान भी बिक रहा था। सुलोचना जैसी महिला के लिए तो ये सब और भी सस्ता था।
वह एक खूबसूरत महिला थी। जब चारिणी ने उसे पहली बार देखा, तो वह उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो गई। उसकी गोल आँखें थीं और काजल लगाने का उसका अनोखा तिरछा तरीका था। उसके होंठ चेरी रंग के थे और उसके सीधे, काले बाल टखनों तक लहराते थे जिन्हें वह बड़ी खूबसूरती से गूंथती थी। यह कहना गलत नहीं होगा कि चारिणी अपनी मालकिन की सुंदरता से ईर्ष्या करती थी।
जब सुलोचना दुकानों में सामान ढूंढने में व्यस्त थी, तब बाश्कला ने चारिणी के कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'मोती तुम पर ज्यादा अच्छे लगते।'
'मुझे परवाह नहीं,' चारिनी ने सपाट लहजे में कहा।
‘तुम इतने अजीब क्यों हो? तुम्हारी आवाज़...’
उसने उसे तीखी नजरों से देखा। लेकिन फिर भी उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। 'अगर तुम्हें लगता है कि मैं अजीब हूँ, तो तुम्हें मुझसे बात करने की जरूरत नहीं है।'
‘देखो, तुमने जिस तरह से ये बात कही, उसमें जरा भी…गुस्सा नहीं था।’
‘क्या तुम चाहते हो कि मैं गुस्सा हो जाऊं?’
‘मैं चाहता हूं कि आप किसी न किसी तरह की भावना व्यक्त करें। ऐसे धूप भरे दिन के लिए यह अच्छा रहेगा।’
जैसे ही सुलोचना बाज़ार के अंत की ओर बढ़ रही थी, चारिणी ने देखा कि दो अजनबियों के बीच झगड़ा हो रहा है। मालकिन वहाँ पहुँच ही गई थी कि चारिणी ने उसका हाथ पकड़कर उसे खींच लिया, जबकि बाश्कला चिल्लाते हुए स्थिति को शांत करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन वे लोग नहीं रुके। उन्होंने बाश्कला को धक्का देना शुरू कर दिया, इसलिए उसके अन्य अंगरक्षकों ने आकर स्थिति को संभाला और उसे पीटना शुरू कर दिया।
वहाँ बहुत अफरा-तफरी मची हुई थी। बहुत से लोग एक-दूसरे को धक्का-मुक्की करने लगे। चारिणी लोगों की भीड़ में खो गई और एक पल के लिए लगभग भ्रमित हो गई, उसकी धुंधली दृष्टि उस समय की ओर लौट गई जब उसके भाई को महिषा के आदमियों ने उनके शिविर से चोरी करने के आरोप में मार डाला था।
वह वहां चारिणी के लिए चोरी करने गया था, क्योंकि वे अनाथ और गरीब थे।

चारिणी भूखे पेट जंगल में उसका इंतजार कर रही थी।
लेकिन यह इंतजार बारह साल तक चला।
वह शिविर से कभी वापस नहीं लौटा, और बाद में उसे पता चला कि उसे सूली पर चढ़ाकर प्रदर्शित किया गया था ताकि यह दिखाया जा सके कि महिषा के नए साम्राज्य में चोरी स्वीकार्य नहीं थी, विशेषकर उसके सम्मानित देशवासियों से।
उसने पलकें झपकाईं और यह देखकर चौंक गई कि बाशकला उसके सामने खड़ी है। ‘लेडी सुलोचना कहाँ हैं?’
'क्या?'
‘वह कहाँ है?’ उसने कर्कश स्वर में पूछा।
‘मैं उसे पकड़े हुए थी…’ उसने हाथ की तरफ देखा और पाया कि वह खाली था। Sulochna had vanished.

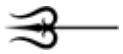

बाजार के हंगामे से दूर, चारिणी अपने कमरे के फर्श पर बैठी थी, क्योंकि बाश्कला के आदमी संदिग्धों से पूछताछ कर उन्हें जेल में डाल रहे थे।
उन्होंने सुलोचना को ढूंढने के लिए पूरे बाजार को खाली करा दिया था, लेकिन सब व्यर्थ प्रतीत हुआ।
जब बाश्कला अंदर आया, तो चारिणी ने खुद को बाहों में भर लिया हुआ था और उसका चेहरा पीला पड़ गया था।
‘वह चली गई। तुमने उसे अपनी नजरों से ओझल कैसे होने दिया?’ उसने रूखेपन से कहा।
‘वह बच्ची नहीं है, कप्तान। फिर भी मैंने उसका हाथ पकड़ा हुआ था। मुझे लगा कि वह मेरे साथ है और मुझे आसपास कोई संदिग्ध व्यक्ति नहीं दिखा,’ उसने उसे डांटते हुए कहा।
उसने अपने नथुने फुला लिए।
'आपको क्या लगता है वो क्या है?'
‘ज़ाहिर है, अपहरण का मामला था। झगड़ा तो नकली था। जब हमने दोनों लड़ाकों को पकड़ा, तो उन्होंने कबूल किया कि उन्हें एक नकाबपोश अजनबी ने हंगामा खड़ा करने के लिए पैसे दिए थे। हम उनसे और जानकारी हासिल करने के लिए

पूछताछ करेंगे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन्हें ज़्यादा कुछ पता है,’ बाश्काला ने निराशा में आह भरते हुए उसे बताया।
चारिनी ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। इंसान? उसे खुशी थी कि उन्होंने यह नहीं बताया कि वह एक महिला है।
इन आदमियों के पास जाते समय उसने अपना वेश बहुत अच्छे से बदल लिया था। वे एक यात्रा करने वाले मंडली के कलाकार थे। और उन्हें उस अपहरण में शामिल होने का खामियाजा भुगतना पड़ेगा जिसके बारे में उन्हें पता भी नहीं था।
लेकिन चारिणी को इसकी परवाह नहीं थी, जब तक काम पूरा हो जाता।
यह नौ रातों की पहली रात थी। उसकी ओर से मिशन का पहला भाग पूरा हो चुका था।
महिषापुर के प्रधानमंत्री तामार की पत्नी सुलोचना का आधिकारिक तौर पर अपहरण कर लिया गया था।

6

कारवार बंदरगाह से 70 मील दूर, आधुनिक कर्नाटक में...
मिशन सरल था।
दुर्गा के लिए काम करने का मतलब था तीन से पाँच साल तक गुप्त रूप से रहना। प्रत्येक प्रतिभागी महिषा के साम्राज्य की सामाजिक व्यवस्था में धीरे- धीरे अपनी जगह बनाता। सबके सामने छिपे रहते हुए। वे एक भूत की तरह प्रवेश करते और ऐसा व्यवहार करते जैसे वे अपने सर्वोच्च राजा के अनुयायी हों। चारिणी को तामार के करीब जाना था और गौरी को शुक्र के करीब। और जब नौ रातों का चक्र शुरू होता, तो मोहरों को नष्ट करने का उनका असली काम भी शुरू हो जाता। क्योंकि उनका लक्ष्य महिषा को जंबूद्वीप के नक्शे से मिटाना था। जबकि बाकी सभी दल के सदस्य गंभीर और दृढ़ निश्चयी थे, चंद्रा ही एकमात्र ऐसी थी जो अपने मिशन को हल्के-फुल्के अंदाज में लेती थी, क्योंकि यही उसका काम था। वैसे भी, वह जन्म से ही चंचल स्वभाव की थी। वह अकेली ऐसी थी जिसके पास दुर्गा के अभियान में शामिल होने का कोई निजी कारण नहीं था। उसने यह सिर्फ इसलिए किया क्योंकि वह एक क्रांति का हिस्सा बनना चाहती थी। और दुर्गा तो थी ही। साथ ही, जोखिम भरे और खतरनाक हालातों में रहना हमेशा अच्छा लगता था।
इसलिए, जब उसे नवताकवेचाओं - समुद्री लुटेरों के एक समूह - के करीब जाने के लिए कहा गया, तो उसने खुशी-खुशी अपना काम स्वीकार कर लिया और कड़ी मेहनत करते हुए रैंक में ऊपर चढ़कर एक नाविक बन गई।
नवतकवेच एक वैध समुद्री लुटेरों का समूह था, जिन्हें महिषा ने सिंधु सागर में चलने वाले अधिकृत विदेशी जहाजों या विद्रोही जहाजों की अवैध लूटपाट और डकैती करने का अधिकार दिया था। उनके पास बेहतरीन हथियार और सबसे घातक सैनिक थे। वे नियमित रूप से अपनी जान जोखिम में डालते थे, और उनकी जीवन प्रत्याशा तीस वर्ष से अधिक नहीं थी। महिषा के लिए काम करते हुए भी, वे लूट का एक हिस्सा अपने राजा को देने से पहले खुद रख लेते थे। महिषा को इस प्रथा की जानकारी थी, लेकिन उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि वे अपना काम बखूबी करते थे।
इसलिए, चंद्रा को इस बात की खुशी थी कि वह लगातार तीन साल तक जहाज पर टिकी रही—पहले तो जहाज पर एक महिला होने के कारण उसका उपहास किया गया, फिर उसने

अपने कौशल का प्रदर्शन करके एडमिरल को प्रभावित किया, और अंत में उसने भोजन और पानी के भंडारण को व्यवस्थित करने में अपनी दक्षता साबित की। उसने लंबे समय तक अथक परिश्रम करके यह पद हासिल किया था।
जब चंद्रा का दिन शुरू हुआ, नौ रातों के पहले दिन, तो उसने वह पत्र फिर से देखा जिसे उसने अपने बिस्तर के नीचे सुरक्षित रखा था। यह पत्र उसे कारवार मछली बाजार में एक युवा संदेशवाहक ने दिया था, और उसमें लिखा था:
नौ रातों का सिलसिला शुरू हो गया है।
जहाज पांचवें दिन सीलोन से रवाना होगा।
बस इतना ही, साथ ही उसे कुछ निर्देशांक भी दिए गए थे जिनकी मदद से वह अपनी यात्रा शुरू करेगी।
श्रीलंका और जंबुद्वीप के बीच के मार्ग तक पहुंचने में अभी चार दिन और बाकी हैं।
समय के साथ दौड़? उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं था।
उफ़।

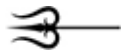

पदक्रम में नाविक का पद क्वार्टरमास्टर के ठीक नीचे था। उसका काम यह सुनिश्चित करना था कि भोजन ताज़ा हो। उसे चखना, उसमें आवश्यक बदलाव करना, भंडारण और लूट के लिए रखे गए बैरलों की लगातार जाँच करना, और यह अनुमान लगाना कि मैरेया नामक मसालेदार शराब कितनी पी जा रही है। और वे बहुत पीते थे।
उसे माल की भी जाँच करनी थी और यह देखना था कि कहीं कुछ गायब तो नहीं है। डेक की सफाई करनी थी। कप्तान के केबिन की भी। और बाकी सारी छोटी-मोटी चीज़ें भी। नवातकवेचास का क्वार्टरमास्टर बहुत झंझट वाला था।
उसका नाम उथारका था और उसकी नाक बाज जैसी थी। नुकीली, जिसमें बड़े-बड़े छेद थे। वह उसकी मोटी नाक का मज़ाक उड़ाती, लेकिन उसके चेहरे को देखकर मुस्कुराती। उसके बड़े कानों के किनारों पर सफ़ेद बाल थे और सिर गंजा और झुर्रियों वाला था। उसकी आँखें थकी हुई थीं, आँखों के नीचे गहरे काले घेरे थे, जिससे वह बूढ़ा दिखता था। वह उसके सामने तब आया जब वह रसोई में महिलाओं को निर्देश दे रही थी।

क्वार्टरमास्टर ने झट से पूछ लिया, 'तुम कब से लड़की की तरह दिखने लगोगे?' 'जब तुम महिलाओं के साथ बुरा बर्ताव करना बंद कर दोगे,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।
उसने आह भरी। 'कार्गो रूम में कुछ फैल गया है। इसे साफ करवाओ, महिला।' 'जैसा आप कहें, मेरे भले आदमी,' उसने झुककर अभिवादन किया, लेकिन मन ही मन उसे कोस दिया।
चंद्रा ने अपने बाल लड़कों जैसे छोटे कटवा रखे थे। बैंगनी रंग की लटों वाले छोटे बाल। उसका शरीर दुबला-पतला था और उसने धोती पहन रखी थी, जो लड़कों का पहनावा होता है और शरीर के निचले हिस्से को ढकने के लिए होता है, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी। कपड़े किसी के लिंग को परिभाषित नहीं कर सकते और वह यह जानती थी। उसके सीने के ऊपरी हिस्से पर एक कसा हुआ कपड़ा लिपटा हुआ था और उसके ऊपर तिरछे ढंग से एक शॉल ओढ़ा हुआ था। लेकिन सबसे आकर्षक था उसके माथे के बीचोंबीच हंसिया के आकार का चांद का चिन्ह, जो उसे आठ साल की उम्र में उसकी दादी ने सुई से बनवाया था। यह एक दर्दनाक और खून से लथपथ प्रक्रिया थी, लेकिन वह जानती थी कि इस चिन्ह का अर्थ है कि जीवन और मृत्यु एक मौसमी चक्र का हिस्सा हैं। और उसे यह विचार अच्छा लगता था, क्योंकि उसने अपनी माँ को खोने के तुरंत बाद यह बनवाया था।
अतीत की यादों को नजरअंदाज करते हुए, उसने वही किया जो उसे कहा गया था, मालवाहक कमरे की ओर बढ़ते हुए, तभी उसे मुख्य डेक से एक आवाज सुनाई दी— सभी ध्यान दें!
चंद्र और उथारका ने एक दूसरे की ओर देखा और फिर एडमिरल का सामना करने के लिए ऊपर की ओर चल दिए।
वह गहरे नीले रंग की धोती पहने हुए था, उसका शरीर गठीला और चोट के निशानों से भरा हुआ था, उसके बाल काले थे और पतली, घुमावदार मूंछें थीं। उसे एक साधारण नाविक से अलग दिखाने वाली एकमात्र चीज उसके चांदी के आभूषण थे जिन पर सांप की आंख बनी हुई थी। वहां तीन दर्जन लोग थे जिनमें चंद्र खड़ा था और बाकी लोग चप्पू चला रहे थे।
‘हम एक और विजय जुलूस में हैं,’ एडमिरल ने जहाज के किनारे पर खड़े होकर, पालों से जुड़ी कई डोरियों को पकड़ते हुए कहना शुरू किया। ‘पूरब की ओर देखो और समझो कि तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है।’

सभी ने उसकी ओर इशारा किया। चंद्र ने एक पोत देखा। वह एक त्रिपाषाणकालीन पोत था। एक पाल, कई मस्तूल, एक मोटा और चौड़ा ढाँचा, और सौ चप्पू। यह एक यूनानी पोत था जिस पर लगभग डेढ़ सौ नाविक सवार थे। यह किसी नौसैनिक युद्ध से लौट रहा हो सकता था या शायद माल पहुँचा रहा हो। कारण महत्वपूर्ण नहीं था। महत्वपूर्ण यह था कि...
‘हमें इसे गिराना होगा। यूनानी कभी भी राजा महिषा के सबसे बड़े सहयोगी नहीं रहे हैं। क्यों न हम थोड़ा मज़ा लें? वे सूअर का मांस, जैतून का तेल या मिट्टी के बर्तन ले जा रहे हों।’
“लेकिन यह तो त्रिविम है, हमारा तो प्लावा है,” नाविकों में से एक ने उदास स्वर में कहा, जंबुद्वीपवासियों के जहाज के प्रकार का जिक्र करते हुए—वह तूफानों का सामना तो कर सकता था, लेकिन त्रिविम की तुलना में उसमें कम लोग सवार हो पाते थे। “यह मुश्किल होगा।”
एडमिरल ने बोलने वाले व्यक्ति की ओर देखा। ‘तुम्हारा रवैया ही तुम्हें महान बनाता है, मेरे प्रिय मित्र। कभी यह मत मानो कि दुश्मन ताकतवर है। लड़ो। तब तक लड़ते रहो जब तक तुम्हें सफलता न मिल जाए,’ उन्होंने हवा में मुट्ठी उठाई।
वह एक आकर्षक व्यक्ति थे। और चंद्रा जब भी उन्हें देखती, मुस्कुराए बिना नहीं रह पाती थी। जब एडमिरल ने उसे मुस्कुराते हुए देखा, तो उन्होंने भी मुस्कुरा दिया। चंद्रा जानती थी कि वह उसे पसंद करते हैं। वह उससे छेड़छाड़ करते और उसके बैंगनी बालों की खूबसूरती की तारीफ करते। और वह सिर हिलाकर, झुककर चली जाती। शायद कभी-कभी खिलखिलाकर हंस भी देती।
‘क्या कहती हो, लड़की?’ उसने सौ सैनिकों के सामने पूछा। ‘हमारी योजना क्या होनी चाहिए?’
सबकी निगाहें उस पर टिकी थीं।
वह घबरा सकती थी, लेकिन उसने अपने दोनों हाथ कमर पर रखे और कहा: 'आक्रामक बनो। उन्हें पलटवार करने का समय दिए बिना उन पर हमला करो।'
‘ही-याह!’ एडमिरल मुस्कुराया। ‘यही तो जज़्बा है! चंद्र, मैं चाहता हूँ कि तुम इस बार जहाज पर चढ़ने में मेरा साथ दो।’
उसने आंखें चौड़ी करते हुए पूछा, 'सच में?'
'बिल्कुल, मेरी प्यारी बच्ची।'
उथारका ने बीच में ही दखल देते हुए कहा, 'वह एक महिला है, एडमिरल।'

क्या तुमने अभी कुछ देर पहले ही नहीं कहा था कि मैं लड़की जैसी नहीं दिखती? चंद्र ने सोचा।
‘समुद्र को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम मर्द हो या औरत। समुद्र को तो बस इस बात से मतलब है कि तुम्हारा जोश बुलंद है या नहीं,’ वह मुस्कुराया और ज़ोर से चिल्लाया। उसके आदमियों ने भी वैसा ही किया। ‘अपने ग्रैपलिंग हुक तैयार करो, जहाज़ को उनकी तरफ बढ़ाओ, तीरंदाजों को इकट्ठा करो और गुलेलें तैयार करो, मेरे प्यारे दोस्तों। हम युद्ध के लिए तैयार हैं!’
और एक पल के लिए, चंद्र को एडमिरल जैसे व्यक्ति के साथ होने पर खुशी हुई।

हमला बहुत तेजी से हुआ।
प्लावा (एक प्रकार का गोला) यूनानी जहाज की ओर बढ़ रहा था। एक पल के लिए विदेशी असमंजस में पड़ गए। उन्होंने दूरबीनें अपनी आँखों के पास लगा रखी थीं, वे देख रहे थे। और जैसे ही उन्होंने अपनी रक्षा की घोषणा करना शुरू किया, तीर चलने लगे।
एडमिरल ने आदेश चिल्लाकर दिए। तीरंदाजों ने तेल में डूबे तीर हवा में ऊँचाई तक फेंके, तूफ़ानी बादलों को ढकते हुए वे मूसलाधार बारिश की तरह बरसने लगे, यूनानी सैनिकों पर बरसते और उन्हें भेदते हुए। तीर उनकी आँखों के सॉकेट, खोपड़ी या टांगों में जा लगे, जिससे वे हिलने-डुलने में असमर्थ हो गए। यह अराजकता की बारिश थी।
आग के गोले दागने वाले गुलेल चलाए गए। चंद्रा देख सकता था कि लोग उन्हें सटीकता से भर रहे थे। गोले टकराए और आगे के मस्तूल, मुख्य मस्तूल और धनुषाकार मस्तूल के पास गड्ढे बना दिए।
अब आसमान से मूसलाधार बारिश होने लगी थी। बिजली कड़क रही थी।
‘जल के देवताओं से मत डरो, मेरे मित्रों! हमला करो! हमला करो!’ एडमिरल ने जोश से चिल्लाया। ‘क्वार्टरमास्टर! जहाज को चढ़ाई के लिए पास लाओ!’ क्वार्टर डेक से उथारका ने सिर हिलाया और तुरंत ढोल बजाना शुरू कर दिया, जिससे नाविकों को जहाज को यूनानी जहाज के करीब ले जाने का निर्देश मिला।
चंद्रा के हाथों में धनुष और बाण थे। और उसकी पीठ पर पीतल की ढाल थी।

तभी एडमिरल वहाँ से गुजरे, उसके पास आए और बोले: 'क्या तुम तैयार हो, लड़की?' उसके आदमियों ने जहाज पर चढ़ने के लिए आवश्यक तख्ते जुटाना शुरू कर दिया था।
फिर अराजकता की भयंकर आग उनके डेक पर बरस पड़ी। यह हमले की पहली लहर थी और चंद्र ने तुरंत ढाल निकाली और खुद को तथा एडमिरल को बचाया। तीरों के प्रहार से वह हिल गई, लेकिन घुटनों के बल बैठकर तब तक डटी रही जब तक हमले बंद नहीं हो गए। जब उसने अपनी ढाल देखी, तो उसे एहसास हुआ कि तीरों ने कांसे पर निशान बना दिए थे। उसने धनुष की सहायता से तीरों को हटाया और चौंके हुए एडमिरल की ओर मुड़कर पूछा, 'आप क्या सोचते हैं?'
वह मुस्कुराया। उसने अपने पूरे शरीर पर कुछ चिन्ह गुदवा रखे थे।
'फिर हम इसे करेंगे।'
दोनों जहाज आपस में टकरा गए और टक्कर से चकनाचूर हो गए। तख्ते दूसरे जहाज पर रखे गए और चंद्रा बाकी सैनिकों के साथ तेजी से आगे बढ़ी। तीर चलाते हुए उसने बारिश का पानी थूका।
एक वार दुश्मन के सिर पर लगा, तो दूसरे ने सीने पर। सब कुछ अफरा-तफरी में था। मानो स्तब्ध रह गया हो। सब कुछ तेजी से चल रहा था, पलक झपकते ही गुजर रहा था। चारों ओर खून और आंतें बिखरी पड़ी थीं। गीले तख्ते की वजह से वह बार-बार फिसल रही थी, पर उसे कोई परवाह नहीं थी। वह उठी और बहादुरी से लड़ी; यहां तक कि जब कोई तलवार लेकर पास आया, तो उसने उसे अपने धनुष से रोक दिया, एक तीर निकाला और उससे उस आदमी को घायल कर दिया, तीर उसकी आंख में गहराई तक घुसा दिया और फिर उसे बाहर निकाल लिया।
जैसे ही उसने कौवे के घोंसले में खड़े होकर तीर चला रहे धनुर्धारी पर अपना तीर साधा—
उसे धक्का देकर ज़मीन पर पटक दिया गया। वह एक बिना सिर वाले शव के पास गिरी। उठकर उसने चारों ओर देखा कि उसे किसने पीछे धकेला था। वह एक गोरे रंग का, हरी आँखों वाला यूनानी सैनिक था। एक क्रूर, उससे दुगना कद-काठी वाला, जिसके हाथ में तलवार थी। जैसे ही वह उसकी ओर बढ़ा, उसने अपनी ढाल पीछे से निकाली और उसके चेहरे पर दे मारी। ढाल उसके माथे पर ज़ोर से लगी और इस झटके से वह अचंभित हो गया। फिर उसने ढाल का किनारा उसकी छाती पर मारा और उसे नीचे गिरा दिया।
उसने उसे इतनी जोर से घूंसा मारा कि उसके सारे दांत टूट गए।

‘शाबाश, लड़की!’ उसने एडमिरल को कहते सुना। लेकिन दुश्मन के डेक पर उमड़ रहे उत्साह, आग और क्रोध के धुंधलेपन और खतरनाक उन्माद में वह उसे देख नहीं पा रही थी। उसकी आँखें उसे पकड़ने की कोशिश कर रही थीं, तभी उसकी नज़र मस्तूल तक जाने वाली लकड़ी की छड़ों पर पड़ी। देखने से लग रहा था कि वह यूनानी जहाज के कप्तान के साथ तलवारबाजी में उलझा हुआ था। एडमिरल शानदार और तलवार चलाने में फुर्तीला था, लेकिन तभी उसने देखा कि जहाज एक तरफ झुक रहा है।
उसने तीर निकाला और कप्तान पर निशाना साधा। तीर सीधे सिर पर लगा। वह वहीं गिरकर मर गया।
‘तुमने ऐसा क्यों किया?’ वह निराश होकर चिल्लाया।
'जहाज डूब रहा है। हमें माल निकालना होगा। यह ज्यादा महत्वपूर्ण है।' उसने अपनी भौंहें उठाईं और गर्व से मुस्कुराया। 'बहुत बढ़िया काम किया, लड़की!'

जहाज़ कभी बाएँ तो कभी दाएँ, बेतरतीब ढंग से चल रहा था। पानी उसकी दीवारों से टकराकर डेक के नीचे के गलियारों में भर रहा था। समुद्र का पानी अंदर आ रहा था, जिससे बड़े-बड़े छेद बन गए थे।
किसी भी क्षण वे जहाज के साथ डूब सकते हैं और बहुत बड़ी अफरा-तफरी मच जाएगी।
एडमिरल और चंद्र कार्गो के सबसे निचले स्तर पर पहुंचे, जहां उन्होंने दो गार्डों को भागने की योजना बनाते हुए देखा।
चंद्रा के पास समय बर्बाद करने का समय नहीं था। उसने दो बाण धनुष पर चढ़ाए और एक साथ चला दिए। बाण हवा में तेज़ी से उड़े और पहरेदारों के माथे को भेदते हुए नीचे गिर पड़े।
‘यह तो किसी सैन्य कारीगरी का नमूना है!’ एडमिरल ने हैरानी से कहा जब उन्होंने मालवाहक जहाज के दरवाजे तोड़कर अंदर प्रवेश किया और जैतून के तेल से भरे बड़े-बड़े जार और कांच की बोतलें देखीं।

जहाज अचानक बाईं ओर खतरनाक तरीके से मुड़ गया और वे दोनों दीवार के एक तरफ गिर पड़े, तभी चंद्र ने देखा कि एक विशालकाय बैरल उनकी ओर लुढ़क रहा है।
अगर वह बैरल उनसे टकराता, तो वे बेहोश हो जाते।
अपने शरीर को तेजी से घुमाते हुए, उसने अपने पैरों को ऊपर उठाया और आती हुई बंदूक की नली को चीरते हुए आगे बढ़ गई।
जहाज अपनी सामान्य स्थिति में लौट आया और एडमिरल सबसे महत्वपूर्ण माल— चीनी, नमक और जैतून के तेल से भरे बैरल—की ओर बढ़े। पाँच बैरल। बस इतना ही। और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं थी।
उन्होंने उसे मुख्य डेक तक ले जाना शुरू कर दिया।

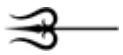

जब तक उनके जहाज पर बैरल लादे गए और उनके जहाजों पर अधिकांश दुश्मन मारे जा चुके थे, तब तक चंद्र को एहसास हुआ कि जहाज डूबने लगा है। वह डूब रहा था।
उसका दिल मदद के लिए चीखने लगा, तभी एडमिरल अपने जहाज से कूद गया और उसने उसे भी कूदने के लिए कहा।
वह सबसे आखिर में पीछे रह गई थी।
जैसे ही जहाज पानी में गहराई तक डूबने लगा, वह तख्ते पर चलने लगी, तभी किसी ने उसका पैर पकड़ लिया और वह पानी से भीगे तख्ते पर गिर गई।
उसने देखा कि एक अधमरा, बिना पैरों वाला आदमी उसे पकड़े हुए था, ताकि वह उनके साथ ही मर जाए।
उसने उसके चेहरे पर इतनी लात मारी कि उसकी खोपड़ी टूट गई और उसकी आँखें बेजान हो गईं। फिर वह तेजी से आगे बढ़ी और किनारे की ओर चल पड़ी...
‘जल्दी करो!’ एडमिरल की आवाज गूंजी।
और उसने वैसा ही किया। जबड़े भींचकर वह लड़खड़ा गई।
जब उसने छलांग लगाई और अपने जहाज के किनारे तक पहुंचने की कोशिश की, तो वह एक पल के लिए हवा में लटक गई, तभी उसे एहसास हुआ कि वह किनारे के करीब भी नहीं पहुंच पाएगी और शायद डूब जाएगी...
उसका हाथ पकड़ लिया गया!

एडमिरल ने उसे मजबूती से पकड़ रखा था, और उसके पैर बेतरतीब ढंग से हिल रहे थे। एडमिरल उसे एक आकर्षक मुस्कान और सख्त चेहरे के साथ पकड़े हुए थे। और उन्होंने उसे ऊपर खींच लिया।
जैसे ही वह जहाज पर चढ़ी, उसने उसे कसकर गले लगा लिया।
वे लोग इस बात से हैरान थे कि वह जहाज पर हुई इस कार्रवाई में जीवित रहने में सक्षम थी, और कुछ ने चुपचाप ताली भी बजाई जबकि उथारका एक बाज़ जैसी निगाह से कोने से झाँक रही थी।
‘शाबाश, मेरी प्यारी सहेली!’ उसने उसकी पीठ थपथपाई और फिर उसका चेहरा अपने हाथों में लिया। ‘सचमुच बहुत बढ़िया। मुझे तुम पर गर्व है,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
चंद्रा ने हल्की सी मुस्कान दी। वह खुश थी। सचमुच बहुत खुश। लेकिन साथ ही दुखी भी थी क्योंकि सभी लोग एडमिरल के लिए जयकारे लगा रहे थे। उसे बताया गया था कि नौ रातों का सिलसिला शुरू हो चुका है, और इसी के साथ उसका असली काम भी शुरू हो गया है।
‘आज हम शराब पीकर समुद्र में उल्टी करेंगे!’ उसने ऐसे घोषणा की मानो यह कोई बहुत बड़ी बात हो।
उसे यहाँ बहुत अच्छा लगा। उसने एडमिरल को फिर से देखा, जो अपने केबिन की ओर जा रहे थे। नज़र से ओझल होने से पहले उन्होंने उसे आँख मारी।
वह भी उसे पसंद करती थी।
लेकिन उसका एक मिशन था।
और उस मिशन में, उनके काम का पहला हिस्सा एडमिरल का विश्वास हासिल करना था।
दूसरा, सबसे कठिन कौन सा था:
उसे मार डालने के लिए।

7

महिषा अपने घोड़े पर सवार होकर कांचीपुरम के अंदर की ओर चल पड़ा।
जानवर के हर झटके के साथ उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसके पीछे सैकड़ों सैनिक चल रहे थे। उसका सेनापति त्रिनेत्र भी उसके पीछे-पीछे चल रहा था, लेकिन अपनी गति से। महिषा आसानी से रथ में बैठकर, अपने से पहले के अन्य राजाओं की तरह, सोने या खाने में समय बिता सकता था।
लेकिन नहीं। वो नहीं।
वह हमेशा सक्रिय रहता था। उसकी मांसपेशियां उभरी हुई थीं और चेहरा भावहीन था। उसने लोहे के दो सींगों वाला एक विशाल, मोटा मुकुट पहन रखा था। उन्हें हमेशा से ही यह राजसी जानवर पसंद था और जब उन्हें पता चला कि भैंस आक्रामकता और शक्ति का प्रतीक है, तो उन्होंने इसे अपना टोटेम बना लिया, जीवन के प्रति उनका नजरिया भी भैंस ही बन गया। अब वे खुद को भैंस का ही एक हिस्सा मानते थे।
कांचीपुरम में अधिकतर जंगल, वन और सूखे मैदान थे, जिसके दक्षिण-पश्चिम में वेगावती नदी बहती थी। क्षितिज पर पहाड़ियाँ थीं और चारों ओर मंदिर थे। महिषा ने इन मंदिरों का निर्माण करवाया था, जिन पर उनके और उनके सेनापतियों के चेहरे की मूर्तियाँ खुदी हुई थीं।
जैसे ही उसने मिट्टी के मैदान पर कदम रखा, उसने वहाँ डेरा डाले हुए पनास को देखा। महिषा ने उन्हें यहाँ आने और अपना अतिथि बनने की अनुमति दी थी। उसने उनसे महिषापुर में प्रवेश करने का अनुरोध किया था, लेकिन उन्होंने विनम्रतापूर्वक यह कहते हुए मना कर दिया कि वे केवल सहयोगी के रूप में ही शहर में प्रवेश करेंगे, न कि संभावित सहयोगी के रूप में। लेकिन सद्भावना के प्रतीक के रूप में वे मैसूरु के करीब आने के लिए सहमत हो गए।
उनके दूत आमतौर पर संदेश देते समय असभ्य और अपमानजनक होते थे, लेकिन महिषा को अपने अहंकार को एक तरफ रखकर दूसरों की बात सुनने की आदत थी।
राजा होने का मतलब सिर्फ निर्दयी होना ही नहीं था। इसका मतलब कूटनीति भी था। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व और लंबा कद अक्सर लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर देता था कि वे सिर्फ बलवान हैं, लेकिन वे उतने ही मिथक थे जितना कि भैंस के सिर वाले असुर होने का मिथक। आर्य केवल दुष्प्रचार, झूठ और मानहानिकारक बयान फैलाने में ही माहिर थे।

वह देख सकता था कि पाना जनजाति के लोग बहुतायत में थे। लगभग दो सौ की संख्या में, सभी दूर-दूर तक फैले हुए थे, अलाव जलाकर अपने लिए सूअर का मांस पका रहे थे। उनमें से कई अपने परिवारों के साथ थे, फर और नीले रंग के कवच पहने हुए थे, और उनके हेलमेट पर पक्षी की आकृति उकेरी गई थी।
और फिर कुछ ऐसे भी थे जिनके हेलमेट पर खोपड़ी के आकार के प्रतीक बने हुए थे और वे ही असली, मजबूत लड़ाके थे।
लंबे समय तक पानास खानाबदोश थे। उनका कोई स्थायी ठिकाना नहीं था। लेकिन जब उन्हें पता चला कि वे दासों की सीमा पार करके दक्षिणी क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए, भले ही उन्होंने उनके आदमियों को मार डाला था। उन्होंने अपने दूत को यह सूचित करने के लिए भेजा कि वे उनके साथ साझेदारी करना चाहते हैं।
और उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, जो आश्चर्यजनक था। वह युद्धकला में उनकी विशेषज्ञता चाहता था और विद्रोहियों को खदेड़ने के लिए उन्हें भाड़े के सैनिकों के रूप में इस्तेमाल कर सकता था, ताकि इस कठिन परिस्थिति में उसके किसी भी करीबी को नुकसान न हो।
हालांकि, यह कहना सुरक्षित था कि वह निराश था। पाना जनजाति के लोग हजारों की संख्या में आते थे, जबकि यहाँ केवल सैकड़ों ही रहते थे।
उसे शिविर के प्रवेश द्वार पर ही रोक दिया गया।
‘जी?’ सिपाही बोला।
उन्होंने घोषणा की, 'उन्हें बताओ कि राजा महिषा यहाँ हैं।'
सैनिकों ने घबराकर एक-दूसरे को देखा और उसे अंदर आने दिया। वह अपने घोड़े पर सवार होकर अपने आदमियों के साथ अंदर चला गया। वहाँ गलियाँ और तंग जगहें थीं। बाहरी किनारों पर भालू के जाल लगे हुए थे और बाहर से किसी को अंदर आने से रोकने के लिए बाड़ भी खोदी गई थी। महिषा द्वारा दी गई इस छोटी सी जगह को उन्होंने अपना घर बना लिया था।
जब वह खुले मैदान में पहुँचा, तो उसने घोड़े से उतरकर देखा कि सभी पानास बाहर आ चुके थे। बच्चों को पीछे धकेल कर उससे दूर कर दिया गया।
महिषा ने विस्मय से सभी को देखा, और फिर अपना मुकुट उतारकर त्रिनेत्र को सौंप दिया, जो उसके पीछे घोड़े से उतर चुका था।
उसने गौर किया कि पाना जनजाति के लोग हल्के रंग के वस्त्र पहने हुए थे और उनकी त्वचा गोरी, सुगठित और चमकदार थी, साथ ही उनकी आँखों की पुतलियाँ भूरे

रंग की थीं। पुरुष फर के लबादे पहने हुए थे और अपने जूतों और पतलून के साथ खंजर लिए हुए थे। उन्होंने मोटी कमरबंद पहनी हुई थी जिसमें खाली म्यान थे, जबकि महिलाएं चिथड़े-चिट्टे वस्त्र और कमरबंद में थीं।
'स्वागत है, महिषा,' उसने आवाज सुनी।
महिषा ने अपना सिर घुमाकर देखा तो एक लंबा आदमी अंदर आ रहा था। हालाँकि उस आदमी ने खोपड़ी वाला हेलमेट पहन रखा था, जिससे उसका चेहरा लगभग पूरी तरह ढका हुआ था, फिर भी उसके हाथ में एक युद्ध कुल्हाड़ी थी और उसका शरीर घने बालों और सूअर की खाल के आवरण से ढका हुआ था।
‘प्रमुख थामिसदा?’ महिषा ने पुष्टि करने के लिए पूछा। थामिसदा ही वह व्यक्ति था जिससे वह संदेशों के माध्यम से संपर्क में था। वह अर्पदा था, पनास का नेता।
उसने सहमति में सिर हिलाया।
महिषा मुस्कुराते हुए आगे बढ़ा और उस आदमी का हाथ कसकर पकड़ लिया। 'मुझे विश्वास है कि आप यहां सहज महसूस कर रहे हैं।'
‘आप जितना सोच सकते हैं उससे कहीं ज्यादा। हमें कांची पसंद आने लगी है,’ उसने कर्कश, धीमी आवाज में कहा, मानो उसका गला खराब हो।
उसके बगल में एक आदमी दाखिल हुआ, लेकिन उसने औरत का गाउन पहना हुआ था और उसकी आँखों में काजल लगा हुआ था। एक पल के लिए महिषा यह समझने की कोशिश कर रही थी कि वह आदमी लड़का है या लड़की, और जब वह बोला, तो उसकी आवाज़ औरत जैसी थी, लेकिन बोलने का अंदाज़ मर्द जैसा था।
‘महामहिम, मैं शिविर का प्रमुख हूँ,’ उसने झुककर कहा। ‘मेरा नाम रिगोली है।’ ‘Enaree?’ Mahisha raised his brows.
‘एक भविष्यवक्ता, एक पुजारी।’
क्या आप भविष्य की भविष्यवाणी करते हैं?
वह मुस्कुराया। 'हां, मैं करता हूं।'
महिषा को हंसी आ रही थी, लेकिन पाना परिवार के अपने रीति-रिवाज और पदक्रम थे—इसलिए उसने उनका सम्मान किया। 'मैं काफी निराश हूं। मुझे आपसे और अधिक उम्मीद थी।'
‘और भी हैं। वे कांची के चारों ओर छुपे हुए हैं, सबके सामने छिपे हुए।’ थामिसदा ने उत्तर दिया। ‘अगर हमें कुछ हुआ तो…’ उसने एक अशुभ स्वर में कहना शुरू किया, ‘उन्हें पता चल जाएगा और वे आ जाएँगे।’

एक पल के लिए महिषा अचंभित रह गया। यह आदमी तो पूरी तरह तैयार है। उसे धमकी मिलने पर नाराज़ होना चाहिए था, लेकिन वह खुश था कि वह योद्धाओं की एक शक्तिशाली नस्ल और उनके नेता के साथ गठबंधन करने जा रहा है।
तो क्या हम शुरू करें?
थामिसदा ने रिगोली की ओर देखा और खिलखिलाकर हंस पड़ी। बाकी सभी पाना चुपचाप बातचीत देख रहे थे, लेकिन महिषा की कही बात पर वे सब मुस्कुरा दिए। फिर थामिसदा महिषा के पास आकर बोली, 'हमारे यहाँ मेहमानों का स्वागत करने का एक अलग तरीका है, मेरे दोस्त। हम सीधे व्यापार की बात नहीं करते। हम पहले रिश्ते बनाते हैं।'
महिषा ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'ठीक है। कैसे?'

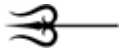

एक मोटे, घिनौने, कीचड़ से सने सूअर को पकड़कर उबलते पानी के बर्तन के ऊपर लटकाना, दीक्षा समारोह के लिए उसकी योजना में शामिल नहीं था। वहाँ एक पेय परोसा गया और बीच-बीच में आग की लपटें उठ रही थीं। जंगल, सूअर और पेय की गंध मदहोश कर देने वाली थी, और दूर से पाना जनजाति के नाचने और ढोल बजाने की आवाज़ आ रही थी।
लेकिन शाम का समय था, और जाहिर तौर पर यह पशु बलि पानास के साथ संबंध बनाने के लिए महत्वपूर्ण थी।
दूसरों को खुश करने के लिए लोग किस हद तक जाते थे, यह देखकर वह हैरान रह गया, लेकिन उसने सूअर को पानी में डाल दिया और उसकी गुर्राहट सुनी। सब लोग ताली बजाने लगे जबकि रिगोली मंत्रोच्चार कर रहा था:
“एर्डिम्पास, इस संघ को आशीर्वाद दो! इस संघ को आशीर्वाद दो!” वह अपनी पूरी आवाज में चिल्लाया।
महिषा किसी और घटना के घटित होने का इंतजार कर रही थी। शायद और जानवरों की बलि दी जाएगी या... कुछ और। कुछ भी हो जाए।
लेकिन कुछ भी नहीं।
सुअर मर चुका था और उसे काटकर उसके पेट से आंतें निकालने और शहर के बाहरी इलाके में प्रदर्शित करने का आदेश दिया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा

सके कि रिगोली के अनुसार कुंवारी देवी एर्दिम्पास किसी को भी अनादरपूर्वक प्रवेश करने और गठबंधन को किसी भी तरह से परेशान करने की अनुमति न दे। थामिसदा बीच में आई, महिषा को गले लगाया और घोषणा की, 'आज रात हम दावत करेंगे!'

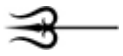

‘क्या वे गठबंधन चाहते भी हैं?’ त्रिनेत्रा ने महिषा से पूछा, जब वे भुनी हुई मुर्गी की टांग खा रही थीं।
‘हर किसी की अपनी परंपरा होती है, कमांडर। हमें धैर्य रखना होगा।’
शिविर के सबसे बड़े तंबू में अन्य महत्वपूर्ण सैनिक एक घेरे में बैठे थे, और थामिसदा महिषा और त्रिनेत्र के ठीक बगल में बैठा था, हालांकि वह अपने साथियों के साथ हंस रहा था और मजाक कर रहा था। उसका हेलमेट अभी भी लगा हुआ था।
त्रिनेत्र ने कहा, ‘दुर्गा के भय को देखते हुए हमें जल्दी वापस लौटना चाहिए। यहां समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।’
‘तुम शुक्र की तरह बोलते हो। मैं तुम्हें यहाँ लाई हूँ, शुक्र को नहीं, क्योंकि तुम उसके जैसा व्यवहार नहीं करते,’ महिषा ने उपहास उड़ाते हुए कहा।
उन सभी के हाथों में सफेद दूध के जार थे, जो उन्हें परोसा गया था। महिषा ने उस दूधी मिश्रण को देखा; वह जाना-पहचाना सा लग रहा था। 'इसमें क्या है, मुखिया?' उसने थामिसदा से पूछा।
‘सोमास,’ उसने जवाब दिया।
महिषा ने पलकें झपकाईं। वह उसे फेंक देना चाहता था। उसे लगा जैसे त्रिनेत्रा यह सुनकर डर से कांप रही हो कि एक दास को आर्य का पेय दिया गया है। लेकिन महिषा बस मुस्कुराया। 'पर क्यों?'
“जब हम देश में दाखिल हुए,” थामिसदा ने कहना शुरू किया, “हमारे लोग सबसे पहले सोमलता का पौधा खोजने वाले थे। हमने उसे निचोड़ा, बकरी के दूध में मिलाया और पिया। हम एक अलग ही दुनिया में चले गए, महिषा। हमने खुद को देखा। हम अपने बेहतर रूप में आ गए। हमारा दिमाग खुल गया और हम बेहतर योद्धा बन

गए। आर्यों ने हमारी नकल करने के बाद हमारी संस्कृति और रीति-रिवाजों को अपनाया। छी!” उसने ज़मीन पर थूका। “चोर!”
महिषा को यह नहीं पता था कि जंबूद्वीप में यह पेय स्किथियनों द्वारा लाया गया था। वह हमेशा इसे आर्यों का पेय ही मानता था।
“लेकिन यह…” उसने ज़ोर से इशारा किया ताकि थामिसदा के साथी भी सुन सकें, “इसी वजह से आर्य इन क्षेत्रों में हार गए। वे इसमें हद से ज़्यादा लिप्त थे।” इसी वजह से उसके लिए सत्ता पर कब्ज़ा करना आसान हो गया, क्योंकि वे इसमें इतने मशगूल थे कि स्पष्ट रणनीति बनाने में असमर्थ थे।
‘क्योंकि वे कमजोर हैं!’ और जब उसने यह कहा, तो उसके साथियों ने हंसना शुरू कर दिया।
कोने में आग जल रही थी और महिलाएं उन पर पंखे लहरा रही थीं।
‘क्या तुम कमजोर हो, महिषा?’ थामिसदा ने पूछा। ‘अगर हो तो इसे पचा लो। हम अपने मेहमान को वह चीज पीने के लिए मजबूर नहीं करेंगे जो वह पीना नहीं चाहता।’
महिषा ने एक बार फिर दूध की ओर देखा। उसने कभी सोमा का स्वाद नहीं चखा था और न ही कभी चखना चाहा था। वह जानता था कि यह आत्मा को नष्ट कर सकता है। लेकिन वह यह भी जानता था कि शक्ति के प्रतीक पाना सरदार के सामने उसे मजबूत होना ही था। उसे यह दिखाना था कि वह उनके जैसा है। उनके साथ गठबंधन करने के योग्य है।
'ऐसा मत करो, महाराज,' त्रिनेत्रा की आवाज फुसफुसाहट जैसी थी।
लेकिन उसने नहीं सुना।
‘क्या तुम ऐसा नहीं कर रहे हो?’ उसने थामिसदा से पूछा।
मुखिया के चेहरे पर निश्चित रूप से मुस्कान थी।
'ओह, मैं हूँ।'
उसने अपने हेलमेट का थोड़ा सा हिस्सा उठाकर कटोरे को अपने होठों के पास लाया।
महिषा ने भी ऐसा ही किया।
और उन दोनों ने, यहाँ तक कि साथियों ने भी, उसे पी लिया। महिषा के पीने के बाद, उसने त्रिनेत्रा को भी एक घूंट दिया। त्रिनेत्रा को दूध का खट्टापन अपनी जीभ पर महसूस हो रहा था, जिससे उसे थोड़ा अजीब और चक्कर सा आ रहा था।
लेकिन उसके बाद उसे और कुछ महसूस नहीं हुआ।

‘तो…मुझे कैसा महसूस करना चाहिए?’ उसने पूछा।
यह तुम्हें मिल जाएगा।
‘मैं क्या देखूंगा?’
थामिसदा ने सिर हिलाते हुए कहा, 'आप खुद।'

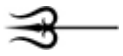

जब वह सोने गया, तब तक महिषा को अजीब सा महसूस हो रहा था।
सब कुछ बेहद अप्रत्याशित और विचित्र ढंग से घट रहा था, जिससे वह किसी भी चीज़ पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। उसके कानों में घंटियों की आवाज़ गूंजने लगी। उसे नदी के बहते पानी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। थामिसदा ने उसके बिस्तर पर एक सुंदर पाना कुंवारी लड़की को छोड़ा था, फिर भी वह अपने गद्दे पर गिर पड़ा। उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी। वह अपनी चौड़ी, फैली हुई पुतलियों से खालीपन में घूरने में इतना मग्न था। वह उस साधारण ज़मीन को देख रहा था जिस पर वह लेटा था, और साथ ही उसे लड़की के हाथों का स्पर्श अपनी पीठ पर महसूस हो रहा था।
‘क्या आप ठीक हैं, स्वामी?’ उसने पूछा।
उसकी आवाज़ धीमी फुसफुसाहट जैसी थी और उसने उसका चेहरा देखने के लिए मुड़ा। वह किसी जानी-पहचानी सी लग रही थी।
उसके अतीत का कोई व्यक्ति।
और फिर उसने देखा।
वह उनकी मां थीं। रंभा।
उसकी भूरी आँखें... उसका चौकोर जबड़ा और उसके सफेद बाल।
‘क्या तुम ठीक हो, प्रिय?’
‘माँ…’ उसने आह भरी। ‘तुम जीवित हो।’
‘मैं हमेशा जीवित हूं, प्रिय।’
‘कैसे…कैसे…’
उसने अपने हाथ उसके बालों पर फेरे और उन्हें थपथपाया। 'तुम ठीक हो जाओगे।' ‘मैं कैसे…’ वह कांप रहा था, पसीना आ रहा था। ‘लेकिन… मैंने तुम्हें मरते हुए देखा था।’

नहीं, मेरी प्यारी। मैं तुम्हारे साथ हूँ। क्या तुम अपनी माँ से प्यार करती हो?
उसकी आंखें नम हो गईं, 'हां, मैं करता हूं।' और फिर वह रोने लगा।
उसने उसे कसकर गले लगाया और उसने भी अपनी बाहों में उसे लपेट लिया।
‘तुम मुझे छोड़कर क्यों चले गए? तुमने ऐसा क्यों किया…’
‘यह तुम्हारे पिता थे।’
'मुझे पता है।'
वह यह बात अच्छी तरह जानता था। वह अपने पिता को रोज़ अपनी माँ को पीटते देखता था। उसके पिता मदीरा (एक प्रकार की शराब) पीकर उसे किसी तरह की कमरबंद से पीटते थे। वह टोडा कबीले का एक भैंस पालक था। और वह... वह आर्य जाति की बहिष्कृत महिला थी। उसे इसलिए निकाल दिया गया था क्योंकि वह उनके रीति-रिवाजों में विश्वास नहीं करती थी। उसने एक किसान में सुख की तलाश की, लेकिन वह उसके साथ पशुओं जैसा व्यवहार करता था।
महिषा ने बचपन से ही अपने पिता द्वारा अपनी माँ पर किए जाने वाले निर्मम अत्याचारों को देखा था। इतना अधिक कि उसने इसे सामान्य मान लिया था। उसे विश्वास हो गया था कि महिलाओं के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।
उन्हें थप्पड़ मारे जाने चाहिए। उन्हें कोने में धकेल दिया जाना चाहिए।
वे वस्तु मात्र हैं।
वह मेरी गुलाम है।
जब महिषा ने एक बार हस्तक्षेप करने की कोशिश की थी, तब उसके पिता ने उससे यह बात कही थी।
'तुम्हें उसे जवाब देना चाहिए था। तुम्हें उसे थप्पड़ मारना चाहिए था,' वह अब धीमी सिसकियों के बीच बोला।
‘मैं इतनी मजबूत नहीं थी,’ रंभा उदास नजर आईं। ‘मुझे आज भी इस बात का अफसोस है कि मैंने पलटवार नहीं किया।’
‘क्यों? क्योंकि तुम्हें हर समय चोट लगती रहती थी?’
‘नहीं, मेरे प्यारे। लेकिन अगर मैंने ऐसा किया होता, तो तुम आज इस राक्षस में नहीं बदलते,’ उसने कहा और उसकी आँखें लाल हो गईं। उसने उसका गला कसकर पकड़ लिया और उसे दबाने लगी। वह छूटना चाहता था, लेकिन उसे इतनी कसकर पकड़ा गया था।
‘नहीं…नहीं…’ उसने खांसते हुए कहा।

“बेटा, तुमने जो एकमात्र नेक काम किया, वह था अपने पिता की हत्या करना। उसके बाद तो तुम उन्हीं की परछाई बन गए!” उसने कर्कश स्वर में कहा, और उसे ऐसा लगा जैसे वह अपनी आखिरी सांसें गिन रहा हो।
फिर उसकी पकड़ छूट गई और उसकी दृष्टि वापस आ गई। उसने खुद को एक बार फिर उस कुंवारी लड़की के साथ तम्बू में पाया, जो उसे जल्दी से थपथपाने की कोशिश कर रही थी।
‘क्या आप ठीक हैं, महाराज?’ उसने पूछा।
लेकिन वह बोल नहीं पा रहा था। उसकी जीभ और मुंह सूख गए थे। सब कुछ सुन्न हो गया था।
और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

सुबह हो चुकी थी और जब महिषा जागा तो उसे अपने बगल में कोई महिला नहीं दिखी। उसने राहत की सांस ली। मतिभ्रम का असर कम हो रहा था और वह पहले से बेहतर महसूस कर रहा था। उसे वह मतिभ्रम अच्छा नहीं लगा था। उससे कुछ अप्रिय यादें ताजा हो गई थीं जिनसे वह तनाव में आ गया था।
लड़खड़ाते हुए वह तम्बू से बाहर निकला और जब उसने त्रिनेत्रा को अपनी ओर आते देखा तो उसने अपनी आँखें मल लीं।
‘कुछ गड़बड़ है,’ उसने सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा। ‘तुम कुछ…क्या सोमा की वजह से ऐसा लग रहा है? मुझे पता है। मुझे बहुत बुरे सपने आ रहे थे।’
महिषा ने जो कुछ महसूस किया और देखा, उसे दुःस्वप्न कहना भी कम होगा। उसे बहुत से लोगों को मारने पर गर्व था, लेकिन अपनी माँ को मरने देने पर उसे ज़रा भी गर्व नहीं था। और उसने कभी यह बात ज़ाहिर नहीं की कि उसकी माँ की रक्षा न कर पाने की वजह से एक निर्दोष व्यक्ति की जान चली गई।
‘ये तो बस एक शानदार सुबह है, त्रिनेत्रा।’ वह सुस्त बैठा था और अपना चेहरा धोना और सूखे मुंह को पोंछना चाहता था। ‘आखिर क्या हुआ होगा?’
वह एक पल के लिए चुप रहा, यह सोचने की कोशिश कर रहा था कि कौन से शब्द सबसे अधिक अर्थपूर्ण होंगे। 'मुझे लगता है कि आपको खुद उस पागल की बात सुननी चाहिए।'

महिषा लड़खड़ाते हुए उस बड़े तम्बू में दाखिल हुआ जहाँ थामिसदा और रिगोली घुटने टेककर बैठे थे। उनके सामने बहुत सारे कागज़ बिखरे पड़े थे। महिषा ने जब उन्हें देखा तो उस पर बनी आकृति पर उसकी नज़र पड़ी। उस आकृति में एक बाघ पर बैठी दस भुजाओं वाली स्त्री थी और उसके हाथों में अनेक हथियार थे। 'महिषा, तुम्हें कुछ स्पष्टीकरण देना होगा,' थामिसदा ने सख्त स्वर में कहा। ‘क्या हुआ?’ महिषा ने हताश स्वर में पूछा।
‘कल रिगोली ने कुछ देखा।’
‘क्या ये कोई भविष्यवाणी है?’ महिषा खिलखिलाकर हँस पड़ा। जादू-टोना तो वो आखिरी चीज थी जिस पर उसे विश्वास था।
लेकिन थामिसदा को इसमें कोई हास्य नहीं दिखा। 'उसने तुम्हारे दुश्मन को देख लिया।'
‘मेरे पास बहुत सारे हैं। आपको स्पष्ट बताना होगा,’ उन्होंने सामान्य लहजे में सुझाव दिया।
मुखिया ने महिला की ओर इशारा किया।
दुर्गा।
महिषा ने कागज का टुकड़ा उठाया। 'उसके दस हाथ कैसे हैं?'
‘ये मज़ाक नहीं है, महिषा। ये कौन है?’
‘कोई हत्यारी है,’ उसने बेपरवाही से कहा। ‘मेरे आदमी महिषापुर में उसका ख्याल रख रहे हैं। वह जाहिर तौर पर शहर के अंदर एक जासूस के रूप में छिपी हुई है और हम उसे ढूंढ निकालेंगे। वह कोई समस्या नहीं है।’
‘कोई फायदा नहीं,’ रिगोली ने फुसफुसाते हुए कहा और महिषा ने देखा कि उसका चेहरा इस समय भूत की तरह पीला पड़ गया था।
‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ उसने अपनी भौंहों के बीच हल्की सी शिकन के साथ पूछा।
रिगोली की आंखें चमक उठीं। 'क्योंकि वह महिषापुर में नहीं है। वह यहीं हमारे बीच है, हममें से ही एक है!'

8

नौ रातों के दूसरे दिन की शुरुआत हो चुकी थी।
वह अपने बाघ, डावोन की देखभाल कर रही थी, तभी उसने धीरे से गुर्राया। अगर सेक्श को संदेश मिल गया था, तो वह अगली शाम तक यहाँ पहुँच जाएगा और उसे पूरी तैयारी करनी होगी।
‘कैसा महसूस कर रहे हो, बेटा?’ उसने पूछा। उसने उसे कपड़े की पट्टियों में लपेट दिया था और उसके घावों पर कई औषधीय पत्तियों से बना मरहम लगा दिया था। बाघ कराह उठा।
‘क्या अभी भी दर्द हो रहा है?’
डावोन अपने पैरों पर खड़ा हुआ। या कम से कम, वह अपने चारों पंजों पर संघर्ष करता हुआ उठा, जब उसने उसे कसकर गले लगाया और उसके सिर पर थपथपाया।
'आप ठीक होगे।'
उसने कुछ देर चलने की कोशिश की, लेकिन वह देख सकती थी कि वह अपने पैरों पर बहुत ज्यादा दबाव डाल रहा था जिससे वह स्थिर नहीं रह पा रहा था।
मुझे फिलहाल उसकी मदद नहीं लेनी चाहिए। अगर वह विरोध करेगा तो उसकी हालत और बिगड़ जाएगी।
एक आवाज ने इशारा करते हुए कहा, 'उस प्राणी पर आपकी निर्भरता हमारे अभियान की विफलता का कारण बनेगी।'
चौकी खाली होनी चाहिए थी, इसलिए उसने अपना खंजर निकाला और चारों ओर नज़र घुमाई। सूरज की किरणें पीली लकीरों में बिखर गईं और उसका जबड़ा कस गया। और फिर उसने उस आदमी को देखा।
वह वहीं खड़ा था। हाथ में एक लंबा सितार लिए, बगल में एक खच्चर लिए, उलझे बालों में फूलों की माला पहने। उसके चेहरे पर हमेशा एक मुस्कान रहती थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह खुश था। यह मुस्कान कुछ अशुभ भी हो सकती थी।
वह जानती थी कि यह कौन है।
आर्यों का दूत।
नारद।

अगर जनरल सेक्श को कभी बुरे सपने आते, तो वो उस लड़के के होते जिसे उसने अपनी झोपड़ी में मार डाला था। वो एक असहाय बच्चा था। शायद अठारह साल का, अपनी प्रेमिका को बचाने की कोशिश कर रहा था। और सेक्श इतना निर्दयी था कि उसने अपनी तलवार उसके शरीर में घुसा दी और उसे मरने दिया। फिर वो उस औरत की तरफ बढ़ा। महिषा उस युवती को रिझाना और उसके साथ सुख भोगना चाहती थी, लेकिन तब तक वो जंगल में भाग चुकी थी।
बाद में, माहिषा सेक्श पर बच्चे को जन्म न दे पाने के कारण क्रोधित हो गई। लेकिन सेक्श अपने हरम में मौजूद अन्य कई महिलाओं के साथ व्यस्त हो गया। सेक्ष नग्न अवस्था में लेटा हुआ था, उसके गुप्तांगों पर लाल चादर लिपटी हुई थी, और वह उस दिन की घटनाओं को अपने मन में बेमतलब दोहरा रहा था। उसने महिषा को प्रसन्न करने के लिए कई लोगों को मारा था, लेकिन उस एक हत्या का उसे अफ़सोस था। अगर उसे समय में पीछे जाने का मौका मिलता, तो वह उस आदमी को कभी नहीं मारता।
'तुम क्या सोच रहे हो?' असिलोमा ने पूछा, जो उसके बगल में लेटी हुई थी, उसे गले लगा रही थी और उसकी गर्दन पर चुंबन कर रही थी।
सेक्ष ने अपने प्रेमी को देखकर मुस्कुराया। पता नहीं क्यों, उसे महिषा का स्त्रियों के प्रति आकर्षण कभी समझ नहीं आया। सेक्ष अलग था। उसे बचपन से ही यह अलग-थलग महसूस होने लगा था। वह स्त्रियों की तुलना में पुरुषों के शरीर और बनावट से अधिक आकर्षित होता था। और इसी वजह से वह खुद को समाज से अलग-थलग महसूस करता था। यह सिलसिला तब तक चला जब तक उसकी मुलाकात असिलोमा से नहीं हुई। उन्हें सबसे अजीब जगह पर प्यार मिला—महिषा के नेतृत्व वाले सबसे पिछड़े साम्राज्य जंबूद्वीप में। सेक्ष ने अपने बचपन के दोस्त और शासक को अपने प्रेमी के बारे में नहीं बताया था। अगर महिषा को पता चलता कि वह कोई और पुरुष है, तो उसे पद से हटा दिया जाता और जेल में डाल दिया जाता। या इससे भी बुरा, मार डाला जाता।
महिषा में कई अच्छे गुण थे। लेकिन सहनशीलता उनमें से एक नहीं थी। इसलिए, उसे खुश करने के लिए, सेक्ष एक साधारण अनुयायी की बजाय एक वफादार की तरह व्यवहार करता था। वह उसका वफादार बनकर उसके विचारों को संतुष्ट करता था, भले ही वह उनसे सहमत न हो।
'इस बारे में कि हमें शुक्र द्वारा क्रांति शुरू करने के तरीके सीखने के लिए चुना गया था।'

असिलोमा मुस्कुराई। 'वह बूढ़ा आदमी इस तरह का बदलाव लाने में दिलचस्पी क्यों ले रहा था? क्या आर्यों के हाथों उसने किसी को खोया था?'
नहीं। हमें भी ज्यादा कुछ नहीं पता। वह खुद को क्रांति का दूत कहता था और हम उसके हथियार थे। लेकिन उससे भी बढ़कर, जब मैंने उसके अतीत की गहराई में छानबीन की, तो मुझे पता चला कि उसकी बेटी बहुत छोटी उम्र में ही भागकर आर्यों के पास चली गई थी। कुछ दिनों बाद, जब वह बेचैनी से उसकी तलाश कर रहा था, तो उसे बताया गया कि उसकी रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गई है। उसे पूरा यकीन था कि उसकी मृत्यु हो गई है।
वह क्यों भाग गई?
‘शायद इसलिए क्योंकि वह एक जुनूनी और नियंत्रण करने वाला आदमी था,’ सेक्श ने आह भरी। वह जानता था कि शुक्र कैसा हो सकता था। बिलकुल हद से ज़्यादा चिड़चिड़ा।
‘वाह! यह तो बहुत दुखद है।’
शेख ने अपने नवनियुक्त लेफ्टिनेंट की ओर रुख किया। 'हमें यहाँ से निकलना होगा।' उसका जबड़ा कसा हुआ था।
उसके चेहरे पर मुस्कान की जगह frown आ गया। 'मुझे पता है।'
निकट भविष्य में यह उनकी एक साथ बिताई जाने वाली आखिरी रात थी।
क्योंकि उसे भयंकर दुर्गा से एक संदेश मिला था। उसने एक पूरी चौकी को ध्वस्त कर दिया था और वह उसका इंतजार कर रही थी।
‘वह क्या चाहती है? वह इस तरह खुद को क्यों प्रकट करेगी?’ असिलोमा ने पूछा। ‘मुझे लगता है कि वह ज़रूरत से ज़्यादा आत्मविश्वास दिखा रही है या वह दुर्गा नहीं है,’ उसने पूरे यकीन के साथ जवाब दिया। सैन्य सेवा के अपने अनुभव से उसने यह सीख ली थी कि किसी भी परिस्थिति की तह तक जाकर उसकी तह तक जाना चाहिए।
वह सजने-संवरने लगा, उसने अपना लंबा कुर्ता और एक कुर्ता पहना। 'यह एक घात लगाकर हमला हो सकता है। और मैं यह जोखिम नहीं उठा सकता।'
असिलोमा अभी भी बिस्तर पर एक हाथ के सहारे लेटी हुई थी। 'देखो तो सही। तुम तो बड़े समझदार आदमी हो।'
‘मैं अपने दुश्मनों को कम नहीं आंकता, भले ही वे विपरीत लिंग के हों। विद्रोही, चाहे उनकी संख्या कितनी भी कम क्यों न हो, अब तक टिके हुए हैं। उनका अस्तित्व उनकी चतुराई के कारण है। और हमें इस दुर्गा को भी चतुराई से

ही हराना होगा,’ वह असिलोमा की ओर देखते हुए रुका और मुस्कुराया। ‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ। लेकिन मैं पहले जाता हूँ। तुम कुछ घंटों बाद आना। चाहो तो सो लो।’
‘मुझे सब पता है, जनरल,’ उसने व्यंग्यपूर्वक अपना पदनाम जोड़ा। ‘सबसे झूठ बोलने का तरीका।’
सेक्श ने पहले ही अपने आदमियों को हथियारों से भरे रथ ले जाने का आदेश दे दिया था और वह सौ से अधिक लोगों को चौकी पर ला रहा था।
वह तैयार था।

‘डावोन उपयोगी है,’ उसने नारद से कहा।
'नहीं। वह एक बोझ है,' उसका लहजा ठंडा और भयानक था।
वह उससे नफरत करती थी। शायद इसलिए कि वह बहुत ही हिसाब-किताब रखने वाला, चालाक और असभ्य व्यक्ति था, लेकिन उसके चेहरे पर हमेशा एक ऐसी मुस्कान रहती थी जो किसी को भी मोहित कर देती थी। वह अधेड़ उम्र के करीब था, और उसकी दाढ़ी में हल्के भूरे बाल आ गए थे।
अंत में आह भरते हुए उसने पूछा, 'क्या तुम चाहते हो कि मैं उसे हटा दूं?' ‘क्या तुम इस मिशन की गंभीरता को समझती हो, लड़की?’ नारद ने तीखे स्वर में कहा।
'जी हां। हम इसके लिए काफी लंबे समय से तैयारी कर रहे हैं।'
‘बिल्कुल सही,’ उसने तीखे स्वर में कहा।
'तुम यहां क्यों हो?'
यह देखने के लिए कि आप तैयार हैं या नहीं।
'मैं हूँ।'
क्या शवों का निपटान कर दिया गया है?
जी हाँ, महोदय। जला हुआ।
‘क्या आपको पता है कि वह जल्द ही यहाँ आने वाला है? सेक्श को कम नहीं आंका जा सकता।’
मैं उसे कम आंकने की योजना नहीं बना रहा हूं।
वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है।

'मुझे पता है।'
‘लेकिन भावुक,’ उसने ऐसे कहा मानो भावनाओं का होना एक हथियार हो जो किसी पर ही उल्टा पड़ सकता है। ‘इसका इस्तेमाल करो।’
उसे ये सब दिखावा पसंद नहीं था। और वो जानती थी कि नारद बाकी लड़कियों के पास जाकर उनसे इस तरह बात नहीं करेगा। वो उन पर भरोसा करता था, पर उस पर नहीं। वो सभा में देर से आई थी। काफी देर से। लेकिन उसने अपनी काबिलियत साबित कर दी थी।
‘अच्छा। बहुत अच्छा। तो फिर जानवर से छुटकारा पाओ,’ यह कहकर वह जाने के लिए मुड़ा।
जब वह अपने खच्चर पर सवार हुआ और हल्की सी सीटी बजाते हुए फाटक की ओर बढ़ा और चला गया, मानो वह कभी यहाँ था ही नहीं, तो वह उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पाई।
उसने लंगड़ाते हुए दावोन की ओर देखा, उसके चेहरे पर थपथपाया और फिर दो बार उंगलियां चटकाईं। बाघ एक पल के लिए अचंभित हुआ और फिर हल्के से सिर हिलाकर चौकी से चला गया।
उन्हें इस बात का दुख था कि वे इस मिशन में योगदान नहीं दे सके।
और उसे इस बात का दुख था कि वह उसे गले लगाकर अलविदा भी नहीं कह सकी।

सेक्श ने एक पल के लिए अपनी रसोइए को देखा। दो चीज़ें थीं जिनसे उसे बेहद प्यार था। एक थी उसकी प्रेमिका की बाहें और दूसरी थी वो खाना जो उसे दिया जाता था। रसोइया एक औरत थी। वो भी बिना बालों वाली। दुबली-पतली, धंसी हुई गाल की हड्डियों के साथ वो किसी बीमार बच्चे जैसी दिखती थी।
लेकिन उसने लाजवाब खाना बनाया। जड़ी-बूटियों और भुने हुए बकरे की खुशबू ही उसके मन को प्रसन्न करने के लिए काफी थी। और दुर्गा को हराने के लिए निकलने से पहले उसे इसी तरह का खाना चाहिए था।
‘तुम मेरे साथ क्यों नहीं चलते?’ उसने रसोइए से हंसते हुए पूछा।
‘लेकिन मेरे मालिक…उम…’ रसोइया कांप रही थी। उसकी उंगलियां आपस में गुंथी हुई थीं और वह चिंतित लग रही थी।
'समस्या क्या है?'

मेरा परिवार यहीं रहता है।
एक पल के लिए सेक्ष को उसकी बातों पर यकीन नहीं हुआ। वह गुस्से से आग बबूला हो गया। 'क्या तुम्हें लगता है कि मुझे परवाह है? मैं लड़ाई के लिए जा रहा हूँ और मुझे भूख लगती है। इसलिए तुम मेरे साथ चलो। यह कोई अनुरोध नहीं है। यह एक आदेश है।'
रसोइया एक पल के लिए अचंभित रह गया और उदास भाव से सिर हिलाया।
‘बहुत बढ़िया,’ वह मुस्कुराया। कभी-कभी, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना ज़रूरी होता है। उसने अपने सामने रखे भोजन पर खुशी-खुशी खाना शुरू कर दिया। और जैसे ही वह पहला निवाला लेने वाला था, उसने एक आवाज़ सुनी:
‘तुम तो बड़े ही अक्लमंद हो, है ना? अपने मूर्ख राजा की तरह ही घमंडी।’ सेक्श लगभग अचंभित रह गया कि किसकी हिम्मत हुई उससे इस तरह बात करने की। लेकिन यह एक चिड़चिड़े बूढ़े आदमी की आवाज़ थी जो मुख्य दरवाजे से अंदर आई, और कोई भी पहरेदार उसे रोकने के लिए मौजूद नहीं था।
धन्यवाद।
सेक्ष ने मन ही मन बड़बड़ाया, यह महसूस करते हुए कि उसे दुर्गा के बारे में संदेशवाहक को उसके पास नहीं भेजना चाहिए था।
अब मेरी भूख तो गई।
‘क्या हुआ, गुरुजी?’
‘नहीं, कृपया। जाने से पहले दो गैलन शराब भी पी लीजिए,’ शुक्र ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। ‘उस हत्यारी ने खुलेआम खुद को सबके सामने प्रदर्शित किया है और आप यहाँ दावत उड़ा रहे हैं।’ उसके आखिरी शब्द में तीखापन था। ‘यह पूरे दिन का सफर है। और यह एक घात लगाकर हमला है। मेरे आदमी हथियार तैयार कर रहे हैं और उन्हें तेज कर रहे हैं, जबकि रथों पर सामान लादा जा रहा है। इसमें समय लगता है, गुरुजी,’ सेक्ष ने कंधे उचकाते हुए कहा।
‘मुझे परवाह नहीं कि यह घात लगाकर हमला है या नहीं। अगर जरा भी संभावना है कि यह हत्यारा है, तो मैं चाहता हूं कि तुम उसे जिंदा वापस लाओ। हमें विद्रोहियों के बारे में कुछ जानकारी चाहिए।’
और आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह जवाब देगी?
शुक्र मेज पर झुकते हुए बोला, 'हम उसे तड़पा-तड़पा कर मार डालेंगे।' लेकिन सेक्श मन ही मन मुस्कुराया।
‘क्या मैं मज़ाक कर रहा था?’

मुझे नहीं लगता कि यह दुर्गा है।
'आपका क्या मतलब है?'
‘क्या आपको यह अजीब नहीं लगता कि जैसे ही आपको उसके बारे में पता चलता है, वह अपने प्रवेश की घोषणा कर देती है? साम्राज्य में यह कोई बेहद साहसी व्यक्ति है जिसे आपके जासूस द्वारा दी गई जानकारी के बारे में पता था और वह हमारे साथ मजाक कर रही है।’
शुक्र एक पल के लिए इस विचार में खो गया। 'तुम सही हो सकते हो। यह कोई निर्दोष व्यक्ति हो सकता है। या कोई घात लगाकर हमला। या कोई छलावा। या यह सचमुच दुर्गा हो सकती है, क्योंकि उसने अकेले ही पूरी चौकी को नष्ट कर दिया था।'
‘उसके पास एक बाघ था,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
'क्या?'
‘उसके साथ एक बाघ था,’ उसने इस बार और जोर से कहा।
'तो, एक महिला और एक बाघ मिलकर एक चौकी को नष्ट कर देते हैं और आपको लगता है कि वह सिर्फ मज़ाक के लिए ऐसा कर रही है?'
सेक्ष को एहसास हुआ कि उसका यह अनुमान गलत था और वह लगभग अपनी जीभ काट बैठा।
मेरा कहने का मतलब यह है कि आप सही या गलत हो सकते हैं, लेकिन आपको यह तभी पता चलेगा जब आप इस बेवकूफी भरी दावत में अपना समय बर्बाद करने के बजाय वास्तव में वहां जाएंगे।
सेक्ष उठ खड़ा हुआ और अपनी कुर्सी को एक तरफ धकेलते हुए बोला, 'ठीक है, मैं जा रहा हूँ।'
‘हम कोई जोखिम नहीं ले सकते। दुर्मुखा बहुत सारा सोना और चांदी लेकर आ रहा है—इतना कि अगले सौ वर्षों तक हमारा खजाना भरा रहेगा। हमें उस धन की आवश्यकता है क्योंकि महिषा के विद्रोहियों के खिलाफ लगातार और व्यर्थ अभियानों के कारण हम पहले से ही कर्ज में डूबे हुए हैं। हम जरा सा भी जोखिम नहीं उठा सकते।’ वह वित्त मंत्री, यानी राजकोष प्रमुख के बारे में बात कर रहे थे।
सेक्ष ने सिर हिलाया। उसने खाना नहीं खाया।
लेकिन उसने रसोइए की ओर देखकर उसे अपना सामान समेटने का इशारा किया। उसने अपना सिर कमरे की दूसरी दिशा में घुमाया जहाँ असिलोमा कवच पहने हुए दूसरे

दरवाजे से अंदर आया था और सेक्श को इस चिंता से देख रहा था कि कहीं उसे बच्चे की तरह डांट न पड़ जाए।
मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ, दुर्गा।

9

उसका मिशन बाकी लड़कियों के मिशन से थोड़ा ज़्यादा जटिल था। और चूंकि नौ रातों का सिलसिला शुरू हो चुका था, इसलिए उसे नए-नए तरीके सोचने शुरू करने पड़े।
गौरी का कोई खास मकसद नहीं था, न ही किसी को बहलाना-फुसलाना, न किसी का अपहरण करना, न ही ऐसा कुछ और। उसे वो सब करना था जिससे महिषा के धार्मिक संगठन में पूरी तरह से अफरा-तफरी मच जाए। लेकिन ऐसा कैसे किया जा सकता है? बेशक, उसने योजना तो बना ली थी, लेकिन जब वह इस व्यवस्था का हिस्सा बनी, तो उसे एहसास हुआ कि यह उसके शुरुआती अनुमान से कहीं ज़्यादा मुश्किल था। इसके लिए लोगों के मन में उठने वाली भावनाओं को गहराई से समझना ज़रूरी था, खासकर जब वे महिषा की तरफ देखते थे।
शुक्र ने एक अद्भुत व्यवस्था बनाई थी। उन्होंने शहर भर में महिषा की लंबी, कांसे की मूर्तियाँ बनवाईं, जहाँ लोग जाकर उनकी पूजा-अर्चना कर सकें। उन्होंने महिषा का सड़कों पर आना सीमित कर दिया, उन्हें केवल आवश्यकता पड़ने पर ही प्रकट होने दिया। उन्होंने लोगों में यह अफवाह फैलाई कि महिषा एक देवता हैं और उनकी शक्तियाँ भगवान ब्रह्मा से प्राप्त हैं—कि वे अजेय हैं। इन अफवाहों ने आम लोगों के दिलों को छू लिया और उन्हें लगने लगा कि कोई देवता मनुष्यों के बीच विचरण कर रहा है।
लेकिन महिषा भी इंद्र की तरह ही एक देवता थे। दोनों ही मनुष्य थे, जिनकी प्रतिष्ठा अतिरंजित थी। इंद्र अपने प्रजाजनों के प्रेम का लाभ उठाते थे, जबकि महिषा भय का इस्तेमाल करते थे। शुक्र ऐसे झूठ फैलाता था कि अगर कोई महिषा का अनुसरण नहीं करेगा, तो वह उसके बच्चे या पत्नी को मार डालेगा। वह अपने विरोधियों को बिना उनके साथ एक ही कमरे में मौजूद हुए भी मार डालता था। यह भय गरीबी से ग्रस्त किसी भी आम नागरिक को आसानी से सता सकता था। जैसे अभी।
महिषा के भय और उसके प्रकोप के कारण सौ से अधिक नागरिक दूध के घड़े लिए एक लंबी कतार में खड़े हो गए थे, ताकि शुक्र द्वारा 'दूध अभिषेक' कहे जाने वाले अनुष्ठान को संपन्न किया जा सके। महिषा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, नागरिकों को उसकी पचास फुट ऊंची प्रतिमा के चरणों में दूध अर्पित करना पड़ता था ताकि महिषा उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ले। लेकिन समस्या यह थी कि

उनके पास पेट भरने के लिए केवल दूध ही उपलब्ध था। इसके बजाय, उन्हें इसे इस प्रकार बर्बाद करना पड़ा। यह सब झूठा था, और गौरी को अभी भी यह रहस्य सुलझाना बाकी था कि यह सब कैसे और क्यों शुरू हुआ। शुक्र इन रीति-रिवाजों को बढ़ावा देना चाहता था, और एक बार जब लोग इनका पालन करने लगते, तो यह मनुष्य के बीच ईश्वर की व्यापक मिथक को बल देता।
यह परंपरा खोखली थी। और गौरी को इसका हिस्सा बनना पड़ा क्योंकि वह शुक्र के दल का हिस्सा थी।
उन्हें ऐरावती के साथ, प्रतिमा के पास खड़े होकर लोगों को सही तरीके से दूध चढ़ाने में मदद करनी थी। वहाँ पहरेदार भी थे, लेकिन वे गंभीर और सख्त मुद्रा में खड़े थे, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी कतार न तोड़े। कतार गोलाकार मंदिर के चारों ओर फैली हुई थी। प्रत्येक व्यक्ति ने समय लेकर महिषा प्रतिमा के चरणों में एक घड़ा दूध चढ़ाया। उन्होंने महिषा का नाम जपा। और फिर वे चले गए।
उसे पता था कि दूध नाली में जाएगा, जहाँ बाज़ारों में मुनाफ़े के लिए दोबारा बेचे जाने से पहले उसकी किसी न किसी तरह से सफ़ाई की जाएगी। यह एक चक्र था। और इससे लागत कम होती थी।
गौरी जानती थी कि आज उसे कुछ करना ही होगा। आज ही वह समय था। लेकिन कैसे, यही सवाल था। दुर्गा के अधीन काम करने वाली अन्य लड़कियों के विपरीत, जिन्हें सख्त निर्देश दिए जाते थे, गौरी अकेली ऐसी थी जिसे अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने और सही रास्ता चुनने के लिए कहा गया था।
और फिर उसने कुछ ऐसा देखा जिसने उसका दिल पिघला दिया और साथ ही उसका खून खौल उठा दिया।

बारह साल पहले, विंध्य पर्वतमाला के बाहरी इलाके में, नर्मदा नदी से दस मील दूर...
गौरी दलदल में फंसी हुई थी और मदद के लिए लड़के को चिल्ला-चिल्लाकर पुकार रही थी। उसका नाम शास्त्री था और उसने गौरी को पकड़ने के लिए एक छड़ी आगे बढ़ाई थी, लेकिन छड़ी जानबूझकर उससे काफी दूर फेंकी गई थी। गौरी ने आगे

बढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसके पैर जम गए थे। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।
‘कृपया…कृपया…मैं आपसे विनती करती हूँ…’ वह रोते हुए बोली।
लेकिन शास्त्री अपने दोस्तों के साथ हंसने लगा।
‘एक बात तो पक्की हो जाएगी। अब तुम किसी भूत की तरह नहीं दिखतीं जो लोगों को डराता हो। बस थोड़ी सी बदसूरत और बेहद गंदी दिखती हो,’ शास्त्री हंसते हुए बोली। वह उससे दो साल बड़ी थी और एक ऐसी बदमाश थी जिसने उसे नरक बना देने को अपने जीवन का मकसद बना लिया था।
‘कृपा करके…कृपा करके…’ वह गिड़गिड़ाने लगी। उसे महसूस हो रहा था कि दलदल उसकी ओर बढ़ रहा है, उसे निगलने ही वाला है, मानो वह उसके गंदे पानी में डूबने ही वाली हो।
और तभी उसे अपनी ओर फेंकी गई किसी चीज़ का एहसास हुआ। वह एक रस्सी थी। उसे वह रस्सी जैसी लगी। और वह उसे अपनी ओर खींचने लगी।
उसने मुड़कर देखा कि वह आवाज़ कहाँ से आई है और पाया कि दलदल के दूसरी ओर एक गंजा आदमी गहरे रंग का चोगा पहने खड़ा है। उसे देखकर शास्त्री ने तेवर चढ़ाए और अपने दोस्तों के साथ जंगल में तेज़ी से भाग गया।
वह रस्सी के सहारे खुद को खींचती रही और आखिरकार बाहर आ गई। उसने गहरी सांस ली और राहत की सांस छोड़ी। उसे खांसी आई और उसने महसूस किया कि उसके कपड़े — उसके एकमात्र कपड़े, जो केवल चिथड़े-चिथड़े थे—कीचड़ भरे दलदली पानी में भीग चुके थे। उसने ऊपर देखा तो उसे अपना रक्षक दिखाई दिया और गंजे आदमी ने मुस्कुराते हुए उसका अभिवादन किया। लेकिन उसकी खोपड़ी पर त्वचा इतनी कसकर चिपकी हुई थी कि वह बहुत खिंची हुई लग रही थी, जिससे उसे असहज महसूस हो रहा था। उसकी भौहें नहीं थीं और वह अजीब तरह से… अलग दिख रहा था। ‘तुम्हारा नाम क्या है, बच्ची?’
‘गौरी।’
‘वे लड़के कौन थे?’
उसने कोई जवाब नहीं दिया, वह गंदगी साफ करने में व्यस्त थी।
उसने पूछा, 'तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं?'
'मृत।'
उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'तुम अनाथ हो?'
उसने सिर हिलाया।

उसने कहा, ‘मैंने शिविर से तुम्हारी चीखें सुनीं। क्या तुम्हें मक्खन लगी रोटियाँ चाहिए? तुम ज़रूर बहुत भूखे होगे।’
अनाथ होने के कारण किसी पर भी भरोसा करना मुश्किल था। उदाहरण के लिए, शास्त्री को ही ले लीजिए। वह भी अनाथ था, उसके दोस्त भी अनाथ थे, और उसने उसे अपने चोरों के गिरोह में शामिल कर लिया था। वे गांवों और कस्बों के लोगों से चोरी करते थे। शास्त्री को जल्द ही एहसास हो गया कि वह उससे बेहतर कर रही है और उसके दोस्त उसे पसंद करने लगे थे। इसलिए शास्त्री ने उस पर पलटवार किया और उसके असामान्य रंग के कारण उसे नीचा दिखाया, उसे छोटा महसूस कराया और लगातार उसे परेशान किया, क्योंकि वह एक असुरक्षित और बिगड़ैल बच्चा था।
'हाँ, मुझे यह अच्छा लगेगा,' उसने सिर हिलाया। हालाँकि उसे खाना नहीं मिलेगा, लेकिन वह कुछ चुराकर भाग सकती है। साथ ही, वह उस आदमी की मदद के लिए आभारी भी थी।
‘अच्छा,’ वह मुस्कुराया। ‘आओ।’
वे वापस उसके शिविर में गए और उसने देखा कि वहाँ कई तंबू लगे हुए थे और सभी पुरुष एक जैसे दिख रहे थे। गंजे सिर। लंबे काले चोगे। लेकिन कुछ के माथे और गले पर काले रंग से अजीबोगरीब निशान बने हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वे किसी पंथ का हिस्सा हों। और उनके पास बहुत सारे शव भी थे जिन्हें वे तेल से सने चमड़े में लपेटकर अपने साथ ले जा रहे थे।
'इस जगह क्या है?'
‘एक शरणस्थल,’ उसने उत्तर दिया। ‘हम असुरों से छिपते हैं।’
'असीरियन?'
‘दक्षिण का राक्षस, महिषासुर,’ उस आदमी ने कहा और उसे गीले कपड़े पोंछने के लिए एक कपड़ा दिया। फिर उसने उसे तम्बू के अंदर बिठाया और मक्खन लगी रोटियाँ और दही लाकर एक बड़े पत्ते पर परोस दिए।
उसने खाने की तरफ देखा। क्या उसमें ज़हर मिला था? उसे पता नहीं था। लेकिन उसके पेट में गुड़गुड़ाहट हुई और उसे लगा कि इतने लंबे समय में उसने इतना स्वादिष्ट खाना कभी नहीं खाया था। वह आदमी उसके सामने बैठा था, एकदम सीधा, जैसे कोई पुजारी बैठा हो। और उसने अंदाज़ा लगाया कि वह सच में एक पुजारी ही है, क्योंकि उसने इतने सारे ताबीज़ और अंगूठियाँ पहन रखी थीं।
‘क्या आप धार्मिक व्यक्ति हैं?’ उसने फिर भी पूछा।

वह मुस्कुराया। उसकी मुस्कान सादी और कागज़ जैसी थी। ‘मैं मृत्यु और परलोक की पूजा करता हूँ। मैं मृत्यु से जुड़े महत्वपूर्ण अनुष्ठान करता हूँ, जैसे अंत्येशी, ताकि मैं अधिकांश लोगों को मोक्ष की ओर भेज सकूँ।’ वह रुका।
‘क्या तुम खाना नहीं खाओगे?’
उसने एक बार फिर रोटी की ओर देखा।
आपको इस पर भरोसा नहीं है।
वह कुछ नहीं बोली।
‘यह समझ में आता है। तुमने अपना अधिकांश जीवन सड़कों पर बिताया है। मौत के प्रति एक अजीब आकर्षण रखने वाले गंजे आदमी पर भरोसा करना मुश्किल है,’ उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा। ‘क्या तुम उस लड़के से नफरत करते हो जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया?’
उसने सिर हिलाया। 'मैं उसे मार सकती हूँ।' उसने दाँत पीसते हुए अपनी गहरी झुंझलाहट ज़ाहिर की। 'उसने मुझे जितनी भी परेशानियाँ दी हैं, उनके लिए मैं उसे मार सकती हूँ।'
‘वह ऐसा क्यों करता है?’
क्योंकि वह असुरक्षित महसूस करता है।
'और?'
क्योंकि उसे मेरा रूप-रंग पसंद नहीं है।
‘तुम्हारे शरीर में मेलेनिन की कमी के कारण तुम्हारा रंग ऐसा दिखता है,’ पादरी ने कहा। ‘यह त्वचा के रंगद्रव्य की समस्या है। इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। तुम जन्म से ही ऐसे हो।’
उसने शर्माते हुए मुस्कुराया। उसने उसका सबसे बड़ा रहस्य सुलझा दिया था। 'ये धब्बे तब से आने लगे जब मैं सड़कों पर निकलने लगी।'
‘मैं समझ गया,’ उसने सिर हिलाया। ‘मुझे गुंडे बिल्कुल पसंद नहीं हैं, गौरी। मुझे भी बचपन में गुंडों का सामना करना पड़ा है।’
उसने ऊपर देखा और कहा, 'ठीक है।'
‘और मैं हमेशा से उन लोगों को मारना चाहता था जो हमें मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं।’ उसने चाकू उसके सामने ला दिया। ‘तो, मैं तुम्हें विकल्प देता हूँ।’
‘क्या करने के लिए?’ उसकी धड़कन तेज हो गई।

‘तुमने मुझसे कहा था कि तुम उसे मार सकती हो। तो ये लो,’ उसने चाकू उसकी ओर बढ़ा दिया।
‘जाओ और उसे मार डालो।’

पेट के पास त्वचा से ज़्यादा पसलियाँ उभरी हुई एक बेचारे लड़के की छवि देखकर उसके मन में कुछ बहुत बुरा सा महसूस हुआ। उसे लगा जैसे वह वहाँ एक पागल का काम कर रही हो। उस बेचारे लड़के के पास एक मग दूध था और इतना काफी होता कि वह रात को बिना पेट की गुड़गुड़ाहट के सो पाता। लेकिन इसके बजाय, वह यहाँ उस हास्यास्पद मूर्ति को दूध पिलाने आया था जो उस छोटे लड़के के बलिदान का ज़रा भी सम्मान नहीं करती थी।
‘नहीं,’ गौरी ने बीच में दखल देते हुए कहा। ‘वापस जाओ।’
लड़का असमंजस में था।
‘तुम्हें यह करने की जरूरत नहीं है। जाओ!’ वह उस पर चिल्लाई।
उसके पीछे कतार में खड़े लोग असमंजस में पड़ गए। उसके बगल में खड़ी ऐरावती भी हैरान रह गई।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ उसने धीमी आवाज़ में बुदबुदाया।
‘यही सही बात है,’ उसने अपने जबड़े भींच लिए।
वह महिषा की मूर्ति के चरणों के पास आई और उन पर खड़ी हो गई। सभी यह देखकर हैरान रह गए कि एक नश्वर प्राणी इस तरह देवता के चरणों पर खड़ा होकर उन्हें अपवित्र कर रहा है, लेकिन इससे पहले कि पहरेदार उसे देख पाते, उसने घोषणा करना शुरू कर दिया: 'आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। यह गलत है। जो दूध आप बर्बाद कर रहे हैं, वही दूध वे आपको ज़्यादा कीमत पर बेचते हैं। इससे महिषा को कोई सम्मान नहीं मिलता। राजा को तो पता भी नहीं है कि ऐसा हो रहा है,' उसने लोगों पर चिल्लाते हुए कहा। 'सब लोग आपको मूर्ख बना रहे हैं। ऐसा मत करो—'
तलवार का हत्था उसके पेट में घुसा दिया गया और वह ज़मीन पर गिर पड़ी। दो सैनिक अचानक हुए परिश्रम के कारण हांफते हुए आए। उन्होंने उसे लात मारी और उसकी त्वचा को छेद दिया।

‘तुम सब मूर्ख बन गए हो!’ वह चीखती रही, उसके मुंह से खून बह रहा था। ‘मेरी बात मत सुनो…’ वह ऐरावती की ओर मुड़ी। ‘बाकी दासियों को समझाओ…यह ठीक नहीं है…’ और उसने तलवार की मूठ का फिर सामना किया, इस बार उसके चेहरे पर वार हुआ, उसकी नाक टूट गई और खून उसकी नाकों से बहने लगा।
वहाँ, जमीन पर पड़ी हुई, उसके खून से लथपथ चेहरे पर एक मुस्कान प्रकट हुई। ‘अब गुरुजी से मिलने और कुछ अनुशासन सीखने का समय आ गया है, बच्ची,’ गार्ड ने उसे उठाकर अपने कंधे पर फेंकते हुए कहा। ‘तुम जरूरत से ज्यादा बोल रही हो।’
उसे पता था कि उसकी सज़ा मौत होगी। और उसे अपने ऊपर भावनाओं का काबू न रख पाने का अफ़सोस था, लेकिन जब उसने लोगों को देखा—जो उसे घूर रहे थे—तो उसकी आँखों में विद्रोह की एक झलक दिखाई दी। वे उलझन में थे। वे…इस संभावना पर विचार कर रहे थे कि शायद वह सच कह रही हो।
और इसी वजह से वह जानती थी कि आज वह सफल हुई है।

बारह साल पहले…
शास्त्री की झोपड़ी पहाड़ी की तलहटी में, उन गुफाओं के पास थी जहाँ अनाथ चोरों ने अपना लूटा हुआ माल छिपाने के लिए एक छोटी सी जगह बना रखी थी।
वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी, उसके छोटे, गंदे पैर घास को रौंदते हुए आगे बढ़ रहे थे।
रात का अंधेरा छा चुका था और आसमान गहरा काला था। उसकी आँखें भेड़िये की तरह चमकने लगी थीं। वह हवा के विपरीत दिशा में सहजता से आगे बढ़ते हुए गुफा तक पहुँची। उसे अपने धमकाने वालों के खर्राटे सुनाई दे रहे थे। वे चार थे। आज तीन बच जाएँगे।
शास्त्री नहीं। वह भोर देखने के लिए जीवित नहीं रह पाएगा।
वह दबे पांव अंदर गई और उसे ढूंढने लगी। वह बच्चे की तरह सो रहा था। वह सचमुच बच्चा ही था। गौरी भी। लेकिन गौरी इससे तंग आ चुकी थी। वह उसे मार डालना चाहती थी। तब वह अपने गिरोह को अपने साथ मिला सकती थी। वे उसका अनुसरण करेंगे। वे उसकी बात सुनेंगे। तब वह चोरी के धंधे में खूब नाम कमा

सकती थी। वह दुनिया को दिखा सकती थी कि उसके खिलाफ कार्रवाई के परिणाम भुगतने पड़ते हैं। वह एक खतरा थी, कायर नहीं।
उसने चाकू शास्त्री की गर्दन के पास ला दिया। उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं। उसकी आँखों में लालच और क्रोध की चमक थी।
मुझे यह करना होगा।
चाकू शास्त्री की त्वचा को छू गया, लेकिन उसे पता भी नहीं चला। वह अभी भी सो रहा था।
लेकिन क्या मैं यह करना चाहता हूँ?
एक गहरी सांस लेते हुए, उसने वह किया जो महत्वपूर्ण था।

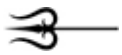

बारह साल पहले…
जैसे ही सूरज निकला, उसने उस लड़की को फिर से देखा।
वह उम्मीद के मुताबिक शिविर में लौट आई थी। उसके हाथ में अब भी उसका चाकू था। और वह कसे हुए जबड़े और चिंता से भरे चेहरे के साथ चल रही थी।
उसने उसकी तरफ मुस्कुराया। वह पिछली रात सोया नहीं था। असल में, वह काफी समय से सो नहीं पा रहा था।
लड़की उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई और चाकू नीचे रख दिया। वह चुप रही, कौवों की कांव-कांव की आवाज़ सन्नाटे को दबा रही थी।
‘क्या हुआ?’ उसने पूछा।
मैंने उसे नहीं मारा।
वह उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया और चाकू उठा लिया। 'क्यों?'
क्योंकि यह सही नहीं था।
उसने सिर हिलाया। 'किसी गुंडे की जान लेना सही नहीं है? क्या ऐसा है?' उसने उसे तीखी नज़र से देखा। आठ साल की बच्ची में ऐसा जोश देखकर बूढ़े आदमी को बहुत सुकून मिला। वह उत्साह से लगभग खिलखिला उठा।
अगर मैंने ऐसा किया तो मैं बिल्कुल उसके जैसा हो जाऊंगा। बल्कि, उससे भी बदतर।
कितनी बुद्धिमत्ता!

‘हाँ,’ उस आदमी ने कहा। ‘आज तुमने एक महत्वपूर्ण सबक सीखा है, लड़की। किसी को चोट पहुँचाना सबसे आसान काम है। लेकिन उन्हें उस चोट से बचाना एक अलग ही स्तर की प्रतिभा की मांग करता है। और सौभाग्य से, वह प्रतिभा तुममें है,’ उसने चाकू कोने में फेंक दिया। ‘क्या तुम इस तुच्छता से बढ़कर किसी बड़ी चीज़ का हिस्सा बनना चाहती हो? क्या तुम एक क्रांति का हिस्सा बनना चाहती हो?’
वह असमंजस में थी। यह लुभावना था।
‘तुममें वो जोश है जिसकी मुझे तलाश है। मेरे साथ जुड़ जाओ,’ उसने उसे अपना हाथ बढ़ाया।
'क्या करना है?'
‘दुर्गा के साथ रहना।’
उसने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'यह कौन है?'
आपको जल्द ही पता चल जाएगा, और जब पता चलेगा, तो आपकी जिंदगी बदल जाएगी। उसने सोचा, 'मुझे लगता है कि अब मैं वह रोटी खा सकती हूँ।'
वह मुस्कुराया और बोला, 'ज़रूर। तम्बू में जाओ। यह तुम्हारे लिए तैयार है।' वह उठी और अंदर की ओर चलने लगी, लेकिन फिर रुक गई। उसने पीछे मुड़कर उससे पूछा: 'आपका नाम क्या है?'
वह उसके प्रति नरम पड़ रही थी। 'मेरे जन्म के नाम का अब कोई महत्व नहीं रह गया है।'
‘तो मैं आपको क्या कहकर बुलाऊं?’
उन्होंने कहा, 'यम। सिर्फ यम।'

10

जिस दिन उसकी पत्नी का अपहरण हुआ था, उस दिन तामार बेहद व्यस्त था।
बाहर जरूरी काम से खड़ी बाश्कला से बात करने का उसे समय नहीं मिला था। लेकिन तामार के लिए काम हमेशा से सर्वोच्च प्राथमिकता थी और वह किसी को भी उसमें दखल नहीं देने देता था।
वह अपने सामने कागज़ात और पांडुलिपियाँ फैलाए बैठा था और उन्हें देख रहा था। उसके बगल में जिले का कानून प्रवर्तन अधिकारी, जीवगर्भ बैठा था। वे दोनों कालीन पर पैर मोड़कर बैठे थे और कागज़ात पर नज़रें गड़ाए हुए थे। ‘समुद्री तूफानों और सीपियों की कसम!’ उसने धीमी आवाज़ में कहा। ‘ऐसा कौन करेगा?’ उसने अधिकारी की ओर देखा।
अधिकारी ने कहा, 'ये सब विशेषाधिकार प्राप्त बिगड़े हुए बच्चे हैं, हमारे मंत्रियों के बच्चे हैं।'
वह अधिकारी द्वारा दी गई रिपोर्ट पढ़ रहे थे। प्रधानमंत्री के रूप में, उनका काम केवल अर्थव्यवस्था और प्रशासन की देखरेख करना ही नहीं था, बल्कि न्यायपालिका और राज्य में उसके निर्णयों के क्रियान्वयन की निगरानी करना भी था, विशेषकर राजा की अनुपस्थिति में। न्यायालय उनका था और उन्हें न्याय करने का पूरा अधिकार था, जिस भी तरीके को वे उचित और न्यायसंगत समझते हों। जाहिर है, यह जनमत पर आधारित था।
रिपोर्ट में बताया गया था कि एक महिला कैसे मिली। वह जीवित थी, लेकिन बुरी तरह से विकृत थी। उसे पीटा गया था, उसके शरीर पर चोट के निशान थे और उसके साथ बलात्कार किया गया था।
‘एक किसान की बेटी,’ उसने धीमी आवाज़ में कहा।
'हां। उन पुरुषों को वह लड़की पसंद आ गई थी। उसने उनके प्रस्तावों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। ऐसा लगता है कि वे 'नहीं' को स्वीकार नहीं करते थे।' तामार को यह देखकर हैरानी हो रही थी कि महिलाओं के प्रति हिंसा कितनी बढ़ गई थी, खासकर महिषा के नेतृत्व में। वह महिलाओं के प्रति निर्मम क्रूरता दिखाता था। 'पुरुष अब कहाँ हैं?'
‘उनके घरों में, मेरे स्वामी।’
उसे यकीन नहीं हो रहा था। 'और वे जेल में क्यों नहीं हैं?'

क्योंकि…महामहिम को यह पसंद नहीं आएगा यदि मैं उनके मंत्रियों की संतानों को कैद कर दूं, महाराज।’
यह सच था।
तो…क्या इस मामले में मुकदमा चलेगा?
‘हमें करना ही होगा,’ उसने आह भरते हुए कहा। ‘नहीं तो यह एक विद्रोह को न्योता देने जैसा होगा। महिलाएं बुनाई और मिट्टी के बर्तन बनाने जैसे कई महत्वपूर्ण काम करती हैं। हम उनकी मेहनत को बर्बाद नहीं कर सकते।’
लेकिन क्या आप उन आदमियों को दोषी ठहराएंगे?
तामार को इसका जवाब अच्छी तरह पता था। वह ऐसा कर ही नहीं सकता था। महिषा इसकी इजाज़त नहीं देती। यह वह राज्य था जहाँ पुरुष आज़ादी से घूमते थे और महिलाओं को उनके कर्मों का फल भुगतना पड़ता था। तामार की पत्नी ने अक्सर विरोध किया था। शुक्र है, वह सुरक्षित थी, लेकिन यह इसलिए भी था क्योंकि वह उसकी पत्नी थी।
'तीन दिन बाद मुकदमा शुरू करो।'
अधिकारी ने सिर हिलाया।
तामार दरवाजे पर गई और वहाँ उसने बश्कला को अपने घने, लहराते बालों के साथ, चेहरे पर चिंता लिए इंतजार करते देखा। उसकी आँखों में भय और चिंता साफ झलक रही थी।
‘क्या हुआ?’ तामार ने पूछा।
एक पल के लिए बाश्कला को समझ नहीं आया कि क्या कहे, लेकिन फिर उसने हिम्मत जुटाकर बोलना शुरू किया...

बारह साल पहले…
चारिणी उस आदमी के बगल में लेट गई जिसे उसने अभी-अभी मारा था। वह एक बूढ़ा आदमी था जिसने अपनी धोती उठाकर उसके साथ ज़बरदस्ती करने की कोशिश की थी। लेकिन खून से सना पत्थर उसके हाथ में था और वह कांप रही थी। उसने कभी किसी को नहीं मारा था। वह सिर्फ आठ साल की थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने क्या कर दिया है और जैसे ही उसने अपना सिर घुमाया, उसने उस आदमी का कुचला हुआ सिर देखा। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

फिर धुंधली दृष्टि से उसे सामने किसी की मौजूदगी दिखाई दी।
‘चारिणी, क्या तुम ठीक हो? क्या तुम ठीक हो?’ उसने उसे हिलाना शुरू किया, और उसे लगा कि उसकी दृष्टि थोड़ी साफ हो गई है।
'जी-जी-जी।'
‘तुमने क्या किया?’ उसके भाई ने उसके बगल में पड़े शव को देखा। ‘तुमने अभी- अभी एक ग्रामानी को मार डाला।’
उसने कहा, 'वह मेरे साथ घिनौनी हरकतें कर रहा था।'
उसका भाई शांत हो गया। ‘मुझे माफ कर दो। मुझे बहुत दुख है कि तुम्हें यह सब झेलना पड़ा।’ उसने उसे कसकर गले लगा लिया। ‘तुमने अच्छा किया। लेकिन अब हमें भागना होगा। तुमने एक ग्राम प्रधान की हत्या कर दी है। हम यहाँ और नहीं रुक सकते। हमें भागना ही होगा।’
उसने उसे अपनी बाहों में उठा लिया।
और वे जंगल में बहुत अंदर तक चले गए।
उसे खुशी थी कि वह उसके साथ था।

नौ रातों के दूसरे दिन की दोपहर थी जब चारिणी ने देखा कि सब कुछ अस्त-व्यस्त है। वह फव्वारे के पास एक स्थिर मुद्रा में खड़ी थी, मानो किसी बड़े रहस्य को उजागर करने के लिए तैयार हो।
लेकिन उसे सही समय चुनना था। तामार को अपनी पत्नी नहीं मिली थी, ज़ाहिर सी बात है, लेकिन उसने अब तक राज्य के अलग-अलग हिस्सों में सैकड़ों सैनिकों को भेज दिया था और वह बेचैनी से ज़मीन पर बैठा खुद को कोस रहा था। परिसर में अन्य पहरेदार, महल के रसोइये और दासियाँ भी मौजूद थीं, जो डर के मारे फुसफुसा रही थीं और सुलोचना के ठीक होने की उम्मीद कर रही थीं।
बाश्कला उसके पास आई और फुसफुसाते हुए बोली: 'तुम्हें उसका हाथ नहीं छोड़ना चाहिए था।'
मैं फिर से कहता हूं, वह बच्ची नहीं है। वह वहीं मौजूद थी, कप्तान। बाशकाला गुर्राई। 'मुझे तुम पर भरोसा नहीं है, लड़की। तुम एक धूर्त और चालाक छोटी बच्ची हो, है ना? मुझे पता है कि इसमें तुम्हारा कुछ हाथ है।' ‘तुम्हारा मतलब क्या है? मैं इसमें क्यों दखल दूंगा?’

क्योंकि अपना चेहरा देखो। तुम्हें अपनी प्रेमिका के लिए न तो पछतावा है और न ही कोई चाहत। ऐसा लगता है जैसे तुम्हें कोई परवाह ही नहीं है।
उसके चेहरे पर एक उदासीन, शांत भाव था।
चारिणी ने भौंहें चढ़ाईं। शायद तुम सही हो।
‘क्या तुम्हें वो मिली?’ तामार ने बीच में दखल देते हुए चिल्लाकर कहा। ‘झगड़ने के बजाय तुम दोनों बाहर जाओ और उसे ढूंढो!’
'मेरे स्वामी, हमने चारों दिशाओं में खोजबीन कर ली है। किसी ने भी उसे नहीं देखा है।'
‘यह कैसे मुमकिन है?’ तामार खड़ा हो गया, उसका सिर पर लगा मुकुट माथे के एक तरफ लटक रहा था। वह छोटा, गठीला और भालू जैसा दिखने वाला आदमी था। ‘कोई औरत हवा में कैसे गायब हो सकती है? बाज़ार में किसी ने तो उसे देखा ही होगा। चारिणी!’ उसने हैरानी से कहा। ‘क्या तुमने उसे देखा था या नहीं? वहाँ क्या हुआ?’ वह उत्तेजना से कांप रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह टूट जाएगा क्योंकि उसने उससे यही सवाल कई बार पूछा था।
‘मेरे स्वामी, मैं आपको कुछ बताना चाहती थी,’ उसने कहा।
‘क्या? क्या?’
बाश्कला मुस्कुराया। उसे लगा कि वह अपना गुनाह कबूल करने वाली है। लेकिन इसके बजाय, उसने तामार को वह पांडुलिपि सौंप दी।
'मुझे यह पूर्वी द्वार पर झाड़ियों में बड़ी सावधानी से छिपा हुआ मिला, महाराज, मानो यह चाहता हो कि हम इसे ढूंढें। मैं इसे आपको देने की योजना बना रहा था, लेकिन कप्तान बश्काला सारा दोष मुझ पर डाल रहा था, इसलिए मैं थोड़ा विचलित हो गया था।'
‘यह क्या है?’ उसने लगभग उसके हाथों से वह पत्र छीन लिया।
‘मेरे स्वामी,’ उसने कहना शुरू किया, ‘यह अपहरणकर्ता का पत्र है।’
उनके चेहरे के भाव बदल गए। मानो वे चौंक गए हों। थोड़ी उम्मीद भी जगी। उसने उसे खोलकर पढ़ा:
मैं तुम्हें आशा भरी चिट्ठी लिख रही हूँ, मेरे प्रिय। हाँ, मैं ही हूँ। सुलोचना। मैं चाहती हूँ कि तुम जानो कि उसने मुझे सुरक्षित रखा है। वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहा है। वह बस तुमसे कुछ चाहता है। वह चाहता है कि तुम...

यह अनुरोध सुनकर उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और फिर उसने पढ़ना बंद कर दिया और चारिणी की ओर देखा। 'तुम्हें यह जानकारी थी और तुमने मुझे एक घंटे तक नहीं बताई?' वह गुस्से से बोला।
'मुझे नहीं पता था कि यह असली था या नहीं, महाराज।'
‘ये उसकी ही लिखावट है!’ उसने कागज़ को ज़मीन पर फेंक दिया। ‘यह पागल मुझसे नामुमकिन काम करवाना चाहता है, और तभी वो उसे आज़ाद करेगा।’
‘वह क्या चाहता है?’ बाश्कला ने पूछा। ‘आपको किसी भी आर्थिक मांग के आगे नहीं झुकना चाहिए। हम उसे ढूंढ निकालेंगे, महाराज,’ उसने गंभीरता से वादा किया।
'यह पैसे की बात नहीं है,' उसने थोड़ा निराश होकर सिर हिलाया।
‘तो फिर?’ कप्तान घबराकर आगे बढ़ा। ‘वह उसे तभी रिहा करेगा,’ वह कांपते हुए बोला, ‘जब मैं चार आदमियों को फांसी दे दूंगा।’
‘चार आदमी? ये आदमी कौन हैं?’
उसने चारिणी और बश्कला की ओर देखा। ‘ये बलात्कारी हैं, कप्तान। ये बलात्कारी हैं और अगर मैंने इन्हें फाँसी दी तो मुझे महिषा के क्रोध और इस शहर के पुरुषों के विद्रोह का सामना करना पड़ेगा।’

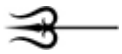

12 साल पहले…
कुछ महीनों बाद, चारिणी ने इस बात को स्वीकार कर लिया था कि उसने एक आदमी को मार डाला है, और हालांकि इस विचार से उसके गले में कड़वाहट सी उठती थी, फिर भी उसने हिम्मत जुटाकर एक गाँव से दूसरे गाँव का सफर तय किया। वे भगोड़े थे। वे पहले से ही गरीब थे, लेकिन जब वे पहले एक जगह रुके हुए थे, तब उसका भाई गाँव के दफ्तर में काम करता था। वह उसके लिए खाना लाता था। लेकिन अब, जब से उसने मुखिया को मारा था, वे भाग रहे थे।
‘मुझे भूख लगी है, अन्ना,’ उसने कहा।
उसने कुछ नहीं कहा। वह चुप रहा। वह उसके पीछे-पीछे चल रही थी। लड़खड़ाती हुई, डगमगाती हुई और आगे बढ़ती हुई।
कुछ देर बाद उसने कहा, 'तुम्हें उसे नहीं मारना चाहिए था।'
लेकिन घिनौना—

‘तुम उसे चोट पहुँचा सकती थीं,’ उसने उसे बीच में ही रोकते हुए गुस्से से उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। ‘तुम उसके पैरों के बीचोंबीच वार कर सकती थीं। लेकिन तुमने उसे मार डाला!’
वह देख सकती थी कि वह गुस्से में है और उसे रोने का मन कर रहा था। अन्ना, अगर गुस्से में थी, तो उसके प्रति दयालु नहीं थी।
'चारिनी, मेरे पास एक बढ़िया नौकरी थी। सब कुछ खत्म हो गया। तुम एक हत्यारे हो। और मैं एक हत्यारे की मदद कर रहा हूँ।'
आपका मतलब वो नहीं है।
उसने आगे कुछ नहीं कहा। उसे असभ्य नहीं होना चाहिए था। वह उसका भाई था। वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिस पर वह भरोसा कर सकती थी।
फिर वह मुड़ा। उसकी आँखों में नरमी आ गई। 'मुझे माफ़ कर दो।' वह उसके सामने खड़ा हो गया। सूरज तेज़ था और वे अंतहीन पेड़ों के बीच फँसे हुए थे। पसीना आ रहा था। वे कई दिनों से एक ही कपड़े पहने हुए थे। जंगल से तोड़ी गई बेरियों और दूसरी चीज़ों पर गुज़ारा कर रहे थे। 'मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मुझे भी भूख लगी है, और मैं बस परेशान हूँ।'
उसने सिर हिलाया। उसने कुछ नहीं कहा।
तो वे आगे बढ़ गए। रास्ते में उन्हें एक छोटा सा शिविर मिला और अन्ना ने वहाँ खाना पकते हुए देखा।
मुझे देखना चाहिए कि क्या हम वहां से कुछ प्राप्त कर सकते हैं।
क्या आप उनसे पूछने वाले हैं?
'नहीं,' उसने सिर हिलाकर कहा।
‘चोरी? लेकिन क्या चोरी करना बुरा नहीं है?’
‘खैर, मेरी प्यारी बहन, मुझे लगता है कि अब बहुत देर हो चुकी है। हम इस मामले में बहुत गहरे फंस चुके हैं।’
और उसने ऐसा किया।
उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह उसे आखिरी बार देख रही होगी।

चारिणी जानती थी कि उसने शिविर पर हमला करने की कोशिश की थी, लेकिन जब उसे पता चला कि यह राजा महिषा के लोगों का शिविर है, तो वह डर गई। उसने अपने भाई

को पेट में छुरा घोंपते और खून बहते हुए देखा था। और जब उसने मदद के लिए पुकारा, तो उसकी पुकार अनसुनी कर दी गई। तभी, किसी ने पीछे से उसे पकड़ लिया।
तभी उसकी मुलाकात अब तक के सबसे दयालु व्यक्ति से हुई। एक आर्य। एक देव। अग्नि, जो अग्नि तत्व से संबंधित अनुष्ठान करते थे। उन्होंने उसे अकेले देखा और पाया कि वह काफी छोटी थी और उसे उनकी मदद की ज़रूरत थी। उन्होंने उसे भोजन दिया और उसकी देखभाल की।
उस रात के बाद, वह पहले जैसी नहीं रही। उसने किसी की हत्या कर दी थी और भूख के कारण अपने भाई को भी मरने दिया था। उसे कुछ भी महसूस नहीं होता था।
अग्नि देव ने इस पूरी प्रक्रिया में उसकी बहुत मदद की और उसे दुर्गा के अधीन काम करने को कहा। उसने बहुत कुछ सीखा, खासकर रणनीतियाँ।
वह कमरे में थी, इस बात से खुश थी कि योजना सही चल रही थी। सब कुछ ठीक था।
तामार ने उसकी कहानी पर विश्वास कर लिया था कि उसे चिट्ठी बाहर मिली थी।
लिखावट से ही सब पता चल गया था। और जब वह चारपाई पर बैठी अपनी अगली योजना के बारे में सोच रही थी, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।
उसने उसे खोलने की कोशिश की, तो उसे बश्कला की कठोर, काली आँखें दिखाई दीं।
‘तुम क्या चाहते हो?’ उसने मधुर स्वर में कहा।
'बातचीत करना।'
'किस बारे मेँ?'
‘मेरे आदमी पूर्वी द्वार के बाहर थे और उन्हें कोई खून से सना हुआ पत्र नहीं मिला। तुम झूठ बोल रहे थे। तुमने इसे खुद लिखा था। शायद जाली बनाया था। तुम तो विद्वान हो, है ना?’
वह सचमुच विद्वान थी। अग्नि ने उसे भूगोल, इतिहास और विज्ञान के बारे में सब कुछ सिखाया था। वह बहुत ज्ञानी थी। 'तुम्हारे पास कोई सबूत नहीं है।' 'मेरी अंतरात्मा की आवाज ही इसका प्रमाण है।'
'अच्छा, तो फिर यह बात प्रधानमंत्री तामार को बता दो।'
उसने अपने जबड़े भींच लिए। 'मैं तुम्हें जानता हूँ, चारिणी। मैं तुम्हें जितना तुम सोचती हो उससे कहीं ज़्यादा जानता हूँ।'
और यह कैसे?
एक पल के लिए उसकी आँखों में डर की एक झलक दिखी, मानो वह कुछ कहना चाहता हो, लेकिन फिर उसने अपनी कमीज़ ऊपर खींच ली। चारिणी ने नीचे देखा। उसने एक

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

11

जब एडमिरल ने चंद्र को देर रात बैठक के लिए बुलाया तो वह तैयार थी।
नाव हिल रही थी। और वह तहखाने में थी। पेय पदार्थों की बोतलें और जार अलग-अलग जगहों पर रखे थे। उसने उनमें से एक को बाहर निकाला और यह सुनिश्चित किया कि वहाँ कोई नहीं है। चारों ओर नज़र घुमाते हुए, उसने अपनी कमीज़ की जेब से एक शीशी निकाली और उसमें मौजूद सामग्री को बोतल में डाल दिया। यह पिसी हुई हेमलॉक थी जिसे पानी में मिलाया गया था और जिसे वह नाव पर रहने के दौरान अपने साथ लिए घूम रही थी।
इसका मकसद एडमिरल को मारना था। धीरे-धीरे, आराम से। बिना किसी शोर-शराबे के। ऐसा लगना चाहिए था कि उस आदमी का दिल धड़कना बंद हो गया है। लेकिन जब वह बोतल लेकर वहाँ खड़ी थी, तो उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। एडमिरल एक नेक इंसान थे।
लेकिन…
उसका एक मिशन था।
अपने होंठों को चाटते हुए, उसने उस जगह के बारे में सोचा जहाँ से सब कुछ शुरू हुआ था। उसने दुर्गा के साथ क्यों जुड़ना शुरू किया था...

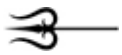

5 साल पहले, लोथल बंदरगाह, जो आधुनिक गुजरात में स्थित है…
लोथल व्यापार और वाणिज्य का एक समृद्ध केंद्र था। साबरमती नदी अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण साधन थी, क्योंकि यह सीधे अफ्रीका और अन्य महाद्वीपों की ओर बहती थी जहाँ निर्यात और आयात का कारोबार उत्तम था। पूरा बंदरगाह मिट्टी की ईंटों से बने घाटों से ढका हुआ था जहाँ जहाज़ों को खड़ा किया जाता था। बंदरगाह के ठीक बीच में, ऊँचाई पर एक मीनार थी जहाँ ग्रामानी (पुलिस अधिकारी) तैनात थे। जहाज़ों के लिए गोदीखाने थे और माल रखने के लिए धूप में सुखाई गई ईंटों से बने गोदाम थे।
लोथल आभूषणों के लिए भी प्रसिद्ध था और चंद्र मनके बनाने का काम करती थी। उसका एक छोटा सा घर था जो घाट के पास, अन्य मनके बनाने वालों के बाज़ार के नजदीक था। वह अपने द्वारा इकट्ठा किए गए सीपियों, पत्थरों और कंकड़ों से सस्ते आभूषण बनाती थी, इस उम्मीद में कि वे बिक जाएँगे।

वह लंबे समय तक अनाथ के रूप में अकेली रही थी। उसकी माँ का कुछ साल पहले देहांत हो गया था। वह पहले दुकान पर बैठा करती थी। लोथल एक शांत आर्थिक केंद्र था जहाँ कोई किसी को परेशान नहीं करता था। और सबसे अच्छी बात यह थी कि यहाँ कोई युद्ध नहीं होता था। लोथल इतना महत्वपूर्ण था कि आर्यों और दासों ने इस पर सहयोग करने के तरीके खोजे और एक मध्य मार्ग निकाला। ग्रामानी एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति था और उसने यह सुनिश्चित किया कि बंदरगाह के पानी में किसी भी प्रकार की शत्रुता न फैले।
जिन दिनों दास अपना कारोबार करते थे, उन दिनों आर्य नहीं करते थे। और चूंकि आर्य कुछ समय के लिए छिप गए थे, इसलिए दास ही यहाँ सबसे अधिक कारोबार करते थे।
आज के सम।
पानी पर सूरज की किरणें चमक रही थीं और हवा ठंडी थी। उसने स्थानीय प्लावा (नाव) को किनारे पर खड़ा देखा और उस पर लगे झंडे पर भैंस का चिन्ह बना हुआ था। वह जानती थी कि इसका मतलब है कि यह महिषा की नाव है। काले कवच वाले सैनिकों को छोड़कर बाकी सभी पुरुष बाहर आ चुके थे, लेकिन एक खास आदमी पर उसकी नज़र टिकी हुई थी। वह क्रिस्टल जैसी धूसर आँखों और मनमोहक मुस्कान वाला एक नौजवान था। वह उनका स्वागत करने आई ग्रामानी (महिलाओं) को गले लगा रहा था। देखने के लिए भीड़ जमा हो गई थी। उस आदमी की त्वचा काँसे रंग की और एकदम साफ थी।
‘यह कौन है?’ उसने अपने मोतियों से खेल रहे लड़के से पूछा। उसका नाम बिक्रम था, जो एक स्थानीय कुली था। सामान्य आदमी से आधे कद का और मात्र दस वर्ष का होने के बावजूद, वह अपने दुबले-पतले शरीर की क्षमता के अनुसार भारी सामान ढोता था।
‘Sanghrihitri,’ he said.
‘क्या?’ वह असमंजस में पड़ गई।
‘महिषा राजा के दरबार में एक कोषाध्यक्ष।’
‘एक कोषाध्यक्ष?’
वह गढ़ के मध्य में स्थित मीनार की ओर बढ़ रहा था, जहाँ पुजारी अपने देवताओं की पूजा करते थे और तरह-तरह के अनुष्ठान करते थे। सभी लोग वहाँ जमा होकर श्रद्धा से खड़े थे, मानो वह कोई राजा या राजकुमार हो। लेकिन लोथल एक

ऐसी जगह थी जहाँ के निवासी बाहरी लोगों का सम्मान करते थे और उन्हें आदर देते थे, विशेषकर महिषा के राज्य के धनवान व्यक्ति को।
महिषा धीरे-धीरे सम्राट बना और उसने इसमें अपना समय लिया। उसने कई स्थानों पर आक्रमण किए, लूटपाट की, लेकिन जिन स्थानों के प्रति उसे सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए था, उनके प्रति वह हमेशा सम्मानजनक रहा। जैसे कि लोथल। वह क्रूर व्यक्ति नहीं था। या कम से कम, उसके सैनिक तो यही कहते थे।
उसने पूछा, 'वह यहाँ क्यों है?'
‘एक तरह का व्यापारिक समझौता। महिषा के जहाजों के लिए कुछ वर्षों का एकाधिकार,’ लड़के ने कहा और फिर कंधे उचका दिए। ‘कुछ सैनिकों से सुना है जिन्होंने मीनार में दासियों के बीच बातचीत सुनी थी,’ वह रुका। ‘लेकिन ग्रामानी तो मना ही कर देंगे। मेरा मतलब है, वह कम से कम इन जमीनों पर किसी को भी एकाधिकार नहीं देंगे।’
यह सब सुनी-सुनाई बातें थीं, इसलिए उसने इसे गंभीरता से नहीं लिया।
उसने लड़के से पूछा, 'क्या तुमने आज कुछ खाया?'
वह अभी भी विचलित था, इसलिए चंद्र ने उसके सिर पर एक थप्पड़ मार दिया। 'हां, हां, मैंने किया।'
'आपके पास क्या था?'
उसने अपना सिर खुजाया। 'उम्म... चावल?'
उसने फिर उसके सिर पर थप्पड़ मारा। ‘तुम खाना क्यों नहीं खाते? क्या मैं तुम्हें पैसे नहीं देती? तुम उनका क्या करते हो?’ वह काफी समय से बिक्रम की मदद कर रही थी। वह उसे भाई की तरह मानती थी। लेकिन वह बस एक शरारती बच्चा था।
‘उम…मैं…उम…इसे बर्बाद कर दूं?’ वह बहाने ढूंढने की कोशिश कर रहा था। उसने आह भरी। उसने उसे एक और सिक्का दिया। 'कृपया जाइए और कुछ खा लीजिए।' उसने सिर हिलाया और तेजी से चला गया।
होंठ सिकोड़कर वह बैठ गई और विदेशियों और स्थानीय लोगों को अपने मनके बेचने की कोशिश करने लगी। जल्द ही रात हो गई, और जब वह अपनी झोपड़ी बंद कर रही थी, तब उसे एहसास हुआ कि वह उनमें से आखिरी बची है। किनारा खाली था।
घाट सुनसान था। झोपड़ी को कपड़े से ढककर वह गलियों की ओर चल पड़ी, तभी उसकी नज़र दुर्मुखा के ओक की लकड़ी के जहाज के अंदर टिमटिमाती मशालों पर पड़ी।
उस पर लोग थे। उनकी फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

क्या जहाज के सभी सैनिक टावर पर नहीं गए थे?
उसने दुर्मुखा का पीछा करते हुए कई लोगों को अवश्य देखा था। वह जहाज के करीब गई और डेक के निचले हिस्से में स्थित कांच की खिड़की के कोने से अंदर झाँका, तो उसे जहाज की रसोई में पचास से अधिक सैनिक एक साथ huddled हुए दिखाई दिए।
बीच में खड़े व्यक्ति ने कहा, 'सूरज उगते ही हमें उस खूनी जगह को आग लगा देनी चाहिए। और हमला कर देना चाहिए। उस जगह को जलाकर राख कर दो, ताकि राजा महिषा उसका पुनर्निर्माण कर सके और उसे अपना बना सके।'
नहीं।
एक पल के लिए वह स्तब्ध रह गई।
और तब उसे पता चला कि उसे क्या करना है।
बिक्रम को खोजें।

वे हंस रहे थे।
वह कप्तान के कमरे में थी, और बोतल बीच में रखी थी। एडमिरल ने एक लंबी शॉल ओढ़ी हुई थी, जिससे उनका टैटू बना शरीर ढका हुआ था, और वे मेज के दूसरी तरफ बैठे थे।
‘उस यूनानी जहाज से मुकाबला करने में तुमने अच्छा प्रदर्शन किया, लड़की,’ उसने कहा।
उसने मुस्कुराते हुए नाटकीय अंदाज में झुककर कहा, 'अच्छा, आपने ही तो मुझे सिखाया था।'
मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम यहाँ तक पहुँचोगे। जब तुम आए थे, तब तुम एक रसोइया थे। तुमने मुझे हमेशा प्रभावित किया और देखो, तुम यहाँ हो, एक नाविक बन गए हो।
'मैं ज्यादा देर तक यहां रहने का इरादा नहीं रखती,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।
‘बेशक तुम नहीं जानती,’ उसने शराब उठाते हुए और उसके और अपने लिए डालते हुए कहा, और बोतल को वहीं वापस रख दिया। ‘उथारका, मेरे प्यारे क्वार्टरमास्टर, एक अनुभवी व्यक्ति हैं। लेकिन वो अच्छे इंसान हैं। वफादार हैं। और यही

महत्वपूर्ण है। क्या सोचती हो, लड़की? क्या तुम वफादार हो?’ उसने अपनी मूंछें घुमाते हुए उससे पूछा। प्याला उसके मुंह के ठीक बगल में था। लेकिन उसने शराब नहीं पी।
वह तनाव से अपने होंठ काट रही थी। वह उससे वह जहरीला पेय छीन लेना चाहती थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह… असमंजस में थी।
उसे उसे ज़हर देना था। और फिर यह दिखाना था कि यह एक दुर्घटना थी। उसे उससे एक नकली पत्र लिखवाना था जिसमें वह यह लिखता कि अब वह कप्तान होगी। यह उसके लिए उत्तराधिकारी का पत्र था। ताकि उसकी मृत्यु के बाद, वह जहाज की कमान संभाल सके और उसे श्रीलंका से आ रहे जहाज की ओर ले जाकर उस पर हमला कर सके। लेकिन वह जरूरत से ज्यादा सोच रही थी। वह नहीं चाहती थी कि एडमिरल की मृत्यु हो। शायद, वह उन्हें मना सकती थी।
‘मैं वफादार हूँ, कप्तान।’
'मुझे लगता है कि तुम हो,' उसने गर्व भरी मुस्कान के साथ कहा।
‘आप अपना नाम कभी क्यों नहीं बताते?’
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'नाम मायने नहीं रखता। हम इस दुनिया में बस बची हुई परछाइयाँ हैं। हमें अपनी उपाधियों के साथ ही जाना चाहिए।'
‘आप एडमिरल बनने से पहले… थे।’
‘एक वैध समुद्री डाकू?’ वह हँसते हुए बोला। ‘हाँ, मैं था। मैंने देवताओं के साथ काम किया। प्रिय इंद्र के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था।’
उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। क्या वह देवों के साथ काम करता था? उसे यहाँ गुप्त रूप से भेजे जाने से पहले जो जानकारी दी गई थी, उसमें इस बात का कोई ज़िक्र नहीं था।
और फिर एक दिन मैंने इस्तीफा देने का फैसला किया। देव खुश नहीं थे। आखिरकार, मैं उनकी सबसे कीमती संपत्ति थी। इसलिए, उन्होंने मुझे मजबूर किया।
‘आप इस्तीफा क्यों देना चाहते थे?’
खैर, मैं विदेशी भूमि पर उनके विजय अभियानों और अन्य बातों से निराश था। वे अपना व्यापार बढ़ाना चाहते थे। इसके अलावा, मैं अपने परिवार के साथ रहना चाहता था।
‘क्या आपका परिवार है?’

जब उसने पेय लिया और अंत में उसे घूंट-घूंट करके पिया, तो उसकी आँखों में दर्द की एक झलक दिखाई दी।
उसका दिल बेकाबू हो गया और पहले से कहीं ज्यादा तेजी से धड़कने लगा। वह चीखना चाहती थी और उसकी आँखों में डर साफ झलक रहा था।
उसने एक और घूंट ली।
नुकसान तो हो ही चुका था। अब उसे उससे पत्र लिखवाने के लिए कहना ही पड़ेगा।
उसके पास समय नहीं था। अब और नहीं।
उन्होंने कहा, 'उन्होंने मेरे परिवार को मार डाला।'
'कौन?'
‘देवों ने। वे नहीं चाहते थे कि मैं इस्तीफा दूं, इसलिए उन्होंने उन्हें मार डाला और इसका इल्जाम किसी और पर लगा दिया। मुझे इस बात का पता बहुत बाद में चला और मैंने उन्हें छोड़ दिया, महिषा के साथ जुड़ गया और अब वही करता हूं जो वह कहता है,’ उसने आह भरी। ‘ओह, जल के देवताओं की कसम, इसका स्वाद अलग है। क्या आपको नहीं लगता?’
उसने अपने होंठ चाटे। क्या इसीलिए देव चाहते थे कि वह एडमिरल को जहर दे? क्योंकि उसने उनके साथ विश्वासघात किया था? क्योंकि उसके जैसे अच्छे आदमी को मारना समझ से परे था।
क्या मेरे नियोक्ताओं ने मुझे गुमराह किया है?
लेकिन उसे अपनी योजना पर अडिग रहना था। अपने मिशन पर। दुर्गा देवताओं जैसी नहीं थी। वह अलग थी। उसे उसे बताना था कि उसे जहर दिया गया है और उसे उत्तराधिकारी का पत्र लिखना होगा। तभी वह उसे विषनाशक देगी। लेकिन कोई विषनाशक था ही नहीं। यह झूठ था। उसके हाथ में एक शीशी थी जिसमें नकली विषनाशक था। वह तो बस सादा पानी था।
“मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए बुलाया क्योंकि मैं तुम्हें यह देना चाहता था,” उसने कहा, तभी उसे ज़ोर से खांसी आने लगी। उसने उसे एक स्क्रॉल पकड़ा दिया। “इसे खोलो। हे भगवान, मुझे घुटन महसूस हो रही है। लेकिन…” उसे पसीना आने लगा था, लेकिन वह अब भी मुस्कुरा रहा था।
उसने उस पत्र को खोला और उसमें लिखी बातें देखीं।
मैं पूर्ण चेतना और आशा के साथ यह लिख रहा हूँ। मैं चंद्र घाटा को इस जहाज का कप्तान घोषित करता हूँ।
आपका प्रिय,

समुद्र

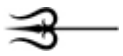

12 साल पहले…
उसने आधी रात को उसे ढूंढने की पूरी कोशिश की। उसने अपनी पूरी ताकत लगा दी। लेकिन वह कहीं नहीं मिला। बिक्रम गायब हो गया था। वह उसके ठिकाने पर भी गई, जहाँ वह आमतौर पर अपने दूसरे कुली दोस्तों के साथ रहता था, लेकिन वहाँ भी वह नहीं मिला।
जब वह पूरी तरह थक चुकी थी और हार मानने को तैयार थी, तब उसे एहसास हुआ कि सूरज निकल रहा है।
उसके पास समय नहीं था।
मुझे खेद है, बिक्रम।
और वह बंदरगाह से निकल पड़ी। उसने पास की ही एक सरकंडे की नाव चुराई और साबरमती नदी में दूसरे बंदरगाह की ओर चल पड़ी, लेकिन वह थक चुकी थी और उसे आराम की जरूरत थी।
एक दिन बाद, जब वह अन्य कस्बों और गांवों में गई, तब उसे लोथल में हुए नरसंहार के बारे में पता चला। सभी लोग मारे गए थे।
और उन लोगों को पीछे छोड़ने का अपराधबोध...
वह स्वार्थी हो गई थी। वह सिर्फ अपने बारे में सोचती थी। अपराधबोध उसे अंदर से मार रहा था।

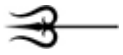

उस दिन के बाद, उसने महिषा का विरोध करने के लिए किसी को खोजने का प्रयास किया। उसकी खोज उसे वरुण के शिविर तक ले आई। वरुण एक लोकप्रिय पुरोहित-राजा थे जो देवताओं के नौसैनिक नेटवर्क का संचालन करते थे। उसने उन्हें अपने किए के बारे में बताया। वरुण प्रसन्न हुए कि कोई उनके पास आया और अपने पश्चाताप के बारे में ईमानदारी से बताया। उन्होंने उसे दुर्गा के साथ काम करने के लिए कहा, ताकि उसे प्रायश्चित करने और बिक्रम जैसे कई लोगों की जान बचाने का मौका मिल सके।

लेकिन अपने सामने रखे उस पत्र को देखकर वह कांप उठी और बोली: 'मैं हूं...लेकिन...मैं एक...'
‘यह मत कहो कि तुम औरत हो। मुझे ज़रा भी परवाह नहीं…’ वह रुका और फिर खांसा, ‘कि तुम औरत हो या मर्द। तुमने अच्छा किया और अब मेरे आराम करने का समय है।’ ‘समुद्र…वो…मुझे पता है…’
‘जी हां। मैं देवताओं में से एक हूं,’ वह मुस्कुराया और अपनी कुर्सी से उठकर इधर-उधर चलने की कोशिश करने लगा। ‘मैं वरुण का भाई था। सटीक कहूं तो सौतेला भाई। वह मेरे प्रति दयालु नहीं था।’
‘मुझे माफ कर दो,’ वह रोते हुए बोली।
‘क्या हुआ—’ यह कहते हुए वह जमीन पर गिर पड़ा, उसका शरीर बुरी तरह कांप रहा था।
उसने उसे पकड़ लिया। वह उसकी मदद करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसे पता था कि वह मरने वाला है। 'उसने मुझे बताया कि तुम बुरे हो... उसने मुझे बताया... मुझे नहीं पता था... मैं...' वह अटपटे शब्द बोल रही थी जिनका कोई मतलब नहीं निकल रहा था।
एडमिरल ने आखिरी बार सहानुभूति का एक क्षणिक भाव दिखाया, उसके प्रति सदमे का एक क्षणिक भाव व्यक्त किया, और फिर अपनी आँखें बंद कर लीं क्योंकि उनकी आत्मा उनके शरीर से निकल गई। वह वहीं, उसकी बाहों में, उसके स्थिर सीने पर रोते रहे।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस पर भरोसा करे और किस पर न करे।
उसने एक अच्छे आदमी की हत्या कर दी थी।
धर्म के व्यापक उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए।
उसने पछतावे से छुटकारा पाने के लिए इस क्रांति में हिस्सा लिया। लेकिन इसके बजाय, उसे और भी ज्यादा पछतावा हुआ।
मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए फायदेमंद साबित होगा, दुर्गा।

12

दो बड़े समूहों के बीच गठबंधन अक्सर सामान्य और साथ ही जटिल भी होता है। इसमें एक पक्ष को दूसरे पक्ष की इच्छाओं को समझना होता है और साथ ही अपनी शर्तों को भी सामने रखना होता है। फिर दोनों समूह एक ऐसा मध्य मार्ग खोजने का प्रयास करते हैं जिससे वे संतुष्ट हों, और अंत में दोनों समूहों को उनकी इच्छानुसार कुछ न कुछ प्राप्त हो जाता है।
लोगों से बात करने का एक खास तरीका होना चाहिए। और उनकी बॉडी लैंग्वेज, उनके चेहरे के हाव-भाव को समझना चाहिए।
दुर्भाग्यवश, जहां महिषा बैठा था—बड़े तंबू के अंदर चूल्हे के सामने, थामिसदा के ठीक सामने—वहां से उसका चेहरा देखना असंभव था।
महिषा अकेला था। उसे त्रिनेत्र की यहाँ ज़रूरत नहीं थी। न ही बात करने के लिए। लेकिन वह बाहर पहरा दे रहा था।
वह देख सकता था कि थामिसदा के हावभाव में एक अजीब सी असहजता थी। थोड़ी असहजता, थोड़ी झुंझलाहट। वह सहज महसूस नहीं कर रहा था।
‘यह क्या है?’ महिषा ने पूछा। ‘क्या यह दुर्गा है?’
पिछली बार जब उसे पता चला था कि वह यहाँ है, तो उसने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया था। यह बेवकूफी थी। कोई भी उस भविष्य को नहीं देख सकता था जिसे वह जानता था, लेकिन उसे व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना ही था।
'महिषा, तुम उसके साथ बाहर रहकर यह गठबंधन कैसे कर सकते हो?' थामिसदा ने पूछा।
क्योंकि वह यहां नहीं है।
रिगोली ने झल्लाकर कहा, 'मैंने उसे देखा था।'
हां। महिषा ने आह भरी। 'मेरे आदमियों ने तुम्हारे सभी आदमियों की तलाशी ली और तुम्हारे आदमियों ने मेरे आदमियों की। हमें कुछ भी गड़बड़ नहीं दिखी। ऐसा कोई खास व्यक्ति नहीं है जिस पर शक हो। सच कहूं तो, रिगोली, मुझे लगता है कि तुमने गलत देखा।'
‘मुझे कभी कोई गलती नजर नहीं आती,’ पादरी ने चिढ़ और नाराजगी भरे चेहरे के साथ कहा।
‘क्या हम अभी के काम पर ध्यान दे सकते हैं? यह काम पूरा होने के बाद मैं चला जाऊंगा, और आपको दुर्गा के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है।’

'महिषा, जो बात मुझे सबसे ज्यादा हैरान करती है, वह यह है कि मुझे हमेशा से युद्ध पसंद रहे हैं। लड़ाइयाँ। वे मेरी आँखों के सामने घटी हैं। लेकिन महिषा, परछाइयाँ सबसे खतरनाक होती हैं। वे तुम्हारे पीछे से आती हैं, तुम्हारा पीछा करती हैं और तुम्हें छुरा घोंप सकती हैं। इसीलिए मुझे हत्यारों से नफरत है।'
मैसुरु के राजा ने सिर हिलाया। 'आप सही कह रहे हैं। मुझ पर पहले भी जानलेवा हमले हो चुके हैं।'
‘मुझे यकीन है। आप एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं,’ थामिसदा ने आह भरी। ‘ठीक है। चलिए चर्चा करते हैं।’
‘अच्छा,’ महिषा मुस्कुराया। उसने दस्तावेज़ निकाले और उन्हें सरदार के सामने रखकर दिखाया। ‘मैं आपको दो हज़ार सोने की छड़ें और एक ज़मीन का टुकड़ा देने के लिए तैयार हूँ।’
‘कौन सा भूभाग?’
जिस पर आप बैठते हैं।
उसने अपना सिर उठाया। प्रभावित होकर बोला, 'दिलचस्प।'
'हां। मुझे लगा कि आपके लिए उस जमीन को देखना अच्छा रहेगा जिसके आप मालिक बनेंगे।'
और बदले में तुम चाहते हो...
‘तुम्हारी वफादारी।’ महिषा ने अपना प्याला शराब से भर लिया, पैर मोड़कर जमीन पर बैठ गया। ‘मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी सेना का हिस्सा बनो और आर्यों के बचे-खुचे अंशों को नष्ट करने में मेरी मदद करो।’
‘क्या तुम जंबूद्वीप से आर्यों का सफाया करना चाहते हो?’
‘जी हां। कुछ क्षेत्रों में अभी भी देवताओं का दबदबा है। तुम जाओ और उन्हें मार डालो। बहुत आसान है,’ वह मुस्कुराया।
‘तुम हमारे साथ… तुम हमारे साथ भाड़े के सैनिकों जैसा बर्ताव करते हो, महिषा?’ वह गुर्राया। ‘क्या तुम्हें लगता है कि हम भाड़े के सैनिक हैं? हम… क्या? तुम्हारे लिए हिंसा करने वाले मजदूर?’
महिषा समझ गई कि वह नाराज़ है। रिगोली भी नाराज़ था। पाना जाति स्वाभिमानी थी और उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि कोई उनके साथ अन्याय करे। उसने अपनी मसालेदार शराब का एक घूंट लिया और कहा, 'बिल्कुल नहीं। तुम्हें मेरे किसी भी सहयोगी से ज़्यादा भेंट दी गई है।'

‘हमारे जैसे खानाबदोश समुदाय को ज़मीन की ज़रूरत नहीं होती,’ उसने स्क्रॉल वापस महिषा की ओर बढ़ाते हुए कहा। ‘सोने की छड़ों का हमारे लिए कोई महत्व नहीं है क्योंकि हम युद्ध में मिलने वाले इनाम और वस्तु विनिमय पर गुज़ारा करते हैं।’ उसने स्क्रॉल का बचा हुआ हिस्सा महिषा की ओर धकेल दिया।
एक पल के लिए महिषा सोचने लगा। मुझे क्या करना चाहिए? काश शुक्र यहाँ होता और अपनी चिकनी मुस्कान दिखाकर स्थिति को अपने पक्ष में मोड़ लेता। और उसने यही किया।
‘आप हमें ऐसे तुच्छ प्रस्ताव देकर अपमानित कर रहे हैं। और मैंने सोचा था कि हम दोस्ती कायम कर रहे हैं,’ मुखिया ने उपहास उड़ाते हुए कहा।
'बेशक हम हैं।'
‘अच्छा,’ थामिसदा उठ खड़ा हुआ। ‘क्यों न मैं आपको कुछ भेंट करूं?’
‘मुझे क्या पेशकश करोगे?’
वह तंबू के पर्दों तक गया और अपनी मातृभाषा में एक आदेश दिया। एक लड़की अंदर आई। जवान। खूबसूरत। अनोखी। उसकी आंखें शहद के रंग की थीं। सुनहरी। उसने शानदार गहने और गाउन पहन रखा था।
‘यह तबिती है।’
महिषा उठ खड़ा हुआ और उसने उसे शुभकामनाएं दीं।
'वो मेरी बहन है।'
ओह। महिषा ने दांत पीस लिए। वह जानता था कि बात किस ओर जा रही है।
‘तुम उससे शादी क्यों नहीं कर लेते, और मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर दूंगी?’
महिषा ने इस पर विचार किया। उसने फिर से उस लड़की को देखा। लड़की को कोई समस्या नहीं थी। वह ठीक थी। अगर वह कोई साधारण लड़की होती, तो वह उसके साथ संबंध बना लेता। लेकिन वह एक राजकुमारी थी और उसका सम्मान किया जाना चाहिए था। महिषा का एक नियम था। यह एक ऐसा नियम था जिसे उसने दशकों तक चले अपने युद्धों में कभी नहीं तोड़ा था—उसने गठबंधन बनाने के लिए कभी किसी से विवाह नहीं किया। उसके अपने कारण थे।
उन्होंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता। ताबिती अच्छी लगती है। लेकिन मैं उससे शादी नहीं कर सकता।'
'और ऐसा क्यों है?'

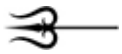

‘जिंदा? बिल्कुल हूँ।’ वह उसके बालों में उंगलियाँ फेर रही थी।
'आख़िर कैसे?'
‘उसकी चिंता मत करो। तुम कैसे हो?’
'बुरा लगा। मुझे तुम्हारी याद आ रही है।'
‘क्या आप ऐसा करते हैं?’ उसने सच्ची दिलचस्पी से पूछा।
बेशक, वह उसे बहुत याद करता था। उसकी मुलाकात उससे तब हुई थी जब वह शुक्र की देखरेख में आया था। वह अक्सर उससे मिलने मछली बाजार जाया करता था। वह उसे सैल्मन मछली बेचती और मुस्कुराती थी। धीरे-धीरे, वह उसके साथ समय बिताने लगा। वह ढेर सारे चेरी इकट्ठा करता ताकि उन्हें उसे उपहार में दे सके। वह उससे उतना ही प्यार करता था जितना शायद उसके पिता ने कभी उसकी माँ से नहीं किया था। इस बात पर उसे गर्व था।
‘क्या तुम्हें याद है हमने अपनी शादी की योजना कैसे बनाई थी?’
'हां। आप इसे एक जहाज पर करना चाहते थे। बिल्कुल समुद्र के बीचोंबीच।' ‘हां, मैंने किया था। और शंख से बने गहने भी पहने थे। मैं बेवकूफ थी,’ वह हंसते हुए बोली। ‘तुम भी शुक्र को छोड़ने की सोच रही थी, है ना?’
उसने सिर हिलाया। वह आर्यों से लड़ने में कोई हिस्सा नहीं लेना चाहता था। उसे अपना मकसद मिल गया था। उसका मकसद था उसे खुश रखना।
‘तो फिर तुम्हें मुझे मारने की जरूरत नहीं थी, महिषा,’ उसने कहा, उसकी आँखों में आंसू भर आए थे।
लेकिन मैंने…मैंने कभी शादी नहीं की। मैंने वह वादा निभाया।
‘इससे क्या फर्क पड़ता है? तुमने ही तो मुझे मारा है।’
उस स्मृति की झलकियाँ उसकी आँखों के सामने तैरने लगीं।
नहीं।
वह इसे याद नहीं करना चाहता था, लेकिन यह बात उसके सामने थी। उसने उसे एक लड़के से बात करते देखा था। एक पल के लिए उसे लगा कि वह किसी और से प्यार करती है, लेकिन जब उसने गौर से सुना और समझा—
‘तुम मेरी जासूसी कर रहे थे। तुम्हें देवताओं ने भेजा था क्योंकि वे जानते थे कि शुक्र जैसा कोई व्यक्ति समस्याएँ पैदा कर रहा है।’
उसने सिर हिलाया। 'मैं अपना काम कर रही थी। लेकिन मुझे तुमसे प्यार हो गया था।'
'नहीं, तुमने ऐसा नहीं किया,' उसने दांत पीसते हुए कहा।

‘ठीक है,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘मैंने नहीं किया।’
उसे वह दिन याद था। उसने उसका सामना किया था। और उसने वही बात कही थी जो वह अब कह रही थी, चेहरे पर एक क्रूर मुस्कान के साथ:
'क्या तुम्हें सच में लगा था कि मैं तुमसे शादी करूँगी, तुम हरे रंग के राक्षस? क्या तुमने अपना बदसूरत चेहरा देखा है? तुम उस गंदगी से भी ज़्यादा घिनौने हो जिस पर मैंने आज पैर रखा।'
उसने उसका गला पकड़कर उसे नीचे धकेल दिया और उसका गला घोंटने लगा। लेकिन उसने कोई विरोध नहीं किया। उस पर कोई असर नहीं पड़ा।
दरअसल, वह हंस रही थी।
मैंने तुमसे प्यार किया और तुमने मुझे धोखा दिया।
क्या इसीलिए तुम महिलाओं से नफरत करते हो? हैं? हैं?
वह उसकी गर्दन को और कसकर दबाना चाहता था। और कसकर। और कसकर।
तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी। एक अलग आवाज़। वार्या की नहीं। बल्कि धीमी, और उसकी दृष्टि धुंधली होने लगी। उसने देखा कि उसके हाथ सुनहरी आँखों वाली तबिति की गर्दन के चारों ओर लिपटे हुए थे।
और उसने पकड़ छोड़ दी।
उसका दम घुट रहा था और उसका चेहरा लाल हो गया था।
‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ वह किनारे की ओर भागा और अपनी तलवार खोजने लगा, लेकिन उसे वह नहीं मिली।
उसने अपना गला सहलाया। 'मैं आपसे मिलना चाहती थी,' वह हकलाते हुए बोली। 'आप कुछ बुदबुदा रहे थे। मैं आपसे मिलना चाहती थी...'
‘तुम्हें क्या चाहिए?’ उसने कर्कश स्वर में कहा।
'तुम ठीक हो?'
उसे बहुत पसीना आ रहा था, उसकी आँखें लाल हो गई थीं और उसकी त्वचा बुखार से तप रही थी। 'हाँ, हाँ मैं हूँ...'
'शांत हो जाइए, मेरे स्वामी,' वह करीब आई और उनके पैर छूने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उसे झटक कर दूर कर दिया।
‘वहीं रहो जहां तुम हो। क्या थामिसदा ने तुम्हें भेजा है?’
उसने अपना सिर हिलाया। 'तुम्हारे रूप-रंग ने मुझे इतना मोहित कर लिया था कि मैं तुमसे मिलने के लिए चुपके से अपने तम्बू से बाहर आ गई, ताकि तुम्हें शादी करवाने के लिए मना सकूँ।'

उसने अपनी आँखें सिकोड़ीं। 'झूठ मत बोलो। मुझे पता है तुम झूठ बोल रहे हो।
तुम्हारे जैसे लोग हमेशा झूठ बोलते हैं। मैं तुम सबके लिए हरे रंग का राक्षस हूँ,' वह अब बड़बड़ा रहा था।
'राक्षस? मुझे नहीं लगता,' वह आगे बढ़ी और फिर से उसके पैरों को छूने की कोशिश की, लेकिन इस बार वह हिला तक नहीं।
तो उसने उसके पैरों की मालिश की, धीरे-धीरे अपनी उंगलियों को ऊपर की ओर उसकी मांसल भुजाओं तक ले गई। 'महाराज, आप अपने बारे में बहुत ही कम राय रखते हैं।'
महिषा को कोई फर्क नहीं पड़ता अगर कोई और लड़की होती, लेकिन तबिति संदिग्ध लग रही थी। वह यहाँ क्यों आई? उसके इरादे क्या थे? क्या थामिसदा ने उसे उस पर जासूसी करने के लिए भेजा था? लेकिन क्यों? उसके पास तो कुछ भी नहीं था, न ही कोई खुफिया जानकारी।
‘शांत हो जाइए, महाराज,’ उसने उनकी बाहों को दबाते हुए कहा। ‘क्या आपने मेरे पिता का वह घटिया दूध पी लिया? आपको वह नहीं पीना चाहिए। वह आपके दिमाग के लिए हानिकारक है।’
उसने अपने होंठ सिकोड़े और अपने पैरों को अपनी छाती से लगा लिया।
'आपने क्या देखा?'
‘हं?’
‘आपको एक दिव्य दृष्टि दिखाई दे रही थी, है ना?’
‘मैं…’ वह उसे बताना नहीं चाहता था। ‘क्या तुम जा सकती हो?’
‘मैं कर सकता हूँ। लेकिन मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप विवाह से इनकार करने के अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें।’
‘क्यों? तुम तो जवान हो। मुझसे शादी क्यों करना चाहती हो?’
उसके चेहरे पर उत्साह भरी मुस्कान थी। 'क्योंकि मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। आप सम्माननीय हैं, आपमें वीरता है...और आप शक्तिशाली हैं। आपसे शादी कौन नहीं करना चाहेगा?'
उसमें बच्चों जैसी मासूमियत थी।
पहले जब उसने शादी का प्रस्ताव रखा था, तब लड़कियों में उससे मिलने की हिम्मत नहीं हुई थी। लेकिन तबिती अलग थी। मुस्कुराते समय उसके गालों पर डिंपल पड़ जाते थे और वह उसे देखकर बहुत उत्साहित थी। उसे। एक राक्षस को!

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा, 'मुझे नहीं आना चाहिए था। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इस पर पुनर्विचार करेंगे। मैं शादी के विचार के खिलाफ थी, जब तक मुझे पता नहीं चला कि मेरे पिता मेरी शादी आपसे करवाने की सोच रहे हैं। मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि मेरे लिए आपसे बेहतर कोई साथी नहीं है।' वह खड़ी हुई और दरवाज़े के फ्लैप की ओर बढ़ने लगी। फिर वह पीछे मुड़ी। महिषा ने ऊपर देखा। वह कुछ कहना चाहती थी, लेकिन खुद को रोक लिया। और फिर वह चली गई। वह वहाँ अकेला रह गया। असमंजस में।
लेकिन सबसे बढ़कर, उसे अपने बारे में अच्छा महसूस हो रहा था।
कुछ ऐसा जो उसने लंबे समय से महसूस नहीं किया था।

13

अगले दिन जब वह चौकी पर पहुंचा, तो सेक्श को उस जगह के बारे में कुछ अजीब सा महसूस हुआ।
वह चौकी के बाहरी इलाके में था। लगभग सौ गज दूर। उसके पीछे सौ आदमी थे। उसकी प्रेमिका और लेफ्टिनेंट असिलोमा उसके साथ घोड़े पर सवार थी। वे उस खाली किले को देख रहे थे जो एक ऊंचे टीले पर बना था। दुर्गा, उसकी सेना या यहाँ तक कि कोई बाघ भी आसपास कहीं नहीं दिख रहा था। उसने अपने जासूसों को चौकी के चारों कोनों में भेजा था, और वे सभी सुरक्षित लौट आए थे।
‘जनरल, हमें किसी भी तरह के पैरों के निशान नहीं दिखे। मुझे नहीं लगता कि यहाँ कोई है,’ एक स्काउट ने कहा और सभी ने उसकी बात से सहमति जताई।
सेक्श ने असिलोमा से चिंता भरी नज़रें मिलाईं। वह आदमी बेहद खूबसूरत था। उसके चेहरे पर घुंघराले बाल बिखरे हुए थे, उसकी ठुड्डी सुडौल थी और उसकी आँखें गहरी और आकर्षक थीं। उसके मुँह के एक कोने पर तिल था। सेक्श को वह बहुत पहले से ही पसंद आने लगा था, जब उसने उसे सिर्फ एक सैनिक के रूप में देखा था। उसने उससे नज़दीकी बनाने का हर संभव प्रयास किया था।
‘क्या वह हमारे साथ खेल रही है?’ असिलोमा ने पूछा।
‘शायद,’ सेक्श ने आह भरी। ‘लेकिन मैं ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ जो धोखे में आ जाए। घेरा सुरक्षित करो। पहली टुकड़ी—पूर्व की ओर।’ और फिर उसने सभी घुड़सवार टुकड़ियों को उस हरे-भरे क्षेत्र को घेरने का आदेश दिया जहाँ चौकी स्थित थी। वे रक्षा की पहली पंक्ति बनने वाले थे। तीरंदाज दूसरी पंक्ति थे। और फिर पैदल सेना सेक्श और असिलोमा के साथ आगे बढ़ी।
जब उसके आदमियों ने चौकी के चारों ओर एक सुदृढ़ प्रणाली बना ली, तो वह किसी गतिविधि के शुरू होने का इंतजार करने लगा। किसी के हमले का। किसी तेज, तीखी आवाज का। कुछ तो हो।
लेकिन वहां कुछ नहीं था।
उसे केवल कौवों की कांव-कांव और बागों से आती चेरी और सेब की खुशबू ही सुनाई दे रही थी।
अंत में सेक्श ने कहा, 'हमें यहीं रहना चाहिए। मुझे लगता है मैं गलत था।' ‘किस बारे में?’ असिलोमा ने उलझन में पूछा।

‘यह कोई घात लगाकर हमला करने की साजिश है। यह घात लगाकर हमला नहीं है। यह मेरे समय की सरासर बर्बादी है,’ उसने अपने घोड़े को बगल में थपथपाते हुए गुर्राया और आगे बढ़ने लगा।
वह चौकी के लकड़ी के द्वार पर पहुँचा, उसका लंबा लबादा पीछे लहरा रहा था, और घोड़े की पीठ पर भैंस के चिन्ह वाला झंडा लटक रहा था। उसने चमड़े के दस्ताने पहने थे और चांदी का कवच, घुटनों पर पैड और बड़े काले जूते पहने हुए थे। सेक्श केवल एक आँख से देख सकता था। दूसरी आँख संगमरमर की थी। वह असली आँख की तरह हिलती थी, लेकिन उससे उसे कुछ दिखाई नहीं देता था।
वह घोड़े से उतरा और अपनी तलवार निकाल ली। आम तौर पर उसे अपने पहरेदारों से दरवाजा खुलवाना चाहिए था, लेकिन उसे वीरता का उदाहरण पेश करना था। साथ ही, परिसर की सुरक्षा भी अच्छी थी। किसी भी दिशा से होने वाले अचानक हमले का डटकर सामना किया जा सकता था।
उसने पहले दरवाजे पर जोर से दस्तक दी और फिर पीछे हट गया।
कोई जबाव नहीं।
उसने पीछे मुड़कर असिलोमा की ओर देखा। उसके माथे से पसीने की बूँदें टपक रही थीं। उसने फिर से दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक दी।
खूनी नरक।
उसने ज़रा भी इंतज़ार नहीं किया। पैरों की एक तेज़ धक्के से उसने दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़ा ज़ोर से खुला और उसका पैर कीचड़ भरे फर्श पर पड़ा। उसका शरीर अपने आप ही अकड़ गया, जैसे लड़ने के लिए तैयार हो रहा हो, और तलवार ऊपर उठाकर वह किसी के अचानक हमले का इंतज़ार करने लगा।
मौन।
फिर वह और करीब आया, उसके अंगरक्षक उसके पीछे-पीछे धनुष और बाण लेकर अंदर आए, किसी पर भी हमला करने के लिए तैयार।
चौकी के बीचोंबीच पहुँचते ही उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी। कोई ज़मीन पर पालथी मारकर बैठा था। उसकी आँखें बंद थीं। उसके चेहरे पर निशान थे। उसके बाल करीने से गुंथे हुए थे। उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि कोई अचानक अंदर आ गया है।
सेक्श ने अपने आदमियों को पूरे चौकी की तलाशी लेने का इशारा किया ताकि किसी भी अप्रत्याशित हमले से बचा जा सके, और खुद आराम से उस लड़की की ओर

बढ़ गया। जैसे ही उसकी परछाई उस पर पड़ी, आखिरकार उसने अपनी आँखें खोलीं और उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई।
‘क्या तुम दुर्गा हो?’ उसने अपने सामने के अविश्वसनीय दृश्य को देखकर हंसते हुए पूछा। उसे स्थिति समझ में नहीं आ रही थी।
उसने सिर हिलाया। उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई। 'जी हां, मैं हूं। जनरल सेक्श, मुझसे मिलने आने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'

सेक्श चौकी के कप्तान के कमरे में आराम से बैठ गया। यह एक छोटा, नीरस, चार दीवारों वाला कमरा था, जिसकी जालीदार खिड़की से जंगल दिखाई देता था। वहाँ एक छोटी मेज और बैठने के लिए एक गद्दी थी। उसने कागज़ात और दस्तावेज़ों को देखा कि उस महिला द्वारा बेरहमी से हत्या किए जाने से पहले कप्तान क्या कर रहा था। वहाँ बस एक टपकते पाइप की आवाज़ आ रही थी। टिप। टिप। टिप। असिलोमा भी कमरे में थी, बस खिड़की से बाहर देख रही थी।
‘तो, हम नहीं जा रहे हैं?’ उसने पूछा।
जब तक मुझे उसके इरादों का पता नहीं चल जाता, हम कहीं नहीं जाएंगे। 'क्यों?'
‘हम अभी-अभी पहुंचे हैं। थोड़ा समय दीजिए। यहीं आराम कीजिए। वैसे भी, यह एक चौकी है। मैं अतिरिक्त सेना लाने के लिए एक संदेशवाहक भेज रहा हूँ, ताकि वे यहाँ तैनात हो सकें। तब तक हमें धैर्य रखना होगा और उम्मीद करनी होगी कि सब कुछ ठीक-ठाक रहे।’
‘वह आपको सोचने पर मजबूर कर रही है,’ असिलोमा ने अपने घुंघराले बालों में उंगलियां फिराईं।
‘हाँ, वो है, कमीनी,’ वह पीछे झुक गया। ‘या तो वो पागल है या फिर बेहद चालाक। मुझे अभी तक समझ नहीं आया है कि कौन सी है।’
'खैर, उम्मीद करते हैं कि वह पहली वाली ही हो।'
‘बाघ का कोई निशान नहीं है, है ना?’
‘जासूसों को भेजा गया था। कोई बैकअप नहीं था। कुछ भी नहीं। इस महिला में हिम्मत है। मैं आपको यह बता सकती हूं।’

'वह चाहे जितनी भी बहादुरी दिखाए, दिखा सकती है। लेकिन महिषा उसे जिंदा रखना चाहता है। वह उससे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता है। मुझे लगता है कि जब वह उससे मिलेगा तो उसे सूअर की तरह चीर देगा।'
असिलोमा ने कुछ नहीं कहा। उसने सेक्श के माथे पर चुंबन किया और फिर दरवाजे की ओर बढ़ गया। 'मैं उसे अंदर भेज रहा हूँ। अपना ख्याल रखना।'
सेक्ष ने अपनी प्रेमिका को देखकर मुस्कुराया और सिर हिलाया। वह एक-दो पल दुर्गा का इंतज़ार करता रहा। वह थोड़ा झिझक रहा था। लड़की को देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गए थे। लेकिन जैसे ही वह अंदर आई, वह स्थिर रहा। वह अंदर आई, उसकी कलाइयाँ लोहे की जंजीरों से बंधी थीं। उसके पीछे खड़े एक गार्ड ने उसे खड़ा किया। सेक्ष ने सैनिक को जाने दिया और वह चला गया।
दोनों एक-दूसरे को खामोशी से देखते रहे। उसने उसकी आँखों, होंठों और त्वचा को गौर से देखा। उसका रंग गहरा भूरा था और उसकी आँखें बेहद आकर्षक थीं—वे बाघ की तरह चमक रही थीं।
‘तो, मेरे पूरे चौकी को तुमने ही नष्ट किया था?’ उसने तिरस्कारपूर्ण लहजे में पूछा।
'जी हां, बिल्कुल।' उसकी शांति देखकर मुझे बहुत हैरानी हुई।
‘तुमने जो किया है, वह राज्य के विरुद्ध अपराध है,’ उसने रुककर अपनी भावनाओं पर काबू पाया। ‘मैं यहाँ हूँ। तुम चाहते थे कि मैं तुम्हें पकड़ लूँ। और मैंने पकड़ लिया है। तो मुझे लगता है, सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा है।’
‘क्या योजना? मैं जंजीरों में जकड़ा हुआ हूँ। मेरे पास योजना बनाने की कोई स्थिति नहीं है।’
वह मुस्कुराया और अपने प्याले से घूंट भरा। 'मुझसे पंगा मत लो, औरत। मैंने ऐसे युद्ध लड़े हैं जिनके बारे में तुम्हें कोई जानकारी नहीं है। मैंने ज़मीन पर हज़ारों दुश्मनों को मार गिराया है जिन्होंने मुझे मात देने की कोशिश की। मैं इस धरती के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य का सेनापति हूँ, इसके पीछे एक कारण है। इसलिए मुझसे पंगा लेने की हिम्मत मत करना।'
‘मैं नहीं हूं,’ उसने कंधे उचकाते हुए कहा।
वह बेचैन हो रहा था। उसने अपनी घबराहट शांत करने के लिए थोड़ी और शराब पी। 'तो कोई योजना नहीं थी?'
वह चुप रही। फिर उसने पूछा, 'क्या मैं एक घूंट ले सकती हूँ?'

‘क्या?’ शेख अचंभित रह गया।
‘उस शराब का जो तुम पी रहे हो।’
उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ये कैसी जादूगरी थी? एक गहरी, बेचैन आह भरते हुए, वह गिलास हाथ में लिए उसके पास गया और उसे पेय पेश किया। उसने गिलास लिया और एक घूंट पिया।
‘आह, मेरा गला सूख गया था,’ वह मुस्कुराई।
तो, बात क्या है? तुम क्या छुपा रहे हो? तुम्हारी योजना क्या है?
'मुझे लगा था कि और भी ज्यादा यातनाएं दी जाएंगी। मुझे औजारों और धारदार चाकुओं की आशंका थी। मैंने मानसिक रूप से खुद को इसके लिए तैयार कर लिया था,' वह हंस पड़ी।
वह मज़ाक कर रही थी। वह इसे गंभीरता से नहीं ले रही थी। इससे वह घबरा गया। वह एक छोटी सी बच्ची थी, और एक आवारा कुत्ते के सामने उसने ज़रा भी डर नहीं दिखाया।
‘ठीक है, मैं तुम्हें बता देता हूँ।’
उसने इंतजार किया।
उसने जारी रखा:
आज किसी की मौत होगी।

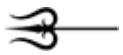

सिपाही थका हुआ था। बुरी तरह थका हुआ। गर्मी असहनीय थी और कवच देखने में भले ही अच्छा लगे, लेकिन भारी लोहे से बना होने के कारण उसे उठाना बहुत मुश्किल था। उसने पजामा के फ्लैप खींचने की कोशिश की और पेशाब करने के लिए अपनी पैंट नीचे सरकाई।
लेकिन उसने उस परछाई पर ध्यान नहीं दिया। वह पूरब से आ रही थी। उसकी ओर बढ़ रही थी। उस परछाई के पास एक और चीज़ थी। एक चाकू। वह सैनिक की ओर तेज़ी से बढ़ी। पलक झपकते ही।
उसने बड़ी सटीकता से उसकी गर्दन पर वार किया। चाकू घूमता और मुड़ता रहा।
खून की बौछार हुई। उसका शरीर आधा नग्न अवस्था में जमीन पर पड़ा था। उसकी आँखें फटी हुई थीं।
हत्यारा वहां से हट गया। उसने चाकू से खून पोंछा।

जैसे कुछ हुआ ही न हो।

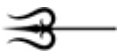

‘तुम्हारा क्या मतलब है?’ सेक्ष ने पूछा।
'तुम्हारे आदमियों में से एक मरेगा,' उसने धीरे-धीरे जवाब दिया, मानो वह किसी बच्चे को कुछ समझा रही हो।
'कैसे?'
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे कैसे पता चलेगा? मैं तो इन हथकड़ियों में फंसी हुई हूँ।'
‘क्या आपके साथ कोई है?’ उसने पूछा।
उसने सिर हिलाया। 'काश ऐसा होता। मुझे बस इतना पता है कि कोई न कोई मरेगा। लेकिन इन हत्याओं को रोकने का कोई न कोई तरीका तो जरूर है।'
उसने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'क्या?'
‘असिलोमा को मार डालो। अपने लेफ्टिनेंट को और अपने…’ उसने फुसफुसाते हुए कहा, ‘प्रेमिका को।’
एक पल के लिए शेख ने भौंहें सिकोड़ीं। बाहर से तो वह हंसना चाहता था, लेकिन साथ ही अंदर डरा हुआ भी था क्योंकि लड़की उसके और असिलोमा के बारे में जानती थी। 'प्रेमिका? क्या तुम पागल हो?'
‘तुम मुझसे झूठ बोल सकते हो, लेकिन खुद से नहीं।’
उसने अपने माथे से पसीना पोंछा। 'उसे मार डालूँ? फिर तो हत्याएँ रुक जाएँगी।'
'ओह हां।'
‘ये सब क्या बकवास है?’ सेक्श घबराकर हँस पड़ा। उसे पता था कि वो असिलोमा को नहीं मारेगा। वो मार ही नहीं सकता था। सपने में भी नहीं। ‘तुम झूठ बोल रहे हो, है ना?’
दरवाजे पर दस्तक हुई थी।
जब सेक्ष दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़ा तो उसने दुर्गा को मुस्कुराते हुए देखा। वहाँ हमेशा की तरह पीली पड़ी असिलोमा खड़ी थी।
उन्होंने कहा, 'किसी ने हमारे एक आदमी की हत्या कर दी।'

यह सुनकर सेक्ष के पूरे शरीर में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई। उसने असिलोमा पर दरवाजा बंद कर दिया। बिना कुछ कहे, उसने दुर्गा को पकड़ा और उसे पूरी ताकत से दीवार से धक्का दिया। 'तुमने यह कैसे किया?'
उसे दर्द हो रहा था। उसके माथे की नसें फूलने लगी थीं। लेकिन वह हंस रही थी। 'मैंने कुछ नहीं किया। मैं यहीं थी। मैं ऐसा कैसे कर सकती थी?'
‘नहीं, तुमने ही किया है! तुमने कैसे किया? कैसे?’ वह गरजते हुए बोला और चाकू को उसके गले के करीब ले आया, लेकिन वह डरी नहीं।
'अपने प्रेमी को मार डालो वरना और भी लोग मरेंगे,' उसकी मुस्कान गायब हो गई और उसकी आँखों में अंधेरा छा गया।
तो यही है आपकी योजना?
'नहीं।'
‘तो फिर किसके? देवताओं के?’
'नहीं।'
‘किसके?’ वह चीख उठा। वह उसके बाल खींच रहा था, खोपड़ी से बाल नोचकर निकाल रहा था।
दुर्गा।
उसने उसके बाल छोड़ दिए। ‘तुम क्या कह रही हो? तुम कहती हो कि तुम दुर्गा हो, लेकिन तुम कहती हो कि यह दुर्गा की योजना है। तुम्हारा मतलब क्या है?’ ‘अरे नहीं,’ वह हंसते हुए बोली, ‘मैंने तो बस दुर्गा होने का बहाना बनाकर आपको फोन किया था। मेरा नाम कात्या है, जनरल सेक्ष। मैं दुर्गा के लिए काम करती हूं।’

14

गौरी को लंबे समय तक पिंजरे में रखा गया। उसे एहसास हुआ कि उसे अपना चेहरा नहीं दिखाना चाहिए था। शायद वह किसी और गुप्त तरीके से धर्म पर हमले को भड़का सकती थी। वह किसी और को ऐसा करने के लिए मना सकती थी।
लेकिन मरने से तो बेहतर था।
ऑपरेशन नाइन नाइट्स में शामिल होने से पहले ही उसे जोखिमों का पता था। वह जानती थी कि उसकी मृत्यु हो सकती है और योजना फिर भी जारी रहेगी। उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात नौवीं रात के अंत तक महिषा का पतन था।
शायद चौथे दिन ही अंधेरा छंटकर उजाला हुआ और उसने एक धूर्त, चापलूस व्यक्ति को अंदर आते देखा।
वह उसे तुरंत पहचान गई। वह शुक्र था।
भोजन और पानी की कमी के कारण वह कमजोर और थकी हुई महसूस कर रही थी। उसका शरीर दुर्बल था और वह फर्श पर लेटी हुई थी।
‘तुम्हारी सजा कैसी चल रही है?’
उसने जवाब दिया, 'मुझे मार डालो। यह बेहतर होगा।'
‘हम्म,’ वह पिंजरे के पास आते हुए सोचने लगा। ‘तुमने ऐसा क्यों किया?’
उसने अपने जबड़े भींच लिए, 'क्योंकि ये रीति-रिवाज गलत और व्यर्थ हैं।' 'क्या मैंने तुम्हें तुम्हारी नैतिकता के लिए चुना, स्त्री? मैंने तुम्हें इसलिए चुना क्योंकि तुम आदेशों को सुनती हो और उनका अच्छी तरह पालन करती हो।'
वह चुप रही। उसने सोचा कि माफी मांगने से शायद उसे छुटकारा मिल जाए, लेकिन वह शुक्र से बेहद नफरत करती थी। वह एक घिनौना आदमी था। और वह अपने तरीके से बुरा था। वह उसके पैर छूकर ऐसा कुछ नहीं करना चाहती थी जिस पर उसे गर्व न हो।
‘मुझे पता है,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
वह घुटनों के बल बैठ गया और उसे घूरने लगा। 'तुम्हें यह समझना होगा कि जिसके अधीन तुम काम करती हो, वह भगवान है। और उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। उसका अनादर मत करो।'
वह एक बार फिर चुप हो गई। उसका एक ही ईश्वर था, और वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो भैंस के सींग पहनता हो।

‘मुझे लगता है कि तुम्हें यहाँ रखना तुम्हारी प्रतिभा के साथ अन्याय है।
तुम सिर्फ झूठ बोल रही हो। बेहतर होगा कि तुम अपनी सज़ा भुगतो और साथ ही काम भी करो,’ उसने सीधे होकर कहा। ‘तुम्हारी अवज्ञा का असर सब पर पड़ेगा। यहाँ मौजूद सभी दो दर्जन महिलाओं पर।’
उसने उसे घृणा भरी निगाहों से देखा।
‘अरे, गुस्सा आ रहा है? आना तो बनता है। समझ में आता है। तुम्हें अपने दोस्तों की परवाह है। उन्हें भी तुम्हारे किए का खामियाजा भुगतना पड़ेगा, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हें भुगतना पड़ रहा है।’ वह दरवाजे की तरफ चलने लगा। ‘तुम एक घंटे में फार्म के लिए निकल जाओ।’
खेत? वह लंबे समय से वहां नहीं गई थी। और उसे वह जगह बिल्कुल पसंद नहीं थी। ‘तुम्हें खुद को भाग्यशाली समझना चाहिए, लड़की, कि मैंने तुम्हें मारा नहीं,’ उसने कहा। ‘मुझे मार देना चाहिए था…लेकिन मुझे लगता है कि तुम अभी भी खुद को सुधार सकती हो।’
और वह चला गया। वह वहीं खड़ी रही, नथुने फुलाते हुए और जोर-जोर से चिल्लाती रही। अपनी पूरी ताकत से चीखते-चिल्लाते उसका गला बैठ गया, फिर वह फर्श पर गिर पड़ी और वहीं पड़ी रही।

जब एक छोटी सी वैन फार्म के लिए रवाना हुई तो उसमें दो दर्जन लड़कियों को बिठाया गया।
सभी उदास थे, लेकिन ऐरावती ने गौरी को दिलासा देने के लिए उसे बाहों में भर रखा था। ठंड बढ़ चुकी थी और चाँद आसमान में हल्का-सा दिखाई देने लगा था, इसलिए उन्होंने शॉल ओढ़ रखी थी। काफिले के अंत में पर्दे लगे थे, इसलिए उन्हें यह दिखाई नहीं दे रहा था कि वे कहाँ जा रहे हैं, लेकिन गौरी को थोड़ा-बहुत दिखाई दे रहा था। सड़कें अब ग्रेनाइट या संगमरमर की नहीं थीं, बल्कि धूल भरी और बंजर थीं। अजनबियों के पैरों के नीचे कंकड़ और पत्थर पड़े थे, और उनके पीछे दूर महिषापुर के सुरम्य पहाड़ी किले दिखाई दे रहे थे।
वे शहर के बाहरी इलाके में थे।

‘उसे दिलासा मत दो,’ एक महिला ने ऐरावती को डांटते हुए कहा। वह चिड़चिड़ी, उलझे बालों वाली और तंदुरुस्त महिला थी, जो सामने की ओर बैठी थी। उसकी ठुड्डी उभरी हुई थी और दो कान बाहर निकले हुए थे। महिला के चेहरे पर शिकन थी और गौरी को लगा कि उसने उसे कभी मुस्कुराते हुए नहीं देखा था। उसका नाम माता था। ‘उन्हीं की वजह से हम यहां हैं।’
ऐरावती ने विरोध करते हुए कहा, 'वह सही काम कर रही थी।'
‘इस दुनिया में कुछ भी सही नहीं है, बेटी। बस अलग-अलग विचारधाराएँ हैं। एक तुम सोचती हो, दूसरी दूसरी। तुम दोनों में मतभेद है। बस यही बात है,’ माता ने अपने दार्शनिक शब्दों का जाप किया। ‘और अब हम अपने पैरों के छाले निकलवाकर अपना फर्ज निभाने के लिए कोड़े खाएँगे। चाहे हम अपना काम अच्छे से ही क्यों न करें, हमें कोड़े पड़ेंगे। गौरी, मैं तुमसे कहती हूँ, अगर तुमने दोबारा ऐसी हरकत की, तो मैं तुम्हारी शिकायत खुद कर दूँगी ताकि कम से कम हम बच जाएँ। ठीक है ना, बेटियों?’ और सबने खुशी से जयकार की।
खेतों से सभी को नफरत थी। गुलाम दिहाड़ी मजदूरी पर मक्का और अन्य सब्जियां उगाने वाले किसानों के साथ काम करते थे। और तेज न चलने पर उन्हें जानवरों की तरह कोड़े मारे जाते थे। लोग थकावट, गर्मी या बेरहमी से पिटाई के कारण मर जाते थे। गुलामों ने शुरुआत में यहीं काम करना शुरू किया और फिर महल में चले गए जहाँ उनका अधिक सम्मान था। वहाँ किसी भी प्रकार के क्रूर, निर्दयी कोड़े मारने वाले या यातना देने वाले नहीं थे।
‘मुझे माफ कर दो,’ गौरी ने सचमुच ऐसा कहा था।
‘अपनी घटिया माफी को अपनी छोटी सी भूतिया गांड में डाल ले।’ माता गुर्राई और बाकी लड़कियाँ हँस पड़ीं। वह जानती थी कि माता के बहुत सारे अनुयायी थे। उसे माता इसलिए कहा जाता था क्योंकि वह अन्य महिला दासियों के लिए माँ समान थी और उसे मनाना पूरे समूह को मनाना था।
गौरी ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि उसके प्रति इतना तिरस्कार है। लेकिन उसे बोलना ही था। 'मुझे यह करना ही था,' उसने परिणामों की परवाह किए बिना कहा। 'आप हमें क्या समझते हैं? हम इन पुरुषों के लिए मवेशी हैं। हमें चोट लगती है। हम दर्द सहते हैं। हम वही करते हैं जो वे चाहते हैं, जबकि वे हम पर शासन करते हैं और हम इसे होने देते हैं। हम बस इसे होने देते हैं क्योंकि हमें लगता है कि हम इसके लायक हैं। लेकिन नहीं। मैं कहती हूं कि हम इसके लायक नहीं हैं। हम नफरत और उस दमनकारी व्यवस्था के

लायक नहीं हैं जिसके हम शिकार हैं। और इसलिए हां, मैंने जो किया वह ठीक इसी कारण से किया, और यदि आवश्यक हुआ तो मैं इसे फिर से करूंगी। क्योंकि चुप रहना आसान है, लेकिन मेरे लिए चुप रहना मुश्किल है।'
वे सब एक पल के लिए उसकी ओर देखते रहे। उनमें से किसी के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया। ऐरावती के चेहरे पर भी नहीं। वास्तव में, माता भी चुप थीं, लेकिन उनके चेहरे पर एक बार फिर से तेवर उभरे हुए थे।
उन्होंने अंत में कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आप सभी को यह एहसास होगा कि हम गुलाम नहीं हैं। हमें उन चीजों के लिए लड़ना शुरू करना होगा जिन पर हम विश्वास करते हैं। जिनके हम हकदार हैं।'
‘और वह क्या है?’ माता ने पूछा। ‘क्योंकि मुझे इसके अलावा और कुछ नहीं पता।’ ‘आर्य?’ ऐरावती ने आशा भरी निगाहों से पूछा।
वे उतने ही क्रूर हैं जितना कि वह साम्राज्य जिसमें हम रह रहे हैं।
‘नहीं। आर्य नहीं। दास नहीं,’ गौरी ने कहा। ‘लेकिन एक विकल्प। बेहतर बनने का विकल्प।’ वह थोड़ी देर रुकी।
किसी ने कुछ नहीं कहा। सब चुप रहे। गौरी भी चुप रही। वह निराश थी।

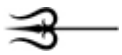

मशाल पकड़े हुए व्यक्ति ने जैसे ही कोड़ा गौरी की पीठ पर मारा, कोड़ा हवा में लहराता हुआ सा लगा। गौरी को रीढ़ की हड्डी में तेज दर्द महसूस हुआ।
वह गिर पड़ी, लेकिन उठी और फिर से काम करने लगी। वह कुछ नहीं बोल सकी। एक शब्द भी नहीं। अगर कोई बोलता तो उसे विद्रोह माना जाता था।
वह मक्का काट रही थी और उसे भंडारण गाड़ी में रख रही थी। वह ऐसा करती रही और उसे फिर से कोड़े पड़े।
वे एक विशाल भूभाग के बीच में थे। मक्का की कटाई की जाती, फिर उसे संसाधित किया जाता, छीलकर विदेशों में निर्यात किया जाता।
उसने अपने बगल में बैठे किसान की ओर देखा, जो वही काम कर रहा था। उसकी हड्डियाँ धँसी हुई थीं और पीठ पर बड़े-बड़े निशान थे, जिन पर उसने ध्यान नहीं दिया। हो सकता है कभी यह खेत उसका रहा हो। लेकिन अब नहीं। सब कुछ सरकारी था।

रात में पहरेदार टॉर्च लेकर अपनी नियमित बारी-बारी से गश्त लगाते थे ताकि वे देख सकें कि हर कोई अपना काम समय पर कर रहा है या नहीं। किसी को भी सोने की इजाज़त नहीं थी, चाहे वे कई घंटों से ड्यूटी पर ही क्यों न रहे हों। दांत पीसते हुए गौरी काम करती रही। उसे यह काम कितना भी नापसंद क्यों न हो, उसने चुपचाप अपना सिर नीचे रखा, मुंह बंद रखा और काम करती रही। उसने बगल में देखा तो माता गुर्रा रही थी और उसे भी कोड़े पड़ रहे थे। लेकिन वह गौरी की तरह किसी पर भी भड़ास नहीं निकाल रही थी।
‘क्या सोच रही हो, लड़की? अपना काम ठीक से करो…’ गार्ड ने चाबुक उसकी पीठ पर ज़ोर से मारा…
और उसने झट से अपना हाथ घुमाते हुए उसे पकड़ लिया, और अपने लाल, चोटिल हाथों से कोड़े के हथियार को थाम लिया। एक पल के लिए वह स्तब्ध रह गया; उसने उसे वापस खींचने की कोशिश की, लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, गौरी को अपने सैन्य प्रशिक्षण की सारी यादें आ गईं और वह जंगली बिल्ली की तरह उस पर झपट पड़ी।
उसने गार्ड की नाक पर सीधा मुक्का मारा और उसके गिरने पर उसके गले पर पैर रखकर उसे बेबस कर दिया। फिर उसने उसके मुंह पर मुक्के बरसाने शुरू कर दिए, जिससे उसके दांत टूट गए। शोर सुनकर एक और गार्ड वहां आ गया और उसने चाबुक उठाकर गार्ड के गालों पर जोरदार प्रहार किया। गार्ड तुरंत जमीन पर गिर पड़ा।
गौरी ने किसान और माता की ओर देखा, जो दोनों ही गौरी के इस कृत्य से स्तब्ध थे। और वे एक शब्द भी नहीं बोले। चुप। सदमे में। आँखें फटी रह गईं।
फिर गौरी ने सूखी घास पर गिरी हुई मशाल को उठाया, जिससे हल्की सी लौ उठी थी, और उसने धीरे-धीरे उन फसलों में आग को हवा देना शुरू कर दिया। आग बढ़ती गई। गहरे नारंगी रंग की हो गई और फिर ऊपर उठने लगी, ठीक वैसे ही जैसे उसके अंदर की आग।
आग माता के खेतों तक भी पहुँच चुकी थी, इसलिए वह माता की ओर मुड़ी। उसे पहरेदारों की चीख-पुकार सुनाई दे रही थी, जो बढ़ती लपटों को देखकर चिल्ला रहे थे, लेकिन कुछ नहीं कर सकते थे।
उसने टॉर्च नीचे गिरा दी और आह भरी। उसे उम्मीद थी कि माता जोर से चिल्लाएगी कि यह सब उसी ने किया है। यह सब गौरी की गलती है।
लेकिन माता ने कुछ नहीं कहा।

उसकी चुप्पी ही गौरी को यह एहसास दिलाने के लिए काफी थी कि वह सही रास्ते पर है - अपने गुलाम दोस्तों के साथ मिलकर विद्रोह भड़काने के रास्ते पर।

15

तामार द्वारा अन्य मुकदमों के बारे में दिए गए भाषण को सुनते हुए उसकी पुरानी यादें ताजा हो गईं। वह बश्कला के साथ हुई अपनी बातचीत और उसके साथ हुए भयावह अंत के बारे में सोचने लगी।

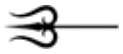

दो दिन पहले…
‘अन्ना?’ ये शब्द उसके मुंह से जोश से फूट पड़े। और उसे लगा जैसे उसका गला अटक गया हो।
बाश्कला वहाँ मौजूद था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। 'हाँ, मैं ही हूँ।' ‘तुम झूठ बोल रहे हो,’ वह जानती थी कि उसके चेहरे पर निशान है, और वैसे भी, उसे कैसे पता चलता कि उसका एक भाई है। उसने देवताओं के अलावा किसी को भी यह बात नहीं बताई थी। ‘तुम्हें कैसे पता चला कि यह मैं हूँ?’
'बेशक, यह तुम ही हो। मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। मैं अपनी बहन को पहचान लूँगा, भले ही तुम्हें देखे हुए एक दशक से अधिक समय बीत चुका हो।' लेकिन…लेकिन तुम तो मर गए थे।
“हाँ। मैं बुरी तरह घायल हो गया था। मुझे अस्पताल ले जाया गया। मैंने एक गुलाम की तरह काम किया। धीरे-धीरे तरक्की करते हुए मैं कप्तान बन गया,” उसने होंठ सिकोड़ते हुए कहा। “और फिर मैंने तुम्हें देखा। लेडी सुलोचना के करीब आते हुए। तुम्हें पहचानने में मुझे थोड़ा समय लगा और फिर मैंने तुम्हारे बोलने का तरीका, तुम्हारे शब्दों का इस्तेमाल करने का तरीका देखा। जब तक मैंने तुम्हारा कमरा नहीं खंगाला और हमारी माँ द्वारा तुम्हें दिया गया पेंडेंट नहीं पाया, तब तक मुझे पूरी तरह यकीन नहीं हुआ। और फिर मुझे पता चल गया।”
क्या उसने उसका कमरा तहस-नहस कर दिया था? उसने पलकें झपकाईं, और जो कुछ उसने अभी उसे बताया था उसे पचाने की पूरी कोशिश की।
'आपने अब तक इस बारे में मुझसे बात क्यों नहीं की, जब आप मुझ पर आरोप लगा रहे हैं?'
उसके पास कोई जवाब नहीं था। लेकिन उसने अनुमान लगाया कि अस्वीकृति का डर उसके मन में मंडरा रहा था। 'मुझे नहीं पता। काश मैं कर पाता। लेकिन किसी चीज़ ने मुझे रोक लिया। कुछ...' उसने सिर हिलाया। 'मैं समझा नहीं सकता।'

उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे उसे गले लगाना चाहिए या नहीं, लेकिन अब उसे समझ आ गया था कि बाश्कला हमेशा उसके साथ इतना अच्छा व्यवहार क्यों करता था। क्योंकि वह उसके करीब रहना चाहता था। एक भाई की तरह।
'तुम मेरी बहन हो और इसीलिए मुझे पूरा यकीन है कि इसमें तुम्हारा हाथ है,' उसने नए दृढ़ निश्चय के साथ कहा।
‘अगर मैंने ऐसा किया, तो क्या तुम मुझे पुलिस के हवाले कर दोगे?’ उसने पूछा। वह जवाब नहीं दे सका। वह एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। 'क्या तुमने ऐसा किया? या मैं ज्यादा सोच रहा हूँ?'
उसने अपने जबड़े भींच लिए। उसके मन में एक ज्वलंत प्रश्न था जो उसके खुलासे के बाद से ही उसके दिमाग में घूम रहा था।
'अगर तुम जीवित थे तो तुमने मुझे ढूंढने की कोशिश क्यों नहीं की?' ‘क्योंकि…’ उसने लंबे समय तक चिंतनशील विराम के बाद कहना शुरू किया, ‘मैं तुम्हें ढूंढना नहीं चाहता था।’

चारिनी ने देखा कि जिस मामले का वह इंतजार कर रही थी, वह अब अदालत के सामने आ गया है।
ऐसा हो रहा था।
चारों बलात्कारियों को चबूतरे के ठीक नीचे, आगे बुलाया गया, जबकि बलात्कार पीड़िता को भी बुलाया गया, लेकिन उसने अपना चेहरा दुपट्टे से ढका हुआ था और वह अपने पराजित माता-पिता के साथ आई थी। चारिणी ने तामार को शास्त्र पढ़ते हुए देखा:
जिन घटनाओं की मैं बात कर रहा हूँ वे घृणित और भयावह हैं। इसमें न्याय व्यवस्था की पूर्ण उपेक्षा और राज्य के कानूनों के प्रति पूर्ण अनादर शामिल है।
चारिणी ने उन चारों आदमियों को देखा। वे हंस रहे थे। इसे गंभीरता से नहीं ले रहे थे।
उसके पीछे खड़े लोग भी धीरे से बुदबुदाए: 'वे ठीक रहेंगे।'
लेकिन तामार ने बुलंद आवाज़ में कहा, 'समय बदल रहा है। हमने एक साम्राज्य के रूप में विकास दिखाया है। और हमें अपने नैतिक मूल्यों में भी विकास

दिखाना चाहिए। और इसी कारण, मैं इस जघन्य अपराध के चारों दोषियों को मृत्युदंड की सजा सुनाती हूँ।'

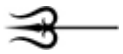

‘क्यों?’ उसने पूछा। वह इस बात पर दुखी होना चाहती थी, क्योंकि न जाने किस वजह से वह उससे इसी तरह के व्यवहार की उम्मीद करती थी।
उसने अपनी निगाहें नीचे कर लीं। 'मैं एक बच्चा था, चारिणी। एक नन्हा सा बच्चा, जब मुझसे सब कुछ छीन लिया गया था।'
‘मेरा बलात्कार हुआ था, अन्ना। मैं सदमे में थी,’ उसने कहा। ‘मैं तुमसे सब कुछ छीनना नहीं चाहती थी। लेकिन मैं तुम्हारी दुश्मन नहीं थी।’
उसके तीखे शब्दों ने उसे चुप करा दिया। उसकी आवाज़ में दृढ़ता थी और वह उसके मूर्खतापूर्ण तर्क पर क्रोधित थी। लेकिन वह बोलता रहा:
‘मैंने सोचा कि मैं तुमसे छुटकारा पा सकता हूँ, इसलिए मैं शिविर में गया और जानबूझकर पकड़ा गया। मुझे पता था कि अगर मैं ऐसा करूँगा, तो मुझे किसी कारण से तुम्हें पीछे छोड़ने के अपराधबोध से मुक्ति मिल जाएगी। और इसलिए, मैंने ऐसा किया। और सब कुछ योजना के अनुसार हुआ। उसके बाद मुझे तुम नहीं मिलीं और मैं एक अकेले आदमी का उदास जीवन जी रहा था, तभी संयोग से मेरी तुमसे दोबारा मुलाकात हुई। ऐसा लगता है जैसे भाग्य चाहता था कि हम साथ रहें,’ उसने कहा। ‘इसलिए मैंने यह सुनिश्चित किया कि तुम लेडी सुलोचना के करीब आ जाओ और मैंने शाही जोड़े पर अपना प्रभाव डालने की कोशिश की। मेरी बातों के कारण वे तुम्हें अपने करीब रखने के लिए राजी हो गए और अब वह गायब हो गई है, और मुझे तुम पर भरोसा करने का अपराधबोध हो रहा है।’
चारिणी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे और क्या कहे। तो, क्या यह वही था? क्या यह उसी का एहसान था? वह उस पर विश्वास नहीं करने वाली थी। वह जानती थी कि उसे यह पद अपनी चतुराई और सुलोचना की हर जरूरत में उनकी सहायिका बनने की बेमिसाल काबिलियत के दम पर मिला था।
‘तुम्हें पता है लोग यादों को कैसे दबाते हैं?’ उसने सहजता से पूछा।
उसने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
“जब तुमने मुझे छोड़ दिया, तो एक दयालु व्यक्ति ने मेरी मदद की। वो मेरे पिता, मेरे भाई बन गए। उन्होंने मेरी बहुत सी यादों को ताजा करने में मेरी

मदद की। वो चाहते थे कि मैं खुद को समझूं, जानूं कि मैं अपनी भावनाओं को लेकर चुप क्यों हो गई थी,” उसने धीरे-धीरे सच्चाई के कुछ अंश बताते हुए समझाया। “मुझे बहुत सी ऐसी बातें याद आ गईं जिन्हें मैंने जानबूझकर भुला दिया था। ऐसी बातें जो बहुत पहले घटी थीं।”
उसका चेहरा पीला पड़ रहा था।
‘मुझे बचपन में ग्रामानी के साथ आपकी बातचीत याद आ गई—जिसे मैंने दबा रखा था।’ उसने अविश्वास से अपना सिर हिलाया, हालांकि वह जानती थी कि उसने यह सुना था।
‘तुमने क्या सुना?’ उसने सहजता दिखाने की कोशिश करते हुए पूछा।
‘मेरे प्यारे भाई,’ उसने बनावटी मुस्कान के साथ कहा, ‘तुम ही थे जिसने मुझे उसे बेच दिया था, यह सोचकर कि आठ साल की बच्ची भला क्या कर सकती है... तुमने यह नहीं सोचा था कि मैं उसकी खोपड़ी तोड़ सकती हूँ।’

यह सुनकर सब लोग उठ खड़े हुए। पहले तो सन्नाटा छा गया। फिर फुसफुसाहट शुरू हुई। अंत में लोग चिल्लाने लगे। चारों आदमी दहशत से देखते रहे जब पहरेदार उन्हें धकेलते हुए चबूतरे तक ले गए, जहाँ उन्हें घुटने टेकने को कहा गया, और चार कुल्हाड़ीधारी उनकी ओर बढ़ने लगे।
विद्रोह ज़ोरदार था। चारों ओर शोर-शराबा और गालियाँ सुनाई दे रही थीं। लोग चबूतरे पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन सैनिकों ने उन्हें नीचे धकेल दिया। जिन मंत्रियों के बेटे वहाँ मौजूद थे, वे विरोध कर रहे थे, लेकिन प्रधानमंत्री को कोई परवाह नहीं थी।
उसने वही किया जो उसे करना था।
चारिणी ने बलात्कार पीड़िता को देखा। लड़की ने अपना दुपट्टा हटा दिया था और वह घटनाक्रम को देखकर राहत और आश्चर्य से भरी नजरों से देख रही थी।
लड़के रो रहे थे। फूट-फूट कर रो रहे थे।
‘हम जवान थे। हमें पता नहीं था कि हम क्या कर रहे थे।’
चारिनी ने सोचा, "बेशक तुम्हें पता नहीं था।" काफी देर बाद, उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

जैसे ही कुल्हाड़ी चलाने वाले लोग करीब आए, चारों लड़के सिसकने लगे, वे आदेश का पालन करने के लिए तैयार थे।
चारिणी हिंसा देखना चाहती थी। यह पहली बार था जब उसे इसमें आनंद आ रहा था।
एक-एक करके, हर कुल्हाड़ी चलाई गई।
सिर काट दिए गए।
वे कूड़ेदान की तरह एक भयंकर धड़ाम की आवाज के साथ जमीन पर गिर पड़े।
एक जीव जीवित बची महिला के पैरों के पास लुढ़क गया। महिला ने उस पर थूक दिया। भीड़ में मौजूद पुरुष डर के मारे चिल्लाने लगे।
उन्हें डर था कि अब वे किसी भी अपराध से मुक्त नहीं रहेंगे। उन्हें डर था कि अंततः उन्हें अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा।
समानता एक ऐसा विचार था जिसे ज्यादातर पुरुष नहीं समझते थे।
और ऐसा करके चारिणी ने उनकी समझ में एक छोटी सी चिंगारी सी भर दी, जिससे वह आग की तरह फैल गई।

16

आज वह दिन था जिसके बारे में उसने सोचना शुरू कर दिया था कि वह उसे कभी नहीं देख पाएगी।
चंद्रा जहाज के उस हिस्से में खड़ी हो गई जहाँ ढोल बजते थे। वहाँ एक चबूतरा था जिस पर वह टिक गई, और नीचे खड़े सौ से अधिक लोग ऊपर की ओर देखने लगे। उन सभी के चेहरे पर आक्रोश और तिरस्कार के भाव थे। हर कोई एक महिला के नियंत्रण और नेतृत्व में रहना नापसंद करता था।
‘मुझे विश्वास है कि आप सभी को खबर मिल गई होगी, लेकिन मैं इसे सच साबित करने और इसकी पुष्टि करने के लिए यहाँ हूँ,’ उसकी आवाज़ बुलंद और स्पष्ट थी। ‘बड़े दुख के साथ मैं आपको सूचित करती हूँ कि एडमिरल का निधन हो गया है।’ उसकी निगाहें अविश्वास से भरे उथारका पर पड़ीं, जो अपने हाथ पीछे बांधे, उसे पैनी नज़रों से देख रहा था। ‘दिल का दौरा पड़ा। उन्होंने मुझे ज़िम्मेदारी सौंपी है। मैं आभारी हूँ कि वे मुझे इतना सम्मान देते हैं। अगर कोई उनके फैसले पर सवाल उठाना चाहता है, तो मेरे पास लिखित सबूत हैं।’ उसने खुला हुआ दस्तावेज़ ऊपर उठाया और सबको दिखाया। ‘एडमिरल ने खुद मुझे ज़िम्मेदारियाँ सौंपी हैं,’ वह थोड़ी देर रुकी। ‘मुझे पता है कि आप में से कई लोग मुझे पसंद नहीं करते, लेकिन यह एक टीम है और मुझे परवाह नहीं कि आप इसे पसंद करते हैं या नहीं। ये आदेश हैं, और आपको बस इनका पालन करना है। मैं यह मानना चाहती हूँ कि हम एक टीम के रूप में काम कर सकते हैं और एडमिरल की स्मृति का सम्मान कर सकते हैं।’
लोग चुप थे। सब उसे घातक निगाहों से देख रहे थे।
योजना का खुलासा करने का यही सही समय था।
'हमारा अगला मिशन श्रीलंका की ओर जाना है।'
उनमें से एक ने पूछा, 'ऐसा क्यों है?'
‘हाँ, फिर सीलोन ही क्यों? हम तो सिर्फ सिंधु सागर में ही अतिक्रमण करते हैं। कहीं और नहीं।’
‘क्योंकि हमें महत्वाकांक्षी होना चाहिए!’ चंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘और क्योंकि मैं कप्तान हूं और मैं अपनी मर्जी से दिशा तय कर सकता हूं।’

उन्हें विद्रोह का सामना करना पड़ सकता था, लेकिन उनमें से कई लोग एडमिरल का सम्मान करते थे और उनके विचारों में विश्वास रखते थे। उन्हें उनके प्रति सहज होने में समय लगेगा, लेकिन वे जल्द ही उन्हें स्वीकार कर लेंगे। नौ रातों का दूसरा दिन था। उसे तीन दिनों में श्रीलंका की सीमा तक पहुंचना था।
‘चप्पू चलाओ! चप्पू चलाओ!’ वह चिल्लाई। ‘और महिषा का आशीर्वाद हमारा मार्गदर्शन करे!’

तीसरे दिन…
उथारका डॉक्टर के केबिन में दाखिल हुआ, जहाँ शव प्रदर्शित था। एडमिरल का सुंदर चेहरा वहीं था। पीला पड़ा हुआ।
अपने पुराने बॉस को देखते हुए और उनकी ठंडी त्वचा को छूते हुए उनकी आँखों में उदासी साफ झलक रही थी। डॉक्टर एक तरफ खड़े थे।
'यह क्या है?'
'लगता है दिल की बात है।'
‘क्या जहर के कोई लक्षण हैं?’
डॉक्टर असमंजस में पलकें झपकाने लगे। 'ज़हर का असर है, महोदय?'
'हां। क्या कोई लाल निशान, छाले या खून के धब्बे हैं जो जहर के संकेत देते हैं?'
उथारका को पता था कि उस औरत की कुछ चाल है। वह बहुत चालाक थी। उसने जहाज में बहुत जल्दी तरक्की की और एडमिरल का दिल भी जीत लिया। उसने अपने बाल एडमिरल की पत्नी की तरह कटवाए थे। और उथारका यह बात जानता था। वह चाहती थी कि एडमिरल उसे अपनी पत्नी से जोड़कर देखे, जिसकी मृत्यु देवताओं के हाथों हुई थी। वह थोड़ी सनकी और चालाक भी थी और अब कप्तान बन चुकी थी। उथारका को विद्रोह शुरू करने के लिए पर्याप्त सबूत चाहिए थे ताकि वह उसे हटाकर खुद कप्तान बन सके।
'नहीं, ऐसा नहीं है।'
'अजीब।'
'अगर उसे जहर दिया गया हो तो क्या यह अजीब नहीं होगा?'

उथारका ने कर्कश स्वर में कहा, “डॉक्टर साहब, मुझे लगता है कि उसे दिल का दौरा पड़ा है, क्योंकि इतना स्वस्थ व्यक्ति दिल का दौरा कैसे खा सकता है? उसे ज़हर दिया गया है और मुझे नहीं पता कि आप इसका पता कैसे लगाएंगे, लेकिन आपको लगाना ही होगा। ध्यान से सोचिए। क्या कुछ असामान्य दिख रहा है?” उसके शरीर पर कोई बाहरी घाव भी नहीं थे, इसलिए ज़हर ही इसका कारण होना चाहिए। 'मैं पक्का नहीं कह सकता, सच कहूं तो। गहन पोस्टमार्टम करना होगा और हम समुद्र के बीच में हैं,' वह रुका। 'हालांकि, मैंने कुछ देखा है।'
उसने शव का मुंह खोला और जीभ पर जमी पीली परत की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उसे उल्टी आने वाली थी। दिल के दौरे में यह आम लक्षण नहीं है। मुझे यह अजीब लगा। साथ ही, उसके शरीर में शराब के अंश भी मिले।'
क्योंकि उसे जहर दिया गया था। उथारका मुस्कुराया।
‘तो, शराब जहरीली हो सकती है, है ना?’
डॉक्टर ने कंधे उचका दिए। यह बात कुछ अटपटी लग रही थी। लेकिन यह सच भी हो सकता था।

उथारका पूरी बात पर गहरी सोच में डूबा हुआ तहखाने की ओर चला गया। उसने एक युवा नाविक के रूप में जहाज़ पर अपना काम शुरू किया था। वह एक व्यापारिक जहाज़ था और वह एक जगह से दूसरी जगह माल पहुँचाने के लिए पास के द्वीपों या देशों में जाता था। बस इतना ही। उसका एक परिवार था जिसका वह भरण-पोषण करता था। जल्द ही, उसका परिवार उसे छोड़कर चला गया क्योंकि वह ज़्यादातर समय उनके साथ नहीं रहता था। समुद्र ही उसकी सबसे प्रिय चीज़ थी और वह उस पर अपना काम करता रहा। उसके कई बार समझाने के बावजूद भी वे उसके काम को कभी नहीं समझ पाए। उसके बच्चे उसे देखे बिना बड़े हुए। उसकी पत्नी ने उससे कभी बात नहीं की। और अब वह दादा भी हो सकता था, लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। किसी परिवार का हिस्सा होना, चाहे वह उसका अपना ही क्यों न हो, अब एक दूर का सपना था।
इसलिए जब एक छोटा चूहा सबके लिए मुसीबत खड़ी करने की कोशिश कर रहा था, तो उसे पता था कि उसे सब कुछ ठीक करना होगा। उसे बेहतर बनना था और अपने बिछड़े

हुए परिवार को साबित करना था कि वह एक अच्छा इंसान है और अच्छे काम कर रहा है।
तहखाने में बोतलें रखी थीं। उसने उन कागज़ों को देखा जिन पर शराब की बोतलों के निशान लिखे थे—कितनी पी गई और कितनी बची है। एडमिरल की मृत्यु के बाद से किसी ने शराब नहीं पी थी, इसलिए वह जानता था कि आखिरी बोतल जो निकाली जाएगी, वही होगी जिससे एडमिरल ने शराब पी थी। वही बोतल जिसने उनकी जान ली।
उसे कूड़ेदान में बोतल का नाम ढूंढना था ताकि वह उसे बाहर निकाल सके। लेकिन कूड़ेदान में कुछ भी नहीं लिखा था। न ही यह बताया गया था कि चंद्र नाम की कोई बोतल निकाली गई थी। वह निराश हो गया।
उसने तहखाने में चारों ओर खाली जगह की तलाश में देखा, लेकिन सारी बोतलें अपनी जगह पर ही थीं। किसी ने भी कोई बोतल बाहर नहीं निकाली थी।
तो क्या एडमिरल ने ऐसी शराब पी थी जिसे कभी निकाला ही नहीं गया था? इसका मतलब है कि कोई आया था, तहखाने के प्रभारी को बिना बताए शराब ले गया था और फिर उसे वापस रख दिया था। चूंकि बोतलों पर लेबल नहीं थे, इसलिए सैकड़ों बोतलों के बीच उस बोतल को ढूंढना नामुमकिन था।
लेकिन यहाँ एक ज़हर की बोतल थी। और अगर उसे उसे ढूंढने के लिए सारी बोतलें निकालनी पड़ीं तो...
‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ एक आवाज सुनाई दी।
जैसे ही उसने उस पतली आवाज को घूरकर देखा, नाव हिलने लगी।
चंद्रा। वह शेरवानी पहने वहाँ खड़ी थी, तहखाने में आग के दीपक के नीचे बैठे लड़के जैसी लग रही थी। उसकी आँखों में संदेह था।
'आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है, कप्तान।'
'मैंने डॉक्टर से बात की,' उसने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा।
'हाँ?'
‘वह आपकी थ्योरी को लेकर काफी उत्सुक थे,’ वह और करीब आ गईं। ‘उन्होंने पूछा कि क्या आप मानसिक रूप से स्थिर हैं। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि आप स्थिर नहीं हैं। आप बस शोक मना रहे हैं। क्योंकि यह सोचना बिल्कुल असंभव है कि किसी ने एडमिरल को जहर दिया होगा, है ना?’
उसने एक गहरी साँस ली। उसकी नज़र चंद्र के हाथ में पकड़ी तलवार पर पड़ी; जो म्यान में थी। और उसके पास कोई हथियार नहीं था।

'यह बात वाकई बेतुकी है, कप्तान,' उसने शालीनता और विनम्रता दिखाने की कोशिश की।
वह और करीब आई।
अगर वह एडमिरल को मार सकती है, तो वह मुझे भी मार सकती है।
‘मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं। लेकिन मुझे लगता है…’ उसके हाथ उसके माथे के पास आए और उसने वहाँ बन रही पसीने की बूंदों को पोंछा, ‘मुझे सचमुच लगता है कि प्यारे पुराने एडमिरल के निधन के बाद आप थोड़े पागल हो गए हैं। मुझे लगता है आपको आराम करना चाहिए।’
'नहीं, मैं हूँ-'
‘उथारका, आपको क्वार्टरमास्टर के कर्तव्यों से मुक्त किया जाता है,’ वह मुस्कुराई। ‘आप बीमार हैं। अपनी जांच करवा लें।’
दो आदमी पीछे से आए। वे निश्चित रूप से उस छोटी कुतिया के बहकावे में थे, जिसने उथारका को बांहों से पकड़ लिया था।
‘तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते!’ वह चिल्लाया, ‘तुम नहीं कर सकते!’
‘चिंता मत करो। मैं तुम्हें पास के द्वीप पर छोड़ दूंगा। तुम वहां के अस्पताल में भर्ती होकर आने वाले दिनों में आराम कर सकते हो। तुम बूढ़े हो चुके हो और अब जहाज पर रहने लायक नहीं हो।’
उथारका सिसकते-सिसकते और चिल्लाते हुए आदमी उसे घसीट रहे थे: 'मुझे पता है तुमने ही किया है, कमीने। मुझे पता है तुमने ही किया है! तुमने ही उसे जहर दिया है!'
उसने उसके आरोपों का जवाब देना जरूरी नहीं समझा।
‘उसे जेल में डाल दो। वह न केवल जहाज के लिए बल्कि खुद के लिए भी खतरनाक है।’
वे लोग उथारका के साथ चले गए। उसके जाने के बाद चंद्र ने राहत की सांस ली। वह बाल-बाल पकड़ी गई थी। उसने बोतल की ओर देखा। ज़हर वाली बोतल। वह ठीक उस शेल्फ के बगल में थी जहाँ उथारका खड़ा था। उस पर हरे रंग का धब्बा था, ज़हर का बचा हुआ दाग। और अगर कोई उसे नाक के पास लाता तो उसमें से भयानक बदबू आती थी।
उम्मीद है इसके बाद का सफर सुगम रहेगा।

17

बादल चलने लगे और आकाश में गरज के साथ सुंदर नृत्य गूंजने लगा, पतले रिबन की तरह लहराता हुआ गायब हो गया।
महिषा ऊपर देखकर नज़ारे का आनंद ले रहा था। तभी उसकी नज़र पानास के उत्सवों पर पड़ी। अलानी, जो रिगोली के नेतृत्व में पुजारियों और पुजारिनों का एक समूह था, कुत्तों के कृत्रिम मुखौटे पहने हुए थे और उन्होंने शिविर में मौजूद जोड़ों को एक साथ आने और एक-दूसरे के गाल पकड़ने के लिए कहा था—ताकि वे उनकी उपस्थिति को महसूस कर सकें। प्रकृति के साथ, विशेष रूप से अपनी कुंवारी देवी एर्दिम्पास के साथ, एकरूप हो सकें। क्योंकि देवी आपको केवल एक सदस्य के रूप में नहीं, बल्कि अपने आत्मीय साथी के साथ स्वीकार करती हैं। वे हर पूर्णिमा को ऐसा करते थे, जैसे आज।
महिषा की नज़र थामिसदा पर पड़ी, जो अपने आदमियों के साथ कोने में घुटनों के बल बैठा था। जलती हुई आग की तेज़ रोशनी उसके लोहे के हेलमेट पर चमक रही थी। मैसूरु का राजा यह जानने के लिए बहुत उत्सुक था कि उस हेलमेट के नीचे क्या है और वह उसके पीछे क्यों छिपा है। लेकिन वे कुछ नहीं बोल रहे थे। अभी नहीं। गठबंधन बातचीत पर आधारित होते हैं और जो पहले बोलेगा वह हताशा दिखाएगा और बातचीत के विफल होने का कारण बनेगा।
और महिषा जानती थी कि इस समय तटस्थ व्यवहार करना महत्वपूर्ण है।
उसने देखा कि थामिसदा के साथ उसकी पत्नी नहीं थी, और इससे उसे जिज्ञासा हुई।
‘क्या तुम मेरे साथ आओगे?’ उसे एक आवाज सुनाई दी।
बगल में मुड़कर उसने छोटे बालों वाली तबिता को देखा, जिसके चेहरे पर एक अनोखी मुस्कान थी। उसका चेहरा छोटा था, महिषा के विशाल आकार के सामने तो वह और भी छोटा लग रहा था। महिषा एक दानव था और तबिता एक इंसान। और उसमें दानवों जैसा आत्मविश्वास था—उसके हाथ सामने की ओर फैले हुए थे।
‘क्या मैं आपके साथ शामिल हो जाऊं?’ वह असमंजस में था।
'हां। अनुष्ठान में।'
महिषा ने त्रिनेत्रा की ओर देखा, जो उसकी ही तरह असमंजस में थी। लेकिन महिषा जानती थी कि शामिल न होना उस जनजाति का अपमान माना जा सकता है जिसके साथ वे साझेदारी कर रहे थे।

'ज़रूर,' कहकर वह खड़ा हो गया और उसके हाथ पकड़ लिए।
वह उसे आग के पास ले आई। उन दर्जन भर जोड़ों के बगल में, जो एक-दूसरे के चेहरों को छू रहे थे।
'मुझे नहीं पता क्या करना है।'
‘अच्छा, मैं यहाँ किसलिए हूँ?’ उसने मुस्कुराते हुए अपने हाथों को उसके गालों के पास लाया।
वह पीछे हट गया। बेचैन हो गया।
‘क्या हुआ?’ उसकी मुस्कान गायब हो गई।
'नहीं…उम…'
यह एक अंतरंग क्षण जैसा लग रहा था। मानो उसका स्पर्श अनुचित हो। क्या उसका अतीत आड़े आ रहा था? लेकिन उसने गहरी सांस ली और उसे ऐसा करने दिया। उसने अपने हाथों से उसका गाल थाम लिया। उसकी आँखों में उत्साह की चमक थी।
‘तुम्हें भी ऐसा ही करना होगा,’ उसने निर्देश दिया।
और उसने ऐसा ही किया। उसकी विशाल हथेलियाँ उसकी जैतून जैसी मुलायम त्वचा पर आपस में लिपट गईं, जो रेशम की तरह कोमल थी।
अब मेरी आंखों में देखो।
'इतना ही?'
'कहना आसान है, करना मुश्किल, महाराज।'
उसने उसकी आँखों में देखा। गहराई से। उसने कम से कम कोशिश तो की, लेकिन उसे केवल उसकी आँखें ही दिखाई दीं। उसकी पुतलियाँ।
‘अब दुनिया के बारे में भूल जाओ। बस इस पल में, यहीं, मेरे साथ रहो।’
'किसी से ऐसा कैसे संभव है?'
डरना बंद करो।
‘किस बात से डरते हो?’ उसने गुस्से से पूछा।
अपने जीवन में किसी और को स्वीकार करना।
मुझे किसी और की जरूरत नहीं है।
‘क्या आप निश्चित हैं?’ वह और करीब आई। ‘महाराज, आप जंबूद्वीप के शासक क्यों बने?’
उसने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। उसका ध्यान भटक रहा था, लेकिन उसने उसके चेहरे को इतनी मजबूती से पकड़ रखा था कि वह नज़रें नहीं हटा पा रहा था।

उसकी निगाहें सीधे उस पर टिकी थीं, और वह उसकी उपस्थिति को गहराई से महसूस कर रही थी।
क्योंकि मैं शक्तिशाली बनना चाहता था।
'इतना ही?'
उसने अपने दांत पीस लिए।
‘आप याद किया जाना चाहते थे?’
उसने सहमति में सिर हिलाया।
‘क्या आप पहचान पाना चाहते थे?’
उसने सहमति में सिर हिलाया।
क्या तुम अभी झूठ बोल रहे हो?
न जाने क्यों, इस सवाल ने उनकी आँखों में आंसू ला दिए। उन्होंने गहरी सांस लेते हुए गले में अटके हुए स्वर को मुश्किल से संभाला। 'हां, मैं हूं।' ‘महामहिम, आप शासक क्यों बने?’ उसने फिर धीरे से पूछा।
'गुस्सा।'
'की ओर?'
‘वे लोग जिन्होंने मेरी माँ का बहिष्कार किया।’
वह मुस्कुराई। कमल के फूल जैसी कोमल मुस्कान। 'तुम अपने दुश्मनों से इसलिए नफरत करते हो क्योंकि उन्होंने उसे कचरे की तरह फेंक दिया?'
उसने सिर हिलाया। 'मैं उन्हें भी इसी तरह इन जमीनों से बाहर निकाल दूंगा,' उसकी आँखों में आंसू आ गए।
‘तो फिर मुझे तुम्हारी आँखों में अपराधबोध क्यों दिखाई देता है, मेरी प्रियतमा?’
‘क्योंकि…क्योंकि मैं उसे बचा नहीं सका।’
'से?'
‘मेरे पिता।’
तो क्या यह क्रोध है जो आपको इन जमीनों पर शासन करने के लिए प्रेरित करता है या वह अपराधबोध है कि आप अपनी माँ के लिए कुछ नहीं कर सके?
वह उलझन में था। सचमुच। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसके अंदर कई तरह की भावनाएं उमड़ रही थीं। और अब वह उनका सामना कर रहा था।
‘क्या उसने कभी आपसे ऐसा करने के लिए कहा था?’
नहीं। उसने कभी ऐसा नहीं किया।

##?

###, ##### ##### ### ## ###### ##, ###### ##### ### ##: '###### ###### ###, ####### ### ###### ### ###### ## ######## ######'

##? ### ### ##### ##### ## ### ##?

‘### ##### ## ####### ### ##### ## ###### ######## ##### ###### ##### ######’

###

‘## ###### ## ## ### ## ###### ###### #####,’ ##### ###### ##### ### #####

'## ##### ## ## ###### ## ## ###?'

‘### ##### ##### ### ## ####### ### ##### #####

गूंज रही थी। उसने भी उसे गले लगाया और मुस्कुराया। वह उसमें सर्वश्रेष्ठ लाने की कोशिश कर रही थी।
यह कुछ ऐसा था जो उनकी मां अपनी मृत्यु से पहले किया करती थीं।
‘मुझे समझ नहीं आता कि मैं अपने पिता जैसा क्यों बन गया,’ उसने धीरे से खुद से कहा।
और उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था। शायद उसने खुद को अपने पिता से जोड़ा।
शायद उसे एहसास हो गया था कि वह उनसे बेहतर नहीं हो सकता।
और उसकी निगाहें थामिसदा की ओर गईं जो उन्हें दूर से देख रही थी।
महिषा को पता था कि अब उसे क्या करना है।

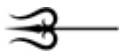

वे शिविर के बाहरी इलाके में गए जहाँ कंटीली बाड़ें लगी हुई थीं। नुकीले कांटे आपस में गुंथे हुए थे ताकि कोई भी अंदर न आ सके। उनके बाहर बारूदी सुरंगें बिछाई गई थीं, जबकि पेड़ों पर पहरेदार तैनात थे ताकि वे किसी भी संभावित हमले पर नज़र रख सकें। शिविर के अंदर नाच-गाना चल रहा था। थामिसदा मग में बकरी का दूध पी रहा था, जबकि महिषा ने दूध पीने से परहेज किया और अपने हाथ में शराब पकड़े हुए था।
'मुझे लगता है कि तबिता और तुम एक दूसरे के करीब आ रहे हो,' उसने हंसते हुए कहा।
'वह काफी समझाने में माहिर है,' महिषा मुस्कुराई।
जब उसे कुछ चाहिए होता है, तो वह उसे हासिल कर लेती है।
‘तुम्हारी पत्नी कहाँ है?’
थामिसदा चौंक गई। 'उसका निधन हो गया है।'
‘मैं समझ गया। मैं माफी मांगता हूं।’
नहीं। नहीं। तबिता के जीवन के शुरुआती दौर में ही उसकी मृत्यु हो गई थी। महिषा को आश्चर्य हुआ कि थामिसदा ने किसी और से शादी क्यों नहीं की, जबकि उसके आसपास कोई महिला नहीं थी। 'तुम अपना हेलमेट कभी क्यों नहीं उतारते?' उसने आह भरते हुए कहा, 'मुझे लगता है यह एक अजीब आदत है।'
'आदत?'

‘जब मैं छोटा था, तब आग में फंस गया था। हमारे शिविर पर छापा मारा गया था, और आप जानते हैं, मैं पीड़ितों में से एक था। बच गया पीड़ित। मैं पूरी तरह से जल गया था, और तब से मैं हेलमेट पहनता हूं। यह मुझे ऐसा महसूस कराता है…’ ‘अब अपनी त्वचा को लेकर कम असुरक्षित महसूस करते हो?’ महिषा इस भावना को अच्छी तरह समझता था क्योंकि उसकी त्वचा पर हरे रंग के धब्बे थे और उसे ये बिल्कुल पसंद नहीं थे। वह समय से पहले पैदा हुआ बच्चा था और इसी वजह से उसकी त्वचा का रंग बदल गया था।
'जी हां, बिल्कुल। लेकिन मुझे खुशी है कि आप उस असुरक्षा को अपने साथ नहीं रखते।'
किसी और परिस्थिति में वह क्रोधित हो जाता, लेकिन अब ऐसा नहीं था। वह केवल अपनी त्वचा पर इसलिए क्रोधित था क्योंकि उसे इसके लिए शर्मिंदगी महसूस हो रही थी, लेकिन उसे एहसास हो गया था कि जिसने उसे शर्मिंदा किया था वह उसके प्रति पूर्वाग्रही थी, क्योंकि वह देवों की जासूस थी। इसका उससे कोई लेना- देना नहीं था, और उसने इस बात को स्वीकार करना शुरू कर दिया था।
‘मुझे आपको कुछ बताना है,’ महिषा ने आखिरकार आह भरते हुए स्वीकार किया। ‘हम इस पर बहस कर सकते हैं। चुप रहो। लेकिन दुर्भाग्य से, इसका कोई फायदा नहीं है। मुझे आपकी, चीफ थामिसदा, मदद की ज़रूरत है, और मुझे अब लगने लगा है कि शायद मुझे अपने विचारों को लेकर इतना अड़ियल नहीं रहना चाहिए। मुझे लगता है कि अब मेरे लिए शांत हो जाने का समय आ गया है।’
थामिसदा मुस्कुराया और उसकी आवाज भारी हो गई। 'क्या तुम शादी स्वीकार कर रहे हो?'
'हां, मैं हूं,' उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह यह कह रहा है।
थामिसदा आगे बढ़ा और महिषा के कंधों पर हाथ रखते हुए बोला, 'अच्छा, मुझे लगता है कि अब सब कुछ हमारी योजना के अनुसार ही होगा।'

त्रिनेत्र महिषा को लेकर चिंतित था। उसे महसूस हो रहा था कि कुछ गड़बड़ है। और वह यहाँ अपने तम्बू में उस दासी के बगल में लेटा हुआ था, अपने प्याले से मदिरा पी रहा था। उसे पता लगाना ही था कि यहाँ क्या चल रहा है। रिगोली को पता चला था कि दुर्गा यहाँ है, लेकिन वह कहीं नहीं मिल रही थी।

उसने अपने आदमियों को भेजा था और उनमें से कोई भी संदिग्ध नहीं लग रहा था, सिवाय एक के जो उसके पास आया और उसे कुछ बताया:
‘इन लोगों में कुछ अजीब बात है। मैं स्किथियनों से मिला हूँ और वे आम स्किथियनों की तरह व्यवहार नहीं करते।’
लेकिन त्रिनेत्रा ने इसे कोई बड़ी बात नहीं समझा, क्योंकि सिथियनों के सैकड़ों कबीले थे और पानास उनमें से सिर्फ एक थे। उसका सैनिक बस ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया दे रहा था। ज़रूरत से ज़्यादा सोच रहा था।
फिर उसके एक जासूस से एक और खबर मिली। कांचीपुरम के बाहरी इलाके में देवों का एक समूह देखा गया था। वे गायब हो गए थे, लेकिन उनके आखिरी ठिकाने का आसानी से पता लगाया जा सकता था। वह इसकी पड़ताल करना चाहता था; वह इस बारे में महिषा से बात करेगा...
एक साया तम्बू में दाखिल हुआ। दासी उसकी करवट सो रही थी। दीये की रोशनी से एक तेज धार निकली और उसमें से एक धारदार हथियार की स्पष्ट चमक दिखाई दी। त्रिनेत्रा को एहसास हुआ कि तलवार उसकी ओर बढ़ रही है और उसने उसके पेट पर वार कर दिया। जैसे ही दूसरे हाथ ने उसका मुंह पकड़कर उसे चुप कराया, वह बुरी तरह घायल हो गया। वह काफी देर तक हिल नहीं सका, उसकी आंखें ऊपर की ओर घूम गईं, लेकिन उसने किसी तरह हत्यारे की एक झलक देख ली।
‘यह…तुम हो…’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
वह हत्यारे को जानता था।
लेकिन इससे पहले कि वह चिल्लाकर अपनी बात कह पाता...
वह मृत है।

18

सेक्ष को वह घटना याद आ गई।
इस घटना ने उसे यह यकीन दिला दिया कि वह इंसान नहीं है। उसके अंदर हिंसा की प्रवृत्ति जागृत हो गई थी। वह उस दंपत्ति के घर आया था और उसने उनमें से एक को मार डाला था जबकि महिला भाग निकली थी। लड़के ने उससे महिला को छोड़ने की गुहार लगाई थी।
लेकिन सेक्श ने ऐसा नहीं किया था। उसने लड़के का सिर काट दिया था। और फिर दरवाजे की ओर बढ़ा। दरवाजा तोड़कर अंदर घुसते ही उसने देखा कि औरत खिड़की से भागने में कामयाब हो गई थी। सेक्श, हाथ में तलवार लिए, खिड़की की ओर बढ़ा और उसकी निगाहें जंगल की छायाओं पर दौड़ पड़ीं। उसे कोई दिखाई नहीं दिया।
वह महिला गायब हो गई थी। उसने गुस्से में दांत पीसते हुए पैर पटका।
जब महिषा किसी लड़की की मांग करता था, तो आपको उसे उसके लिए लाना ही पड़ता था। वरना वह बहुत गुस्सा हो जाता था। वह एक युवा कुम्हार थी। मुश्किल से पंद्रह साल की। लेकिन महिषा को उम्र की परवाह नहीं थी। वह अपनी उम्र से बड़ी दिखती थी।
दुर्भाग्यवश, सेक्श ने उसे इस तथ्य के अलावा और कुछ नहीं देखा था कि उसके बड़े, घने घुंघराले बाल थे जो उसके चेहरे के अधिकांश हिस्से को ढके हुए थे। न जाने क्यों, उन घुंघराले बालों और उस दिन की छवि से सेक्श के मन में कई भयानक दृश्य उभर आए। उसने खुद भी उन्हें समझने की कोशिश की, लेकिन वह समझ नहीं पाया।
असिलोमा उसके सामने खड़ी थी। कप्तान के कमरे में। चंद्रमा की चांदी जैसी रोशनी कमरे के अंदर छनकर आ रही थी।
तो आपको नहीं पता कि उस आदमी को किसने मारा?
असिलोमा ने अपना सिर हिलाया। 'क्या वह चाहती है कि मैं मर जाऊं?'
सेक्श ने उसे इसके बारे में बता दिया था। वह इतनी महत्वपूर्ण बात छिपा नहीं सकता था। उसे देखकर सेक्श को दुख हुआ। असिलोमा उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था, लेकिन वह ऐसे लोगों के साथ जोखिम भी नहीं उठा सकता था। सेक्श को अपने सीने पर बोझ महसूस हो रहा था। अपराधबोध धीरे-धीरे उसे

घुटन दे रहा था। 'हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे,' उसने अपने अंदर के विश्वास से कहीं अधिक आत्मविश्वास से कहा।
मुझे लगता है कि यह दुर्गा नाम की महिला हमारे बीच ही है।
‘हो सकता है,’ सेक्ष ने आह भरते हुए खुद को बहलाने की कोशिश की। ‘चलो खाना खाते हैं। मैंने रसोइए से तुम्हारा पसंदीदा खाना बनाने को कहा है।’

चौकी के आम कक्षों में, जहाँ ठंड अधिक थी और चूल्हे की गर्माहट कम, मेज पर दावत सजी थी। वहाँ छिले हुए चिकन लेग्स को ब्रोकली, मक्का और आलू के साथ परोसा गया था। मेज पर केवल असिलोमा और सेक्श ही मौजूद थे, जबकि उनका पसंदीदा रसोइया उन्हें खाना परोस रहा था।
‘बहुत बढ़िया काम किया,’ उसने रसोइए से कहा।
उसने हल्की सी मुस्कान दी। जाते समय उसने कहा, 'धन्यवाद, जनरल।'
‘क्या तुम्हें उस गंजे सिर से डर नहीं लगता?’ असिलोमा आगे झुकी। ‘वह बिना बालों के बहुत डरावनी लगती है,’ वह रुकी। ‘क्या तुम्हें पता है कि ऐसा क्यों है?’
सेक्ष ने सिर हिलाया। उसने कभी पूछने की ज़हमत ही नहीं उठाई और अब उसे इस बात का भी पछतावा हो रहा था। छोटी-छोटी बातों को गलत तरीके से करने पर उसे अपराधबोध हो रहा था।
जब वह मुर्गे की टांग का आनंद ले रहा था, तभी उसकी नज़र असिलोमा पर पड़ी और उसकी मौजूदगी में उसे सुरक्षा का अहसास हुआ। उसकी मुलाकात असिलोमा से तब हुई थी जब वह अपने एक सैन्य अभियान पर था और असिलोमा उसकी एक सहयोगी से शादी करने वाला था। महिषा ने यह गठबंधन करवाया था, लेकिन सेक्ष इसके लिए तैयार नहीं था। उसने झूठ बोला कि वह महिलाओं से शादी करने के बारे में सोच भी नहीं सकता, वह बस उनके साथ मौज-मस्ती करना चाहता है, और महिषा ने इस बात पर उसकी पीठ थपथपाई थी।
बाद में, असिलोमा उससे मिलने आया और उसने बताया कि उसने शिविरों के बाहर नग्न अवस्था में सेक्श को उसे घूरते हुए देखा था। सेक्श को बुरा लगा और उसने असिलोमा को थप्पड़ मार दिया। फिर उसने उसे चूम लिया। क्योंकि वह

सचमुच ऐसा करना चाहता था। असिलोमा उसे बेहद आकर्षक लगा। यह एक रात का रिश्ता होना था, लेकिन अब यह पूरी तरह से एक अलग ही रूप ले चुका था।
खाना खाने के बाद उसने रसोइए को फिर बुलाया और उसे पत्र सौंप दिया ताकि वह उसे संदेशवाहक को दे दे। उसने पत्र को पूरे समय एक तरफ रखा हुआ था, यह सोच रहा था कि उसे भेजे या नहीं। रसोइए ने सिर हिलाया और पत्र भेज दिया।
‘इस पत्र में क्या लिखा है?’
इसे कांचीपुरम भेजा जाना है। महिषा को।
'और ऐसा क्यों है?'
‘जब वह गठबंधन बना लें, तब यहाँ आएं। मैं चाहूंगा कि वह दुर्गा से मिलें।’ असिलोमा ने सिर हिलाया। 'लेकिन वह दुर्गा नहीं है।'
मुझे उस पर विश्वास नहीं है।
'बहुत बढ़िया। अब हमें उसके आने तक यहीं इंतजार करना होगा।'
बस कुछ ही दिनों की बात है।
उनके बीच कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया।
‘वह ऐसा क्यों करेगी…’ असिलोमा आगे झुकी और फुसफुसाते हुए बोली, जिससे अजीब सी चुप्पी टूट गई। ‘क्या यह अलौकिक हो सकता है?’
'आपका क्या मतलब है?'
क्या दुर्गा नाम की कोई आत्मा हो सकती है?
सेक्ष को लगभग हंसी आ गई। 'क्या तुम खुद को सुन रहे हो?'
असिलोमा को बुरा लगा और वह पीछे हट गई। 'यह औरत कैसे जान सकती है कि किसी की मौत होगी जबकि यहाँ हमारे अलावा कोई है ही नहीं?'
क्योंकि उसने इस समय किसी को छिपा रखा है। अपने आदमियों को इकट्ठा करो और हर कोने की तलाशी लो। मुझे पता है कि असली दुर्गा यहीं कहीं छिपी हुई है। असिलोमा ने सिर हिलाया।
लेकिन अगर वह यह स्वीकार न करे कि उसे इस समय डर लग रहा है, तो वह झूठ बोल रहा होगा। उसे निश्चित रूप से डर लग रहा था।
उसने सोचा, डर से लड़ने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि उसका सामना किया जाए?

'चुडैल! डाका! चुडैल! डाका!'
उसके कानों में गूंज सुनाई दे रही थी। वह छोटी थी। वह दौड़ रही थी। चारों ओर रेत ही रेत थी। रेगिस्तान की तरह। पहाड़ और रेत के ढेर थे। और वह वहीं थी। उसका चेहरा मासूम था। प्यारा सा। उसकी आंखें पन्ना जैसी खूबसूरत थीं। उसके मुंह में टूटे हुए दूध के दांत थे, और बालों की लटें उसके चेहरे पर बिखरी हुई थीं। हवा गर्म थी और उसके पैर भी, जो रेत में धंस रहे थे।
लोग उसके पीछे भाग रहे थे। और उसकी माँ के पीछे भी। उनका पीछा किया जा रहा था। उनके हाथों में भाले और तलवारें थीं, जो उनकी ओर तनी हुई थीं। ‘चुड़ैल!’ किसी ने चिल्लाकर कहा। उसे लगा जैसे ये शब्द उसकी आत्मा को भेद रहे हों।
लोगों को लगा कि वे चुड़ैलें हैं। जब एक छोटे से कस्बे में महिषा के आदमियों का पर्दाफाश होते-होते बचा, तो अफवाहें फैल गईं। कात्या और उसकी माँ ने उन्हें कस्बे में जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण सामान की चोरी करते देखा था। वे महिषा के गुप्त ठिकानों में जा रही थीं। महिषा के आदमियों ने उन्हें पकड़ लिया, लेकिन वे भाग निकलीं। वे ग्रामणी को बताना चाहती थीं, लेकिन ग्रामणी पहले उन आदमियों की बातों में आ गई। उन्होंने कहा कि वे दोनों औरतें चुड़ैलें हैं। वे चुड़ैलें हैं। वे काला जादू करती हैं।
और जल्द ही, पूरा गांव उनके पीछे पड़ गया।
कुलीनता गलत थी।
कात्या ने आंखें खोलीं और अपने सामने लोहे की जालीदार सलाखों को देखा।
कुलीनता गलत थी।
उसने धीमी आवाज़ में दोहराया। कुलीनता आदर्शवादियों के लिए होती है।
लेकिन जो लोग सफल होते हैं, वे चतुर, व्यावहारिक और बुद्धिमान होते हैं।
सचमुच बहुत बुद्धिमान। आप सिर्फ अच्छे नहीं हो सकते। आपको दो कदम आगे की सोचना पड़ता है। आपको दिमागी दांव-पेच खेलने पड़ते हैं। आपको चालाकी से काम लेना पड़ता है।
दुर्भाग्यवश, आपको यह सब करना ही पड़ा क्योंकि अगर आप ऐसा नहीं करते, तो आप सबसे अलग-थलग पड़ जाते।
जेल के दरवाजे खुले और उसने सेक्श को अंदर आते देखा।
वह देखने में सुंदर था, सिवाय उसकी एक आंख के जिस पर एक लंबा निशान था, जिसकी वजह से वह एक आम आदमी से कहीं ज्यादा डरावना दिखता था।

‘मैंने सोचा था कि आज रात मैं अकेले सोऊंगी। क्या आप भी आना चाहेंगे?’ उसने बनावटी मुस्कान के साथ ग्रेनाइट के फर्श की ओर इशारा किया।
वह वहाँ चुपचाप खड़ा रहा। उसकी भौंहें तन गईं। वह समझ गई कि उसे खुद नहीं पता था कि वह यहाँ क्यों खड़ा है। वह बस उसे देखना चाहता था। यह जानना चाहता था कि वह इंसान है, कोई और चीज़ नहीं।
आप इसे कब तक जारी रखने की योजना बना रहे हैं?
‘क्या?’ उसने पूछा।
मेरे आदमियों को एक-एक करके मार डालो।
‘एक-एक करके? ओह, ऐसा नहीं है।’
'आपका क्या मतलब है?'
‘ओह, उम…तो चूंकि आपने मेरी बात नहीं मानी, अब हालात और भी खराब होने वाले हैं,’ वह मुस्कुराई।
'आपका क्या मतलब है?'
वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।
‘दुर्गा को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आती जब लोग उसकी बात नहीं मानते। और तुमने उसकी बात नहीं मानी, तो अब…’ उसने बाहर देखा। वे किसी भी समय आ सकते थे। ‘तुम्हारे हाथों में एक नरसंहार होगा।’
क्या यह कोई मजाक है?
‘क्या मैं हंस रही हूँ?’ उसने शांत चेहरे से पूछा।
‘कब?’ उसने पूछा।
‘ओह।’ बादल हट गए। चाँद दिखाई देने लगा। ‘अब।’
फिर उन दोनों को चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं। बाहर सेक्श के आदमी जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। दरवाजे जोर-जोर से खोले जा रहे थे और सब कुछ सुनाई दे रहा था। तीरों की आवाज और तलवारों की खड़खड़ाहट।
‘तुमने क्या किया है?’ सेक्श ने पूछा, लेकिन जवाब का इंतजार किए बिना, उसने जेल का दरवाजा बंद किया और तेजी से बाहर निकल गया।

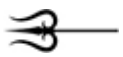

जब वह उस इमारत से बाहर आया जिसमें सभी जेल की कोठरियाँ थीं, तो उसने अपने आदमियों को जमीन पर बेसुध पड़ा देखा।

जब उसने आखिरकार देखा कि उसके बाकी सैनिक किससे लड़ रहे हैं, तब उसने अपना हथियार निकाला…
उन सभी के लंबे, कड़े बाल पोनीटेल में बंधे हुए थे और उन्होंने केवल लंगोटी पहनी हुई थी। उनके शरीर पर गहरे घाव के निशान थे। हाथों में हथियार लिए वे निर्दयी थे। जंगली जानवरों की तरह।
उनमें से एक व्यक्ति सेक्श के करीब पहुँच गया, जिसने भाले को मोड़कर अपना बचाव किया। लेकिन वह खूंखार आदमी फिर भी उसकी ओर बढ़ता रहा, इसलिए सेक्श एक तरफ हट गया और भाले की धार उस आदमी की पीठ में घोंप दी। वह चीखता हुआ नीचे गिर पड़ा।
सेक्श के तीरंदाज तीर चला रहे थे—कुछ लक्ष्यहीन थे, कुछ निशाने पर लग रहे थे, लेकिन वे सभी इधर-उधर जा रहे थे।
उस सारी अफरा-तफरी में, वह असिलोमा को ढूंढ रहा था, जो कोने में था और अपने लंबे भाले से लड़ रहा था। लेकिन, जब वह खूंखार आदमी उसकी ओर आया—
वह बस असिलोमा के पास से गुजरा। उस पर हमला नहीं किया।
मानो…
मानो…
उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे असिलोमा को किसी भी तरह से नुकसान न पहुंचाएं।
एक आदमी पीछे से आया और सेक्श को ज़मीन पर पटक दिया। मुड़कर देखा तो एक खूंखार आदमी घनी दाढ़ी के साथ खड़ा था, जिसने सेक्श के चेहरे पर ज़ोरदार घूंसा मारा—जिसका सीधा असर उसके जबड़े पर पड़ा और उसके मुंह से खून निकल आया। जब सेक्श उस आदमी को खुद से दूर करने की कोशिश कर रहा था, तभी एक तीर उसके सिर में जा लगा और वह पीछे की ओर गिर पड़ा।
सेक्श अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने देखा कि एक और खूंखार आदमी उसकी ओर बढ़ रहा है। पलक झपकते ही उसने अपनी तलवार हवा में घुमाई, जो हवा को चीरती हुई उस आदमी के सिर पर जा लगी। वह तुरंत ज़मीन पर गिर पड़ा।
उसने देखा कि बाकी जंगली लोग तेजी से इधर-उधर भागने लगे। चूहों की तरह फुदकते हुए।
‘उनका पीछा करो और उनमें से हर एक को मार डालो!’ सेक्श चिल्लाया।

और उसके आदमियों ने सिर हिलाया। घोड़े वहीं थे, इसलिए उसके आदमी उन लोगों की तलाश में चौकी से निकल पड़े। सेक्श लंगड़ाते हुए असिलोमा के पास गया, उसे गले लगाया और पूछा: 'क्या तुम ठीक हो?'
‘उन्होंने मुझ पर हमला नहीं किया,’ वह हैरान होकर बोला। ‘मैंने कुछ लोगों को मार डाला, लेकिन उन्होंने अपना बचाव तक नहीं किया।’
‘क्योंकि वो चाहती है कि मैं तुम्हें मार डालूँ। वो इसके अलावा कुछ और नहीं होने देगी,’ सेक्श ने अपने बिना चोट वाले पैर से ज़मीन पर लात मारी। ‘वो हमारे साथ खेल खेल रही है। हम हमले को आते हुए क्यों नहीं देख पाए?’ ‘अंधेरा हो गया था और हम आलस कर रहे थे,’ असिलोमा ने मन ही मन बड़बड़ाया। वह जानता था कि ऐसा कमजोर बहाना देना उसकी गलती थी।
सेक्श ने आसपास के लोगों को देखा। इस नरसंहार में उसके लगभग चालीस आदमी मारे गए थे। सिर्फ इसलिए कि उसने कात्या की बात नहीं मानी थी। अब, अगर वे चौकी छोड़ना भी चाहते, तो छोड़ नहीं सकते थे। उन्हें बचाव दल के आने और इकट्ठा होने का इंतज़ार करना था, क्योंकि सेक्श को नहीं पता था कि कात्या ने उनके लिए और कितने रहस्य छिपा रखे हैं।
'वे थे…'
‘डाकू, हाँ। बिल्कुल वैसे ही दिखते थे। वन डाकू। निषाद,’ असिलोमा ने उनके लिए इस्तेमाल होने वाला स्थानीय शब्द बताया। निषाद पेड़ों पर रहते थे और घास या झाड़ियों का इस्तेमाल छलावरण के लिए करते थे। वे जंगली स्वभाव के थे, लेकिन आदेश मानने में भी माहिर थे। उनमें से कोई एक पढ़ा-लिखा होता था और संवाद करना जानता था। उन्हें कोई बाहरी व्यक्ति आसानी से खरीद सकता था। कात्या ने भी यही किया होगा। उसने उन्हें एक अलग सेना के रूप में पैसे दिए होंगे ताकि वे आज रात जैसे किसी खास समय पर हमला करें।
‘आह…’
सेक्ष ने आवाज़ सुनी। वह लड़खड़ाते हुए उस ओर बढ़ा और उसने एक निषाद को कराहते हुए देखा, जिसकी बांह पर गहरा घाव था। सेक्ष घुटनों के बल बैठा और उसे अपने चेहरे के पास लाकर उसका गला पकड़ लिया। 'तुम्हें किसने भेजा है?' ‘वह आ रही है… वह आ रही है… वह तुम सबको मार डालेगी…’ वह आदमी पागलों की तरह हँसा और उसकी पुतलियाँ फैल गईं।
उसने असिलोमा की ओर देखा।
वह परेशान हो गया।

19

सौभाग्यवश, उस भीषण हिंसा के बाद गौरी की जान बच गई।
नौ रातों का पाँचवाँ दिन था और शायद उसकी तरफ सब कुछ ठीक चल रहा था, हालाँकि उसे खुद भी इसका पता नहीं था। उसे अभी यह तय करना था कि और मुसीबत कैसे खड़ी की जाए। लेकिन माता उसके साथ थी। उसे यकीन नहीं था। उसने पहरेदारों को तब भी कुछ नहीं बताया जब उन्होंने उससे पूछा कि खेतों में आग लगाने के लिए कौन ज़िम्मेदार है। आग लगने की वजह से बड़ी संख्या में किसानों को अस्थायी रूप से काम से छुट्टी दे दी गई थी और साम्राज्य को भारी नुकसान हुआ था क्योंकि उनका मुख्य उत्पादन बाधित हो गया था।
गौरी अपने कमरे में शांति से बैठी सोच रही थी कि वह और क्या कर सकती है, तभी उसने सामने का दरवाजा खुलते देखा और ऐरावती को अपने बगल में एक युवा, बिखरे बालों वाले लड़के के साथ पाया। एक पल के लिए वह उस लड़के को देखकर चौंक गई। उसके हाथ में लकड़ी की एक छोटी सी मूर्ति थी, जिससे वह खेल रहा था, और उसके गोल-मटोल गालों पर गंदगी के धब्बे थे।
वह प्यारा था और उसे उन लड़कों की याद दिलाता था जिनके साथ वह चोरी-चकारी किया करती थी, लेकिन शायद वह उतना धूर्त नहीं था।
‘वह कौन है?’ उसने पूछा।
‘ओम,’ उसने जवाब दिया, लेकिन लड़के को कोई फर्क नहीं पड़ा। ‘गुरु शुक्र चाहते हैं कि जब वे कुछ काम निपटा रहे हों, तो मैं उन पर नज़र रखूँ। मुझे कॉमन रूम में रहने के लिए कहा गया था, लेकिन मैं चुपके से निकल गया। वे महल के तहखानों में सभी मंत्रियों की बैठक बुला रहे हैं।’
यह अजीब था।
गौरी ओम के पास गई और उसका चेहरा छुआ। उसे देखा। वह स्तब्ध सा लग रहा था। 'क्या उसे कुछ पीने के लिए दिया गया था?'
“जब मैं उसे लेकर आई, तब तक वह साधारण दूध पी रहा था। और शुक्र ने यह भी कहा था कि मुझे तुमसे दूर रहना चाहिए क्योंकि तुम झगड़ा पैदा करने वाली हो।
इसलिए मेरे लिए स्वाभाविक यही था कि मैं उसे चुनौती देते हुए लड़के को तुम्हारे पास ले आऊं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।
ऐरावती निस्संदेह उसके पक्ष में थी और गौरी ने उसे किसी भी संदिग्ध बात की सूचना देने के लिए मना लिया था।

इस कदर।
‘मुझे लगता है कि उसने नशा किया है,’ उसने फिर से लड़के की आँखों में देखा। ‘वह एक तरह के दिवास्वप्न जैसी बेहोशी में चला गया है।’
उसने इसके बारे में सुना था। दरअसल, उसने इसका अध्ययन भी किया था। उसे याद था:
यम ने ग्रंथों का ढेर उसके सामने रखा, फिर एक चार्ट निकाला और उसे पढ़ने को कहा। चार्ट के बीच में कुछ चित्र बने हुए थे। उनमें से एक चित्र में एक लड़के को उबलते हुए गर्म कड़ाहे में डाला जा रहा था, जबकि नकाबपोश लोग उसके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े थे।
‘जब तुम उस प्रजा के महल में घुसपैठ करोगे,’ यम ने अपने पंद्रह वर्षीय शिष्य से बात करना शुरू किया, ‘एक बात याद रखना: तुम भयानक चीजों के साक्षी बनने वाले हो।’
'पसंद करना?'
उसने चित्र की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इसे नानबन कहते हैं। बाल बलिदान।' ‘बच्चे…’ उसने अपनी निगाहें चौड़ी कर लीं। ‘क्या तुम मजाक कर रहे हो?’ गंजे आदमी का चेहरा तनावग्रस्त और बेचैन करने वाला था। 'आप क्या सोचते हैं?'
'लेकिन है कि…'
‘मुझे पता है। यह एक ऐसी अवधारणा है जिसे उन्होंने मिस्रवासियों से चुराया है। ऐसा माना जाता है कि यदि किसी कुंवारे लड़के या लड़की की बलि दी जाए, तो वह शासक राजा के लिए धन, सम्मान और गौरव लाएगा। शुक्र इस प्रथा का जनक है। और यह सबसे जघन्य अपराध है जो कोई कर सकता है।’
‘तो क्या सबको इसके बारे में पता है?’
'केवल कुलीन वर्ग के लोगों को ही अनुमति है। गुलामों या पहरेदारों को भी नहीं। वे जानते हैं कि कभी-कभार कोई बच्चा आता तो है, लेकिन कभी जाता नहीं।' उसने फिर से लड़के की ओर देखा। उसे घूरते हुए, उसने कहा, 'इसकी बलि दी जाएगी।'
एक पल के लिए ऐरावती पूरी तरह से स्तब्ध रह गई। जम सी गई। और फिर वह बुदबुदाई, 'क्या तुम... रुको... क्या?'
'हाँ।'
‘उम…क्यों?’

वह अभी सारी बातें विस्तार से नहीं बताना चाहती थी। उसे पता था कि उसे लड़के को बचाना ही है।
उसने पूछा, 'इस गलियारे में कितने गार्ड हैं?'
'काफी संख्या में। हमेशा की तरह, वे बारी-बारी से काम कर रहे हैं।'
उसने योजना बनाना शुरू किया। उसे लड़के को बचाने का कोई न कोई तरीका ढूंढना ही था। लेकिन... उसने अपने पलंग की ओर देखा और फिर लड़के की ओर। वह सुस्त था। ज्यादा बोल नहीं पा रहा था। और काफी दुबला-पतला भी था।
उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपनी चारपाई पर लिटा दिया, और उसके ऊपर एक कंबल डाल दिया जिससे उसका पूरा शरीर ढक गया।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ ऐरावती ने पूछा।
उसे बाहर ले जा रहे हैं।
लेकिन शुक्र ने उसे मेरे पास छोड़ दिया…
‘उसे कहो कि वह भाग गया या झूठ बोलो। कुछ सोचो। तुम समझदार हो,’ गौरी ने गद्दे को घसीटते हुए और लड़के को उस पर लिटाकर बाहर ले जाते हुए कहा।
ऐरावती वहां खड़ी थी, इतनी असमंजस में थी कि कुछ बोल नहीं पा रही थी। लेकिन गौरी को इसकी परवाह नहीं थी। वह जानती थी कि ऐरावती झूठ बोलने में या समय मिलने पर सच बोलने में भी बहुत तेज थी। अब उसे बच्चे को उसके माता-पिता के पास वापस ले जाना ही था।

लौटते हुए…
वह पलंग को घसीटते हुए महल की पिछली गली के द्वार तक ले गई, जहाँ एक पहरेदार खड़ा था। जैसे ही उसने ऊपर देखा, उसने अपनी भौंहें ऊपर उठा लीं। ‘तुम उस गद्दे के साथ क्या कर रहे हो?’
‘चूहे!’ वह चीखी, और वह तुरंत डर गया।
'ओह!'
और उसने चादरों में कुछ हिलता हुआ देखा। 'लेकिन यहाँ कुछ है...'
वह घबराकर बोली, 'हाँ, क्योंकि अभी भी चूहे हैं। मुझे इसे सड़क पर फेंकना होगा। मुझे जाने दो!'
'मैं तुम्हारी मदद करूंगा…'

‘नहीं!’ वह फिर चीखी और फिर खुद को संभाला। ‘आपको समझना होगा, महोदय, कि मैं खुद को चोट पहुँचा सकती हूँ, लेकिन आपको चोट नहीं पहुँचने दूँगी। आप राजशाही के एक महत्वपूर्ण सहयोगी हैं। आपको देखिए—कितने समझदार और बुद्धिमान हैं!’
अपनी तारीफ सुनकर वह खुश हो रहा था। और उसने उसकी नजरों से ओझल होकर गद्दे को बाहर खुले में घसीटा और सड़क की ओर ले गई।

शुक्र ने अपने दफ्तर में इंतजार करते हुए अपने आदमियों को ऐरावती को लाने का आदेश दिया था। उसे उस लड़के को उस औरत को, या किसी भी दासी को नहीं देना चाहिए था। लेकिन उसके पास कोई चारा नहीं था। जब कड़ाहे में कोई आपात स्थिति आई, तो ऐरावती ही सबसे पहले उपलब्ध थी। उसके आदमियों ने गलत आकार का कड़ाहा ला लिया था और उसे ऊपर आने और उस दासी का इंतजार करने से पहले नीचे जाकर खुद जांच करनी पड़ी थी।
उसके आदमियों ने ऐरावती को महल में प्रवेश करने दिया। उसने उसे लड़के के बिना पाया।
बिना…
‘लड़का कहाँ है?’ उसने तीखे स्वर में पूछा।
‘अरे, वो भाग गया,’ वो डरी हुई थी। डर के मारे बुदबुदा रही थी।
‘वह भागा?’ वह भाग ही नहीं सकता था। उसे नशा दिया गया था। ‘सच बताओ, लड़की।’ वह देख सकता था कि उसका चेहरा पीला पड़ रहा था और आम तौर पर वह उसे यातना देता, लेकिन उसने बस अपनी निगाहें सीधे उसकी आँखों में टिकाए रखीं। उसके पास समय नहीं था। 'मुझे बताओ, वह कहाँ है?'
उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसने हल्की सी आवाज़ निकाली। शायद अब जल्दी ही यातना देनी पड़ेगी, उसने सोचा।
उसके पीछे खड़े गार्ड ने उसे जमीन पर धक्का दिया और उसकी गर्दन पर चाकू रख दिया।
'मुझे बताओ, वरना तुम मर जाओगी। तुम्हारी जिंदगी मेरे लिए इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, लड़की।'
ऐरावती ने एक पल सोचा और फिर हिचकिचाते हुए सिर हिलाया।

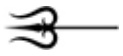

जब तक वह महल से निकलकर उन गलियों के बीच पहुंची जहां सूरज की तेज धूप पड़ रही थी, तब तक उसने चादरें उठाईं और लड़के को ऊपर उठाया, उसे ठीक से खड़ा किया, हालांकि वह लड़खड़ा रहा था, लेकिन फिर भी अपनी गुड़िया को पकड़े हुए था।
‘तुम्हारा घर कहाँ है, बच्चे?’ उसने जल्दबाजी में पूछा।
और उसने यह सुना। जोर-जोर से चीखने की आवाजें सुनाई दे रही थीं। लोग गलियों में भाग रहे थे।
ऐरावती को सच बताने के लिए मजबूर किया गया होगा। उसने अपने होंठ काट लिए।
‘मुझे लगता है हमें भागना पड़ेगा। क्या तुम भाग पाओगे?’ उसने उससे पूछा।
‘फुसफुसाहट…शेर…दहाड़?’ उसने कहा।
'मुझे लगता है, इस स्थिति के लिए यह ठीक है,' उसने उसे उठा लिया। यह सब उसकी उस ताकत की बदौलत था जो उसने अपने प्रशिक्षण सत्रों के दौरान हासिल की थी, जहाँ उसे भारी चीज़ें उठाने और कई तरह के व्यायाम करने पड़ते थे। उसे सैन्य दिग्गजों द्वारा प्रशिक्षित किया गया था।
वह गलियों और संकरी सड़कों की ओर दौड़ने लगी, उन आदमियों से जितना हो सके दूर जाने की कोशिश कर रही थी, जो अब घोड़ों पर सवार होकर सड़कों पर घूम रहे थे, जबकि कुछ लोग बच्चे वाली लड़की के बारे में पूछताछ कर रहे थे।
उसकी बाहों में मौजूद लड़का अनमने ढंग से मुस्कुराया, ‘घर…गली…’।
'क्या यह इस तरफ है?' उसने उम्मीद से पूछा।
वह बस मुस्कुरा रहा था। वह देख सकती थी कि उसकी उंगलियां किसी चीज़ की ओर इशारा कर रही थीं। वह उस दिशा में चलने लगी, और संदेह भरी निगाहें उसका पीछा करने लगीं। वह शहर के बीचोंबीच स्थित उस गड्ढे के करीब पहुँच रही थी, एक ढलान जो अंततः झोपड़ियों और गरीब लोगों के घरों तक ले जाती थी।
वह उसकी ओर उतरने लगी।
और घोड़ों के खुरों की आवाज सुनाई दी।
वे उसके लिए आगे बढ़ रहे थे।
वह पीछे मुड़ी। वहाँ एक घुड़सवार हाथ में तलवार लिए खड़ा था।
हे भगवान…

उसने पलक झपकते ही तलवार से खुद को बचा लिया, झुककर वार किया और पाया कि घोड़ा अब उसके सामने आ गया है। घोड़ा मुड़ा और उसकी ओर सरपट दौड़ने लगा... एक गिरी हुई ढाल की मदद से वह घोड़े के चेहरे पर जा टकराई, जिससे घोड़ा और उस पर बैठा आदमी दोनों जमीन पर गिर पड़े।
फिर वह और तेज़ी से दौड़ने लगी, जैसे सरपट दौड़ रही हो। वह पहले से ही संघर्ष कर रही थी क्योंकि उसने अपनी बाहों में एक लड़के को उठा रखा था। ‘घर…’ उसने कहा, ‘ओह वी ओह वी…’
वह झोपड़ियों की कतार की ओर बढ़ गई और लड़के से बार-बार पूछती रही कि उसकी झोपड़ी कौन सी है, लेकिन लड़का किसी भी झोपड़ी को नहीं बता रहा था, इसलिए वह समझ गई कि वह झोपड़ी उसका घर नहीं है। गली पार करते ही एक संकरी और सीधी गली आई और उसने देखा कि एक पहरेदार चाकू लिए खड़ा है। उसने लड़के के पैरों का इस्तेमाल करके उसके चेहरे पर ज़ोरदार प्रहार किया और शायद इतनी ज़ोर से मारा कि वह ज़मीन पर गिर पड़ा।
‘ओह वी वी…’ लड़का उत्साह से ताली बजा रहा था। ‘घर…’
उसने देखा कि वह कहाँ इशारा कर रहा है। चेहरे से लार टपक रही थी और आँखें झुकी हुई थीं, फिर भी वह अपनी झोपड़ी की ओर इशारा करने में सक्षम था। वह सामने के दरवाजे से अंदर गई और वहाँ पहुँची, और अंदर उसे एक दंपत्ति मिला। वे दोनों ज़मीन पर बैठे थे, तभी उन्होंने गौरी को लड़के को नीचे रखते देखा। ‘तुम क्या कर रहे हो?’ उन्होंने हैरानी से पूछा। ‘अरे! ये तो वो है! अरे मेरा नन्हा सा बेटा!’
वह मुस्कुराई। उसने परिवार को फिर से मिला दिया था।
‘वह तुम्हें कहाँ मिला?’ उस आदमी ने चिंता से पूछा।
‘कुछ मत बोलो।’
उसे पीछे से कई कदमों की आहट सुनाई दी। पहरेदारों ने झोपड़ी को घेर लिया था। वह तुरंत कोने में छिप गई और माता-पिता से कहा कि जब तक वह यहाँ है, वे चुप रहें। पहरेदार इधर-उधर घूमकर जगह की छानबीन करने लगे।
वह स्थिर खड़ी रही। उसे पता था कि गुलाम होने का उसका भेस खुल चुका है और वह वापस वहाँ नहीं जा सकती। अब उसे बाहर से ही राज्य के धार्मिक तंत्र को चुनौती देने का कोई रास्ता खोजना होगा...
'वह यहाँ है!' जिस व्यक्ति के बेटे की उसने अभी-अभी जान बचाई थी, उसने गार्डों से चिल्लाकर कहा।

‘नहीं, नहीं…आप क्या कर रहे हैं?’
गार्ड अंदर आए और गौरी को देखकर बेरहमी से मुस्कुराने लगे, फिर उन्होंने उसे पकड़ लिया और जमीन पर धकेल दिया।
‘इसमें हमारा कोई हाथ नहीं है। हम उसे जानते तक नहीं हैं,’ उस आदमी ने कहा। ‘बच्चा अभी भी तुम्हारा ही है।’
और मां ने अपने बेटे को चूमा, फिर उस शर्मीले, नशे में धुत बच्चे को वापस गार्डों के हवाले कर दिया।
‘नहीं…नहीं!’ वह चीखी, लेकिन उसके हाथ पीछे खींच लिए गए और उसे बाहर धकेला जा रहा था, ताकि उसे हमेशा के लिए जेल भेजा जा सके। ‘तुमने ऐसा क्यों किया? वह तुम्हारा बेटा है। वह तुम्हारा बेटा है!’
जब उसे ले जाया जा रहा था, तब माता-पिता ने जवाब दिया और उसने उनके अंतिम शब्द सुने: 'महिषा देवता हमारे बलिदान पर गर्व करेंगे और भविष्य में हमें धन-दौलत और अधिक संतान प्रदान करेंगे। हम अपने देवता को क्रोधित नहीं कर सकते।'
फिर उसे रथ तक घसीटा गया, जिस पर उसे बिठा दिया गया जबकि पहरेदारों ने उसे घेर लिया और उसे पीछे धकेलते रहे। उसने अब और विरोध नहीं किया, क्योंकि वह जानती थी कि असली दुश्मन ये छोटे-मोटे सड़े-गले बलिदान, अनुष्ठान और रूढ़िवादी व्यवस्था नहीं थे। बल्कि...
उसकी निगाहें महिषा की सोने की प्रतिमा पर टिकी थीं। पचास फीट ऊंची यह एक ऐसा मंदिर था जो महिलाओं के लिए नहीं था। पुरुष यहाँ आकर अपनी आंतरिक और बाह्य विजय के लिए प्रार्थना कर सकते थे। प्रतिमा को अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण माना जाता था, ऐसा माना जाता था कि मनोकामनाएं पूरी होती थीं और कोई भी इसके आसपास के नियमों का उल्लंघन नहीं करता था। यह पवित्र थी।
और वह जानती थी कि लोगों के मन से महिषा को देवता मानने की धारणा को दूर करने के लिए, उसे उन्हें यह दिखाना होगा कि महिषा कोई देवता नहीं थे।

20

बश्कला महिषापुर के ऊपरी हिस्से में स्थित एक छोटे से जुआघर में अपने एक साथी सैनिक के साथ चतुरंग खेल रहा था। लोग यहाँ खेल खेलने या रथ दौड़ पर दांव लगाने आते थे। वे शराब पीते और नशे में चूर हो जाते थे। यहाँ नशा करने के लिए अवैध सोमा की थोड़ी सी मात्रा मिला हुआ विशेष प्रकार का पान मिलता था। खुद कप्तान होने के नाते बश्कला जानता था कि वह इस अड्डे का भंडाफोड़ कर सकता है, लेकिन फिर वह अपना खेल कहाँ खेलेगा? अपने उन दुखों और चिंताओं से छुटकारा कहाँ पाएगा जो उसे सताते थे और उसे अपराधबोध से ग्रसित करते थे?
गोविंकरताना, जो खेल का रक्षक था, ने खेल के विजेता की घोषणा की - बाश्कला। वह गर्व से मुस्कुराया, जबकि विजेता निराश दिख रहा था।
वह एक बुरा आदमी था। वह जानता था। उसने पैसों के लिए बहुत कुछ किया था। खासकर अपनी बहन को बेच दिया था। उसके दिमाग में हमेशा पैसा ही रहता था। यह खून-खराबे वाला लालच था।
'और ध्यान केंद्रित करो, शिवा,' उसने मुस्कुराते हुए मग उठाया और बची हुई शराब को अपने चिकने मुंह में वापस डाल लिया, जिससे आधी शराब उसकी घनी, काली दाढ़ी पर गिर गई।
एक आदमी उसके पास आया। उसके बगल में बैठते हुए, उसने बाश्कला को एक छोटा सा चर्मपत्र दिया।
'कैप्टन, कुछ सूचना मिली है।'
उसने उस आदमी को देखा। वह कोई सैनिक नहीं था। देखने से तो वह कूड़ा बीनने वाला लग रहा था।
‘तुम कौन हो बे?’
'आपका एक आदमी कुछ सवाल पूछ रहा था और प्रधानमंत्री की पत्नी के ठिकाने के बारे में कुछ जानकारी के बदले में कुछ बढ़िया चिकन दे रहा था।'
उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। शराब ने उसे थोड़ा सुस्त बना दिया था। 'क्या वह सच में सुस्त था?' उसे पता नहीं था कि उसके आदमी ऐसी हरकतें कर रहे थे। 'वह कहाँ है?'
उस आदमी ने कागज को हल्का सा धक्का दिया। 'यहाँ लिखा है।'

उसने उसे पढ़ा। वह शहर के बाहरी इलाके में था। एक बंजर ज़मीन, जिसके बारे में वह जानता था। चारों ओर रेत के ढेर थे, और सड़कें कहीं नहीं जाती थीं। 'क्या आपको यकीन है?'
'उसे वहां बहुत कम लोगों ने देखा है।'
‘वह वहां क्यों थी?’
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे नहीं पता। बस इतना पता है कि उसे आखिरी बार वहीं देखा गया था।'
“जानते हो लड़के, तुम दसवें व्यक्ति हो जो मुझे उसकी आखिरी संभावित जगह के बारे में बताने आए हो?” वह गुस्से में डकारते हुए बोला। लेकिन चूंकि यह उसका काम था, इसलिए उसे उस जगह की जांच करनी ही थी और देखना था कि वहां वास्तव में कुछ है या नहीं। यह लगभग एक बोझ बन गया था, इसलिए उसने इसे गंभीरता से लेना छोड़ दिया था और इसे महज़ एक औपचारिकता समझने लगा था। ‘उफ़,’ उसने अपनी म्यान में रखी चांदी की तलवार निकाली और उसे अपनी कमर पर बंधी बेल्ट में पहन लिया, फिर चर्मपत्र को लपेटकर कोने में फेंक दिया। ‘धन्यवाद।’
और वह आदमी चला गया। कप्तान ने चुपके से जहाज निकाला और अड्डे में जीती हुई रकम इकट्ठा की। डकारते हुए वह वहाँ से निकला और पाया कि एक घोड़ा और उसके सहायक सैनिक, जो हर जगह उसके साथ रहते थे, उसका इंतज़ार कर रहे थे।
‘चलो,’ उसने सुस्त स्वर में आदेश दिया, क्योंकि चंद्रमा की चमकदार, चांदी जैसी रोशनी उन पर पड़ रही थी, ‘हमें एक सुराग मिला है।’

तामार बेहद चिंतित हो रहा था। उसके घर के चारों ओर पुरुष जमा हो गए थे और विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। इस बार महिलाएं ज्यादा हंगामा नहीं कर रही थीं। कम से कम, इस बात से उसे तसल्ली मिली। कोई भी इस फैसले से खुश नहीं था, और जिन मंत्रियों के बेटों की मृत्यु हो गई थी, उन्होंने दरबार में चल रही घटनाओं के बारे में महिषा को पत्र लिख दिया था। उन्होंने महिषा को उसकी शिकायत करके उसे पद से हटाने का फैसला कर लिया था।
लेकिन तामार को सुलोचना की चिंता सता रही थी। फैसला सुनाए हुए दो दिन बीत चुके थे और अपहरणकर्ता के बारे में अभी तक कोई खबर नहीं मिली थी।

शाम को जब चांद निकल आया, तब उसके एक सैनिक ने उसे बताया कि गांव के बाहर एक पत्र मिला है जिसमें उसकी पत्नी के ठिकाने की जानकारी है।
अपने आदमियों को इकट्ठा करके वह दरवाज़े की ओर बढ़ा और देखते ही देखते गलियों में निकल आया। वह जानता था कि फाटक पर खड़े आदमियों के झुंड को पार करना मुश्किल होगा, इसलिए उन्होंने पीछे का फाटक लिया, जो संकरी गलियों में खुलता था।
'तुम्हें इसे पहनना चाहिए,' उसके अंगरक्षक ने हाथ में हुड वाला चोला पकड़े हुए कहा।
तामार ने मनचाहा वेश धारण करते हुए सिर हिलाया। उसने चारिणी को अपने साथ ले जाने का सोचा, लेकिन वह तो बस एक दासी थी, और कुछ नहीं। सुलोचना की डॉक्टर मात्र, और जब वह वापस आएगा तो वह सुलोचना से मिलने और उसकी देखभाल करने जा सकती थी।
अगर वह उसे वापस पा लेता।

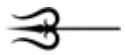

बाश्कला अपने घोड़ों और आदमियों के साथ गाँव के बाहरी इलाके की ओर बढ़ रहा था। आज वह सामान्य गति से धीमी गति से चल रहा था। उसने अपने बगल में खड़े दो आदमियों की ओर देखा, जो लगातार यह सुनिश्चित कर रहे थे कि उनका कप्तान ऊंघ न जाए।
रात के समय, रेगिस्तान शांत था। उसने सुना था कि यहाँ आत्माओं का वास है। महिषापुर के बाहर एक चमकीला, गर्म, धूप से भरा रेगिस्तान था जो पहाड़ियों तक फैला हुआ था और फिर घाटियों और सभ्यता की ओर बढ़ता था। लेकिन इस समय न तो चमक थी, न ही गर्मी। नहीं, ठंड थी। चाँदनी उस पर अजीब तरह से चमक रही थी। हवा उसके चेहरे पर तेज़ चल रही थी, जब वह आखिरकार उस जगह पहुँचा जहाँ उसे पहुँचना था।
यह पहाड़ियों से सटा हुआ था, एक पथरीले मचान के पास जहाँ दुश्मन कभी-कभी शरण लेते थे। चूंकि यह बाहरी इलाका था, इसलिए जासूस या दुश्मन टुकड़ियाँ अक्सर यहाँ घात लगाकर बैठी रहती थीं। लेकिन अब जब उनका विरोध करने वाला कोई नहीं था, तो यह जगह बिल्कुल खाली थी।

‘हमारा काम हो गया। चलो वापस चलते हैं,’ उसने ऊबे हुए स्वर में कहा, और उन्होंने बिना किसी विरोध के अपने घोड़ों को मोड़ दिया। तभी उन्हें म्याऊं जैसी कोई आवाज़ सुनाई दी।
एक चीख।
एक महिला का।
नशे की हालत में भी बाश्कला इस बात की पुष्टि कर सकता था कि आवाज़ सुलोचना की ही थी। वह अपने अंगरक्षकों के साथ घोड़े से उतरा और आगे बढ़ा, चट्टानों पर खोजबीन करते हुए उसे अंततः एक स्त्री मिली। वह रात के अंधेरे में लेटी हुई दर्द से कराह रही थी।
‘सुलोचना देवी…’ जैसे-जैसे वह उस व्यक्ति की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा, उसकी सारी सुस्ती दूर होती जा रही थी। ‘सुलोचना देवी…’
और उसने उसे पलट दिया ताकि वह उसका चेहरा देख सके।
जैसे ही उसने ऐसा किया, वह सदमे से पीला पड़ गया।

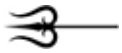

तामर उस स्थान पर पहुंचा और हालांकि उसे वह जगह बिल्कुल पसंद नहीं थी, फिर भी वह वही जगह थी—शुक्र द्वारा निर्मित एक मंदिर। वह खाली था, एकांत में स्थित था और पश्चिमी चौकी के पास था। यह लोगों के लिए एक भूतिया मंदिर की तरह था, लेकिन वास्तव में यह इस अवस्था में इसलिए था क्योंकि शुक्र अब बड़े मंदिरों पर ध्यान केंद्रित करने में व्यस्त था। इसे गिरा दिया जाना था, लेकिन शुक्र ने जोर देकर कहा कि किसी मंदिर को नष्ट नहीं किया जाना चाहिए, भले ही उसमें रखी महिषा की मूर्ति एक छोटी सी प्रतिमा ही क्यों न हो। तामार भली-भांति जानती थी कि शुक्र की धार्मिक बातें सरासर बकवास थीं। उनका मकसद पैसा कमाना, लोगों को मूर्ख बनाना और उन्हें भयभीत रखना था। शुक्र ने बहुत पहले ही यह बात स्वीकार कर ली थी: 'विश्वास सबसे बड़ा हथियार है जिसका इस्तेमाल आप लोगों को बिना छुए भी उनके खिलाफ कर सकते हैं।' तामार को इस बात पर यकीन करना मुश्किल हो रहा था, लेकिन जब उसने नतीजे देखे तो वह हैरान रह गया। शुक्र के पास दूरदर्शिता थी।
यह प्राचीन भूत मंदिर एक और कारण से भी महत्वपूर्ण था। यहीं से सब कुछ शुरू हुआ था। तामार इस मंदिर में आने वाला अंतिम व्यक्ति था, जो एक लकड़हारे का

पुत्र था। जब देवताओं ने तामार के घर को लूटा था, तब शुक्र ने उसके भीतर की अग्नि को देखा। शुक्र ने उसे अपने साथ ले लिया। यह वही मंदिर था जहाँ उन सभी ने अपने गुरु से प्रशिक्षण और शिक्षा प्राप्त की थी।
और अब वह मकड़ी के जालों से ढका पड़ा था।
इससे पता चलता है कि कैसे उनके अहंकार और रवैये ने उन्हें यह भुला दिया था कि वे कहाँ से आए थे। लेकिन जब तामार अपने सैनिकों के साथ मंदिर के अंदर दाखिल हुआ, तो उसने उस ठंडी जगह से एक अजीब सी गर्माहट महसूस की।
‘आपको अंदर ही रहना चाहिए। पहले हमें परिसर को सुरक्षित करने दीजिए,’ उसके गार्ड ने सुझाव दिया, जिस पर तामार ने बस घूरकर देखा।
वह उसकी पत्नी थी। वह पहले खुद उसे ढूंढना चाहता था।
वह अंदर दाखिल हुआ। उसने देखा कि वहाँ एक स्त्री पूरी तरह सफेद वस्त्र पहने अकेली बैठी थी। रस्सियों से जकड़ी हुई। हिलने-डुलने में असमर्थ। उसके सैनिकों ने मंदिर के हर कमरे की तलाशी ली। तभी तामार उस स्त्री के पास पहुँचा, घुटनों के बल बैठा और उसे खोलने लगा। जब उसने रस्सियाँ खोल लीं, तो उसने उसके मुँह से ऊनी कपड़े का गोला निकाल दिया, जिसने अब तक उसे चीखने से रोक रखा था।
फिर उस स्त्री ने उसे गले लगा लिया। सुलोचना ने उसे कसकर पकड़ रखा था। वे कुछ देर तक चुपचाप एक-दूसरे को गले लगाते रहे, उनके बीच एक शब्द भी नहीं बोला गया, क्योंकि तामार के अंदर खुशी की लहर दौड़ रही थी। वह उसे बचाने में कामयाब रहा था। वह यहाँ थी और उसने देवताओं का शुक्रिया अदा किया, भले ही उसे यकीन न हो कि वे सच में मौजूद हैं।
‘मुझे आपको कुछ बताना है,’ उसने कहा। ‘कुछ बहुत, बहुत महत्वपूर्ण।’

वह चारिणी थी।
वह ज़मीन पर पड़ी थी और उसके हाथ में एक खंजर था जिससे उसने तुरंत बाश्कला की छाती में वार कर दिया। एक पल के लिए बाश्कला स्तब्ध और अचंभित रह गया।
वह खंजर को निकालना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके साथ मौजूद दोनों रक्षकों ने अपने हथियार निकाले और चारिणी की ओर बढ़े।

उसने फुसफुसाते हुए कहा: 'मैं तुम्हारा भाई हूँ...' उसकी आँखों की रोशनी लगभग गायब हो रही थी।
'नहीं, तुम एक कमीने दलाल हो।'

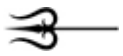

'मुझे तुमसे कुछ कहना है।'
वह थकी हुई लग रही थी। उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे। उसके बाल भी बिखरे हुए थे।
‘क्या हुआ? क्या आपको पता है कि आपका अपहरण किसने किया? क्या आपने उस व्यक्ति का चेहरा देखा?’
'हां, मैंने किया। और आपको विश्वास नहीं होगा,' उसने कहा।
‘कौन? कौन है वो?’
उसने घबराहट में गले में अटके हुए स्वर को मुश्किल से निगला और कहा: 'शुक्र।'

21

वह लक्ष्य तक पहुंचने के बेहद करीब थी।
वह वहीं थी जहाँ उसे होना चाहिए था और उसके हिसाब से यह पाँचवाँ दिन था। और अब किसी भी क्षण, एक बड़ा जहाज़ वहाँ आ सकता था जिससे उसे निपटना पड़ता। इससे पहले के दिन सुचारू रूप से बीत रहे थे, खासकर तब से जब उन्होंने उस सनकी उथारका को एक द्वीप पर छोड़ दिया था। शुरुआत में किसी को विश्वास नहीं था कि वह पागल है, लेकिन वह कुछ बेहद मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा था, जिससे उसके अधीन काम करने वालों को उसके अंधविश्वासों पर संदेह होने लगा था। इससे भी बुरा यह था कि उसकी छवि हर किसी को पसंद नहीं थी। वह एक दबंग आदमी था और लोग उससे और उसकी तीखी नाक से नफरत करते थे, जो हमेशा दूसरों के मामलों में दखल देती रहती थी। दूसरी ओर, चंद्रा एक अच्छी इंसान थी। मिलनसार। अपने सभी नाविकों के प्रति दयालु। और लोग एक दयालु व्यक्ति को एक कमजोर आदमी से ज्यादा पसंद करते थे।
वह जहाज के डेक पर कार्रवाई शुरू होने का इंतजार कर रही थी, उसकी दूरबीन उसके गले में लटकी हुई थी, तभी उसने ऊपर देखा और दूर से जहाज को देखा। वह ठीक वहीं था, जंबूद्वीप की ओर बढ़ रहा था।
नीचे खड़े नाविकों में से एक ने उससे पूछा, 'हम किस पर हमला कर रहे हैं, कप्तान?'
‘एक ऐसा जहाज जिस पर एडमिरल हमला करना चाहते थे,’ उसने झूठ बोला। ‘उन्होंने मुझे एक पत्र लिखकर ऐसा कहा था।’
'ठीक है, अब आगे बढ़ो,' नाविक ने उन सभी चप्पू चलाने वालों को आदेश दिया जो जहाज की दिशा में चप्पू चला रहे थे।
दुश्मन के जहाज से सौ गज की दूरी पर पहुँचकर, वह जान गई कि लड़ाई बेहद शक्तिशाली दुश्मनों के खिलाफ होगी। दो जहाज कभी भी एक-दूसरे से सौ गज की दूरी पर नहीं होते थे, जब तक कि कोई लड़ाई न हो रही हो। इसलिए, बिना किसी हिचकिचाहट के उसने अपने आदमियों को तोपें तैयार करने का आदेश दिया। नाविकों को अपनी सुरक्षा के लिए कवच पहनने को कहा गया, जबकि ढाल लिए सैनिकों को नाविकों की रक्षा करने का निर्देश दिया गया, क्योंकि वे ही जहाज के संचालक थे।

उसकी योजना निर्मम थी और हालाँकि एडमिरल की हत्या का अपराधबोध उस पर हावी था, फिर भी वह जानती थी कि उसका मिशन महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे वह करीब आती गई, उसने लोथल में बिताए अपने जीवन के बारे में सोचा। वह कितनी भोली थी।
कितनी सरल थी वह। जब तक उसे कोई उद्देश्य नहीं मिला था।
वह खुद को जितना बेहतर समझ सकती थी, उससे भी बेहतर बनना।
जैसे ही वे सौ गज के दायरे में पहुंचे, नाविकों ने देखा कि जहाज के पतवार पर एक विशाल भैंस का प्रतीक चिन्ह बना हुआ था।
‘क्या यह हमारे राजा का जहाज नहीं है, कप्तान?’ नाविक पास आकर पूछा।
‘नहीं,’ उसने झूठ बोला। ‘वे समुद्री डाकू हैं!’ वह गुस्से से चिल्लाई। ‘समुद्री डाकुओं ने इस जहाज पर कब्जा कर लिया है। हमला करो! हमला करो!’ नाविक असमंजस में थे, लेकिन जहाज का कप्तान, विशेषकर नवतकवेचा का कप्तान, हमेशा सही होता था। सैनिक अपने कप्तानों के लिए जान तक देने को तैयार रहते थे। और इस प्रकार, गुलेलों से आग के गोले दागे गए। दुश्मन का जहाज आकार में दुगुना था।
वह जानती थी कि लड़ाई व्यर्थ होगी और शायद वे मर जाएंगे।
लेकिन यह योजना का हिस्सा था।

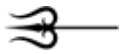

हर तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी।
दुश्मनों के पास बड़े गुलेल, बेहतर तीर और ढालें थीं जो उनके सैनिकों की रक्षा करती थीं, लेकिन चंद्र को दुश्मनों की तरह जीने और मरने की परवाह नहीं थी।
उसने अपने आदमियों को जहाज के तख्तों को पकड़ने का आदेश दिया और नाविकों को जहाज को दूसरे जहाज की ओर धकेलने का आदेश दिया। टक्कर से दोनों जहाजों के ढांचे टूट गए, जिससे जहाज जमीन पर गिर गया और डेक पर पानी फैल गया। अब उसके जहाज के साथ-साथ उसके दुश्मन के जहाज में भी छेद हो गया था, जो उस पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे थे।
‘इसे तख्तों से ढक दो!’ उसने आदेश दिया।
और उन्होंने ऐसा ही किया, जहाँ छेद बनाए गए थे वहाँ तख्तों को कीलों से ठोक दिया। जब वे ऐसा कर रहे थे, उनके दुश्मन लड़खड़ा गए…

अपने ही आदमियों पर।
वे सभी एक ही गिरोह के सदस्य थे, फिर भी आपस में लड़ रहे थे। सौभाग्य से, चंद्र जानता था कि नवतकवेच कानूनी तौर पर महिषा के समूह का हिस्सा थे और यह बात केवल महिषा और उसके करीबी लोगों को ही पता थी। बाकी लोगों के लिए नवतकवेच महज़ कुछ समुद्री लुटेरे थे।
जैसे-जैसे हमला तेज़ होता गया, दोनों समूह हरकत में आ गए। उसे जहाज पर दौड़ना पड़ा और इससे पहले कि वे समझ पाते कि वे अपने साथियों से लड़ रहे हैं, वह भाग निकली। डेक पर दौड़ते हुए, उसने छलांग लगाई और दुश्मन के जहाज से चिपक गई, क्योंकि उसका अपना जहाज डूबने लगा था।
दुश्मन के जहाज पर पहुँचते ही, उसने अपनी तलवार को तेज़ी से घुमाकर उसे रोकने आए लोगों पर वार कर दिए। वह उन्हें चीरती-फाड़ती आगे बढ़ती गई, फिर पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसका जहाज एक तरफ झुक रहा है, डूब रहा है। जहाज पर सवार लोग चिल्लाने और रोने लगे थे।
और जल्द ही जिन लोगों से वे लड़ रहे थे, उन्होंने लड़ना बंद कर दिया और पूछा:
‘क्या तुम महिषा की सेना का हिस्सा नहीं हो?’
‘हम हैं! तुम कौन हो?’
‘हम उसके समुद्री डाकू हैं! हमने सोचा था कि तुम लूटा हुआ जहाज हो!’
'नहीं! हम एक व्यापारी पोत हैं जो महामहिम के लिए महत्वपूर्ण माल उतार रहे हैं।'
अरे नहीं…।
वह निचले डेक की ओर दौड़ने लगी, लोगों को धक्का देती हुई और रास्ते में आने वालों को चाकू मारती हुई तहखाने के एक कमरे की ओर बढ़ी। वहाँ एक आदमी खड़ा था, जिसे उसने धक्का देकर दीवार से सटा दिया, घूंसा मारा और पूरी ताकत से गोल खिड़की से बाहर फेंक दिया। वह तेज़ी से तहखाने के अंदर लड़खड़ाते हुए घुसी और वहाँ अंधेरे में छिपने के लिए दुबक गई।
उसे इंतजार करना पड़ा। उसकी भौहों पर पसीना जमा होने लगा।
और वह इंतजार करती रही।
प्रतीक्षा की…
थकान हावी होने लगी है।

यह सब कुछ बहुत अव्यवस्थित था। अस्त-व्यस्त। गड़बड़। उसे पता नहीं था कि उसने सही किया है या नहीं। लेकिन जो होना था वो हो चुका था।
वह उस खूनी जहाज पर थी।

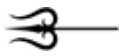

वह जमीन पर लेटी हुई थी, लगभग सो रही थी, फिर अचानक उठी और लड़खड़ाते हुए खड़ी हुई। खिड़की से देखने पर जहाज हिल रहा था लेकिन अपनी यात्रा पर आगे बढ़ रहा था, लेकिन जब उसने दरवाजे से बाहर झाँका तो उसने दो सैनिकों को बात करते हुए देखा:
उनमें से एक ने कहा, 'हमें काफी हद तक अनावश्यक नुकसान उठाना पड़ा है।' 'हाँ, हमने देखा है। मामला क्या था? जब यह सब गड़बड़ हो रही थी तब मैं रसोई में था।'
'उनके कप्तान को लगा कि यह एक ऐसा जहाज है जिस पर समुद्री लुटेरों ने कब्जा कर लिया है, इसलिए वे इसे बचाने की कोशिश कर रहे थे।'
लेकिन हमने कोई संकट संदेश नहीं भेजा।
‘यह कप्तान कौन है?’
'जहाज के बचे हुए लोगों ने बताया कि एडमिरल की मृत्यु के बाद किसी नई लड़की ने कमान संभाली थी।'
‘वह संदिग्ध लग रही है। वह कहाँ है?’
हमें नहीं पता। लेकिन नज़र बनाए रखें। हो सकता है वह पानी में डूबकर मर गई हो या फिर वह यहीं हो।
बहुत खूब। तो उन्होंने उसे नहीं देखा था। वह बहुत फुर्तीली थी। वह कोने में वापस चली गई और रात होने का इंतजार करने लगी।
उसकी योजना का पहला चरण एडमिरल की हत्या करना था।
दूसरा उद्देश्य इस जहाज को नुकसान पहुंचाना और बिना किसी संदेह के लोगों को भ्रमित करना था।
तीसरा चरण कठिन था। काफी कठिन।
यह व्यक्तिगत मामला था।

22

महिषा ने अपने सामने पड़े शव को देखा।
त्रिनेत्रा को वह व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था, लेकिन वह उसका आदमी था और वह मर चुका था। उसकी हत्या कर दी गई थी। उस पर कई बार चाकू से वार किए गए थे। उस लड़की से पूछताछ की गई, लेकिन चीख-पुकार मचाकर उसी ने शिविर को सूचना दी थी। इसलिए उसने उस पर नज़र रखी और खुद खून से लथपथ लाश को देखता रहा। उसने अपने आदमियों को लाश को सीमा पर ले जाकर अंतिम संस्कार करने का आदेश दिया, जबकि वह बाहर गया और उसने देखा कि रिगोली और थामिसदा चिंतित मुद्रा में खड़े हैं।
महिषा ने दूसरे कोने में अपनी सहेलियों के साथ बैठी तबिता की ओर देखा, जहाँ बहुत सारे पनास एक घेरे में इकट्ठा थे। लेकिन अब महिषा जानती थी कि कार्रवाई का समय आ गया है।
वह मुखिया के पास गया और बोला: 'आपके लोगों में से एक दुर्गा है।'
'महिषा, मैं इस तरह का आरोप सुनना नहीं चाहूंगी।'
‘यह राजा महिषा हैं,’ उन्होंने सख्ती से सुधार किया।
प्रमुख एक पल के लिए अकड़कर खड़ा रहा, फिर सहज होते हुए बोला, 'ठीक है। क्या आप यहां मौजूद सौ से अधिक लोगों से पूछताछ करना चाहते हैं? बिल्कुल।' नहीं। मैं चाहती हूं कि शादी अभी शहर में ही हो।
‘क्या…उम…लेकिन क्यों?’
क्योंकि यह शहर उसकी ताकत था, जहाँ उसकी सेना तैनात थी, जहाँ वह ज़रूरत पड़ने पर मदद के लिए बुला सकता था और वह इसके गुप्त रास्तों और प्रवेश द्वारों से अच्छी तरह वाकिफ था। यह शिविर सुरक्षित नहीं था। वह इसके बारे में जानता था।
‘मैं इसे उस मंदिर में करना चाहूंगा जहां मुझे शासक बनना सिखाया गया था,’ महिषा ने शांत भाव से मुस्कुराते हुए कहा। झूठ बोलते हुए।
मुखिया ने चिंता भरी नजरों से अपने पुजारी की ओर देखा और फिर सिर हिलाया। 'ज़रूर। चूंकि हम दोनों शादी के लिए सहमत हो गए हैं, तो यही सबसे अच्छा होगा कि हम शादी कर लें।'
'बहुत बढ़िया। हम दोपहर 12 बजे निकलेंगे।'

वे शिविर से निकलकर शहर की ओर बढ़ रहे थे। सभी बड़े-बड़े समूहों में चल रहे थे। महिषा थामिसदा के साथ आगे-आगे चल रहा था, जबकि तबिता उसे कसकर पकड़े हुए पीछे बैठी थी। वे धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे और थामिसदा बारी-बारी से घूमकर शहर की ओर जाने वाली दिशा को छोड़कर दूसरी दिशा में जा रहा था।
उसके अपने कारण थे।
‘क्या आपको यकीन है कि महिषापुर इसी रास्ते पर है?’ मुखिया ने पूछा। 'बिल्कुल है।'
वे जलमार्गों से होते हुए, खाइयों को पार करते हुए आगे बढ़े—घोड़ों के खुर धीरे-धीरे पानी में डूबते और उसे उछालते रहे। उन्हें पार करने में समय लगा। उन्होंने घने जंगल के पत्तों से सावधानीपूर्वक बचते हुए वहाँ से बाहर निकले, जबकि तबिता जंगल की लताओं से खेल रही थी। वे जंगल से बाहर निकलकर धीरे-धीरे रेगिस्तान जैसी स्थिति की ओर बढ़ रहे थे। पहाड़ियों और रेत का एक खाली, निर्जीव परिदृश्य, जिसमें जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था। तबिता अब भी उससे लिपटी हुई थी, इस बात की परवाह किए बिना कि उसके पिता उनकी अंतरंगता देख सकते हैं—उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी।
‘मैं बहुत उत्साहित हूँ,’ उसने महिषा के कानों में फुसफुसाया।
उन्होंने कहा, 'मैं भी ऐसा ही महसूस कर रहा हूं।' लेकिन वह ट्रिनेत्रा को लेकर अब भी काफी परेशान थे।
'आपके कमांडर के साथ जो हुआ उसके लिए मुझे खेद है,' उसने कहा मानो वह उसके मन की बात पढ़ रही हो।
उसने बस औपचारिकता से सिर हिलाया। वह इससे कुछ खास खुश भी नहीं था।
जैसे ही वे आगे बढ़ने लगे, उन्हें एक घाटी मिली जिसके बीचोंबीच एक पगडंडी बनी हुई थी जो उन्हें सीधे एक शिविर तक ले जा रही थी। उस जगह पर थोड़ी-बहुत हरियाली भी थी।
‘यह क्या है? क्या हम और लोगों से मिल रहे हैं?’ मुखिया ने पूछा।
महिषा ने अपने पीछे चल रहे समूह को रोक दिया, फिर घोड़े से उतरकर उस शिविर को देखा। वह शिविर दूर था और अब उन्होंने उसे नहीं देखा। या शायद देखा भी हो। उसे परवाह नहीं थी। उसके पास एक विशाल सेना थी। लेकिन उसने हाथी के चिन्ह वाला एक झंडा ज़रूर देखा, एक गहरा लाल झंडा।
यह झंडा इंद्र का था।

'यह एक देवा शिविर है,' महिषा ने अपने नए सहयोगी को देखकर मुस्कुराते हुए कहा।
‘देव?’
“हाँ, वही लोग जिनसे मैं छुटकारा पाना चाहता हूँ। और यही उन्हें हराने का हमारा मौका है। मेरे आदमियों और त्रिनेत्रा को यहाँ, मेरी ज़मीन पर, मंडराते हुए शिविर के बारे में पता चल गया था, और मुझे लगता है कि अब साथ मिलकर लड़ने का समय आ गया है। इस तरह हम दोनों अपने दुश्मनों को अपनी वफादारी दिखा सकते हैं।”
रिगोली ने मुखिया की ओर देखा, जो अपने रवैये में सख्त और भावहीन था। 'लेकिन हमने तो अभी सौदा भी अंतिम रूप नहीं दिया है...'
‘मुझे लगता है हमने कर लिया है,’ उसने तबिता के हाथ पकड़ते हुए कहा। ‘मैंने उससे शादी करने के लिए सहमति दे दी है, और तुम जानती हो कि महिषा का वचन ही उसका वादा होता है।’
सरदार चुपचाप इस पर विचार कर रहा था। उनके पीछे सैकड़ों सैनिक थे। सरदार ने सिर हिलाया। महिषा मुस्कुराया। उसने अपने सैनिकों को आगे बढ़ने का आदेश दिया और उन्होंने बिना सोचे-समझे घोड़ों की ओर धावा बोल दिया। महिषा चाहता था कि पाना परिवार यह दिखाए कि वे भी एक साथ मिलकर काम कर रहे हैं और अपने समझौते का पालन करेंगे, लेकिन सबसे बढ़कर, वह यह देखना चाहता था कि क्या वह यहां दुर्गा के बारे में कुछ खुफिया जानकारी प्राप्त कर सकता है।

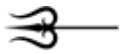

जब वह घाटी के मध्य में पहुँचा, तो उसे एहसास हुआ कि एक रेतीला तूफान आ रहा है। घाटी की दरारों से रिसती रेत के कारण आमने-सामने की लड़ाई या तीरंदाजी करने वालों के लिए दृश्यता लगभग खत्म हो चुकी थी। यह पता लगाना मुश्किल था कि कौन क्या है।
महिषा जानता था कि जो भी उसकी ओर आ रहा है, वह एक खलनायक है। एक दुश्मन है। वह पूरी रफ्तार से अपनी कुल्हाड़ी लिए, बिना किसी कवच या ढाल के, घटनास्थल की ओर बढ़ रहा था। उसे किसी चीज की जरूरत नहीं थी। वह पूरी ताकत से दौड़ता

हुआ देव सैनिक के सामने पहुंचा और इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, उसने कुल्हाड़ी उसके सिर पर भेद दी।
खून तेजी से बहने लगा और चारों ओर छींटे उड़ने लगे, उस आदमी की आंखें बेजान हो गईं और वह जमीन पर गिर पड़ा। पीछे से एक और सिपाही आया, लेकिन महिषा ने उसे जोर से लात मारी, जिससे वह सिपाही पीछे की ओर उड़ गया और उनकी ओर दौड़ रहे एक सिपाही से जा टकराया।
ठीक उसी समय, दो तीर उसकी पीठ में जा लगे और वह एक पल के लिए जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया, लेकिन फिर उठा, तीर निकाले और एक जानवर की तरह गुर्राया। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कोई शेर छोटे-छोटे लकड़बग्घों से परेशान हो रहा हो।
महिषा ने अपनी ओर आ रहे एक सैनिक को घूंसा मारा। किसी ने पीछे से उसके घुटने में चाकू घोंप दिया, तो उसने तुरंत अपनी कुल्हाड़ी से पूरा वार किया और दुश्मन का सिर काटकर मैदान में दूर फेंक दिया।
वह रेत देख सकता था, रेत की गंध महसूस कर सकता था, और उसकी आंखें आंशिक रूप से बंद थीं, लेकिन उसने उस सैनिक को पकड़ लिया जिसने उसे चाकू मारा था, उसे आसमान की ओर उठाया और उसके कंठ पर एक जोरदार घूंसा मारा।
ऐसा करते हुए वह हंस रहा था।
महिषा ने अपने हाथ से गिरी कुल्हाड़ी उठाई और आगे बढ़ने लगा। दोनों ओर उसे पान और उनके साथी देवों से लड़ते हुए दिखाई दिए। महिषा को पानों की कुशलता बहुत पसंद आई। अब महिषा के लिए उपलब्ध उनकी कुशलता विवाह के योग्य थी।
एक सिपाही हाथ में भाला लिए आया और उसने महिषा के पेट में वार कर दिया। महिषा को दर्द हुआ, लेकिन उसने अपने हाथों से भाले के डंडे को बीच से तोड़ दिया और बचा हुआ हिस्सा पेट से बाहर निकाल लिया। खून से लथपथ उस डंडे से उसने सिपाही के सिर पर बार-बार वार किया, जब तक कि उसकी आंखें बाहर नहीं निकल आईं और उसका चेहरा खून से लथपथ नहीं हो गया।
अब, उसने अपने सामने एक देव सैनिक को देखा, जो महिषा के इस कृत्य को देखकर भाग रहा था। महिषा सहजता से उसके पीछे गया, और उसने बड़ी कुशलता और नियंत्रण से अपनी कुल्हाड़ी घुमाई और सैनिक की पीठ पर वार किया, जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ा। जैसे ही वह सैनिक लड़खड़ाया, महिषा ने कुल्हाड़ी छीन ली और उसके बाल पकड़कर उसे घसीटते हुए इतनी ज़ोर से खींचा कि एक झटके में ही उसके बाल धड़ से अलग हो गए।

उसकी नज़र एक परछाई पर पड़ी। एक ऐसी परछाई जो उसके आदमियों को मार रही थी।
तेंदुए जैसी फुर्ती और चालाक चालों वाली। उसने उस परछाई को तूफ़ान में आगे बढ़ते देखा और जैसे-जैसे वह करीब आई, उसने पाया कि उसके बाल लंबे थे, किसी औरत के बालों जैसे।
‘दुर्गा,’ उसने दांत पीसते हुए कहा।
भयंकर तूफान के कारण उसका चेहरा ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन वह उसकी ओर बढ़ने लगा।
दुर्गा आंधी में पल भर में गायब हो गई। उसने चारों ओर देखा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसकी उंगलियां कुल्हाड़ी पर कसकर जकड़ी हुई थीं।
उसके मन में तरह-तरह के विचार उमड़ने लगे। वह कैसे बच निकली? उसने अभी उस पर हमला क्यों किया? उसने उसे कैसे ढूंढा?
उन्होंने स्वयं देव शिविर का पता लगा लिया था, फिर भी दुर्गा यहाँ पहुँच गई थीं।
जब वह इन विचारों में उलझा हुआ था, तभी अचानक कहीं से एक आकृति प्रकट हुई और उसके सिर पर पैर से वार किया, उसके हाथ में तलवार थी। वह उसे वार करने ही वाली थी कि महिषा ने उसका पैर पकड़कर उसे रेत के तूफान में फेंक दिया। दुर्गा नाम की वह आकृति एक बार फिर गायब हो गई।
उसने अपने होंठ चाटे। वह अपने फायदे के लिए माहौल का इस्तेमाल कर रही थी। उसने गिरी हुई ढाल को उठाया और आने वाले हमलों से बचाव के लिए उसे अपने शरीर के पास पकड़ लिया और...
फिर से अचानक!
महिषा ने अपनी ढाल का इस्तेमाल बचाव के तौर पर किया और हमले को रोकते हुए दुर्गा को जमीन पर गिरा दिया।
वह सबके सामने, अपने पैरों पर खड़ी होकर आई, लेकिन वहां रेत और परछाइयां थीं और उसकी आंखों में जलन हो रही थी, उसकी सांसें तेज चल रही थीं।
महिला उठी और भागने के बजाय घुटनों के बल बैठ गई और तुरंत उसके पैरों पर हमला कर दिया। वह पीछे गिर पड़ा और लुढ़क गया, तभी एक खंजर उसके करीब आ गया। उसने महिला की कमजोर बांहों को पकड़ लिया और उसे मरोड़ दिया। एक तेज, जानी-पहचानी कराह सुनाई दी, और उसने अपने मुड़े हुए खंजर से दुर्गा की आंख में वार कर दिया। खून उसके चेहरे पर फैल गया, तभी दुर्गा अंधेरे से बाहर निकली और अपना चेहरा दिखाया।

वह उसे जानता था।
दुर्गा ने शायद इस मौके का फायदा उठाकर बाहर आकर उसके आदमियों को मार डाला होगा, क्योंकि अगर वह सावधान रहती तो तूफान में उसका चेहरा छिप जाता। वरना आने की क्या ज़रूरत थी?
उसके भीतर क्रोध उबलने लगा, उसने दुर्गा के शव को पकड़ा और उसे घूंसे मारने लगा। बार-बार। तब तक जब तक खोपड़ी टूटकर अलग नहीं हो गई और मुंह अपनी जगह से हट गया। यह किसी अनजान व्यक्ति का चेहरा था। अब तो उसे पहचानना नामुमकिन था। उसे लगभग खुशी थी कि दुर्गा वहां आ गई—उसे आना ही पड़ा होगा, शायद, क्योंकि उसके देव पुरुष मर रहे थे और अगर वह अपने पुरुषों को विपत्ति में मरते देखती तो वह ज्यादा देर तक छिप नहीं सकती थी। उसे खुशी थी कि उसका दुःस्वप्न, शुक्र की चिंता का कारण, त्रिनेत्र का हत्यारा, आखिरकार हमेशा के लिए मर गया। उसे राहत मिली।
लेकिन तभी उसकी नज़र उस चेहरे पर पड़ी। एक ऐसा स्पष्ट संकेत जिसने हमें याद दिलाया कि चेहरों को ध्यान से देखना कभी नहीं भूलना चाहिए।
आखिरकार, यह भरोसेमंद हिजड़े रिगोली का था।

23

सेक्श कुछ समय के लिए असिलोमा से मिलना नहीं चाहता था।
और जब वह इधर-उधर भटक रहा था, तो उसे अपने सैनिकों से पता चला कि किसी ने चौकी के द्वार अंदर से खोल दिए हैं ताकि निषाद जल्दी से आकर हमला कर सकें। असिलोमा बाहर पहरा दे रहा था और मुख्य रूप से यह सुनिश्चित कर रहा था कि कोई समस्या न हो; चौकी पर डाकुओं का कोई और हमला न हो।
सेक्ष जानता था कि उसे अब वहाँ से निकल जाना चाहिए। समय आ गया था। और वह इस बारे में सोच रहा था। भले ही महिषा पहले यहाँ पहुँच जाए, उसे राजधानी जाने का संदेश छोड़ देना चाहिए, क्योंकि ये अप्रत्याशित परिस्थितियाँ थीं। लेकिन वह असिलोमा और कैदी कात्या दोनों से क्यों बच रहा था? उसे खुद भी नहीं पता था। वह बस इतना जानता था कि कात्या ने उसे परेशान कर दिया था। उसकी चिंता बढ़ गई थी। बचपन में वह अक्सर अपशकुनों से डरता था। वह अलौकिक शक्तियों से डरता था। और अब किसी कारण से, यह दुर्गा नाम की महिला उसे ऐसी ही आशंकाएं दे रही थी। वह सेक्ष के जीवन को प्रकृति के सबसे क्रूर कृत्यों से भर रही थी और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।
और उसे एकमात्र सुकून सामने रखे भोजन में ही मिला। मटन काटकर उबले हुए चावल और दही के साथ परोसा गया था। इसके अलावा भी कई अन्य व्यंजन थे, जिनसे उसे काफी राहत मिली। उसके प्याले में सादी शराब थी। वह बड़े चाव से भोजन का आनंद ले रहा था, जबकि दो पहरेदार और रसोइया अंदर ही मौजूद थे।
उसे साथ की ज़रूरत थी। वह जानता था कि असिलोमा को मारा नहीं जा सकता। वह उसे मार नहीं सकता था। यह बेवकूफी थी। चाहे कितने भी लोग मर जाएँ। लेकिन चौकी खाली हो रही थी, उसके आदमियों की संख्या कम हो गई थी, और जो लोग चौकी की सुरक्षा के लिए आने वाले थे, वे कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। उन्हें देर हो गई थी, और वह सबसे बुरे की आशंका कर रहा था।
खाना खाते समय उसने अपने एक अंगरक्षक को अंदर आते देखा, जिसके लोहे के जूते ज़मीन पर खटक रहे थे। सेक्श ने ऊपर देखा तो पाया कि अंगरक्षक के साथ एक और दुबला-पतला आदमी था, जो बारिश के पानी से भीगा हुआ और मुरझाया हुआ था।
‘यह कौन है?’ उसने पूछा।
‘संदेशवाहक, जनरल,’ उसके अंगरक्षक ने कहा। ‘उस पलटन से जो आने वाली थी।’ ‘क्या हुआ, लड़के?’ सेक्श ने धीरे से दूत से पूछा, खुद को संभालते हुए।

‘बुरी खबर है, जनरल। बुरी खबर। हमारी पलटन पर वनवासियों ने भयानक हमला किया।’
और भी निषाद। ऐसा लग रहा था मानो दुर्गा उन्हें जाने नहीं देना चाहती थी। वह अकेलापन महसूस कर रहा था। डर भी लग रहा था, लेकिन डर की भावना का सामना वह नहीं करना चाहता था।
और तुम ऐन मौके पर बच निकले। क्या तुमने वनवासियों द्वारा दुर्गा के बारे में सुनी हुई बातें सुनी हैं?
'वास्तव में नहीं, जनरल।'
सेक्श ने सिर हिलाकर उसे विदा किया। उसके जाते ही सेक्श ने शराब का एक घूंट लिया और उसे गले से नीचे उतार लिया। उसने अपने रसोइए की ओर देखा और बोला, 'खाना अच्छा है।'
‘धन्यवाद, महाराज,’ उसने झुककर अभिवादन किया।
‘तुम गंजी क्यों हो, लड़की?’
वह तुरंत चौंक गई। 'मुझे एक बीमारी हो गई थी, महाराज। मेरे सारे बाल झड़ गए थे।'
‘आह। यह दुनिया एक महामारी है और हम वो चूहे हैं जो इसे फैलाते हैं,’ उसने ज़मीन पर थूका। आज वह कुछ ज़्यादा ही निर्दयी महसूस कर रहा था। ‘एक बात बताओ, क्या तुम भूतों पर विश्वास करते हो?’
उसने अपना सिर हिलाया। वह फटे-पुराने कपड़ों और कमरबंद में कोने में खड़ी थी, अंधेरे में मुश्किल से दिखाई दे रही थी।
'जब मैं छोटा था, तो मेरे दिमाग में एक भूत रहता था।'
शेख कुछ देर तक चुप रहा।
'आपने इसे देखा था?'
'मुझे इसका एहसास हुआ। एक रात इसने मुझसे बात की। अगले कुछ हफ्तों तक मैं बहुत परेशान रही और फिर एक तांत्रिक आया और उसने मुझे शांत किया।'
उसने कंधे उचकाए। 'मुझे हमेशा से पता था कि कुछ शक्तियां हमारे नियंत्रण से परे हैं, लड़की।'
मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। कोई हमें देख रहा है।
‘क्या कोई भूत हमें देख रहा है?’
'जो लोग हमें देख रहे हैं, जरूरी नहीं कि वे भूत ही हों।'
तो, आप धार्मिक व्यक्ति हैं? भगवान...देवों में विश्वास करते हैं?

'ओह नहीं, महोदय। मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं करता जो खुद को भगवान कहता हो। भगवान को यह घोषित करने की आवश्यकता नहीं है कि वह भगवान है।'
यह एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी थी, लेकिन अपनी सुस्त अवस्था में भी वह रसोइए जैसे अनजान व्यक्ति से बातचीत का आनंद ले रहा था। 'कर्म का फल मिलता ही है। हमेशा मिलता है। किसी न किसी रूप में। तुम्हारे अतीत के भूत हमेशा तुम्हारा पीछा करते हैं।' अब वह बस धीमी आवाज़ में बुदबुदा रहा था।
और उसने ऊपर देखा तो उसे घुंघराले बालों वाली महिला दिखाई दी। ठीक उसके सामने। वह खड़ी थी। उसके हाथों में उसके प्रेमी का सिर था और उसका चेहरा अंधेरे में डूबा हुआ था। कटे हुए सिर से खून टपक रहा था और सेक्श पीछे झुक गया, कुर्सी को एक तरफ धकेलते हुए।
रसोइया और पहरेदार आ गए।
‘आप ठीक हैं, जनरल?’
‘हां…हां…’ उसने खांसते हुए कहा, ‘मुझे बस सोने की जरूरत है। धन्यवाद।’

उसे बहुत पसीना आ रहा था।
वह छत को घूर रहा था और उसका दिमाग उलझन में डूबा हुआ था। उसे अच्छा नहीं लग रहा था। वह शौचालय गया और कई बार उल्टी करने की कोशिश की। उसे ठंड लग रही थी। बहुत ज़्यादा ठंड, लेकिन माथा गर्म था। बुखार था। वह बस...
भूत।
वह अपने कमरे में मौजूद भूत के बारे में सोच रहा था। उसने अपने कमरे के कोने में मौजूद उस प्रेत को देखा जो उसे घूर रहा था।
क्या वह घुंघराले बालों वाली महिला थी जिसके हाथों में कटा हुआ सिर था? या कोई और था?
उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। चारों तरफ़ सिर्फ़ परछाइयाँ ही परछाइयाँ थीं।
'कलंकित जन, तुम ही वह अभिशाप हो जो तुम्हारे शासक की सेना के पतन का कारण बनेगा,' फुसफुसाहट सुनाई दी।

और यह उस भूत जैसा ही था जिसकी आवाज़ उसने सुनी थी। वह वापस बिस्तर पर बैठ गया और आँखें बंद कर लीं, मानो ऐसा करने से उसे राहत मिलेगी। भूत चला जाएगा और सब ठीक हो जाएगा।
वह इसे महसूस कर सकता था। हाथ... उसे छू रहे थे। उसके बगल में हल्की सी अनुभूति हो रही थी। यह बर्फीली ठंड थी।
उन्होंने कहा, 'मैं तुमसे नहीं डरता।'
'लेकिन तुम्हें होना चाहिए,' फुसफुसाहट सुनाई दी।
‘नहीं, मैं नहीं हूँ। नहीं, मैं बिलकुल नहीं हूँ,’ वह अपने बगल में पड़ी तलवार को कसकर पकड़े हुए था। इतनी ज़ोर से, मानो उसे तोड़ देगा। ‘मुझे अकेला छोड़ दो।’
‘नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगी। तुम ठीक हो जाओगी, प्रिय। तुम ठीक हो जाओगी,’ फुसफुसाहट में कहा गया। ‘मेरा चेहरा देखो। मेरा सुंदर चेहरा देखो और जानो कि तुम्हें सबसे ज्यादा किस बात का डर है।’
मुझे किसी चीज से डर नहीं लगता। महिषा मेरी रक्षा करती है।
उसे कोई परवाह नहीं है। अगर उसे तुम्हारे बारे में पता चल गया, तो वह तुम्हें देखते ही मार डालेगा।
‘नहीं…नहीं!’ वह चीख उठा।
और उसने आंखें खोलीं तो देखा कि वह आकृति दरवाजा खोलकर उसमें से बाहर जा रही है।
'मैं तुम्हें मार डालूंगा,' कहते हुए उसके चेहरे से पसीने की बूंदें गिर रही थीं, और वह उस प्रेत का पीछा करने लगा।
वह खाली गलियारों में धीरे-धीरे चलने लगा, तभी उसे एहसास हुआ कि गलियारे हिल रहे हैं। उन पर अजीब आदमियों के मुंह और चेहरे बने हुए थे, जो उस पर हंस रहे थे।
‘तुम्हें पुरुष पसंद हैं। कितनी दूषित आत्मा है तुम!’
'अगर महिषा को तुम्हारा रहस्य पता चल गया तो वह तुम्हें मार डालेगा।' ‘महिषा द्वारा मारे जाने से पहले असिलोमा को मार डालो। प्रेमी के हाथों बहाया गया रक्तपात हत्या नहीं है!’
ये सारी आवाज़ें। वह गिर पड़ा। उसे गलियारों से एक आवाज़ सुनाई दी। गूंज। और फिर कुछ लुढ़क कर नीचे आ गया।

यह उसी आदमी का कटा हुआ सिर था जिसे उसने मारा था। दरअसल, यह एक लड़के का सिर था।
'दूर हटो!' वह चीखा और खुद को पीछे धकेलने लगा।
और जैसे ही वह मुड़ा…
सफेद वस्त्र पहने महिला खड़ी थी। उसके शरीर से भी खून टपक रहा था। उसकी आंखें चांद की तरह सफेद थीं, वह बस उसे देख रही थी। 'असिलोमा को मार डालो।' नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा।
‘तो अपने डर को खत्म करो।’
‘कहाँ…कैसे…’
उसने गलियारे के बगल वाले दरवाजे की ओर इशारा किया। वह तेजी से आगे बढ़ा। उसने लात मारकर दरवाजा खोल दिया। बिस्तर पर लेटे उस प्रेत को देखकर उसके रोम-रोम पसीने से भीग गए। मानो वह सो रहा हो। लेकिन वह वहीं था। वह भूत जो बचपन से ही उसे सता रहा था।
वह तलवार बिस्तर पर ही पड़ी थी। उसने तलवार को उस प्रेत के पास लाकर रख दिया।
‘तुम चाहे जो भी हो, मैं तुम्हें मार डालूंगा, तुम घिनौने…’
और चेहरा घूम गया। शेख ने वही देखा जिसका उसे सबसे ज्यादा डर था।
वह स्वयं।
यह उसका चेहरा था और एक पल के लिए सेक्श असमंजस में पड़ गया।
'नहीं, लेकिन…'
‘तुम हमेशा खुद से डरते थे। तुम हमेशा खुद को एक हत्यारा मशीन समझते थे।
तुम हमेशा खुद को एक पागल सनकी समझते थे। यही तुम्हारा डर है। खुद का सबसे बुरा रूप बनना,’ उसके प्रेत ने जवाब दिया।
लेकिन क्या मैं एक अच्छा आदमी नहीं हूँ?
'शायद तुम्हारे बुरे सपनों में।' और वह प्रेत हँस पड़ा।
अत्यंत क्रोधित होकर सेक्ष ने तलवार चलाई और उस प्रेत पर कई बार वार किया।
बार-बार। बार-बार। जब तक उसका कुछ भी शेष नहीं बचा और सेक्ष को राहत मिली।
मैंने इसे खत्म कर दिया। मैंने कर दिखाया। हाँ। आखिरकार।
वह कमरे की खिड़की के पास गया। मन को बहलाने की कोशिश कर रहा था। यह जानकर एक अजीब सी खुशी महसूस करने की कोशिश कर रहा था कि आखिरकार उसने जीत हासिल कर ली है। हवा और ठंडी हवा उसे सुकून दे रही थी, जिससे उसकी सोचने की शक्ति

बढ़ रही थी, और कुछ देर बाद धुंधली दृष्टि दूर हो गई। उसने एक बार फिर उल्टी की, फिर मुड़कर उस प्रेत को देखा जिसे उसने मार डाला था।
लेकिन इसके बजाय, वहाँ सब कुछ खून ही खून था। बहुत सारा खून। हर जगह।
वह लड़खड़ाते हुए उसकी ओर बढ़ा। और उसने उस प्रेत को देखा।
वह बिस्तर पर लेटा हुआ था। फैला हुआ।
अब उस पर उसका चेहरा नहीं था।
वास्तव में…
सेक्ष जोर से रोया। नहीं।
वह एकमात्र चेहरा था जिसे वह वहां बिल्कुल भी नहीं देखना चाहता था।
शरण।

24

गौरी को जेल में बांधकर रखा गया था, जहाँ से शहर का नजारा दिखता था। खिड़की छोटी थी, लेकिन शुक्र है कि उसमें जाली नहीं थी।
उसके हाथ-पैर एक मज़बूत रस्सी से बंधे हुए थे। अपनी कोठरी के कोने की छाया से, उसने किसी के प्रवेश करने का आभास किया। शुक्र। वह आश्चर्यजनक रूप से हारा हुआ और निराश दिख रहा था।
‘तुम मुझे हमेशा आश्चर्यचकित कर देते हो,’ उसने धीरे से कहा।
उसके पीछे पहरेदार थे।
गौरी को आश्चर्य हुआ कि उसे अभी तक फांसी नहीं दी गई थी। लेकिन शायद अब उसका भाग्य साथ नहीं दे रहा था, क्योंकि उसके स्वामी की निराश निगाहों के पीछे छिपा हुआ क्रोध स्पष्ट था।
उन्होंने कहा, 'तुम्हें बच्चे को नहीं ले जाना चाहिए था। वह हमारा था।' गौरी चुप रही।
'आप ऐसा क्यों कर रहे हो?'
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
'क्या आपको हमारे काम करने के तरीके से परेशानी है? जब मैंने आपको पहली बार टीम में शामिल किया था, तब मुझे लगा था कि आप बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं, और अब आपको देखिए। आप तो पूरे विद्रोही बन गए हैं।'
मौन।
‘ठीक है,’ उसने आह भरी और जाली के पास आकर बोला। ‘मैं अब और बर्दाश्त नहीं करूँगा। तुम यहाँ तब तक रहो जब तक तुम इतने निराश न हो जाओ कि अपनी सामान्य ज़िंदगी में लौटने के लिए रोने लगो। लेकिन अगर इसके बाद तुमने कोई गड़बड़ की, तो बस बात खत्म। मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूँगा।’
और इतना कहकर वह जाने लगा, तभी गौरी ने अपना गला साफ करते हुए पूछा: 'तुम मुझे मार क्यों नहीं रहे हो?'
उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा, बल्कि कहा: 'कुछ चीजें तुम्हारी समझ से परे हैं, लड़की।'
और इतना कहकर वह चला गया।
जैसे ही उसने ऐसा किया, गार्ड भी चले गए। उसने गिना कि जेल गार्ड ने कितने चक्कर लगाए और गिनती पूरी होने पर...

वह हरकत में आ गई।
उसने अपनी बंधी हुई भुजाओं को अपने पैरों के नीचे लाने की कोशिश की और एक झटके में बंधन तोड़ दिए। फिर उसने अपने पैरों को खोल दिया। इसके बाद वह खिड़की की ओर तेज़ी से बढ़ने लगी।
उसे एहसास हुआ कि वह महल के बगल में स्थित ऊंचे टावर में है और उसके लिए केवल कूदकर भागना मुश्किल था - वह गिरकर मर सकती थी।
लेकिन उसके पास एक योजना थी।
गार्ड किसी भी क्षण आ सकता है।
अपने शरीर को तेज़ी से धकेलते हुए, वह खिड़की से बाहर कूद गई और किनारे को कसकर पकड़ लिया। वह गार्ड के आने का इंतज़ार करने लगी।
जैसा कि उम्मीद थी, गार्ड ने देखा कि चारदीवारी टूटी हुई है। चौंककर उसने ताला खोलकर जेल में प्रवेश किया।
वह खिड़की देखने गया, और जब गौरी ने उसे देखा, तो उसने उसका कॉलर पकड़कर उसे नीचे खींच लिया और खिड़की से नीचे फेंक दिया।
वह वापस ऊपर चढ़ी और अपने कपड़ों से धूल झाड़ी, फिर अपने साथियों के पास चली गई।

गौरी ने सभी दरवाज़े खटखटाए थे। उसने यह सुनिश्चित कर लिया था कि सबको पता चल जाए कि वह भाग निकली है और वे सब इकट्ठा हो गई थीं—लगभग बीस दासी महिलाएं उनके गलियारे के आम हॉल में। उसने रास्ते में पहरेदारों को भी अपने साथ ले लिया था। कई महिलाएं उसके साथ नहीं जाना चाहती थीं क्योंकि वह उपद्रवी के रूप में जानी जाती थी, लेकिन उसने उन्हें मना लिया। उनसे बात करने का एक आखिरी मौका और फिर वह चली जाएगी।
जब वे गलियारे में इंतजार कर रही थीं, गौरी ने उन पर नज़र डाली। उसने ऐरावती का मासूम चेहरा और साथ ही माता और अन्य लड़कियों के क्रूर चेहरे देखे।
उन्होंने कहा, ‘पिछले कुछ दिनों में मेरे व्यवहार के कारण आप सभी को आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है, इसके लिए मैं क्षमा चाहती हूं, लेकिन मैं वास्तव में कुछ कहना चाहती हूं।’ उन्होंने आगे कहा, ‘और यह आखिरी बार है।

इसके बाद मैं न तो बोलूंगी और न ही आपको परेशान करूंगी। हम लंबे समय से अपने उत्पीड़कों के अत्याचारों के अधीन जी रहे हैं और आज मुझे आपके समर्थन की आवश्यकता है। मैं शुरुआत से ही आप सबके साथ हूं और मुझे लगता है कि हम ही वो लोग हैं जो आगे बढ़कर लड़ सकते हैं।’
‘लेकिन कैसे?’ ऐरावती ने पूछा। ‘हमारे पास हथियार नहीं हैं।’
हमें हथियारों की जरूरत नहीं है। हमें जनता की राय को प्रभावित करने के लिए सिर्फ एक काम करने की जरूरत है।
‘और हमें ऐसा क्यों करना चाहिए?’ माता ने पूछा। ‘सच कहें तो, हम अपने जीवन का आनंद ले रहे हैं।’
‘सचमुच? हम तो नौकर हैं। हम स्वतंत्र जीवन नहीं जी सकते। हम वही करते हैं जो दूसरे हमें करने को कहते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकते—हम परिवार नहीं बना सकते, हम प्यार नहीं कर सकते या बच्चे पैदा नहीं कर सकते। हम वही करते हैं जो वे हमें करने को कहते हैं। हर समय।’
वे सभी सहमति में सिर हिलाने लगे, जबकि कुछ लोग स्थिर रहे।
एक और लड़की ने पूछा, 'हमें ही क्यों चुना? किसी और को क्यों नहीं?' ‘क्योंकि परिवार के रूप में, मेरे पास सिर्फ तुम ही हो। चाहे तुम मुझसे कितनी भी नफरत करो, मैं तुम सबके साथ ही रहना चाहती हूँ,’ वह भावुक होकर रुक गई। ‘मैंने अतीत में कुछ चीजें अवज्ञा में की हैं क्योंकि मैं तुम्हें दिखाना चाहती थी कि ऐसा किया जा सकता है। कि छोटे-छोटे काम भी बड़े परिणाम ला सकते हैं,’ वह रुक गई। ‘शीना…’ उसने कोने में बैठी एक लड़की से पूछा, ‘क्या तुम्हें याद है कि महिषा ने तुम्हें पूरे दिन एक उत्तम भोजन बनाने के लिए मजबूर किया था, सिर्फ इसलिए कि उसे तुम्हारा बनाया हुआ खाना पसंद नहीं आया था? वीना…’ वह दूसरी लड़की की ओर मुड़ी, ‘क्या तुम्हें याद है कि जब उन्हें पता चला कि तुम्हारा एक पोछा लगाने वाले के साथ अफेयर है, तो तुम्हें सीढ़ियों से नीचे फेंक दिया गया था? उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि तुम कभी माँ न बन सको। बिना किसी अच्छे कारण के। ऐरावती को याद करो, तुम्हें हमेशा मेज बना दिया जाता है, क्योंकि…वे ऐसा कर ही सकते हैं। और माता…क्या तुम्हें याद है कि तुम्हें मंत्रियों के सामने सिर्फ इसलिए बुलाया जाता है ताकि तुम उन्हें हंसा सको और उनका दिन रोशन कर सको? तुम कोई

मसखरा नहीं हो। हमारे साथ वस्तुओं जैसा व्यवहार किया जाता है। हमेशा। यही सबसे दुखद बात है।’
‘और आपकी योजना क्या है?’ माता ने आगे बढ़कर पूछा। ‘पिछले दो दशकों से चली आ रही एक शासन व्यवस्था को पूरी तरह से खत्म करना? आप इसे कैसे करने की योजना बना रहे हैं? यह तो लगभग नामुमकिन है!’
गौरी ने कहा, ‘हमें जनता का समर्थन चाहिए। हमें उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा कि क्या सही है। और कैसे, आप पूछेंगे? नियमों के अनुसार मना किए गए काम करके। हमें मंदिर के अंदर जाना चाहिए जहाँ महिलाओं को जाने की अनुमति नहीं है और हमें महिषासुर की मूर्ति तोड़ देनी चाहिए।’
एक पल के लिए वे सब चुप हो गए, क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने अभी-अभी ऐसा कहा है।
गौरी ने आगे कहा, 'हमारी यह कार्रवाई लोगों को यह विश्वास दिलाएगी कि वे किसी देवता की पूजा नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक मनुष्य, एक पत्थर की संरचना की पूजा कर रहे हैं।'
‘और अगर हम पकड़े गए तो? हम मर सकते हैं!’ माता चिल्लाई।
‘सच कहूँ तो, हम यहाँ कर क्या रहे हैं? हम तो पहले से ही मर चुके हैं, हमें जबरदस्ती यहाँ लाया गया है, और कुछ नहीं। तुम्हें पता है, ये…ये हमारे साथ होने वाला अत्याचार इतना आम हो गया है कि हम इसे तर्कसंगत ठहराते हैं और खुद को खुशकिस्मत समझते हैं कि हम यहाँ हैं। लेकिन ये सच नहीं है। हम इससे बेहतर के हकदार हैं,’ गौरी ने आह भरी। ‘आखिर ये तुम्हारी मर्ज़ी है। तुम ये करना चाहती हो या नहीं?’
पता नहीं क्यों, उनमें से कोई भी आश्वस्त नहीं दिख रहा था। इस व्यवस्था के तहत उन सभी को किसी न किसी समस्या का सामना अवश्य करना पड़ा था। लेकिन आशा की एक किरण दिखाई दी। और वे सभी सिर हिलाने लगे। अंत में, माता ने कहा: 'ठीक है। चलो काम शुरू करते हैं, लोगों को राजा से ज़्यादा खुद पर विश्वास दिलाते हैं। उम्मीद है हम मरेंगे नहीं, गौरी।'
‘सब कुछ मेरे नियंत्रण में है। मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगी जिससे हम मर न जाएं,’ गौरी मुस्कुराई, और सभी महिलाएं एक साथ आकर एक-दूसरे को गले लगाने लगीं।
गौरी ने ऐरावती को देखकर मुस्कुराया, जिसने उसे अलग से गले लगाया।
‘तो अब क्या?’ माता ने पूछा।

गौरी महल की हर छोटी-बड़ी बात जानती थी। उन्हें सुबह-सुबह ही मूर्ति को गिराना था। कल सातवां दिन होगा और यह एकदम सही समय होगा। उसे यह भी पता था कि उसे हथियारों की ज़रूरत होगी। उसे बीस से ज़्यादा महिलाओं के भागने का रास्ता भी सोचना था। सुरंग वहीं थी, और वह एकदम सही थी।
‘माता, तुम तहखाने में जाओ और वहाँ के पहरेदारों को मार गिराओ। तुम्हारे हथियार कुछ भी हो सकते हैं, एक जोड़ी...’
‘मुझे हथियारों के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं है, लड़की,’ उसने मुस्कुराते हुए अपनी मांसपेशियों पर थपथपाया। ‘मैं उन्हें अपनी इच्छानुसार हरा सकती हूँ।’
'बहुत खूब। भूमिगत सुरंग को साफ करो और चूंकि तुम लोग काफी संख्या में हो, इसलिए सीवर के पहरेदारों से आसानी से निपट सकते हो। हम सीवर के रास्ते भाग सकते हैं। लेकिन जिस मंदिर पर हम हमला करने की कोशिश कर रहे हैं, वहां कुछ पहरेदार जरूर होंगे।'
ऐरावती ने आगे कहा, 'लगभग बीस, जिसका मतलब है कि हमें उचित हथियारों की जरूरत है।'
गौरी ने पूछा, 'यहां कितने लोगों को हथियार चलाना आता है?'
माता के अलावा किसी ने भी हाथ नहीं उठाया।
‘बहुत खूब,’ गौरी ने आह भरी। ‘चलो हथियार ले आते हैं,’ उसने ऐरावती और खुद को इशारा करते हुए कहा, ‘और फिर मेरे पास वहाँ मौजूद पहरेदारों का ध्यान भटकाने की योजना है। हमारा मकसद उन पहरेदारों को मारना नहीं, बल्कि मूर्ति को निष्क्रिय करना है। यही हमारी पहली प्राथमिकता है।’
सभी लड़कियों ने सिर हिलाया।
गौरी मुस्कुराई। आखिरकार उसका मिशन पूरा होने वाला था।
‘चलो, सब मिलकर करते हैं।’

25

तामार कमरे में सुलोचना के बगल में बैठा था, उसका हाथ पकड़े हुए और माथे पर चुंबन कर रहा था। वह उसके लिए चिंतित था। बेशक। और वह उसे गले लगा रहा था। वह अभी भी व्याकुल थी। दिन बीत चुका था और उसके बाद उसने उससे ज़्यादा बात नहीं की थी। वह उसे कुछ समय देना चाहता था ताकि वह अपने कबूलनामे के बारे में और कुछ बता सके। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह शुक्र का काम है, लेकिन फिर भी, कोई कुछ नहीं जानता।
बाश्कला मृत पाई गई। दो गार्डों के साथ। कोई कारण नहीं। यह शहर के बाहरी इलाके में था। पहले से ही जांच चल रही थी, क्योंकि मृतकों के बाद वहां किसी अन्य व्यक्ति का कोई सुराग नहीं मिला था। और कोई तामार के निजी कप्तान को क्यों मारना चाहेगा? यह समझ से परे था।
उसका जीवन बिखर रहा था, लेकिन उसकी निगाहें अपनी पत्नी पर टिकी हुई थीं। ‘क्या आप कुछ खाना चाहेंगे? क्या मैं आपके लिए रात का खाना लाऊं?’
“उसने कहा कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं तुम्हारी ज़िंदगी में बोझ थी,” सुलोचना ने आह भरते हुए कहा। “मुझे नहीं पता उसने ऐसा क्यों सोचा,” वह रोते हुए मुश्किल से बोल पा रही थी। “क्या तुम्हें लगता है कि मैं बोझ हूँ?”
‘बिल्कुल नहीं, प्रिय,’ वह रुका। ‘तो उसने तुम्हारा अपहरण किया? फिर फिरौती और उस मुकदमे की क्या ज़रूरत थी?’
‘वह चाहता था कि लोग तुम्हारे खिलाफ हो जाएं। ताकि तुम्हारा प्रभाव कम हो जाए। वह तुम्हें यूं ही नहीं निकाल सकता। तुम महिषा की करीबी दोस्त हो।’ ‘और वो मेरे गुरु हैं, लेकिन…’ वह असमंजस में था।
मुझे नहीं लगता कि उसे परवाह है। जैसा कि आपने हमेशा मुझे बताया है, वह एक रणनीतिकार है। उसके मन में कुछ न कुछ छुपकर चल रहा होगा। शायद वह खुद प्रधानमंत्री बनना चाहता हो, मुझे नहीं पता।
तामर बहुत उलझन में था। यह शुक्र की आवाज़ बिल्कुल नहीं लग रही थी। लेकिन फिर उसे याद आया कि शुक्र मंत्री पद पाने की चाहत रखता था, इससे पहले कि महिषा ने उसे यह पद दिया। हुआ यह कि महिषा शासक बनने के बाद इतना शक्तिशाली हो गया था कि उसने शुक्र की शिक्षाओं की परवाह करना छोड़ दिया और वही किया जो उसे करना था। ज़ाहिर है, अनुभव ने उसे पहले से कहीं ज़्यादा कठोर और

शक्तिशाली बना दिया था। शायद इसीलिए वह शुक्र को अतीत की याद के तौर पर, अपने गुरु के प्रति सम्मान के रूप में रखना चाहता था, बस इतना ही।
‘ठीक है, कोई बात नहीं। मुझे उससे बात करनी चाहिए।’
‘नहीं,’ उसने कर्कश स्वर में कहा। ‘इससे तो बात और बिगड़ जाएगी। तुम्हें कुछ करना होगा, बदला लेना होगा, मुझे नहीं पता…’ वह बहुत घबराई हुई थी और उसने उसे कसकर गले लगा लिया।
वे काफी देर तक चुप रहे और शायद कई घंटे बीत गए होंगे जब उन्हें कुछ सुनाई दिया। और पलक झपकते ही आग का एक गोला उनके घर में घुस आया।
एक पल के लिए वे स्तब्ध रह गए, और तामार ने बड़ी-बड़ी आँखों वाली सुलोचना को यह देखने के लिए छोड़ दिया कि गेंद वास्तव में पशु वसा में लिपटा हुआ एक पत्थर था जिसे आग लगा दी गई थी।
लेकिन इसे किसने फेंका?
बाहर लोग चिल्ला रहे थे। काफी देर तक। तामार अपने महल से बाहर आया तो देखा कि सौ से ज़्यादा आदमी इकट्ठा हो गए थे और वे पत्थर और तरह-तरह की चीज़ें फेंक रहे थे। चारों तरफ आग के गोले खिड़कियों से टूटकर उसके आदमियों को लग रहे थे...
एक गेंद सीधे उसकी ओर आई और उसके सिर पर लगी, जिससे उसके सिर पर पहना हुआ मुकुट टूट गया।
तामार गिर पड़ा और सुलोचना उसकी मदद के लिए दौड़ी।
उन्होंने कहा, 'यह ठीक नहीं चल रहा है। मैं कल और अधिक सुरक्षा का आदेश दूंगा।'
सुलोचना ने आगे कहा: 'आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते...'
‘उन्हें मार डालूँ? यह तो नरसंहार हो जाएगा।’ उसने अपना सिर हिलाया।

अगले दिन जब वह अपने कॉमन हॉल में अधिक सुरक्षा के लिए मंजूरी और भत्ते के लिए लिख रहे थे - सड़कों पर शोर मचा रहे दंगाइयों से छुटकारा पाने के लिए विशेष सुरक्षा प्रदान की जानी थी - तभी उन्होंने एक परिचित व्यक्ति को अंदर आते और अलंकृत, सुनहरे दरवाजे को पीछे से बंद करते हुए पाया।

तामार ने ऊपर देखा तो उसे धब्बेदार, बिखरे बालों वाला, ढीली त्वचा और लटकी हुई आँखों वाला आदमी दिखाई दिया। आज उसने धूसर रंग का चोला पहना हुआ था और वह बेहद सुस्त और थका हुआ लग रहा था।
'गुरुजी,' उसने कहा और हालांकि वह ऐसा नहीं चाहता था, लेकिन उसके लहजे से उसके मुंह से तिरस्कार झलकने लगा था।
शुक्र ने कहा, ‘मैंने तुम्हारे साथ जो हो रहा है, वह सुना है। तुमने किन दिमागी सोच से उन आदमियों को मारने का फैसला किया?’
तामार कहना चाहता था, "तुमने मुझे ऐसा करने पर मजबूर किया," लेकिन वह चुप रहा। वह सचमुच एक धैर्यवान व्यक्ति था, लेकिन उसका धैर्य अब जवाब दे रहा था। "मेरे अपने कारण थे।"
‘और वे कौन थे?’
वे गलत थे।
क्या आपको पता है कि हर गली उन दंगाइयों से भरी हुई है? आप उनके बारे में क्या करने की योजना बना रहे हैं?
मैं ऐसे कार्यबल बना रहा हूं जो उन्हें जेल में डालेंगे।
आप शहर के सभी पुरुषों को कैद करने की कोशिश नहीं कर सकते।
मैं कोशिश कर सकता हूँ।
‘यही एकमात्र तरीका है। दरअसल…’ उसने कलम से दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए और बाहर से आए व्यक्ति को अंदर आकर इसे ले जाने का आदेश दिया ताकि इसे लागू किया जा सके। ‘कम से कम कुछ समय के लिए।’
शुक्र को एक पल के लिए भी यकीन नहीं हुआ। वह वहीं खड़ा रह गया जब उसने दंगाइयों को जेल में डालने के आदेश को देखा—जिसके तहत शहर के आधे पुरुषों को सलाखों के पीछे डाल दिया जाना था—यह आदेश सरासर मूर्खतापूर्ण था। लेकिन सड़कों पर व्याप्त हिंसा और प्रधानमंत्री के लिए खतरा बन रही इस स्थिति की निंदा करने का यही एकमात्र तरीका था।
शुक्र ने कहा, 'एक और तरीका है।'
'क्या?'
मुझे पता है कि आपको यह पसंद नहीं आएगा।
'मेरी बात मान लो,' तामार ने कहा। वह जानता था कि क्या होने वाला है।
आप प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे सकते हैं।
यह रहा। उसकी पत्नी सही थी। 'क्यों?'

‘इस समय हर कोई तुमसे नफरत करता है। बेहतर यही होगा कि जब तक महिषा आकर यह पद खाली न छोड़ दे, तब तक यह पद खाली रहे और—’
तामर ने आगे कुछ नहीं सुना। वह दरवाजे पर गया और बोला, 'सुझाव देने के लिए धन्यवाद, लेकिन मुझे लगता है कि मैं पद नहीं छोड़ूंगा।'
शुक्र ने आह भरी। वह लड़खड़ाते हुए दरवाजे से बाहर निकला और बाहर जाने से पहले गुस्से भरी नजरों से उसे देखा।
तामार को अपनी पत्नी की बात पर यकीन करना मुश्किल हो रहा था क्योंकि वह अपने गुरु पर भरोसा करता था, लेकिन जब उसने ये बात कही... तो सब कुछ साफ हो गया। उसी ने उसका अपहरण किया था। वह चाहता था कि तामार प्रधानमंत्री पद से हट जाए।
मन ही मन बड़बड़ाते हुए, उसे पता था कि महिषा शहर की ओर जा रहा है। और उम्मीद थी कि उसके बाद हालात बेहतर हो जाएंगे।

सुलोचना अपने गालों पर फैले काजल को पोंछ रही थी। उसने अपना चेहरा पोंछा और खुद को तरोताज़ा किया, तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी:
आप वाकई एक बेहतरीन अभिनेत्री हैं।
सुलोचना एक पल के लिए यह देखकर अचंभित रह गई कि वह व्यक्ति उसके निजी कक्ष में कैसे आ गया, लेकिन फिर उसने सहजता से काम लिया। 'मुझे हमेशा से ही नाटकीयता का हुनर रहा है।'
'अच्छा। मुझे खुशी है कि आपने योजना के अनुसार काम किया और जो आवश्यक था वह किया।'
‘मुझे उम्मीद है कि आपको पता है कि आप क्या कर रहे हैं,’ सुलोचना ने कहा। ‘क्योंकि कल एक चट्टान अंदर गिर गई और तामार अंदर था। मैं नहीं चाहती कि हम दोनों मर जाएं। मैंने यह सिर्फ इसलिए किया क्योंकि यह करना सही था और तामार एक अच्छा आदमी है।’
‘उसे यह दिखाना होगा कि वह बदलाव के लिए तैयार है,’ आवाज ने कहा। ‘जब समय आएगा।’
सुलोचना को नहीं पता था कि उसका पति कैसी प्रतिक्रिया देगा और क्या वह बदलेगा या नहीं। लेकिन उसने उस व्यक्ति को देखने के लिए मुड़कर देखा।

और मैंने उस व्यक्ति को देखा जिसने यह सब रचा था, जिसने सुलोचना को अपहरण करवाने, कुछ समय के लिए एक विशेष स्थान पर छिपने और फिर सारा दोष शुक्र पर मढ़ने के लिए राजी किया था।
वह चारिणी थी।

26

चंद्रा पूरे दिन तहखाने में इंतज़ार करती रही और अगले दिन शाम होते-होते वह भूख से बेहाल हो गई। सैनिक तहखाने में आए तो थे, लेकिन बहुत कम संख्या में, और वह कोने में चूहे की तरह छिपी हुई थी। अपने थैले में रखे पनीर के छोटे-छोटे टुकड़ों से उसका पेट थोड़ा-बहुत भरा रहा।
और जैसे ही उसने छोटी सी खिड़की से आधा चाँद देखा, वह तहखाने से बाहर निकली, यह समझते हुए कि रात में कोई वहीं सो रहा है। उसने एक खंजर उसके गले के पास लाकर उसे काट दिया, और बिना चीखे ही खून बहने लगा और वह आदमी मर गया। वह कप्तान के केबिन की ओर दबे पांव बढ़ने लगी, इस उम्मीद में कि शायद उसे उससे मिलने का मौका मिल जाए।
उसे पता था कि उसे ऐसा करना ही होगा। अंधेरे में रास्ता बनाते हुए उसने गलियारे में एक गार्ड को सीटी बजाते देखा। वह ठीक किनारे पर खड़ी होकर उसके मुड़ने का इंतज़ार कर रही थी और जैसे ही वह मुड़ने वाला था...
वह रुक गया। अपने दांतों में फंसी गंदगी साफ करने लगा।
चंद्रा ने जबड़े भींच लिए, व्याकुल होकर इंतज़ार किया। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं। जब उस आदमी ने मुड़कर जाने के बजाय उसी दिशा में बढ़ना शुरू किया जहाँ से वह आ रहा था, तो चंद्रा उसकी पीठ के बल लेट गई और अपने खाली हाथ से उसका मुँह ढकते हुए खंजर उसकी रीढ़ में घोंप दिया। एक छोटी सी चीख निकली जो अँधेरे में खो गई। वह आदमी ज़मीन पर गिर पड़ा और मर गया।
चंद्रा झुककर आगे बढ़ी और रसोई के पास से गुजरी, जो फिलहाल खाली थी। अधिकांश नाविक सो रहे थे और बाकी डेक पर दुश्मन के जहाज पर नजर रख रहे होंगे। लेकिन चंद्रा अंदर थी, जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वह कप्तान के कमरे की ओर बढ़ी और उसे एहसास हुआ—बस यही वह पल था। यही वह क्षण था जिसका वह इंतजार कर रही थी।
उसे याद आया कि वह कभी भी इस क्रांति का हिस्सा नहीं बनना चाहती थी, खासकर उस चीज़ के लिए जिससे वह भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई थी। लेकिन उसे एक बात याद आई जिसने उसकी सोच को पूरी तरह बदल दिया और उसे इस मिशन का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया।
यह पांच साल पहले की बात है। देव वरुण से मिलने से पहले की।

लोथल बंदरगाह से भागने के बाद वह वापस लौटी थी और उसे उम्मीद थी कि वहाँ सब ठीक होगा—लेकिन ऐसा नहीं था। खूबसूरत नज़ारा तहस-नहस हो चुका था। आग भयंकर रूप से फैल रही थी और आम नागरिक मारे जा रहे थे। उन्होंने सिर्फ़ ग्रामानी के अधीन लोगों को ही नहीं मारा, बल्कि अपने रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति को मार डाला, जबकि अन्य लोगों को बंदी बना लिया गया था।
वह चुपके से शहर में घुस गई, गश्त लगा रहे सैनिकों की नजरों से बचते हुए, और उसने वह घाट देखा जहाँ कभी उसकी झोपड़ी हुआ करती थी। और वह भटकने लगी, जिसके कारणों के बारे में वह खुद भी अनिश्चित थी। शायद वह यह जानने की उम्मीद कर रही थी कि यह तबाही और अराजकता सही कारणों से हुई थी, लेकिन इतना खून-खराबा अनावश्यक था।
उसकी नजर एक ऐसे शव पर पड़ी जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानती थी और जैसे ही वह करीब आई, उसने देख लिया कि वह कौन है।
बिक्रम। वह नौजवान कुली जिसे वह अपने छोटे भाई की तरह मानती थी। उसे बेरहमी से पीटा गया था, और वह अपने बाकी कुली दोस्तों के बीच पड़ा था। वह घुटनों के बल बैठकर रोने लगी, और उम्मीद कर रही थी कि कोई भी पहरेदार उसे न देख ले।
उसने उसके बालों को छुआ, तभी उसने देखा कि उसके हाथों में कुछ है। उसने उसकी हथेली खोली तो उसमें एक कटा हुआ सेब था।
आखिरकार उसने चंद्र द्वारा दिए गए पैसों से खाना खरीदकर खा लिया। उसके चेहरे पर एक दुख भरी मुस्कान फैल गई।
‘मेरे आदमियों को यकीन था कि उन्होंने किसी को अंदर आते देखा है। शायद कोई परछाई, लेकिन उन्हें नहीं पता था कि वह एक छोटी बच्ची है,’ एक आवाज़ आई।
मधुर। कोमल। मनमोहक।
उसने मुड़कर देखा तो उसे वही लड़का दिखाई दिया जिसे उसने बंदरगाह पर देखा था। लंबा। सुंदर। तीक्ष्ण और स्पष्ट चेहरे वाला, और कंधे तक लंबे बाल जो यूनानी नाविकों के देवताओं को भी टक्कर दे सकते थे।
Durmukha, as Bikram had called him.
‘तुम यहाँ क्या कर रही हो, लड़की?’ उसने पूछा।
उसने कुछ नहीं कहा। बस उसे देखती रही। बड़ी सावधानी से। और उसने भी उसे देखा। वह अपने अंगरक्षकों के साथ पीछे खड़ा था, भागने की कोशिश करने पर उसे पकड़ने के लिए तैयार।

उसने कहा, 'मैं अपने भाई को लेने आई हूं।'
दुर्मुखा ने सिर हिलाया। 'क्या आप हमारी इस छोटी सी कलाकृति के बारे में किसी को बताने की योजना बना रहे हैं?'
उसने अपना सिर जोर से हिलाया।
‘अच्छा। अच्छा। लेकिन अफसोस, मैं आपकी बात पर भरोसा नहीं कर सकता। इसलिए…’ उसने उंगलियां चटकाईं।
वह चीखी और जितनी तेज़ी से हो सके भागने लगी, बच्चे को हाथ में पकड़े घाट की ओर बढ़ने लगी। इससे वह पीछे ही रह गई, फिर भी वह दौड़ती रही। जहाँ तक संभव हो। आदमी उसका पीछा कर रहे थे। सब कुछ धुंधला सा लगने लगा था।
और वह पानी में गिर पड़ी, जैसे ही तीर समुद्र में रेंगते हुए आए लेकिन उसे नहीं लगे। गहरे पानी में गिरने से बिक्रम के शव पर उसकी पकड़ ढीली हो गई और वह गहरे पानी में बह गया। उसने शव को निकालने की कोशिश की, लेकिन इतनी गहराई में तैरना उसके लिए मुश्किल था और इस तरह वह घाट से दूर बह गई।
और हर चीज से दूर।

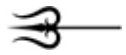

चंद्रा ने कप्तान के कमरे का दरवाज़ा खोला और उसके सामने वही था जिसकी उसे उम्मीद थी। असलियत क्या थी? मिशन से जुड़ी उसकी सारी गतिविधियाँ। उसने खुद से झूठ बोला था जब उसने कहा था कि यह किसी निजी बात से जुड़ा नहीं है। यह उससे कहीं ज़्यादा था। यह अपने दुश्मनों को यह दिखाने के बारे में था कि कड़वाहट और नफ़रत हमेशा भरपूर मात्रा में लौटकर आती है।
और उसने देखा कि दुर्मुख उसके सामने अपनी मेज पर बैठा है, उसे पता ही नहीं कि अभी-अभी एक लड़की अंदर आई है। उसका चेहरा अब भी उतना ही आकर्षक था, जितना उसने पाँच साल पहले देखा था, और पाँच साल उसके लिए काफी अच्छे साबित हुए थे। वह जवान दिख रहा था।
उसने ऊपर देखा।
‘जी? क्या मैंने तुम्हें बुलाया था?’ उसने पूछा। वह चर्मपत्रों पर कुछ लिख रहा था। ‘क्या मैं तुम्हें जानता हूँ?’
वह कुछ पल के लिए वहीं खड़ी रही।

‘क्या तुम रसोई से हो? क्या हुआ? चूहे?’ वह झुंझलाकर खड़ा हो गया। ‘हमेशा वही चूहे ही होते हैं।’
वह खड़ा रहा। और वह खामोशी से खड़ी रही।
और फिर उसने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों की ओर। उसे लगा कि उनमें एक गहरी गूंज है।
‘क्या आपको लोथल याद है?’ उसने पूछा।
वह जम गया। 'नहीं।'
‘क्या तुम्हें मैं याद हूँ?’ उसने अपना खंजर निकाल लिया। और उसे एहसास हुआ कि वह खतरे में है। उसकी तलवार मेज के किनारे पर थी, लेकिन वह पास आई और उसने तलवार को ज़मीन पर फेंक दिया।
‘लोथल की लड़की।’
“सच कहूँ तो, लड़की, मुझे वो दिन याद नहीं है। मैं…मैं एड्रेनालाईन से भरा हुआ था और अगर मैंने तुम्हें चोट पहुँचाई हो तो मुझे माफ़ कर दो,” वो गिड़गिड़ाते हुए, घिरते हुए बोला। “मैंने जो भी किया, वो जानबूझकर नहीं किया था।”
उसने उसकी पीठ पर धक्का दिया और चाकू निकालकर उसके कंधे पर वार किया और उसका मुंह बंद कर दिया, जिससे उसकी चीख धीमी और संक्षिप्त ही रह गई। एक पल के लिए वह उसके इस कृत्य से स्तब्ध रह गया और फिर उसने कहा: 'यह इसलिए है क्योंकि तुमने मुझे याद करने की जहमत तक नहीं उठाई। मुझे तुमसे कुछ चाहिए।'
‘क्या? क्या यह सोना है जो मैं ले जा रहा हूँ? आप इसे ले सकते हैं।’
‘अरे नहीं। यह तो बस हिमशैल का एक छोटा सा हिस्सा है। मुझे तो पूरा पहाड़ चाहिए,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। ‘अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो।’ 'यह क्या है?'
अन्य साम्राज्यों के विपरीत, महिषा का खजाना दक्षिणी जंबूद्वीप में बिखरा हुआ है। गुफाओं में, पहरेदारों की निगरानी में, या छोटे किलों में। यह सबसे अप्रत्याशित स्थानों पर स्थित है और यह एक चतुर रणनीति है क्योंकि शत्रु हमेशा राजधानी पर इस उम्मीद में हमला करते हैं कि खजाना वहीं होगा, लेकिन ऐसा नहीं होता, और उनका प्रयास व्यर्थ जाता है। बस यही बात है, है ना?
वह तेजी से सिर हिला रहा था।

'अच्छा। तो तुम मुझे उन जगहों के बारे में बताओ और मैं तुम्हें जीने दूंगा।'
'महिषा मुझे मार डाले। ओह नहीं, बहुत-बहुत धन्यवाद। इससे बेहतर है कि मैं तुम्हारे हाथों ही मर जाऊं।'
उसने उसकी गर्दन की नस काट दी जिससे खून बहने लगा। वह अपने हाथों से अपनी गर्दन को पकड़े हुए था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, और उसने कहा: 'मैंने तुम्हारी कैरोटिड धमनी काट दी है। तुम्हारे पास मुझे बताने के लिए लगभग दो मिनट हैं, इससे पहले कि मैं तुम्हें बताऊं कि खुद को मरने से कैसे बचाना है।'
'कृपया कृपया…'
‘या तो तुम आज मर जाओ या महिषा से छिप जाओ। वो तो गया काम से, इसलिए तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है।’
'आप कौन हैं?'
उसने कुछ नहीं कहा। वह उसके लिए एक चर्मपत्र और कलम लाई और उसे उन स्थानों के नाम लिखने को कहा जहाँ खजाने का बंटवारा हुआ था। उसने धीरे-धीरे, जितना हो सका, लिखा, उसकी गर्दन से थोड़ा खून चर्मपत्र पर गिर गया। और अंत में, जब उसने लिखना पूरा कर लिया, तो उसने उसके हाथों से चर्मपत्र छीन लिया।
‘मैं खून बहना कैसे रोक सकता हूँ? मुझे बताओ।’
‘मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैंने कौन सी धमनी काट दी है। तुम मर नहीं रहे हो,’ उसने हंसते हुए कहा, जबकि उसकी आंखें गुस्से से चौड़ी हो गईं।
‘यही तो तुम्हारी योजना थी, है ना? बस मुझसे यही पूछने के लिए। तुम इस जहाज पर कैसे आए? आह, मुझे पता है। नवतकवेचाओं के हमले के कारण। लेकिन जहाज पर ही क्यों? मैं तो ज्यादातर जमीन पर ही रहता हूँ। तुम मुझे वहीं पकड़ सकते थे। मैं बस...मैं बस उत्सुक हूँ।’
उसने इस बारे में सोचा। देवताओं ने उसे वही योजना बनाने को कहा था जो सर्वोत्तम प्रतीत हो। उन्होंने बस उसे प्रशिक्षित किया और मार्गदर्शन दिया।
क्योंकि जब आपके खजाने लूटे जा रहे होंगे, तब आपके पास जहाज पर रहते हुए महिषा को सूचित करने का समय नहीं होगा। अब इसमें आपको बहुत समय लगेगा। और मुझे इसी समय की जरूरत थी।

वह नवतकवेचों में इसलिए शामिल हो गई थी क्योंकि बिना किसी पूर्व अनुभव के उस पर सवार होना दुर्मुख के जहाज या किसी अन्य वैध जहाज पर सवार होने से कहीं आसान था। हर नाविक का पूरा विवरण दर्ज होता था, जबकि उसे नौकायन का कोई अनुभव नहीं था। लेकिन वह जानती थी कि दुर्मुख अपने साम्राज्य के लिए विदेशी संबंधों पर चर्चा करने, धन जुटाने और भेजने के लिए अक्सर समुद्र में यात्रा करता था। महिषा की ओर से लोगों से मिलने के लिए भी वह अक्सर यात्रा करता था। वह जानती थी कि उसे जहाज पर सवार होना ही होगा, क्योंकि महिषा या उसके किसी करीबी को पता चलने से पहले ही खजाने को लूटना जरूरी था। एक बार खजाने लूट लिए जाने पर महिषा को पता चल जाएगा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।
‘मैं तट पर उतरते ही सबसे तेज़ संदेशवाहक और एक घोड़ा भेजूँगा, कमीनी कुतिया!’ उसने चंद्र पर चिल्लाते हुए कहा। ‘महिषा को तुम्हारे इन स्थानों पर हमला करने से पहले ही पता चल जाएगा और तुम कुछ भी नहीं कर पाओगी।’ ‘ज़रूर। लेकिन यह तब होगा जब तुम ज़मीन पर उतर पाओगे,’ वह मुस्कुराई और फिर उसने सीधे उसके सिर में चाकू घोंप दिया ताकि वह दूसरों को सूचना न दे सके। उसका शरीर बुरी तरह से खून से लथपथ हो गया। फिर उसके शरीर को मेज के नीचे धकेल दिया गया ताकि पहरेदार उसे देख न सकें।
और फिर उसने अपनी योजना के अंतिम चरण की ओर बढ़ना शुरू कर दिया।

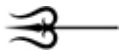

हालांकि वह तहखाने में थी, लेकिन वह वहां सिर्फ शरण लेने नहीं गई थी। डेढ़ दिन से वह उन बैरलों को ढूंढने की कोशिश कर रही थी जिनमें तीरों के लिए जहर रखा था। उसके पास जानवरों की चर्बी से बनी एक रस्सी थी जिसे उसने बैरलों से बांध दिया था। रस्सी काफी लंबी थी। उसने गलियारों में लटकी मशालों से रस्सी में आग लगा दी।
उसे एक अतिरिक्त नाव मिली, जिसमें वह बैठ गई और खुद को खींचकर पानी की ओर ले जाने लगी। वह मुख्य डेक के पास ही थी, तभी एक गार्ड उसके पास आया और पूछा: 'तुम क्या कर रही हो?'
उसने आत्मविश्वास से कहा, 'मैं मछली पकड़ती हूँ। मैं खाना बनाती हूँ।'

गार्ड असमंजस में था। 'आप यहाँ यूँ ही नहीं कर सकते। नाव का इस्तेमाल करने के लिए आपको अनुमति चाहिए ताकि हम जहाज को रोक सकें।'
आप इसके लिए कप्तान से बात कर सकते हैं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं तो बस वही कर रहा हूं जो मुझे करने के लिए कहा गया है।'
गार्ड को शक हुआ और उसने कप्तान से पुष्टि करने तक उसे वहीं रुकने का आदेश दिया। जब वह वहाँ बैठी थी, तो उसने देखा कि बाकी सभी गार्ड उसे घूर रहे थे। चंद्र मुस्कुराया और फिर पुली छोड़ दी। नाव जितनी तेज़ी से हो सकती थी, उतनी तेज़ी से नीचे की ओर सरकी, पुली टूट गई और नाव पानी पर ज़ोर से टकराई। 'यह लगभग है…'
और तभी एक धमाका हुआ। जहाज के पिछले हिस्से में एक भीषण धमाका हुआ। इससे जहाज पूरी तरह से तो नहीं टूटा, लेकिन संकट का संकेत भेजने के दौरान उनकी गति धीमी हो गई।
जैसे ही उसे मंज़िल दिखाई दी, उसने चप्पू चलाकर खुद को क्षतिग्रस्त जगह से बाहर निकालना शुरू कर दिया। कुछ मील आगे तट था।
और फिर वह निर्धारित मिलन स्थल की ओर रवाना हो जाती।

27

महिषापुर के बाहरी इलाके के पास, उन्होंने विश्राम करने के लिए डेरा डाला था। घोड़े थक चुके थे और लोग भी। यात्रा छोटी थी, लेकिन रास्ते में कई मोड़ थे। एक मोड़ देवताओं से युद्ध करके उन पर विजय प्राप्त करना था, और दूसरा उस चौकी तक जाना था जहाँ सेक्ष था। महिषा अपने मित्र से मिलना चाहता था और यह जानना चाहता था कि उसने वास्तव में किस दुर्गा को मारा था, क्योंकि उसने जिस दुर्गा को मारा था, वह कोई और थी।
और यह वाकई भ्रामक था।
महिषा अपने तम्बू में शराब पी रहा था और तबिता उसके कंधों की मालिश कर रही थी, ताकि वह अपने जीवन की चिंताओं को भुला सके।
मुझे बिल्कुल भी नहीं पता था कि रिगोली दुर्गा बन जाएगी।
लेकिन क्या वह सचमुच ऐसा था? महिषा को पता नहीं था। सेक्ष ने कुछ और ही कहा।
‘लेकिन क्या तुम्हारे पिता को पता था?’ उसने पूछा।
'नहीं, बिलकुल नहीं, प्रिय।'
महिषा ने अपनी नाक फुलाई। वह खड़ा हो गया, उसके कंधे से उसका हाथ हटाते हुए उसके सामने खड़ा हो गया। उसकी नज़रें महिषा की आँखों से मिलीं।
मुझे सच बताओ।
‘मैं-मैं…’ उसकी मासूम आँखें झपकीं।
'औरतें झूठ बोलने में माहिर होती हैं,' उसने गुर्राते हुए तबिता का गला पकड़ा और उसे ऊपर उठा लिया।
उसका दम घुट रहा था। उसका चेहरा लाल हो रहा था।
'मुझे सच बताओ, लड़की।'
तबिता बोल भी नहीं पा रही थी, लेकिन वह अपना सिर हिलाकर इनकार कर रही थी।
महिषा ने उसके धूर्त चेहरे को देखा और फिर गुस्से में उसे कोने में धकेल दिया। वह हताश था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या महसूस करना चाहिए।
'महामहिम, मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है,' उसने लगभग रोते हुए कहा। लेकिन उसके मन में जो दूर का स्नेह था, वह गायब हो चुका था। महिषा क्रोधित था। बेहद क्रोधित। और फिर उसकी निगाहें अचानक उस व्यक्ति पर पड़ीं जो उसके

तम्बू में दाखिल हुआ था। वह कोई और नहीं बल्कि थामिसदा था। उसने अपनी बेटी की ओर देखा और फिर महिषा की ओर।
‘क्या सब ठीक है तबिता?’ उसने पूछा।
उसने सिर हिलाया। खांसते हुए बोली, 'हाँ, मेरी तबीयत ठीक नहीं थी।' थामिसदा ने सिर हिलाया और महिषा की ओर मुड़ी। 'क्या हम चलें?'
‘तुम्हें रिगोली के बारे में कैसे नहीं पता था?’ महिषा ने तीखे स्वर में कहा।
'जहां तक मुझे पता है, वह एक भरोसेमंद व्यक्ति थे। मैंने उन्हें कभी देवताओं के साथ पत्राचार करते नहीं देखा।'
‘और फिर भी उसने ऐसा किया,’ महिषा गुस्से से बोली। ‘और उसने यह बेवकूफी भरी भविष्यवाणी गढ़ी कि दुर्गा यहाँ मुझे डराने के लिए आई है। शायद वह नहीं चाहता था कि हमारे बीच समझौता हो।’
थामिसदा ने सिर हिलाया। 'शायद यही हो।'
और उसने सोचा था कि भविष्यवाणी सुनकर महिषा भाग जाएगा, लेकिन इसके बजाय वह शांत रहा। वह डरा नहीं था। लेकिन दुर्गा के बारे में जो कुछ वह जानता था, उससे यह स्पष्ट था कि वह थामिसदा की सेना में जासूस था। निश्चित रूप से। नहीं तो उसे दुर्गा के बारे में कैसे पता चलता?
नौ दिन। उसे शुक्र की कही बात याद आ गई। हिसाब से आज आठवां दिन था। कल उसकी मृत्यु होनी थी, फिर भी वह अपनी पूरी सेना के बीच मौजूद था और कोई उसे छू भी नहीं सकता था।
उनके अंगरक्षक ने उनकी बातचीत में दखल देते हुए कहा: 'वह बोल रहे हैं, महाराज।'
थामिसदा असमंजस में थी। महिषा मुस्कुराई।
देखते हैं वह क्या कहता है।

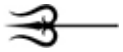

देवताओं के साथ युद्ध में, महिषा ने उनके सैनिकों को इकट्ठा किया और दुर्गा के बारे में सच्चाई उगलवाने के लिए उन्हें यातनाएं दीं। उनसे दुर्गा पर हुए हमले से संबंधित हर बात उगलवाई गई, क्योंकि महिषा को एहसास हो गया था कि दुर्गा उसके साथ चालाकी कर रही है। पूछताछ एक दिन तक चली और

उनमें से अधिकांश मारे गए, सिवाय एक के जो महिषा के सामने कड़ाके की ठंड में पत्ते की तरह मुरझा रहा था। उसे चाकू से मारा गया, काटा गया और घायल किया गया ताकि वह सभी महत्वपूर्ण विवरण बता दे।
यातना देने वाला, महिषा और थामिसदा इस खाली तम्बू में मौजूद थे।
मुझे बताओ। तुम क्या जानते हो?
‘यह लगभग एक दशक लंबा कार्यक्रम है,’ उस आदमी ने रोते हुए कहा। ‘तुम्हें जान से मारने के बारे में।’
'नौ दिनों में, है ना?'
'हां, लेकिन यह उससे कहीं अधिक है।'
'आपका क्या मतलब है?'
सिपाही ने ऊपर देखा; उसका चेहरा खून से सना हुआ था। 'यह तुम्हारे साम्राज्य को गिराने के बारे में है।'
महिषा खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'लेकिन यह मेरी हत्या के बारे में था। हमें एक पत्र मिला था...'
उन्होंने कहा, 'यह योजना का हिस्सा था। आपको एक पत्र मिलना था जिससे आप सतर्क हो जाएं, लेकिन देवों को पता था कि आप इसे गंभीरता से नहीं लेंगे।' 'क्यों?'
‘यह धारणा फैलाना कि आपकी हत्या कर दी जाएगी, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। आपकी हत्या अंतिम प्राथमिकता है। पहली प्राथमिकता आपकी शक्ति और नियंत्रण को अस्थिर करना है।’
जब सिपाही बेहोश होने लगा तो महिषा ने उसका सिर पकड़ लिया। 'और क्या, यार?' 'इसकी यह है…'
‘दुर्गा कौन है?’
उसने सिर हिलाया। 'कोई नहीं जानता। लेकिन हम इतना जानते हैं कि आपकी व्यवस्था में चार महिलाएं काम कर रही हैं। वे दुर्गा के अधीन काम कर रही हैं। वे दुर्गा के लिए काम करती हैं। ये चारों महिलाएं अलग-अलग नामों, वेशों और पहचानों के तहत आपके साम्राज्य की सामाजिक व्यवस्था में ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रही थीं, ताकि नौ रातों का समय शुरू होने पर वे इसे अंदर से ही ध्वस्त कर सकें।'
‘क्या यही उस ऑपरेशन का नाम है?’
उसने सहमति में सिर हिलाया।

क्या आप उस स्किथियन रिगोली के बारे में जानते हैं जो इसका हिस्सा था? एक हिजड़ा?
‘हो सकता है कि वह दुर्गा के अधीन काम कर रहा हो, लेकिन वह दुर्गा नहीं है। यह भी हो सकता है कि वह देवताओं द्वारा नियुक्त भाड़े का हत्यारा हो, जो आपको यह सोचने पर मजबूर करे कि यह दुर्गा है, ताकि आप यह जानकर निश्चिंत हो जाएं कि आप जानते हैं कि दुर्गा कौन है।’
लेकिन देवताओं ने यह अनुमान नहीं लगाया था कि सेक्ष उन्हें एक पत्र भेजेगा जिसमें लिखा होगा कि उसने दुर्गा को पकड़ लिया है। इससे उनकी सारी योजना धरी की धरी रह जाएगी। महिषा मुस्कुराया। अनजाने में ही उसके दोस्त ने उसे सुरक्षा का एहसास दिला दिया था।
‘क्या आपको पता है दुर्गा कौन है? ज़रा सोचो।’
‘नहीं।’ सिपाही ने कड़वाहट को निगलते हुए कहा। ‘मुझे बस एक आखिरी बात पता है। अगर आप अपनी राजधानी को बचाना चाहते हैं, तो आपको जल्द से जल्द उसके लिए निकल जाना चाहिए।’
महिषा ने सिर हिलाया। और यह महसूस करते हुए कि अब उसके पास देने के लिए कुछ नहीं बचा है, उसने अपनी पूरी ताकत से उस आदमी का सिर धड़ से अलग कर दिया। धड़ धड़ से अलग होकर गिर पड़ा, जबकि कटा हुआ सिर बेजान आँखों से उसे घूर रहा था। 'तुम पहले देव सैनिक हो जिसे मैं सचमुच पसंद करने लगा हूँ।'
वह मुस्कुराया और थामिसदा की ओर मुड़ा। 'चलिए, अगली दुर्गा से मिलते हैं।'

28

सेक्ष ने अपनी प्रेमिका के लिए अंत्येशी की रस्म अदा की और वह पूरे समय रोता रहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने कुछ मतिभ्रमों के कारण अपनी प्रेमिका को मार डाला। लेकिन उसे ये मतिभ्रम हो ही नहीं रहे थे? उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह बहुत क्रोधित था। उसे कुछ पता नहीं चल रहा था कि क्या हो रहा है। उसका दिमाग बस एक अजीब सी उलझन में था। अपशकुन उसे चारों ओर से घेर रहे थे और उसे उकसा रहे थे कि अब वह आत्महत्या कर ले। वह आत्महत्या करना चाहता था, लेकिन उसे पता था कि महिषा उसके रास्ते में ही होगा।
क्या यह कात्या की विचित्र शक्तियां थीं जिनके कारण उसे मतिभ्रम हुआ और उसे लगा कि वह अपने अतीत के भूत को मार रहा है, न कि अपनी प्रेमिका को जो दूसरे कमरे में सो रही थी?
सेक्श उलझन में था। उसका एकमात्र सहारा उसे दिया गया भोजन था। रसोइया एक बार फिर वहीं खड़ी थी, लेकिन अब उसके साथ कोई पहरेदार नहीं थे। वह उसे भोजन परोस रही थी, जबकि सेक्श दावत का लुत्फ़ उठा रहा था, इस उम्मीद में कि इससे वह असिलोमा के साथ किए गए अपने कृत्य को भूल जाएगा। वह रुक-रुक कर रो रहा था और ज़ोर से अपने मन की बात कह रहा था:
‘मैं आज उसे मार डालूँगा,’ उसने शराब पीते हुए कहा। ‘मैं कात्या या दुर्गा या जो भी हो, उसे मार डालूँगा। मुझे परवाह नहीं कि महिषा आ जाए और वह उससे पूछताछ न कर पाए। मुझे कोई परवाह नहीं। यह सब उसकी वजह से है। सब कुछ उसकी वजह से।’
‘आपकी जो इच्छा हो, महाराज,’ उसने कहा।
सेक्श ने रसोइए की ओर देखा और उसके हाथ पकड़ लिए। 'तुम्हारे हाथ ही एकमात्र ऐसी चीज हैं जो मुझे जीने का अर्थ समझाते हैं। मुझे तुम्हारे बनाए खाने की तीव्र इच्छा होने लगी है और यही मुझे सुकून देता है।'
'आपके दयालु शब्दों के लिए धन्यवाद, मेरे स्वामी।'
उसने उसके हाथों को देखा। देखता रहा। उसे एहसास हुआ कि उसके हाथ थोड़े जले हुए थे। और उन पर एक धब्बा भी था। 'तुम्हारे हाथ कैसे जल गए? ये कब हुआ?' उसने उन्हें उससे दूर खींचते हुए सोच-विचार करते हुए कहा, 'शायद उसी समय जब तुमने मेरी झोपड़ी जलाई थी।'

'क्या?'
सेक्ष ने ऊपर देखा। वह असमंजस में था।
रसोइए ने आह भरी। ‘तुमने हमारी झोपड़ी में आग लगा दी थी। मैं और मेरा दोस्त भागने की कोशिश कर रहे थे। तुम अंदर आए। तुमने उसे मार डाला। और मैं तुमसे बचकर भागने में कामयाब हो गया।’
‘नहीं…नहीं…’ उसने सिर हिलाते हुए कहा, ‘क्या तुम…तुम्हें मेरे सपनों के बारे में कैसे पता चला?’
‘ये तुम्हारे सपने नहीं हैं। तुमने ये बहुत पहले ही कर लिया है,’ उसने शांत भाव से मुस्कुराते हुए कहा। वह कमजोर लग रही थी। ‘ये मैं हूँ। खुशी, वही कुम्हार जिसे तुम्हारे राजा महिषा रिझाना चाहते थे।’
'नहीं - नहीं…'
'हाँ।'
उसने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह और दूर हट गई और सेक्श खांसते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा, उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके पेट में कुछ कीड़े हों। 'क्या... मैं तो बिल्कुल हैरान हूँ। तुम्हारे बाल घुंघराले थे?'
मैंने अपने बाल मुंडवा लिए ताकि आप मुझे पहचान न सकें।
लेकिन…’ अब वह रोने लगा। ‘मुझे अजीब क्यों लग रहा है? क्या तुमने…’
“हाँ, मैंने तुम्हें ज़हर दिया। ठीक वैसे ही जैसे मैंने कल तुम्हारे पेय में सोमा मिला दिया था और भूत बनकर तुम्हारे मतिभ्रम को और बढ़ा दिया था, ताकि तुम असिलोमा को मार सको। कात्या और मैंने सोचा था कि तुम शगुन देखकर ही हमारी बात मान लोगे, लेकिन तुम फिर भी अपनी बात पर अड़े रहे। तुम उसे मारना नहीं चाहते थे, इसलिए हमने और चालबाज़ी का सहारा लिया।”
‘क्यों?’ उसने खांसते हुए पूछा।
'क्योंकि तुमने मेरे प्रेमी की हत्या की। और क्योंकि तुम सेनापति हो। तुमने सेना का सिर काट दिया है और सेना को समझ नहीं आ रहा कि उन्हें किसका अनुसरण करना चाहिए।'
‘Mahisha will…’
वह मुस्कुराते हुए घुटनों के बल बैठ गई। 'अब तुम्हें अपनी चिंता करनी चाहिए। जब महिषा आएगा, तो वह एक ऐसी तस्वीर देखेगा जो हम उसे दिखाना चाहते हैं: एक विक्षिप्त जनरल जिसने अपने लेफ्टिनेंट की हत्या की और फिर खुद को मार डाला। यह एक अच्छी तस्वीर होगी, है ना?'

इसीलिए।
इसका उद्देश्य कोई निशान न छोड़ना था।
नहीं, ऐसा मत करो... मैं आपसे विनती करता हूँ...
‘मेरे पास इसका विषनाशक है, अगर आप चाहें तो,’ उसने उसे शीशी दिखाते हुए कहा। ‘क्या आप इसे पीकर जीवित रहना चाहेंगे?’
उसने उस पर गौर किया। यह वस्तु विनिमय था। 'बदले में तुम्हें क्या चाहिए?' 'राजधानी के ब्लूप्रिंट। मुझे बताओ कि सभी द्वार कहाँ हैं।'
तो क्या आप देवताओं को बता सकते हैं कि उन्हें कहाँ से प्रवेश करना है? 'उन्हें फाटकों के बारे में पहले से ही जानकारी है, लेकिन अगर आप मुझे बता दें तो बेहतर होगा, इससे परेशानी कम होगी।'
उसने आह भरी।
खुशी ने कहा, ‘सेक्ष, तुम एक अच्छे इंसान हो। तुमने वही किया जो तुम्हें करने को कहा गया था। अपनी आखिरी सांसें महिषा पर बर्बाद मत होने देना, जिसने इतने भयानक अपराध किए हैं कि हमें आकर यह करना पड़ा। अगर महिषा ने तुम्हें उस दिन झोपड़ी में मेरे दोस्त को मारने के लिए न कहा होता, तो असिलोमा बच जाती। सोचो ज़रा। ये तो एक के बाद एक होने वाली घटनाओं का सिलसिला है।’
सेक्ष ने ऊपर देखा और उसे अपनी जिंदगी धीरे-धीरे खत्म होती हुई दिखाई दी। उसे याद आया कि कैसे उसे निर्दयी नेता महिषा का अनुसरण करना सिखाया गया था। उसे याद आया कि कैसे उसने एक बार असिलोमा से प्यार करके महिषा की अवज्ञा की थी। और उसे… अपना पिछला जीवन वापस लौटता हुआ दिखाई दिया। भूत। उसका भूत वह खुद ही था। भले ही यह खुशी की साजिश थी, लेकिन वह वही था। महिषा की ओर से किए गए अपने सबसे गौरवशाली और सबसे भयानक अपराधों से खुद को मुक्त करने का अहसास करते हुए, उसने उसे द्वारों के बारे में बताया और उसने ध्यान से सुना। उसने उसे बताया कि वहाँ कितनी चौकियाँ थीं और उसने ध्यान से सुना, और अंत में, उसने उसे शीशी दे दी।
'यदि आप मुझसे वादा करें कि आप हमारा पीछा नहीं करेंगे।'
उसने सिर हिलाया। और उसने शराब ले ली। वह कमरे से चली गई और उसे पता था कि खुशी कात्या के पास जाएगी और उसे जेल से छुड़ाएगी और वे महिषा के आने से पहले ही निकल जाएंगी। उसे यह सब पता था।
लेकिन उसने विषनाशक दवा को देखते हुए मुस्कुरा दिया।

और उसने उसे टुकड़ों में तोड़ दिया।
विषनाशक दवा जमीन में रिस रही है।
सेक्ष जानता था कि उसने अपना जीवन जी लिया है। बस। अब जीने का कोई अर्थ नहीं था।

29

गौरी और ऐरावती आराम से शस्त्रागार की ओर जा रही थीं, गौरी ने शॉल से अपना चेहरा थोड़ा ढका हुआ था। ऐरावती महल के शस्त्रागार के सामने खड़े रक्षक के पास गईं और बोलीं:
'थोड़ी सी गड़बड़ हो गई है। गुरु शुक्र आपको सबसे ऊपरी मंजिल पर ढूंढ रहे हैं।'
‘गुरुजी? लेकिन मैं? क्यों?’
उन्होंने कहा, 'उन्हें और अधिक सुरक्षाकर्मियों की जरूरत है। कोई समस्या खड़ी हो गई है।'
गार्ड ने उन्हें संदेह भरी नजरों से देखा और फिर कुछ कहने ही वाला था कि गौरी ने अपनी कोहनी से उसकी नाक पर जोरदार प्रहार किया, जिससे वह बेहोश हो गया।
गौरी ने अपने दंगाइयों के समूह का जिक्र करते हुए कहा, 'मेरे पास इस आदमी के लिए बिल्कुल समय नहीं है। वे तो पहले ही गटर की ओर निकल चुके हैं। इसलिए हमें भी भाग जाना चाहिए।'
वे शस्त्रागार में दाखिल हुए और यह स्पष्ट रूप से छोटा था क्योंकि यह राष्ट्रीय शस्त्रागार नहीं था जहाँ हथियारों का निर्माण और वेल्डिंग होती थी। इसका उपयोग आपात स्थितियों में किया जाता था और वे एक बोरी लेकर गए और अपने लिए जितने छोटे हथियार हो सके, उतने लेने की कोशिश की। जब उनकी बोरी भर गई, तो ऐरावती ने पूछा:
‘हम पहरेदारों को कैसे मारेंगे? हमें तो युद्ध का कोई प्रशिक्षण नहीं है।’ गौरी ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे उम्मीद थी कि उसकी सहयोगी चारिणी ने विवादित सुनवाई करवाई होगी, जिससे पुरुष दंगा करेंगे और सड़कों पर अराजकता फैल जाएगी। इससे शहर के पहरेदारों को मंदिर में भारी संख्या में रहने के बजाय किसी और चीज़ की चिंता करने का मौका मिल जाएगा। लेकिन वह सिर्फ उम्मीद ही कर सकती थी। 'देखते हैं हम क्या कर सकते हैं। मुझे यकीन है कि मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगी—'
‘फिर से होशियार बनोगे?’ एक आवाज आई।
दोनों लड़कियां वहां खड़े शुक्र की ओर मुड़ीं। शुक्र के पीछे दो रक्षक खड़े थे, जो उन पर और ऐरावती पर तीर ताने खड़े थे।

शुक्र ने कहा, “तुम्हें लगा कि मैं तुम्हें इतनी आसानी से भागने दूंगा, जबकि यह साफ था कि तुम जेल से भाग गई थी और मेरे आदमी तुम्हारे जैसे लोगों का पीछा कर रहे थे, और उन्होंने तुम्हें इस गलियारे में देख लिया। गौरी, तुम ऐसा क्यों कर रही हो? मैं तो स्तब्ध हूँ। और अब तुमने मुझे कोई विकल्प नहीं छोड़ा... दूसरे को मार डालो और गौरी को मेरे हवाले कर दो।”
‘तुम मुझे कभी मार क्यों नहीं डालते?’ गौरी ने दांत भींचते हुए पूछा। ‘तुम्हें क्या रोक रहा है? यह तीसरी बार है जब मैंने गलती की है और अब तक तो मुझे तीन बार चाकू लग जाना चाहिए था। तो आखिर बात क्या है?’
शुक्र एक पल के लिए वहीं खड़ा रहा। उसने उंगली के इशारे से पहरेदारों को आदेश नहीं दिया। ‘क्योंकि मुझे ऐसा आभास हो रहा है…’ उसने रुककर कहा, ‘कि तुम मेरी पोती हो और तुम्हें देवताओं ने अगवा कर लिया है।’
गौरी चुपचाप वहीं खड़ी रही। उसके हाथ में पकड़ी बोरी फिसल गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसा महसूस करना चाहिए।
वह स्तब्ध रह गई और उसे साफ दिख रहा था कि वह विजयी महसूस कर रहा है। उसे लग रहा था कि उसने उस पर फिर से नियंत्रण पा लिया है। मानसिक रूप से। भावनात्मक रूप से। हालांकि यह एक भावनात्मक मिलन होना चाहिए था, लेकिन उसे यह जानकारी देने के पीछे कुछ अजीब और भयावह कारण था।
‘अरे, मुझे पता है,’ वह मुस्कुराया, ‘तुम मेरे खून के हो और मेरे उत्तराधिकारी बनने के लिए ही बने हो। तुम बस गुमराह हो गए हो। तुम्हें पता नहीं था कि यह मैं हूं और अब जब तुम्हें पता चल गया है, तो मुझे पता है कि तुम मेरी बात मान लोगे।’
गौरी ने कहा, 'तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मुझे पता नहीं था?'
इससे वह रुक गया। शुक्र ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
‘मैं तुमसे भाग गई क्योंकि मैं चाहती थी। मैं देवों में शामिल हो गई क्योंकि मैं चाहती थी। मैं तुम्हारे साथ रहते-रहते थक गई थी। तुम पागल थे। तुम बहुत नियंत्रण करने वाले थे। और जब मुझे पता चला कि मैं तुम्हारे अधीन काम कर सकती हूँ, तो मैं खुश हुई। मुझे पता था कि तुमने साम्राज्य के साथ, जनता के साथ क्या किया था, तुमने क्या अपराध किए थे, और मैं बुरी तरह से स्तब्ध और शर्मिंदा थी। और मुझे पता था कि मैं सही काम करना चाहती हूँ। यहाँ, तुम्हारे अधीन होना, एक चुनाव था, संयोग नहीं।’
शुक्र अचंभित रह गया।

‘पर मुझे खुशी है,’ उसने आगे कहा, ‘कि आप मेरे बारे में जान गए हैं।’ तभी उसने देखा कि पहरेदारों के पीछे से कुछ साये आ रहे हैं और उन्हें गिरा रहे हैं।
वे माता और एक और दासी थीं। गौरी और ऐरावती अभी तक सीवर में नहीं लौटी थीं, इसलिए वे यहाँ आए होंगे।
शुक्र असहाय था। वह घुटनों के बल बैठ गया। हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा। गौरी ने बोरी से कुल्हाड़ी निकाली और उसे ऊपर उठाया।
गुरु का सिर धड़ से अलग करते हुए, उसका खून उसके चेहरे पर छिटकते हुए उसने कहा, 'अब तुम जान गए हो कि तुम्हारी ही मौत तुम्हारे खून से हुई है।'

सीवर से बचकर मंदिर पहुँचते-पहुँचते गौरी ने देखा कि कई पुरुषों को सलाखों के पीछे डाल दिया गया था और महिलाएं बिना किसी डर के सड़कों पर घूम रही थीं। ऐसा देखना एक ताज़ा बदलाव था। और मंदिर के आसपास, बेशक, महिलाएं चल रही थीं, लेकिन वे अंदर नहीं जा रही थीं।
गौरी और उसकी सारी स्वतंत्र महिलाओं के पास हथियार थे, हर कोई उन्हें अपने साथ लिए घूम रही थी, और उसने देखा कि शुक्र है कि पहरेदारों की संख्या कम थी। शायद पाँच ही थे। दो द्वार के बाहर और तीन अंदर। और वे बीस महिलाएं थीं। अगर कोई सूचना देता, तो अतिरिक्त बल आ जाते।
'योजना क्या है?' माता ने द्वार की ओर चलते हुए पूछा।
गौरी सोच रही थी कि उन्हें कैसे विचलित किया जाए, लेकिन अब वह छुपकर खेलने से थक चुकी थी। वह खुलकर और सीधे-सीधे लड़ना चाहती थी। 'हम लड़ेंगे।' लेकिन हमें नहीं पता कि कैसे करें।
‘अपने अंदर के गुस्से को काबू में करो और तलवारें और खंजर लहराओ। ये इतना मुश्किल नहीं है,’ गौरी ने कहा। उसकी बात थोड़ी हास्यास्पद सी थी, क्योंकि लड़ने का एक तरीका तो जरूर होता है, लेकिन वो जानती थी कि वो उन पांचों का सामना खुद ही कर लेगी।
वह पहरेदारों की ओर दौड़ने लगी, जिन्होंने सफेद कपड़ों में महिलाओं के समूह को अपनी ओर आते देखा। वे एक पल के लिए असमंजस में पड़ गए...
लेकिन ज्यादा देर तक नहीं। गौरी ने तुरंत अपनी कुल्हाड़ी से गार्ड के चेहरे पर वार किया, जिससे उसके गाल और नाक पर गहरे घाव हो गए, जबकि दूसरे को

उसने लात मारकर जमीन पर गिरा दिया। उसके पीछे महिलाएं आईं और सबने मिलकर हमला शुरू कर दिया।
सड़कों पर मौजूद महिलाएं यह देखने के लिए इकट्ठा होने लगीं कि क्या हो रहा है। दंगे फिर से शुरू हो गए थे। इस बार एक अलग तरह का दंगा।
पहरेदार अचंभित थे, लेकिन माता ने अपनी तलवार से उन पहरेदारों को घायल करके अपनी घृणा को और भी बढ़ा दिया। ऐरावती स्वयं भयभीत थी और उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह अपने खंजर का क्या करे, इसलिए वह माता की नकल कर रही थी। एक पहरेदार उस पर झपटा और वह जमीन पर गिर पड़ी। उसने उससे छुटकारा पाने की कोशिश की, लेकिन वह उसे मारने ही वाला था कि माता ने उसे लात मारकर उठा लिया। दोनों ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराया।
गौरी मूर्ति की ओर दौड़ी और अपनी कुल्हाड़ी से उसे काटने लगी। हर वार के साथ वह अपनी उन सहेलियों को देखती जिन्होंने अब तक पहरेदारों को मार गिराया था। उसने मूर्ति के पैर इतने काट दिए थे कि धक्का देने पर वह गिर सकती थी। उसने अपनी दो दर्जन सहेलियों को बुलाया और धक्का देने को कहा, और जैसे ही उन्होंने धक्का दिया... मूर्ति तेज़ी से हिलने लगी।
बाहर खड़ी भीड़ में मौजूद सभी महिलाएं यह दृश्य देखने के लिए आगे आ गईं। मूर्ति लड़खड़ाने लगी और गिरने लगी। तब तक रथों में सवार और भी पहरेदार आ चुके थे, लेकिन उन्होंने पचास फुट ऊंची मूर्ति को गिरते हुए देखा।
और जब वह गिरा, तो अपने पीछे धूल और मलबे का ढेर छोड़ गया। गौरी मुस्कुराई, लेकिन उसकी खुशी क्षणिक थी क्योंकि गार्ड पहले ही आ चुके थे।
‘अब हमें क्या करना चाहिए?’ माता ने पूछा।
हमें भागना होगा।
और उन्होंने ऐसा ही किया, मंदिर की विपरीत दिशा में।

30

निर्धारित स्थान पर, चंद्र उस व्यक्ति का इंतजार कर रही थी जिसे उसे वह चर्मपत्र सौंपना था।
वह महिषापुर शहर के पास तक का सफर तय कर चुकी थी और वहाँ पहुँचने में उसे डेढ़ दिन लग गया था। अब शहर के बाहरी इलाके में पहुँचकर, उसे उम्मीद थी कि हालात सामान्य हो जाएँगे। इंतज़ार करते हुए वह एडमिरल के बारे में सोच रही थी और यह भी कि वह कितना अच्छा इंसान था। देवताओं से भी बेहतर। या असुरों से भी।
वह अच्छा था।
क्या हानि से इंसान बेहतर बनता है? क्या इससे उसका नजरिया बेहतर होता है? बिक्रम को खोने पर उसका नजरिया बेहतर हुआ था। लेकिन अब जब एडमिरल की मृत्यु हो गई थी, तो उसका नजरिया बिल्कुल अलग था।
उसने अपने खच्चर पर सवार होकर उसके पास आ रहे व्यक्ति को देखा, जिसके उलझे बालों में फूलों की माला लिपटी थी और हाथ में सितार था जिसे वह बजा रहा था और गा रहा था। उसने खच्चर को रोका और उससे उतरकर चंद्र की ओर चल पड़ा। 'बहुत बढ़िया काम किया। तुम जिंदा हो।'
चंद्र ने अपने दूत नारद के चेहरे पर शांति देखी और सिर हिलाया। उसने नारद को वे दस्तावेज़ सौंप दिए। 'मेरा मिशन पूरा हो गया है।'
‘अच्छा। तो अब आप उत्तर में स्थित शिविर के लिए निकल सकते हैं,’ उसने चर्मपत्रों को देखते हुए कहा। ‘जब आप देवों के शिविर के करीब पहुँच जाएँगे, तब मैं आपको और अधिक जानकारी भेज दूँगा, जहाँ से वे खजाने पर हमला करके उसे लूट सकते हैं और तहस-नहस कर सकते हैं, ताकि महिषा का सारा धन हड़प लिया जाए।’
उसने इस बारे में सोचा। सभी देव उसे बधाई देंगे। लेकिन वह जानती थी कि उसे अपने दोस्तों के पास वापस जाना है, उन लोगों के पास जो प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उसके साथ थे। बाकी चार। 'मुझे कहीं और जाना होगा।' नारद के चेहरे के भाव बदल गए। 'वह जगह कहाँ होगी?'
‘इस आदमी की वजह से मुझे बहुत नुकसान हुआ है। मैं चाहता हूं कि उसे मार डाला जाए।’
'इसके लिए आपके सहयोगी मौजूद हैं। वे पहले से ही इस पर काम कर रहे हैं।'

‘नहीं,’ चंद्र ने आह भरी।
और फिर पीछे मुड़े बिना, वह महिषा के लिए रवाना हो गई।

31

चारिणी जानती थी कि इसका अंत बुरा होगा।
लेकिन जो होने वाला था, उसका उसे अंदाज़ा नहीं था। जो सड़कें कभी दंगा करने वाले पुरुषों से भरी रहती थीं, अब पुरुषों से खाली हो गई थीं, लेकिन अब वहां महिलाएं आ गई थीं। महिषा की मूर्ति गिर गई थी। पूछताछ और जांच के लिए तामार को जाना पड़ा। इससे भी बुरी बात यह थी कि शुक्र का शव मिला था और तामार को जाकर यह पता लगाना था कि यह सच है या नहीं। जिन लोगों ने मूर्ति गिराई थी—उसकी सहेली गौरी के नेतृत्व में महिलाओं का एक समूह—शुक्र है, गायब हो गए थे, और उसे उम्मीद थी कि गौरी नहीं मिलेगी।
चारिणी ने यह भी सुना था कि महिषा अपने अभियान से लौट आया है। उसने उस अफरा-तफरी और बाकी सब पर कैसी प्रतिक्रिया दी होगी—इसका उसे कोई अंदाजा नहीं था। चारिणी को लगा था कि शुक्र को तामार मार डालेगा, क्योंकि वह यही चाहती थी, लेकिन दुर्भाग्य से उसकी योजना अप्रत्याशित रूप से बदल गई और दोनों की योजनाएँ आपस में टकरा गईं, जिससे अफरा-तफरी मच गई।
अब कोई योजना नहीं थी। वह केवल यही उम्मीद कर सकती थी कि कोई एक व्यक्ति घुसपैठ करके महिषा को मार डाले, लेकिन...
‘क्या यह आपके मिशन का हिस्सा था?’ सुलोचना ने पूछा।
उसे इसके कुछ हिस्सों की जानकारी थी, लेकिन पूरी नहीं। आखिर, चारिणी ने उसे समझाने, उसका विश्वास जीतने और फिर यह बताने में कि महिषा कितना दुष्ट व्यक्ति है, कई सप्ताह और महीने लगा दिए थे। जब सुलोचना ने इस बात को मान लिया, तो वह चारिणी का साथ देने के लिए तैयार हो गई।
वे आम सभाघर में एक गद्दी पर बैठे थे, चारों ओर पहरेदार तैनात थे और किसी नए घटनाक्रम की प्रतीक्षा कर रहे थे।
‘नहीं…मैं…उम…’ चारिणी असमंजस में थी। क्या कहे?
एक गार्ड प्रकट हुआ।
'राजा महिषा आपसे मिलने आए हैं, देवी सुलोचना।'
क्या?
सुलोचना ने चारिणी की ओर चिंता भरी नजर से देखा, लेकिन चारिणी ने उसे फटकार लगाई। वह तामार के बिना उससे मिलने आया था।
जाओ। सब ठीक हो जाएगा।

‘क्या आप मेरे साथ चलेंगे?’ सुलोचना ने पूछा।
गार्ड को खांसी आई। 'सिर्फ आप, सुलोचना जी।'
सुलोचना ने सिर हिलाया और बेपरवाही का नाटक करते हुए गार्ड के पीछे-पीछे बरामदे की ओर चली गई, जहाँ महिषा उसका इंतजार कर रही थी।
महिषा अंदर आ सकता था, लेकिन वह समय बर्बाद नहीं करना चाहता था। वह वहीं मैदान में, ऑर्किड और सूरजमुखी के फूलों से लथपथ, गंदा खड़ा था, तभी उसने अपने दोस्त तामार की खूबसूरत, गुस्सैल पत्नी सुलोचना को अपनी ओर आते देखा। उसने उसके दावों के बारे में सुना था - कि कैसे तामार को लगता था कि शुक्र ने प्रधानमंत्री पद हथियाने के लिए उसके अपहरण के पीछे हाथ रखा था।
और आगे कुछ बोले बिना, महिषा यहाँ यह सुनिश्चित करने आई थी कि वह सच कह रही है।
वह अपने नए पाना सैनिकों की सुरक्षा में वहाँ खड़ा था। उसकी शादी फिलहाल स्थगित करनी पड़ी क्योंकि दुर्भाग्यवश शहर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी और उसे सब कुछ व्यवस्थित करना था। लेकिन अपने कक्ष में जाकर अगली योजना बनाने से पहले उसे सुलोचना से मिलना था।
वह विनम्रतापूर्वक आई और उसके सामने सिर झुकाया।
‘जी हां, महाराज?’ उसका सिर नीचे झुका हुआ था।
उन्होंने घोषणा की, 'जनरल सेक्श की मृत्यु हो गई है। मैं चौकी तक गया और उन्होंने अपने लेफ्टिनेंट के साथ आत्महत्या कर ली थी।'
‘क्या? लेकिन क्यों? यह तो बहुत दुखद है।’
‘मुझे पता है। जाहिर तौर पर दुर्गा, यह हत्यारा, गायब होने से पहले चौकी पर अजीब अपशकुन लेकर आई थी,’ महिषा हंसते हुए बोली।
'ओह, मैं समझा।'
उसने उसे एक नज़र देखा। ‘जानती हो, मैं बहुत समझदार आदमी हूँ। जब मैंने दुर्गा का ज़िक्र तुमसे किया, तो तुमने ज़रा भी प्रतिक्रिया नहीं दी। अब गुरुजी के बारे में तुमने जो दावे किए हैं, मुझे वो खास पसंद नहीं हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि वो कभी अपने शिष्यों को चोट नहीं पहुँचाना चाहेंगे। और मैं जानता हूँ कि तुम झूठ बोल रही हो।’
‘नहीं! मैं सच बोल रहा हूँ।’
उसने उसका गला कसकर पकड़ लिया। उसने उसे ज़ोर से दबाया। ‘मुझे यह पहले ही कर देना चाहिए था, लेकिन मैंने नहीं किया। मैं मूर्ख था। और अब मुझे देखो,

मैं पछतावे के सागर में डूबा हुआ हूँ। लेकिन कोई बात नहीं, मैं अब यह कर रहा हूँ।’
और उसने उसकी गर्दन मरोड़ दी, जिससे उसका शरीर बेजान हो गया।
उसने उसे जमीन पर पटक दिया और अपने घोड़े पर सवार होकर वहां से जाने के लिए तैयार हो गया।
चारिणी ने सब कुछ देख लिया था, और वह अंदर ही अंदर डर से चीख रही थी, क्योंकि उसे लग रहा था कि वह अपने साथी को बचा सकती थी लेकिन नहीं बचा पाई। उसका चेहरा भूत की तरह सफेद पड़ गया था और वह बस किसी सहारे से चिपकी हुई थी...
उसे नहीं पता था कि वह किस चीज से चिपकी हुई है। उसे बस इतना पता था कि महिषा यहाँ है और इसका सिर्फ एक ही मतलब था।
मुश्किल।

कुछ घंटों बाद, तामार वापस लौट आई।
उन्हें अपनी पत्नी की मृत्यु की खबर जरूर मिल गई होगी और जब तक वे पहुंचे, चारिणी ने अपनी प्रेमिका को सफेद कपड़े में लपेट दिया था और दुर्गंध दूर करने के लिए अगरबत्ती जला दी थी। वह शव के पास बैठी थी, जबकि महल के चारों ओर मौजूद असहाय पहरेदार भी कमरे में थे।
तामार अंदर आई और जमीन पर गिर पड़ी।
उन्होंने कहा, 'मैंने सुना कि उसकी हत्या कर दी गई... एक दंगाई ने उसकी हत्या कर दी।'
लेकिन उसे यह बात कहाँ से पता चली? ज़ाहिर है, महिषा नहीं चाहती थी कि उसे पता चले क्योंकि वे दोस्त थे। चारिणी ने अनिच्छा से अपने दांत भींचे क्योंकि वह उसे रोते, सीना पीटते और शव को गले लगाते देख रही थी।
वह चुप रही। वह यहाँ कुछ कर सकती थी। अपनी मूल योजना से भी बेहतर। और यह उसके अनुमानों से नहीं, बल्कि उस गहरे दुख से उपजा था जो उसने लंबे समय से महसूस नहीं किया था। अब उसकी आँखों में आँसू भर आए, उसे एहसास हुआ कि वह इस सदमे से उबर चुकी है। वह आघात से बाहर आ चुकी है। वह अब इसे खुद पर हावी

नहीं होने देगी। वह मजबूत और दृढ़ बनेगी। उसे बनना ही होगा। आखिर, वह दुर्गा के लिए काम करती थी।
वह रोते हुए अपने स्वामी की ओर झुकी और उनके कानों में फुसफुसाकर बोली, 'यह महिषा थी।'
उसने ऊपर देखा।
घबराइए मत। उसके गार्ड यहीं हैं। उसने कुछ गार्ड यहाँ इसलिए छोड़े हैं ताकि अगर कोई अनुचित बात करे या आपको कुछ और बता दे तो वे उसे संभाल सकें। कुछ समय के लिए, तामार भयभीत हो गई थी।
‘तामार, यहाँ एक क्रांति हो रही है। मैं दुर्गा के साथ काम करती हूँ,’ चारिणी ने कहा, और अपनी पत्नी के अपहरण की साजिश का जिक्र करने से बचती रही, क्योंकि इससे वह और भी घबरा जाता और परेशान हो जाता। ‘और तुम्हारा राजा पतन की ओर जा रहा है। लेकिन हमें तुम्हारी मदद चाहिए। तुम एक अच्छे इंसान हो।’
तामार ने शोकग्रस्त पहरेदारों की ओर देखा। और फिर चारिणी की ओर। 'तुमने झूठ बोला है...'
‘अपनी ये बचकानी नौटंकी बंद करो। तुम्हारे दोस्त ने तुम्हारी पत्नी को मार डाला है! तुम्हें अपने गद्दार दोस्त से ज्यादा उसकी परवाह करनी चाहिए!’ इतना सुनकर वह चुप हो गया। आँसुओं से लगभग टूटकर चूर हो गया। ‘मैं अपने दोस्त को धोखा नहीं दे सकता। मैं नहीं दे सकता…भले ही…’ वह खांसते हुए बोला नहीं। ‘जब तुम सिंहासन जीतोगे तो देवता मेरे साथ क्या करेंगे?’
‘वे तुम्हें नहीं मारेंगे। मैं तुम्हें यह आश्वासन देती हूँ,’ उसने कहा। दुश्मन के किसी भी मुखबिर को दूसरा मौका दिया जाएगा। कम से कम इंद्र ने तो उसे यही बताया था। ‘लेकिन तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।’
और यह कैसे?
‘देवों की सेना के युद्धबंदियों को रिहा करो। शहर के सभी कैदियों को,’ उसने कहा। ‘आप अभी भी प्रधानमंत्री हैं, आप ऐसा कर सकते हैं।’
और इससे क्या लाभ होगा?
'जब देवता प्रवेश करेंगे तो वे हमारा साथ देंगे।'
वे प्रवेश कैसे करेंगे?
कात्या और खुशी ने इसका ख्याल रख लिया था। अब किसी भी समय वे आने वाली थीं। ‘उसकी चिंता मत करो। बस कर दो।’

तामर ने चारिणी की ओर देखा और फिर कहा: 'इस महल से दफा हो जाओ। मैं तुम्हारा चेहरा नहीं देखना चाहती।'
चारिणी जानती थी कि तामार उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई कर सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, वह चुपचाप अपनी मृत पत्नी के शव पर रोता रहा।
और चारिणी जितनी जल्दी हो सके खड़ी हुई और आदेशानुसार वहां से चली गई।
दूसरों से दोबारा मिलने के लिए।

32

महिषा अपने दफ्तर में बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था, सोच रहा था कि आखिर सब कुछ कैसे बिखरने लगा। उसने जो कुछ भी बनाया था, सब बेकार हो गया। शुक्र मर चुका था। सेक्ष मर चुका था। और अब उसे पीछे से आ रहे दूत से खबर मिली कि सोने से लदा जहाज फट गया और डूब गया। सारा पैसा बर्बाद हो गया।
वह यहाँ एक संदेशवाहक और पहरेदार के साथ अकेला था। लेकिन वह जानता था कि तबिता और थामिसदा किसी भी क्षण आने वाली हैं।
‘महाराज, हम पर हर तरफ से हमले हो रहे हैं,’ गार्ड ने कहा। ‘जिन चौकियों को छिपाकर रखा जाना था, उन पर हमले हो रहे हैं और देव सेना घुसपैठ कर रही है।’ मैं इसका हल निकाल लूंगा।
‘सेनाओं को सीमाओं और चौकियों पर भेजो ताकि वे जवाबी कार्रवाई कर सकें।’ ‘और राजकोष पर हुए हमलों के बारे में?’
लानत है।
ओ भी।
उन्हें इन स्थानों के बारे में कैसे पता चला?
‘वहाँ भी आदमी भेजो।’
‘लेकिन हमारे पास पर्याप्त जवान नहीं हैं, खासकर इसलिए कि राजधानी में इस समय काफी अराजकता फैली हुई है और लोग जवाबी कार्रवाई कर रहे हैं। जब से मूर्ति गिराई गई है, जिन लोगों को आप पर पूरा भरोसा था, वे अब आपके खिलाफ हो रहे हैं,’ गार्ड ने कहा।
'यह तो बस एक बेजान सी मूर्ति थी,' महिषा ने कराहते हुए कहा।
‘यह उनका धर्म था और लोगों के एक समूह ने यह साबित कर दिया कि इसका अस्तित्व ही नहीं था। यह ऐसी चीज थी जिसे कोई भी नष्ट कर सकता था। इससे उनके मन का डर टूट गया और अब वे विद्रोह कर रहे हैं।’
‘जो भी विद्रोह करे, उसे मार डालो।’
महिषा ने उसे वापस जाकर अपने आदेश सैनिकों तक पहुंचाने का हुक्म दिया, जबकि वह जानता था कि उसे अब सीमावर्ती इलाकों में जाना होगा। यही उसकी प्राथमिकता थी, यह नहीं।
उसने मेज के नीचे से बोरी निकाली और अपने कवच, दस्ताने और बड़े सींग वाले हेलमेट को पहनने लगा। इसी दौरान थामिसदा और तबिता अंदर आ गईं।

‘इसका क्या मतलब है?’ मुखिया ने पूछा। ‘तुम्हारे शहर को क्या हो गया है? हमने सोचा था कि हम किसके साथ साझेदारी कर रहे हैं—’
महिषा ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'तुम और तुम्हारे आदमी मेरे साथ चल रहे हो,' और वह अपने शहर का नजारा देखने के लिए खिड़की की ओर चल पड़ा। यह जानने के लिए कि क्या हुआ था। 'मुझे आपकी मदद चाहिए, सरदार।'
थामिसदा ने अनिच्छा से आह भरी। तबिता आई और उसने महिषा को पीछे से गले लगा लिया। महिषा प्यार के मूड में नहीं था, लेकिन फिर भी उसने गले लगने के लिए हामी भर दी।
'धन्यवाद।'
‘तुम ठीक हो जाओगे,’ उसने मुस्कुराते हुए उससे कहा।
पिछली बार उसने उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया था, और उसे बहुत पछतावा था। लेकिन वह ऐसे ही सुधर नहीं सकता था। वह जानता था कि वह कैसा इंसान है। और वह एक राक्षस था। और थामिसदा को युद्ध में इस्तेमाल करने के बाद वह शादी रद्द कर देगा।
उसने सरदार से कहा, ‘मुझे इन लोगों से लड़ने के लिए तुम्हारे आदमियों की जरूरत है। उन लोगों से जो विद्रोह कर रहे हैं।’
थामिसदा ने सिर हिलाया।
‘महाराज, यह क्या है?’ तबिता ने खिड़की से बाहर शहर में मची अफरा-तफरी को देखते हुए पूछा।
महिषा खिड़की के पास आकर भौंहें चढ़ाते हुए देखने लगा। वहाँ चार महिलाएँ खड़ी थीं।
और वह उनमें से किसी को भी नहीं जानता था।
लेकिन उनमें से एक के पास कुल्हाड़ी थी और उसके पीछे एक पूरी सेना थी।
दर्जनों लोग। उन्होंने उसके द्वार पर तैनात पहरेदारों को कुचल दिया था।
उनमें से एक के पास धनुष-बाण था, दूसरे के पास तलवार और एक ने शुद्ध सफेद वस्त्र पहन रखा था और वह खिड़की की ओर भयंकर निगाहों से देख रहा था।
‘ये लोग कौन हैं?’ महिषा असमंजस में थी।
और फिर उसने अपने कानों में फुसफुसाहट सुनी।
दुर्गा।
वह यह देखने के लिए मुड़ा कि कौन बोल रहा है।
और वह तबिता थी। वह उसे देखकर ठंडी मुस्कान दे रही थी।

'कैसे…'
थामिसदा महिषा के पीछे से आई और उसे धक्का देकर खिड़की से बाहर फेंक दिया, और वह ज़मीन पर गिर पड़ा... शून्य में समा गया।

12 साल पहले…
शैला तैरते हुए भागने की कोशिश कर रही थी। पूरी ताकत से। तेज़ी से। वह तेज़ी से तैर रही थी। वह किनारे तक पहुँचना चाहती थी। उसके माता-पिता की हत्या कर दी गई थी और वह बर्फीले ठंडे पानी में फँसी हुई थी। वह किनारे तक तैरकर पहुँची और लगभग बर्फीली ठंड से अपना शरीर खो बैठी थी, उसे लग रहा था कि उसके पैर जवाब दे रहे हैं और उसे सब कुछ महसूस हो रहा था...
‘इसे पकड़ कर रखो!’ किसी ने चिल्लाकर कहा।
उसने ऊपर देखा और उसे पा लिया।
उसकी बहन।
वह जिंदा है?
'तबीथा?'
उसकी छोटी बहन उसे एक छड़ी से इशारा कर रही थी और उसे पकड़ने के लिए कह रही थी। शैला ने वैसा ही किया। और वह खुद को आगे खींचने लगी, जब तक कि वह किनारे पर नहीं पहुँच गई।
और उन्होंने एक-दूसरे को गले लगा लिया। महिषा और उसके आदमियों द्वारा घर में हर जगह तलाशी लेने के दौरान तबिता अवश्य ही कहीं छिप गई होगी।
‘सब ठीक हो जाएगा,’ तबिता ने शैला के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

'सब ठीक हो जाएगा,' तबिता ने थामिसदा के साथ चलते हुए कहा और बाकी लड़कियों के साथ खड़ी हो गई।
महिषा अपने पैरों पर खड़ा हो गया, लंबी ऊंचाई से गिरने के कारण उसके पैर कमजोर हो गए थे, लेकिन वह मरा नहीं था। बल्कि, उसके पास अभी भी काफी ताकत थी। उसने सामने देखा और थामिसदा को लड़कियों के साथ पाया।
‘कैसे…’ उसने कहा।

तबिता ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘तुम्हारे सैनिक सीमा पर नहीं जा पाएंगे। आख़िरकार, तुमने स्वेच्छा से सौ से अधिक देव सैनिकों को, जो पानों का वेश धारण किए हुए थे, अपने शहर में आमंत्रित किया। तुमने उन्हें भोजन कराया और लड़ने के लिए स्थान भी दिए।’ वह हँसी।
उनके पीछे विस्फोटों और दंगों ने शहर को तहस-नहस कर दिया। महिषापुर में आग और क्रोध का बोलबाला था। महिषा का अंत हो चुका था।
उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसके सभी रक्षक जीवित नहीं थे। वे सब मर चुके थे जबकि वह गिरने से मामूली रूप से घायल हुआ था।
‘थामिसदा…’ उसने कहा।
‘खैर, सच में नहीं…’ उस आदमी ने अपना हेलमेट उतारा और उसके नीचे महिषा ने नीली आँखों वाली लड़की को देखा। बर्फ़ जैसी नीली आँखें। ‘मुझे याद है, महिषा? तुमने दूध के लिए मेरे माता-पिता को मार डाला था। खैर…’
महिषा चुप रहा। सब कुछ निगलते हुए। उसे पता था कि वह हार गया है। वह मूर्ख था। पनास...
‘तुम पनास नहीं थे?’
‘तुम्हें हराने के लिए हम सिथियन बन गए। हमने उन्हीं की तरह हमले किए। उन्हीं की तरह खाया-पिया। उन्हीं की तरह रहे, ताकि तुम हम पर विश्वास कर लो। और फिर तुमने हमारी मदद के लिए हाथ बढ़ाया, जैसा कि हमें पता था कि तुम करोगे, क्योंकि तुम सिथियनों के साथ हाथ मिलाने के लिए इतने बेताब थे। हमने इस मौके का फायदा उठाया,’ शैला बीच में खड़ी थी, उसने फिर से पानास का हेलमेट पहन रखा था। अब वह अपनी सामान्य आवाज़ में बोल रही थी, न कि उस मर्दाना आवाज़ में जो उसने थामिसदा होने का नाटक करते समय इस्तेमाल की थी। ‘तुम्हें हमें उस दिन पकड़ लेना चाहिए था जब हम तुमसे बेवकूफी भरे अनुष्ठान करवा रहे थे। सिथियन तो ऐसा भी नहीं करते।’
सभी औरतें उस पर हंस रही थीं, उसका मजाक उड़ा रही थीं। ठीक वैसे ही जैसे उस लड़की ने उसका मजाक उड़ाया था जब वह उस पर नजर रख रही थी।
वहाँ शैला थी।
वहाँ तबिता थी।
वहां चंद्र था।
वहां चारिणी थीं।
वहाँ माता थी।

वहाँ गौरी थी।
वहाँ कात्या थी।
वहाँ खुशी थी।
There was Airavati.
सभी नौ।
और भी लोग थे।
वह देख सकता था कि कैदी भी शामिल हो गए थे। देव कैदी।
चारिणी मुस्कुरा रही थी क्योंकि तामार ने उसकी बात सुन ली थी। उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। लेकिन तामार को थी। और महिषा के महल के बाहर दो सौ से अधिक लोग जमा थे।
महिषा खुद पर हंसे बिना नहीं रह सका।
मैंने खुद ही यह मुसीबत मोल ली है।
‘आधी रात हो चुकी है। नौवीं रात को तुम मुझे नहीं मार सकते,’ वह किसी ऐसी चीज का सहारा ले रहा था जिससे वह उनका मजाक उड़ा सके।
‘ठीक है, तो फिर दसवां दिन ही सही,’ कात्या ने कहा।
उसने दबी आवाज़ में मुंह बनाया, लेकिन फिर उसे इस स्थिति में हास्य नज़र आया, एक व्यंग्यात्मक हंसी जिसने उसके दुश्मनों को चकित कर दिया, और उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी।
महिषा ने कहा, 'मेरा बस एक ही सवाल है। आप लोगों में दुर्गा कौन है?'
शैला मुस्कुराते हुए बोली, ‘यही तो समस्या है, दुर्गा कोई एक व्यक्ति नहीं थी। हम सब दुर्गा थीं। जब हम एक साथ आती हैं तो दुर्गा बन जाती हैं। हम सब दुर्गा हैं। और सिर्फ हम ही नहीं। हर वो औरत जिसे तुमने सताया है। हर वो लड़की जिसे तुमने परेशान किया है। हर वो पत्नी और हर वो माँ जिसे तुमने कष्ट दिया है। हम सब दुर्गा हैं।’
और फिर बाकी सबने चिल्लाकर कहा, 'हम दुर्गा हैं!'
वे सभी महिषा की ओर बढ़ने लगे थे और उसने उनसे लड़ने के लिए अपनी कुल्हाड़ी निकाल ली।
और वहाँ उसने देखा—वे सभी नौ महिलाएं एक दूसरे के पीछे पंक्तिबद्ध खड़ी थीं, सभी महिषा से लड़ने के लिए तैयार थीं।
उसने देखा कि उन सभी के पास हथियार थे।
उनमें से एक के हाथ में तलवार थी।

एक अन्य व्यक्ति धनुष और बाण पकड़े हुए था।
एक अन्य व्यक्ति के हाथ में गदा थी।
लेकिन सामने ही उसने शैला को देखा, जिसे उसने वर्षों पहले चोट पहुंचाई थी।
वह त्रिशूल पकड़े हुए थी।
वे सब बेहद गुस्से में थे, मानो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को तहस-नहस करने को तैयार हों। उसी क्षण आसमान फट गया और बिजली कड़क उठी। कहीं किसी बाघ ने दहाड़ मारी। गरज की आवाज इतनी तेज थी कि कान बहरे हो रहे थे। ‘हम दुर्गा हैं!’
‘हम दुर्गा हैं!’
जैसे-जैसे महिषा का डर उस पर हावी होने लगा, गूंज तेज होती गई। उसे महसूस हो रहा था कि अब सब कुछ खत्म होने वाला है।
खत्म हो गया।
‘हम दुर्गा हैं!’
फिर उसने देखा कि हथियार एक तूफ़ान की तरह बरस रहे हैं। हर तरफ से आ रहे थे। उसकी त्वचा को झुलसा रहे थे। वह उन सभी का मुकाबला नहीं कर सका। वे उसे हर तरफ से घायल कर रहे थे। तीर हवा को चीरते हुए उसकी खोपड़ी में बरस रहे थे।
और वह गिर पड़ा। खून से लथपथ। भयानक।
और वार। बस बहुत हो गया।
और जब उनका जीवन समाप्त होने लगा, तब भी दुर्गा ने उन्हें वार करना और उनसे लड़ना जारी रखा। और वे बुराई करने वाले किसी भी व्यक्ति से लड़ती रहेंगी।
क्योंकि वे किसी भी देवता से कहीं अधिक शक्तिशाली थीं। वे देवताओं का विरोध करने वालों से कहीं अधिक शक्तिशाली थीं।
वे दुर्गा थीं।

उपसंहार

दसवें दिन, सुबह-सुबह, नारद महिषापुर में निडर होकर घूम रहे थे। उनके आदमियों ने दुश्मनों को इकट्ठा कर मार डाला था। कुछ को बंदी बना लिया गया था।
नारद सहजता से महिषा के मुख्य महल की ओर बढ़े, जो देखने में बेहद खूबसूरत था। वे वर्षों से इस दिन का इंतजार कर रहे थे। और आखिरकार वह दिन उनके सामने आ गया।
वहां महिषासुर का शरीर क्षत-विक्षत, अपमानित और बेरहमी से क्षत-विक्षत पड़ा था। बिलकुल बेजान और सूखा हुआ। और उसके सामने उसका राजा इंद्र खड़ा था, जो उस पर विशालता से विराजमान था।
गर्जन के पुरोहित राजा ने नारद की ओर देखा और मुस्कुराया। उनके सिर पर घने सफेद बाल और सफेद लटें थीं, और उन्होंने सफेद धोती और सफेद शॉल ओढ़ रखी थी, जिससे उनका राजसी शरीर ढका हुआ था।
नारद ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं इस पार्टी में देर से आया हूं।'
‘हां, आपने देखा है,’ इंद्रा ने हंसते हुए कहा। ‘हालांकि एक समस्या है।’
'यह क्या है?'
‘तामार। वह जीवित है।’
नारद ने सिर हिलाया। 'तुम क्या करना चाहते हो?'
‘मैंने दुर्गा से कहा कि हम उसे छोड़ देंगे क्योंकि वे ऐसा करना चाहते थे,’ वह रुका।
नारद को यह विचार पसंद नहीं आया, लेकिन दुर्गा वास्तव में थोड़ी भावुक थी। 'और इसी बात से मुझे यह याद आया - हमारा साल भर चलने वाला ऑपरेशन सफल रहा।' 'जी हां, नारद मुनि। लेकिन इसके लिए एक महान बलिदान देना पड़ा।'
'आपका क्या मतलब है?'
इंद्र ने गहरी निराशा के साथ आह भरी और दूत के पास आकर अपने मोटे हाथ उसके कंधे पर रख दिए। 'जिन स्त्रियों को हमने बनाया था, वे हमें छोड़कर चली गई हैं।'
‘हमने उन्हें बनाया ही नहीं, महाराज,’ नारद ने अपने अनभिज्ञ राजा की ओर मुस्कुराते हुए कहा। ‘हमने तो बस उन्हें हथियार दिए थे। उन्होंने वही किया जो उन्हें करना था।’

‘शायद,’ उसने गहरी सांस लेते हुए कहा। ‘और जब अगली बार बुराई का प्रकोप होगा, तब क्या होगा?’
‘मुझे पूरा यकीन है कि वे लौट आएंगे,’ नारद मुस्कुराया।
‘लेकिन उन्होंने वह नाम त्याग दिया है। दुर्गा। उन्होंने कहा कि यह नाम केवल महिषा के पतन से जुड़ा था और अब तक इसका इस्तेमाल करना उनके लिए ठीक था, लेकिन चूंकि वे हमें छोड़कर चले गए हैं, इसलिए वे इस नाम को आगे नहीं बढ़ाना चाहते। उन्होंने महिषा को केवल इसलिए मारा क्योंकि वे चाहते थे। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, मुझे तो केवल परिणाम चाहिए थे, लेकिन उन्हें जाने देना मुझे दुख देता है,’ इंद्र ने कहा और खांसने लगे, जैसे कोई बूढ़ा व्यक्ति खांसता है।
और वह अपने रथ की ओर वापस जाने लगा जो उसका इंतजार कर रहा था।
राजा के जाने से पहले नारद के मन में एक प्रश्न था। उन्होंने पूछा, 'यदि उन्होंने दुर्गा नाम त्याग दिया है, तो अब वे किस नाम से जाने जाते हैं?' इंद्र मुड़ा।
‘शैला ने मुझे कुछ अजीब बताया,’ उसने कहा। ‘वे खुद को…काली कहते हैं।’

***** *****

आभार

जब कोई लेखक अपनी कल्पना को कागज़ पर उतारता है, तो एक पूरी सेना उसके पीछे मजबूती से खड़ी हो जाती है, और उसे उन विचारों को एक यादगार किताब में पिरोने में मदद करती है। और मैं अपनी इस छोटी सी सेना का हमेशा आभारी रहूंगा जिसने मेरी आवाज़ को पाठकों तक पहुंचाने में मदद की।
मेरे जीवन में जिन दो लोगों की मैंने सबसे अधिक प्रशंसा की है: मेरी माँ और पिताजी, जो मेरी प्रेरणा के पहले स्रोत थे, जिनके अपार प्रेम और समर्थन के बिना यह पुस्तक कभी प्रकाशित नहीं हो पाती।
सायंतन, मेघा, राहुल सर और साइमन एंड शूस्टर इंडिया की बाकी शानदार टीम को इस प्रयास को संभव बनाने के लिए धन्यवाद।
मेरे एजेंट, रेड इंक लिटरेरी एजेंसी के सीईओ अनुज सर, आपके अमूल्य मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद।
इस शानदार और प्रभावशाली कवर के लिए हबहॉक्स टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद। सबसे महत्वपूर्ण बात, आप, पाठक। मुझ पर एक बार फिर विश्वास करने और इस पुस्तक को पढ़ने के लिए मैं आपको दिल से धन्यवाद देता हूँ। आप अद्भुत हैं, और आपके प्रति मेरे प्रेम को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।
अंत में, लेकिन निश्चित रूप से सबसे महत्वपूर्ण, इस पुस्तक के लिए मेरी प्रेरणा: उन सभी सशक्त और अद्भुत महिलाओं को धन्यवाद जिन्होंने पितृसत्ता के पिंजरों को तोड़ दिया। अंधकार में हमारी आशा की किरण बनने के लिए। हमें सपने देखने का साहस देने के लिए।
आपकी बात सुनी गई।

जारी…
देवी द्वैतशास्त्र
पुस्तक 2

काली

भारत में पहली बार साइमन एंड शूस्टर इंडिया द्वारा 2022 में प्रकाशित।
कॉपीराइट © केविन मिसल, 2022
यह संस्करण 2022 में प्रकाशित हुआ।
केविन मिसल ने कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की धारा 57 के तहत इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के अपने अधिकार का दावा किया है। 1 3 5 7 9 10 8 6 4 2
साइमन एंड शूस्टर इंडिया
818, Indraprakash Building,
21, बरखंबा रोड,
नई दिल्ली 110001
www.simonandschuster.co.in
ISBN: 978-93-92099-24-3
ईबुक ISBN: 978-93-92099-25-0
सूर्या, नई दिल्ली द्वारा भारत में टाइपसेट किया गया रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा भारत में मुद्रित और जिल्दबंद।

साइमन एंड शूस्टर इंडिया टिकाऊ वनों में उगाई गई लकड़ी से बने कागज का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है और अग्रणी अंतरराष्ट्रीय वन प्रमाणन संगठन, फॉरेस्ट स्टीवर्डशिप काउंसिल (FSC) का समर्थन करता है। हमारी जिन पुस्तकों पर FSC लोगो लगा होता है, वे FSC प्रमाणित कागज पर मुद्रित होती हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।